Click Here Print Passage

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22247

कि यूपी में पहले दंगे होते थे लेकिन, आज भाजपा की सरकार को साढ़े पांच वर्ष हो गए, यहां एक भी दंगा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि एनसीआरबी की रिपोर्ट में भी यूपी को दंगा मुक्त दिखाया गया है। अब यूपी में दंगों के स्थान पर निवेश हो रहा है। युवाओं को रोजगार मिल रहा है। सीएम ने कहा कि उत्तर प्रदेश विकास की ओर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि यहां हाईवे, मेडिकल कॉलेज बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने भरोसा दिलाया है, जो यहां निवेश करेगा। हम उसे सुरक्षा देंगे। उन्होंने कहा अपराधियों के साथ जीरो टॉरेंस के साथ मिपटेंगे। सीएम योगी ने कहा कि रात में यहीं पर रुकेंगे। रात में जिले के विकास का खाका तैयार किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का हैलीकॉप्टर शनिवार को बिजनौर जनपद में नई पुलिस लाइन में उतरा, यहां से सीएम योगी मालन नदी के तट पर पहुंचे। वहां उन्होंने मालन नदी पर दूध व फूलों से पूजन किया। इसके बाद मुख्यमंत्री नई पुलिस लाइन पहुंचे, जहां उन्होंने नई पुलिस लाइन का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने नई पुलिस लाइन की बैरक, कक्षों का अवलोकन किया। इसके बाद मुख्यमंत्री जनसभा की ओर निकल गए। एम ने किया 235 करोड़ रुपये की 116 विकास परियोजनाओं का उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जनसभा स्थल पर पहुंचे, वहां उन्होंने जनता का अभिभावदन किया। इस दौरान जय श्रीराम उद्घोष से जनसभा स्थल गूंज उठा। मुख्यमंत्री ने सर्वप्रथम मंच से बटन दबाकर बिजनौर जनपद को 235 करोड़ रुपये की 116 विकास परियोजनाओं की सौगात दी। उसके बाद उन्होंने मंच से मुख्यमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को मकान की चॉबी सौंपी। सीएम योगी ने कहा कि यहां का इतिहास मालन नदी को जोड़ता है। यह भारत की नदी सांस्कृति से जुड़ी हुई है। हर नदी को परोउद्घार करना है, यह सभी का अधिकार है। इसके

Word Count: 0, Character Length: 3977 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22248

प्रणव शुक्ला, टिप्पणीकार सफल प्रयोग वे दिन लद गए, जब अंदाजे के आधार पर एग्जिट पोल तैयार किए जाते थे। अब तो बाकायदा वैज्ञानिक पद्धति का सहारा लिया जाता है, तभी तो एग्जिट पोल इतने सटीक साबित होने लगे हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो इस काम में बड़ी-बड़ी एजेंसियां नहीं उतरतीं। अब तो आलम यह है कि चुनाव से पहले भी तमाम पार्टियां अपने स्तर पर सर्वे करवाती हैं और मतदाताओं का मिजाज भांपने के प्रयास करती हैं। देखा जाए, तो इससे उनको अपनी रणनीति बनाने में काफी मदद मिलती है। एग्जिट पोल भले ही चुनाव नतीजे तक सीमित हों, लेकिन इनका असर इससे भी आगे है। ये नई सरकार के लिए आईने का काम करते हैं। एग्जिट पोल काफी विश्वसनीय होते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं, जो बताते हैं कि ये सच के कितने करीब रहे। हां, एकाध बार जरूर इनको मात मिली है, लेकिन इनकी सफलता के सामने चंद असफलताएं अपवाद मानी जाएंगी। एग्जिट पोल की विश्वसनीयता पर उठने वाले सवाल गलत नहीं हैं। सबसे पहला कारण तो यही है कि ये छोटे से नमूने के आधार पर तैयार किए जाते हैं। जिस दिन वोट डाला जाता है, उस दिन मुट्ठी भर मतदाताओं से प्रश्न पूछे जाते हैं और उनको ही पूरे निर्वाचन क्षेत्र के वोटरों का मूड बताकर प्रचारित किया जाता है। यह बहुत प्रामाणिक तरीका नहीं है, इसलिए ऐसे निष्कर्षों पर हंसी ही आती है। दूसरा, एग्जिट पोल में अपनी राय बताते समय मतदाता आमतौर पर अपने असली विचार छिपा लेते हैं। ऐसा वे इंसानी फितरत के कारण करते हैं। इस सर्वे में ज्यादातर मतदाता अपनी सोच इसलिए जाहिर नहीं करते, क्योंकि उन पर मनोवैज्ञानिक व सामाजिक दबाव होता है। इसके कारण, एग्जिट पोल के नतीजे चुनाव परिणामों से मेल नहीं खाते। राजनीतिक ध्रुवीकरण और मीडिया का प्रभाव भी एग्जिट पोल के नतीजों को प्रभावित

Word Count: 1, Character Length: 3893 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22249

जैसे-जैसे गुरु बूढ़ा होने लगा, वैसे-वैसे कुछ अधिक गुणी शिष्यों की यह उत्कंठा बढ़ती गई कि आखिर हमारे समूह का नया नेता कौन होगा किस भाग्यशाली भिक्षुक को हमारी परंपरा के रहस्यमय मर्म को जानने का अवसर मिलेगा कौन उत्तराधिकारी चुना जाएगा वक्त गुजरता गया। आखिरकार अपनी मृत्यु की पूर्व संध्या पर मरणासन्न गुरु ने शराबी शिष्य को अपने पास बुलाया और उसे पंथ की परंपरा के गोपनीय रहस्यों का ज्ञान दिया। जब मठ में यह खबर फैली, तो दूसरे तमाम शिष्य बगावत पर उतर आए। सड़क पर उतरकर वे चिल्लाने लगे, हमारे लिए यह सचमुच शर्मनाक बात है! हमने एक ऐसे गुरु के पीछे अपना पूरा जीवन खपा दिया, जो हमारे गुणों को देख ही नहीं सकता था हमने एक गलत गुरु का चुनाव किया था। बाहर हो रहे शोर को सुनकर गुरु ने बस इतनी ही टिप्पणी की, मुझे वह रहस्यमय ज्ञान एक ऐसे शिष्य को देना था, जिसे मैं अच्छी तरह से जान सका। इसमें कोई दोराय नहीं कि मेरे सभी शिष्य बहुत गुणी हैं, मगर वे केवल अपने गुण ही दिखाते हैं। यह खतरनाक प्रवृत्ति है, क्योंकि सदाचार अक्सर घमंड, अभिमान और असहिष्णुता को छिपाने का काम करता है। इसीलिए मैंने एकमात्र उस शिष्य को चुना, जिसे मैं वास्तव में अच्छी तरह से जानता हूं, क्योंकि मैं उसका दोष देख सकता हूं शराबीपन! घोषणापत्र को विज्ञापन समझने की भूल न करें। दोनों दो तरह के दस्तावेज हैं। दोनों का चरित्र अलग है और दोनों का संदर्भ भी अलग है। घोषणापत्र वास्तव में किसी पार्टी के इरादों का एक रोडमैप होता है। इसमें बताया जाता है कि यदि वह सत्ता में आती है, तो अमुक-अमुक काम करेगी। इसमें वस्तुस्थिति का जिक्र ज्यादा होता है, यानी हकीकत अधिक बयां की जाती है, कशीदाकारी नाममात्र की होती है। इसके विपरीत, विज्ञापन किसी उत्पाद का प्रचार है। इसमें उत्पाद की

Word Count: 3, Character Length: 3922 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22253

चक्रव्यूह को तोड़ पाता है। ऐसे में, यह अतिशयोक्ति नहीं कि ऐसे-ऐसे आश्वसान भी नेताओं के मुंह से कहलवा दिए जाएं, जो उन्होंने कहे ही न हों। यह सही है कि अव्यावहारिक आश्वासन की निगरानी होनी चाहिए, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि जो वादे किसी कारण से पूरे न हो सके, उनको भ्रामक बताकर घोषणापत्र को ही खारिज कर दिया जाए। हमें यह समझना होगा कि घोषणापत्र आखिर जरूरी क्यों है चुनाव में हरेक दल को लड़ने का समान आधार मिलना चाहिए। यह आधार उनको घोषणापत्र ही मुहैया कराता है। यदि कोई राजनीतिक दल घोषणापत्र जारी नहीं करेगा, तो वह कैसे मतदाताओं तक पहुंच सकेगा और उनको अपने पक्ष में कर सकेगा चूंकि मतदाताओं को आशान्वित करने में घोषणापत्र अहम किरदार निभाते हैं, इसलिए कुछ राजनीतिक दल ऐसे-ऐसे आश्वासन भी दे देते हैं, जो असंभव जान पड़ सकते हैं। बेशक, ऐसे आश्वासन देने वाले दलों पर कुछ हद तक कार्रवाई की जा सकती है, लेकिन भारतीय मतदाता अब इतना जागरूक हो गया है कि वह पकड़ लेता है कि कौन राजनीतिक दल कितने पानी में है। लोकतंत्र की ताकत भी यही है कि मतदाता इतने सशक्त हो जाएं कि वे चुनाव-प्रक्रिया को अपने मुताबिक ढाल सकें और अच्छे-बुरे की समझ खुद में विकसित कर सकें। हमें चुनावी घोषणापत्रों को परखने का अधिकार भी मतदाताओं को ही देना चाहिए, किसी और को नहीं। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में आम चुनाव देश की दशा और दिशा बदलने में समर्थ हैं, किंतु चुनाव प्रचार में जिस प्रकार से अतार्किक बयानबाजी की जा रही हैं और विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा जिस प्रकार से चुनावी वायदे किए जा रहे हैं, वे स्वयं राजनीतिक दलों को ही सवालों के घेरे में खड़ा करते हैं। सवाल यह है कि मतदाताओं को लुभाने के लिए जो घोषणापत्र जारी किए गए हैं, उनमें दिए गए आश्वासन कितने प्रासंगिक

Word Count: 4, Character Length: 3952 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22254

प्रेम और जंग में सब कुछ जायज होता है। मगर चुनावी युद्ध में जीत हासिल करने के लिए जिस प्रकार से भ्रामक प्रचार करके मतदाताओं को लुभाने का प्रयास किया जा रहा है, उस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि जिस प्रकार से कुछ राजनीतिक दल मात्र अफवाहें व जातीय विद्वेष फैलाकर चुनावी आदर्शों को ठेंगा दिखा रहे हैं, उनको देखकर तो यही लगता है कि लोकतांत्रिक मूल्यों से देश के अधिकांश राजनीतिक दलों का कोई सरोकार नहीं रह गया है। ताज्जुब तो तब होता है, जब खुलेआम जाति कार्ड खेलकर राजनीतिक दल समाज के बंटवारे की भूमिका तैयार करने से बाज नहीं आते। स्पष्ट है, आरोप-प्रत्यारोप की इस जंग में सत्य और असत्य का निर्धारण करने वाला भी कोई नहीं है। कोई भ्रामक विज्ञापन होता, तो शिकायत भी की जाती। शिकायत होती, तो झूठे आश्वासन देने वाले को दंडित कराया जा सकता था। मगर ऐसा नहीं हो सका है। ऐसे में, सवाल यही है कि यदि भ्रामक विज्ञापन दंडनीय अपराध हैं, तो चुनावी घोषणापत्र में दिए गए आश्वासन भी भ्रामक विज्ञापन की श्रेणी में क्यों नहीं रखे जा सकते आवश्यकता यही है कि राजनीतिक दलों द्वारा जारी किए गए घोषणापत्रों का शब्दश परीक्षण किया जाए तथा जो आश्वासन मानक पर खड़े नहीं उतर सकें, उन पर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए की ऑनलाइन सुरक्षा की गुत्थी सुलझाने के क्रम में हमारे सामने नई समस्याएं भी पैदा हो सकती हैं, इसीलिए हमें समग्रता में सोचना होगा। इसके लिए हमें सबसे पहले अपने कानून में सुधार करना होगा। मसलन, आईटी अधिनियम 2000 की जगह लेने वाले नए भारतीय कानून में ब्रिटेन के एज अप्रोप्रिएट डिजाइन कोड जिसे बच्चों की संहिता कहा जाता है और द ओटेरोवा न्यूजीलैंड कोड ऑफ प्रैक्टिस फॉर ऑनलाइन सेफ्टी ऐंड हार्म्स जैसे कानूनों के प्रावधान शामिल करने चाहिए। दूसरी, पहले से उपलब्ध

Word Count: 1, Character Length: 4058 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22255

लीडर्स फॉर एक्टिव सिटीजनशिप के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि 80 फीसदी माता-पिता इंटरनेट की दुनिया खंगालने के लिए अपने बच्चों से समय-समय पर मदद मांगते रहते हैं। लिहाजा, हमें पूरे परिवार पर ध्यान देना चाहिए, ताकि आज के किशोर घर पर सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के प्रशिक्षक बन सकें। वैसे भी, आजकल के माता-पिता स्वयं रील में डूबे हुए हैं और उन्हें भी मदद की जरूरत पड़ती रहती है। एक जेन गुरु के सैकड़ों शिष्य थे। सभी शिष्य अपने गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासन का पूरा-पूरा पालन करते और वक्त पर प्रार्थना किया करते, मगर उनमें से एक शिष्य ऐसा था, जो कभी सही समय पर प्रार्थना नहीं करता था, वह हमेशा शराब के नशे जरिये भारत नेपाल में 1,500 से भी अधिक महिलाओं व बच्चों को मानव तस्करों और अपहर्ताओं के चंगुल से छुड़ाने में कामयाब रहे राजू को स्थानीय प्रशासन, मानवाधिकार संगठनों और सिक्किम सरकार ने कई सम्मानों से नवाजा है। मगर राजू नेपाली की रूह को सुकून तब मिलता है, जब वर्षों से बिछड़े हुए लोग अपने परिजनों से जा लिपटते हैं सरहद पार की खबरें अखबारों में ही आती हैं, तो वह बच्चा आसपास आने वाले अखबारों में झांकता रहता था। अखबार पढ़ने वालों से सुनता रहता था और पढ़े हुए अखबार को बार बार पलटकर देखता था। एक एक अक्षर में झांकते हुए वह बच्चा अखबार पढ़ना सीख गया। एक दिन मां बाप, दोनों दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर हो गए कि उनका महज पांच साल का बच्चा अखबार पढ़ रहा है, यह तो चमत्कार है। अक्षर तोतली आवाज में साकार होने लगे थे, जबकि बच्चा स्कूल भी नहीं गया था। वह निर्णायक क्षण था। खुशनसीब माता पिता ने मन ही मन में इस बच्चे पर खास ध्यान देने का फैसला कर लिया था। उसके बाकी भाई बहन खूब खेलते थे, पर

Word Count: 4, Character Length: 3788 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-01-Test NO.-22256

योग दिवस' मनाया जाता है। यह दिन केवल योग के महत्व को दर्शाने के लिए ही नहीं, बल्कि यह याद दिलाने के लिए भी है कि जीवनशैली में योग को अपनाकर हम दैहिक, मानसिक और भौतिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं। इस दिन का विशेष कारण यह भी है कि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे जीवन व ऊर्जा के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। आज के युग में प्रदूषण, रासायनिक तत्वों से भरा भोजन, माइक्रो प्लास्टिक का फैलाव और जीवन-शैली से जुड़ी बीमारियां मानव शरीर को लगातार नुकसान पहुंचा रही हैं। केवल दवाओं और वैक्सीन पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शरीर की प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता ही हमें लंबे समय तक सुरक्षित रख सकती है। ऋषि सुभाष बुड़ावन वाला, टिप्पणीकार कोरोना महामारी में हमने देखा है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ ही योग व प्राणायाम ने कारगर भूमिका का निर्वहन किया है। कहा जाता है कि यदि हम दिन के चौबीस घंटे में से रोज कम से कम चौबीस मिनट भी अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए निकालते हैं, तो कई बीमारियों से स्वतः ही बचाव हो जाता है। वैसे, पश्चिम के शोधकर्ताओं ने भी योग को व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की उत्तमता के लिए कारगर माना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया भर में पांच प्रतिशत वयस्क आबादी अवसाद से पीड़ित है। यदि योग को जीवन में उतारा जाता है, तो न केवल व्यक्तिनिष्ठ प्रगति होती है, बल्कि सामाजिक उत्कर्ष भी होता है। कुलदीप सिंह भाटी, ब्लॉगर भारत की धर्म संस्कृति और धरोहर ने विश्व को बहुत कुछ ऐसा दिया है, जो इंसान को अच्छे मार्ग कि ओर अग्रसर करता है। इन्हीं में से एक है योग विधि, जिसे अपनाकर इंसान तन-मन से स्वस्थ होता है। योग मात्र शरीर को ही

Word Count: 2, Character Length: 3856 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22261

झारखंड के मुख्यमंत्री के विधायक के रूप में बने रहने को लेकर जारी भ्रम के बीच हेमंत सोरेन सोमवार को विधानसभा के विशेष सत्र के दौरान विश्वास मत प्राप्त करने के लिए प्रस्ताव रखेंगे। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। विधानसभा सचिवालय द्वारा विधायकों को भेजे गए पत्र के अनुसार, मुख्यमंत्री ने बहुमत साबित करने के लिए विश्वास मत प्रस्ताव लाने की इच्छा जाहिर की है। आज भाजपा विधायक दल की बैठक पार्टी सूत्रों ने बताया कि विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सदन में अपनी रणनीति तैयार करने के लिए रविवार को विधायक दल की बैठक बुलाई है। संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम ने कहा कि झारखंड में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। हमारे प्रतिनिधिमंडल ने गुरुवार को राज्यपाल से मुलाकात की थी और उन्होंने हमें एक या दो दिन में स्थिति साफ करने का आश्वासन दिया था, लेकिन अब तक कुछ नहीं हुआ। इसलिए हम विधानसभा में अपनी बात रखेंगे और बहुमत साबित करेंगे। 25 अगस्त को ही ईसी ने भेजा था अपना फैसला बता दें कि लाभ के पद के मामले में सोरेन को विधानसभा से अयोग्य ठहराने की भाजपा की याचिका के बाद, चुनाव आयोग (ईसी) ने 25 अगस्त को राज्यपाल रमेश बैस को अपना फैसला भेजा था, जिससे राज्य में राजनीतिक संकट पैदा हो गया है। हालांकि चुनाव आयोग के फैसले को अभी तक आधिकारिक नहीं किया गया है, लेकिन चर्चा है कि चुनाव आयोग ने एक विधायक के रूप में मुख्यमंत्री की अयोग्यता की सिफारिश की है। सत्तारूढ़ यूपीए ने जोर देकर कहा था कि विधायक के रूप में सीएम की अयोग्यता सरकार को प्रभावित नहीं करेगी, क्योंकि झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन को 81 सदस्यीय सदन में पूर्ण बहुमत प्राप्त है। इस मुद्दे पर एक सितंबर को यूपीए विधायकों के साथ बैठक के बाद राज्यपाल शुक्रवार को दिल्ली गए थे, जिससे और अटकलें तेज

Word Count: 2, Character Length: 3978 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22262

विधायकों को सुरक्षित रखने के लिए, सत्तारूढ़ गठबंधन के 32 विधायकों को 30 अगस्त को कांग्रेस शासित छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में एक रिसॉर्ट में ले जाया गया था। हालांकि उनमें से चार विधायक गुरुवार को हुई कैबिनेट बैठक में भाग लेने के लिए रांची लौट आए। गुरुवार को हुई कैबिनेट बैठक में यह निर्णय लिया गया कि झारखंड विधानसभा का एक विशेष सत्र पांच सितंबर को बुलाया जाएगा। वर्तमान में 81 सदस्यीय सदन में सबसे बड़ी पार्टी झामुमो के 30, कांग्रेस के 18 और राजद के एक विधायक हैं जबकि मुख्य विपक्षी दल भाजपा के 26 विधायक हैं। संयुक्त राष्ट्र के निरीक्षकों ने यूक्रेन सीमा पर जपोरिझिया परमाणु संयंत्र से एटमी आपदा को रोकने की अपील की है। इस बीच, यूक्रेन युद्ध में रूस का पश्चिमी देशों से ऊर्जा युद्ध तेज हो गया है। मॉस्को ने शनिवार को जर्मनी के लिए अपनी गैस पाइपलाइन बंद रखी और तेल निर्यात पर भी मूल्य वृद्धि की धमकी दी है। शनिवार को एक तरफ जहां संयंत्र के पास गोलाबारी तेज हुई वहीं यूरोप को गैस, बिजली और तेल आपूर्ति गड़बड़ा गई। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के निरीक्षकों ने रूस द्वारा कब्जा किए यूक्रेन के जपोरिझिया परमाणु संयंत्र के आसपास युद्ध के बीच विनाशकारी एटमी आपदा को रोकने की अपील की है। रूस द्वारा पड़ोसी देश पर हमले के चलते आईएईए व अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों को यूक्रेन के एटमी ऊर्जा संयंत्रों के आसपास व्यवस्था बहाल करने, मृतकों की पहचान करने और युद्ध अपराधों की जवाबदेही तय करने के लिए मजबूर किया है। उधर, रूस नियंत्रित ऊर्जा दिग्गज कंपनी गजप्रोम ने नॉर्ड स्ट्रीम-1 पाइपलाइन में तकनीकी खराबी बताते हुए शनिवार को गैस सप्लाई रोक दी। साथ ही रूस ने आरोप लगाया कि यूक्रेनी सेना ने यूरोप से सबसे बड़े परमाणु संयंत्र के पास रात भर गोलाबारी की जिसके चलते मुख्य बिजली लाइनों को

Word Count: 1, Character Length: 4104 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22263

भीतर की खबर यह भी है कि तेजी के शुरुआती झोंके के बाद हफ्ता खत्म होते-होते बिक्री ठंडी पड़ने लगी। मार्केट रिसर्च करने वाले और इस कारोबार में लगे लोग भी मानते हैं कि ये सेल इसी तरह चलती हैं। शुरू में महंगी चीजें धड़ाधड़ बिकती हैं और उसके बाद लोग सस्ते माल की तलाश में लग जाते हैं। इसके बावजूद जिस रफ्तार से सेल चली, उससे उत्साह की लहर है। उपभोक्ता बाजार में माहौल का सुधरना कई कारणों से जरूरी भी है, क्योंकि इससे पहले चिंता और तनाव वाले कई संकेत आ चुके हैं या सामने खड़े हैं। सितंबर में जीएसटी वसूली का आंकड़ा सिर्फ 6.5 प्रतिशत बढ़कर आया, जबकि इससे पहले यह 10 फीसदी से ऊपर की रफ्तार दिखा रहा था। औद्योगिक उत्पादन में भी कमजोरी दिखने लगी और पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स आठ महीनों में सबसे नीचे पहुंच गया। यह इंडेक्स बड़ी कंपनियों में खरीदारी करने वाले मैनेजरों के बीच सर्वे करके बनता है। इनका मूड बिगड़ने का अर्थ है कि कंपनियां खरीदारी कम कर रही हैं। ऐसा तभी होगा, जब उनका माल आगे बाजार में बिक नहीं रहा हो या उनके पास नए ऑर्डर न आ रहे हों। इसी तरह कारों के बाजार में लगातार तीन महीनों से बिक्री गिरने की खबर आ रही है। वह भी तब, जबकि हर रोज अखबारों में कारों पर छूट और तोहफों के तरह-तरह के ऑफर दिख रहे हों। हालात चिंताजनक हैं, इसीलिए अब अर्थशास्त्रियों की उम्मीद दो चीजों पर टिकी हैं- अच्छे मानसून का असर, यानी अच्छी फसल और आम आदमी की जेब, यानी बाजार में खरीदारी तेज होने की उम्मीद। खरीफ की बुआई के आंकड़ों से पहली उम्मीद तो पूरी होती दिख रही है। 27 सितंबर तक 11 लाख हेक्टेयर से ज्यादा रकबे में फसल बोने की रिपोर्ट थी। यह सामान्य से बेहतर बुआई है। हालांकि, देश के कुछ

Word Count: 3, Character Length: 3746 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22267

यूक्रेन के लिए 13.7 अरब डॉलर की आपात सहायता का अनुरोध किया है। यह अनुरोध 47.1 अरब डॉलर के बड़े आपात व्यय पैकेज का हिस्सा है। यूक्रेन से संबंधित रकम 40 अरब डॉलर की उस सहायता में सबसे ऊपर है जिसे इस साल के प्रारंभ में मंजूरी दी गई थी। उस सैन्य एवं बजटीय सहयोग का तीन-चौथाई दिया जा चुका है। भाजपा नेता सोनाली फोगाट की मौत मामले में सीबीआई जांच को लेकर अब परिवार हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाएगा। परिवार की तरफ से मंगलवार को हाईकोर्ट में रिट दायर की जाएगी। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को भी इस बारे में पत्र लिखा गया है। इस बारे में सोनाली फोगाट के भांजे विकास ने जानकारी दी है। दूसरी ओर परिवार के लोगों का कहना है कि गोवा पुलिस अपना समय व्यतीत कर रही है। प्रदेश सरकार भी सीबीआई जांच को लेकर चिंतित नहीं है। सीएम से दोबारा मिलने को लेकर समय मांगा गया है। पूरे मामले की गंभीरता से जांच होती तो आरोपी सुधीर को भी गोवा पुलिस अपने साथ लेकर आती। ये सब गोवा पुलिस द्वारा लोगों को गुमराह करने के लिए किया जा रहा हैं। सीबीआई जांच को लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल से मिल चुके है। फार्म हाउस पर आए कई भाजपा नेताओं से भी गुहार लगा चुके हैं। मगर, उसके बाद भी मामले की गंभीरता से जांच नहीं की जा रही। सोनाली फोगाट के पति संजय फोगाट के भांजे एडवोकेट विकास का कहना है कि सरकार ने अभी तक मामले की सीबीआई जांच शुरू नहीं करवाई है। अब सीबीआई जांच को लेकर हाईकोर्ट जाएंगे। विकास का कहना है कि सरकार आरोपी सुधीर की मदद कर ही है। सोनाली के भाई रिंकू ढाका का कहना है कि गोवा पुलिस की कार्रवाई से संतुष्ट नहीं है। जांच के लिए आई गोवा पुलिस प्रॉपर्टी के चारों

Word Count: 1, Character Length: 3707 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22268

मौत हो गई थी। वहां पर गोवा पुलिस ने सोनाली के भाई के बयान पर उसके पीए सुधीर सांगवान के खिलाफ केस दर्ज किया हुआ है। मामले की जांच के लिए गोवा पुलिस चार दिन से हिसार में थी। पालघर पुलिस अधिकारी ने बताया कि टाटा संस के पूर्व चेयरमैन सायरस मिस्त्री अहमदाबाद से मुंबई जा रहे थे। यात्रा के दौरान उनकी कार के डिवाइडर से टकरा गई। कार में 4 लोग मौजूद थे। दो की मौके पर ही मौत हो गई और दो को अस्पताल ले जाया गया। पालघर पुलिस सूत्रों के मुताबिक, साइरस मिस्त्री के मृत्यु के मामले में प्राथमिक अनुमान है कि कार चालक ने नियंत्रण खो दिया। साइरस मिस्त्री का पार्थिव शरीर कासा के एक सरकारी अस्पताल में है। पुलिस द्वारा प्रक्रिया के अनुसार एक दुर्घटना मृत्यु रिपोर्ट दर्ज की जा रही है। दुर्घटना दोपहर 3.15 बजे हुई पालघर जिले के पुलिस अधीक्षक बालासाहेब पाटिल ने बताया कि दुर्घटना दोपहर 3.15 बजे हुई। मिस्त्री अहमदाबाद से मुंबई जा रहे थे। हादसा सूर्या नदी पर बने पुल पर हुआ। दुर्घटना में मिस्त्री और एक अन्य की मौके पर ही मौत हो गई। ड्राइवर समेत दो अन्य घायल हैं। घायलों को इलाज के लिए गुजरात भेजा गया है। कैसे हुआ हादसा? बताया जा रहा है कि हादसा कासा थाना क्षेत्र में सूर्या नदी पुल पर चरोटी नाका में हुआ। मिस्त्री की कार डिवाइडर से टकराने के बाद रिटेंशन वॉल से जा भिड़ी। हादसे में जान गंवाने वाले मिस्त्री और जहांगीर पंडोल के शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए कासा ग्रामीण अस्पताल भेज दिया गया है। घायलों की पहचान ड्राइवर अनायता पंडोल और डेरियस पंडोल के रूप में हुई है। जांच के आदेश महाराष्ट्र के गृह मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पुलिस से मामले की विस्तृत जांच करने को कहा है। उन्होंने कहा कि पुलिस को उस सड़क दुर्घटना की विस्तृत

Word Count: 0, Character Length: 3886 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22269

मां के भाई भारत की एक बड़ी शिपिंग कंपनी के प्रमुख थे। सायरस मिस्त्री ने 1992 में देश के विख्यात वकीलों में शामिल इकबाल चागला की बेटी रोहिका चागला से शादी की थी। उनके दो बच्चे हैं। टाटा संस के पूर्व चेयरमैन सायरस मिस्त्री की मुंबई के पास सड़क हादसे में रविवार को मौत हो गई। महाराष्ट्र के पालघर में हुए इस हादसे के बाद 54 साल के सायरस को अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सायरस की गिनती देश के बड़े उद्योगपतियों में होती थी। उनको लेकर अचानक आई इस खबर से ना केवल उद्योगजगत बल्कि हर कोई हैरान है। उनकी मौत के बाद लोग उन्हें याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। पीएम मोदी ने जताया दुख वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताते हुए कहा कि साइरस मिस्त्री का असामयिक निधन स्तब्ध करने वाला है। वह एक होनहार व्यवसायी थे जो भारत की आर्थिक शक्ति में विश्वास करते थे। उनका निधन वाणिज्य और उद्योग जगत के लिए एक बड़ी क्षति है। उसके परिवार तथा मित्रों के लिए संवेदनाएं। उनकी आत्मा को शांति मिले। टाटा संस के पूर्व चेयरमैन सायरस मिस्त्री की मुंबई के पास सड़क हादसे में मौत से पूरा देश सदमे में है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इस घटना पर दुख जताते हुए कहा कि 'महाराष्ट्र के पालघर के पास एक सड़क दुर्घटना में टाटा संस के पूर्व अध्यक्ष साइरस मिस्त्री जी के दुर्भाग्यपूर्ण निधन के बारे में जानकर गहरा दुख हुआ। उनके परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना। भगवान उसकी आत्मा को शांति दें। स्मृति ईरानी ने जताया दुख केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने इस घटना पर ट्वीट करके दुख जताया। उन्होंने कहा कि 'एक सौम्य आत्मा, एक दृष्टि और एक मिशन वाले व्यक्ति और दयालुता के प्रतीक के रूप में मैं

Word Count: 2, Character Length: 3962 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-02-Test NO.-22270

हुआ है। आज की भागदौड़ और भौतिकतावाद में इंसान इतना व्यस्त हो गया है कि अपने शरीर की तरफ जरा भी ध्यान नहीं देता और बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। अगर लोग योग को अपना लें, तो वे अपने शरीर को चुस्त-दुरुस्त रख सकते हैं। ख्याल रखना होगा कि योग तभी निरोग बनाएगा, जब योग के साथ-साथ खानपान और जीवनशैली में भी सुधार हो। गलत योग करने से नुकसान भी हो सकता है। योग करते समय कुछ गलतियां करने से समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा, कुछ विशेष शारीरिक स्थितियों में योग करना हानिकारक है। गलत तरीके से योग करने या बहुत अधिक योग करने से मांसपेशियों में खिंचाव और दर्द होता है। अगर आप अपनी शारीरिक सीमा से ज्यादा योग करते हैं या बहुत देर तक करते हैं, तो इससे मांसपेशियों पर ज्यादा दबाव पड़ता है। इसके अलावा, बहुत ज्यादा योग करने से थकान महसूस होती है। अगर आपको थकान या जी मिचलाने जैसा महसूस हो, तो तुरंत योग करना बंद कर दें। कुछ लोगों को ज्यादा योग करने से सांस फूलने की समस्या आती है। अगर आपके शरीर में किसी भी प्रकार की सूजन नजर आए, तो यह भी ज्यादा योग करने का संकेत हो सकता है। कुछ विशेष शारीरिक स्थितियों में योग करना हानिकारक है। गर्भावस्था वाली महिलाएं, हृदय रोग या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों को योग करने से पहले डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। इसके अलावा, अगर आपको कोई स्वास्थ्य समस्या है, तो योग करने से पहले डॉक्टर से सलाह लें। योग के तुरंत बाद नहाना या ठंडा पानी पीना शरीर के लिए हानिकारक है। यदि आप योग से होने वाले संभावित नुकसानों के बारे में चिंतित हैं, तो किसी योग्य योग शिक्षक से सलाह लेना सबसे अच्छा है। एक अनुभवी शिक्षक आपको सही तरीके से योग करने व अपनी शारीरिक सीमाओं का सम्मान

Word Count: 2, Character Length: 3813 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22275

मां के भाई भारत की एक बड़ी शिपिंग कंपनी के प्रमुख थे। सायरस मिस्त्री ने 1992 में देश के विख्यात वकीलों में शामिल इकबाल चागला की बेटी रोहिका चागला से शादी की थी। उनके दो बच्चे हैं। टाटा संस के पूर्व चेयरमैन सायरस मिस्त्री की मुंबई के पास सड़क हादसे में रविवार को मौत हो गई। महाराष्ट्र के पालघर में हुए इस हादसे के बाद 54 साल के सायरस को अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सायरस की गिनती देश के बड़े उद्योगपतियों में होती थी। उनको लेकर अचानक आई इस खबर से ना केवल उद्योगजगत बल्कि हर कोई हैरान है। उनकी मौत के बाद लोग उन्हें याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। पीएम मोदी ने जताया दुख वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताते हुए कहा कि साइरस मिस्त्री का असामयिक निधन स्तब्ध करने वाला है। वह एक होनहार व्यवसायी थे जो भारत की आर्थिक शक्ति में विश्वास करते थे। उनका निधन वाणिज्य और उद्योग जगत के लिए एक बड़ी क्षति है। उसके परिवार तथा मित्रों के लिए संवेदनाएं। उनकी आत्मा को शांति मिले। टाटा संस के पूर्व चेयरमैन सायरस मिस्त्री की मुंबई के पास सड़क हादसे में मौत से पूरा देश सदमे में है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इस घटना पर दुख जताते हुए कहा कि 'महाराष्ट्र के पालघर के पास एक सड़क दुर्घटना में टाटा संस के पूर्व अध्यक्ष साइरस मिस्त्री जी के दुर्भाग्यपूर्ण निधन के बारे में जानकर गहरा दुख हुआ। उनके परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना। भगवान उसकी आत्मा को शांति दें। स्मृति ईरानी ने जताया दुख केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने इस घटना पर ट्वीट करके दुख जताया। उन्होंने कहा कि 'एक सौम्य आत्मा, एक दृष्टि और एक मिशन वाले व्यक्ति और दयालुता के प्रतीक के रूप में मैं

Word Count: 2, Character Length: 3962 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22276

मालदीव जलवायु परिवर्तन के परिणामों के चलते पृथ्वी पर सबसे संवेदनशील देशों में से एक है। मालदीव की सरकार जलवायु संबंधी मुद्दों पर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक मजबूत आवाज रही है, पर वह घरेलू स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की नीतियों की लगातार अवहेलना कर रही है। यह दुख और चिंता की बात है। जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, मालदीव जैसे निचले द्वीप राष्ट्रों को खतरे का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे देशों के लिए समाधान है, समुद्र तल से तलछट को स्थानांतरित कर नई भूमि बनाना। इस काम को समुद्र किनारे मिट्टी भरकर अंजाम दिया जाता है और मालदीव यदा कदा यही कर रहा है। मालदीव अपने अस्तित्व को बचाने के लिए यह प्रयास कर रहा है, पर पर्यावरण की दृष्टि से स्वयं उसके लिए यह प्रयास घातक सिद्ध हो सकता है। मालदीव को सोच विचार के साथ ही आगे बढ़ना चाहिए। उसका अस्तित्व महत्वपूर्ण है और बड़े पैमाने पर उसके स्थायित्व के लिए दुनिया को चिंतित होना चाहिए। यह एक बड़ी सोच का विषय होना चाहिए कि जब किसी देश का भूगोल मिट जाएगा, तब उसके सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक अस्तित्व को कैसे बचाया जा सकेगा गौर करने की बात है कि मालदीव अंतरराष्ट्रीय पर्यटन से होने वाली आय पर निर्भर है और जैसे जैसे उसके द्वीपों पर अस्तित्व का संकट बढ़ेगा, वैसे वैसे पर्यटन से उसकी कमाई भी घटती चली जाएगी। इसलिए मालदीव की चेष्टा स्वाभाविक है कि वह अपने द्वीपों का विस्तार करे, पर वहां विकास परियोजनाओं को आगे बढ़ाते समय स्थानीय समुदायों की चिंताओं की उपेक्षा की गई है। यह उन निवासियों के लिए बहुत हानिकारक है, जो पहले से ही मौसम के बदलते मिजाज, समुद्र के बढ़ते स्तर और बाढ़ के प्रभाव से जोखिम में हैं। मालदीव के सरकारी अधिकारी सफाई पेश करते हैं कि बढ़ती आबादी और सीमित

Word Count: 0, Character Length: 3954 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22277

और एक नया हवाई अड्डा बनाने के लिए द्वीप के 70 प्रतिशत मैंग्रोव या जल संपदा को दफना दिया है। इतना ही नहीं, जिन लोगों की आजीविका प्रभावित हुई है, उन्हें पांच साल बाद भी मुआवजा नहीं दिया गया है, इससे लोगों में भी नाराजगी है। यह मालदीव का आंतरिक मामला है और किसी दूसरे देश को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, पर आखिर ऐसे देशों के पास बचने के क्या विकल्प हैं दुनिया में जब समुद्री जल स्तर बढ़ेगा, तब बारी बारी अनेक देश डूबेंगे, ऐसे में, क्या हमारे पास कोई योजना है क्या संयुक्त राष्ट्र ने इस बारे में कुछ सोच रखा है जिन देशों का अस्तित्व खतरे में है, उन्हें तो खासतौर पर सजग रहना चाहिए। पर्यावरण संबंधी नियम कायदों का युद्ध स्तर पर पालन करना चाहिए, ताकि दूसरे देशों को भी प्रेरणा मिले। अर्थव्यवस्था को कोई खास फायदा नहीं हुआ। कहां तो तय था चरागां हर एक घर के लिए, कहां चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए दुष्यंत की ये पंक्तियां यहां सही बैठती हैं या नहीं, इस पर लंबी बहस हो सकती है, मगर इस वक्त देश में जो बहस चल रही है, उसमें इन पंक्तियों का ही नहीं, किसी भी कविता या गजल का इस्तेमाल हो सकता है। यहां बात सिर्फ इतनी है कि एक तरफ तो देश को आगे बढ़ाने, तरक्की तेज करने, शेयर बाजार में जबर्दस्त उछाल और पूरी दुनिया में भारत का डंका बजने की कहानी चल रही है, जबकि दूसरी तरफ अचानक औरतों के मंगल सूत्र छिनने से लेकर हमारी आपकी विरासत पर टैक्स लगने जैसी बातें भी चुनावी मैदान के बीचोबीच घमासान का कारण बन चुकी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर जबर्दस्त निशाना साधा और चुनाव के मौसम में ही नजर आने वाले प्रवासी कांग्रेस के नेता सैम पित्रोदा ने उन्हें और उनकी पार्टी को मानो इसके

Word Count: 0, Character Length: 3774 characters

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22281

अधिकारियों से, शासकों से, जो अपना फर्ज नहीं निभा रहे हैं। जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो, तब उन्हें भगवान की याद नहीं आती। कभी सुना है आपने किसी पार्टी या क्लब में कि लोग हाथ में ड्रिंक लिए आराम से बैठे हों और भगवान को धन्यवाद दे रहे हों कि वाह! क्या बढ़िया देश चल रहा है? गांव-गांव में मोबाइल फोन पहुंच गया है, घर-घर टीवी विराजमान है, छोटे-छोटे शहरों में भी विमान सेवाएं शुरू हुई हैं, शॉपिंग मॉल खरीदारों से भरे रहते हैं, हिन्दुस्तान अब अंतरराष्ट्रीय मंच पर आ गया है! नहीं, ऐसा कभी नहीं होता। यदि लोग सकारात्मक घटनाओं के लिए धन्यवाद से भर जाएं, शुभ घटनाओं के लिए आनंदित हों, तो उनका हृदय विकसित होगा। आप भगवान को मानते हैं या नहीं, यह सवाल नहीं है; सवाल है आपके हृदय की खिलावट का। जिंदगी में कभी भी सिर्फ अच्छा या सिर्फ बुरा नहीं होता, क्योंकि जिंदगी एक संतुलन बनाए रखती है। जितना अच्छा होगा, उतना ही बुरा भी होगा। बुरा भी हमारे देखने का ढंग है। अच्छे-बुरे का तमगा मन लगाता है, घटनाएं अपने नियम से घटती हैं। जिंदगी कोई आपकी दुश्मन थोड़े ही है कि आपको नाहक परेशान करे। अगर आप हमेशा सुखी रहना चाहते हैं, तो हर घटना की मालिकाना हक भगवान को दे दें। फिर परेशानी की कोई वजह ही नहीं। सही हो तो उसका, गलत हो तो उसका! इंडिया ब्लॉक में फूट की खबर को गलत कैसे मान सकते हैं? हालिया विधानसभा चुनावों से पहले ही आम आदमी पार्टी इससे छिटककर दूर चली गई थी और चुनावों में उसने अकेले उतरने का फैसला किया और, अब जब नतीजे कांग्रेस के खिलाफ हैं, तो आप ही नहीं, उद्धव ठाकरे की शिव सेना, समाजवादी पार्टी जैसी सहयोगी पार्टियों ने भी कांग्रेस को घेर लिया है। उस पर अति आत्मविश्वास मे सहयोगी दलों को

Word Count: 4, Character Length: 3746 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22282

से क्या अमीर गरीब के बीच की खाई पाटी जा सकती है यह कोई अनूठा विचार नहीं है। सैम पित्रोदा ने तो अमेरिका का उदाहरण दिया था कि वहां एक सीमा के बाद विरासत में मिलने वाली संपत्ति पर 55 प्रतिशत टैक्स लगता है। आर्थिक सहयोग संगठन ओईसीडी में ऐसे 24 देश हैं, जहां किसी न किसी रूप में विरासत पर टैक्स लगता है। सब जगह टैक्स की दरें अलग अलग हैं। पीडब्ल्यूसी के अनुसार, फ्रांस में 60 प्रतिशत और जापान में 55 फीसदी टैक्स है, जबकि जर्मनी और दक्षिण कोरिया में टैक्स की दर 50 प्रतिशत है। उधर, अमेरिका और ब्रिटेन 40 फीसदी की दर से कर वसूलते हैं। हालांकि, ओईसीडी के अनुसार, उसके सदस्य देशों की 52 प्रतिशत संपत्ति मात्र दस फीसदी लोगों के हाथों में सिमटी हुई है। हालांकि, साथ में वह यह भी बताता है कि विरासत के टैक्स से इन देशों में नाममात्र की कमाई होती है। भारत में यह मसला और भी पेचीदा है, क्योंकि यहां यह विचार पहली बार नहीं आया है। 1953 में संसद ने बाकायदा कानून पास करके एस्टेट ड्यूटी या मृत्यु कर लगाने का फैसला किया था। तब एक लाख रुपये से ऊपर की संपत्ति पर टैक्स लगाने की व्यवस्था उस वक्त यह भी बहुत बड़ी रकम होती थी और इस पर टैक्स शुरू होता था 7.5 फीसदी से। मगर 20 लाख रुपये की संपत्ति के मालिक की मृत्यु पर 85 फीसदी तक टैक्स लगता था। तर्क यही था कि एक सीमा से ऊपर कमाने वालों को अपनी संपत्ति में से वापस समाज को हिस्सा देना चाहिए। मगर तब इस टैक्स को बचाने के लिए तमाम जुगत व जुगाड़ भी शुरू हुए और इस टैक्स का विरोध भी। तब भी 1985 तक यह जारी रहा। राजीव गांधी की सरकार में वित्त मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने फैसला किया कि इस

Word Count: 0, Character Length: 3558 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22283

नेताओं के पुराने बयान निकालकर दिखाए जाने लगे हैं। चूंकि, कांग्रेस घोषणापत्र जारी करते समय राहुल गांधी ने यह कहा था कि देश में किसके पास कितनी संपत्ति है, इसका एक सर्वे कराया जाएगा, तो सैम पित्रोदा के बयान के साथ जोड़कर यह मानना मुश्किल नहीं है कि उसके बाद अमीरों की संपत्ति लेकर गरीबों में बांटने का इरादा है। ऐसे में, सवाल यह भी है कि दुनिया के जिन देशों में ऐसा टैक्स लग रहा है, क्या वहां आर्थिक समानता है ब्रिटेन में तो इस वक्त मुद्दा गरम है कि क्या ऋषि सुनक की सरकार चुनाव से पहले विरासत पर टैक्स कम करने जा रही है उनकी पार्टी चुनाव सर्वेक्षणों में कमजोर दिख रही है और यह संभावना बढ़ रही है कि वोटरों को लुभाने के लिए ऐसा कोई लोक लुभावन फैसला हो सकता है। अमेरिका, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों में इस टैक्स की ऊंची दरों के बावजूद क्या गरीब और अमीर की खाई कम हुई है इसका जवाब कोई भी हां में नहीं दे सकता। मगर किसी भी संवेदनशील और जागृत समाज को इस सवाल से लगातार दो चार होते रहना पड़ता है कि जो लोग तरक्की की दौड़ में पीछे छूटते जाते हैं, उन्हें सहारा देने के लिए क्या किया जाए क्या मुफ्त राशन, मुफ्त घर और मुफ्त बिजली पानी देते रहना ही काफी है या कुछ ऐसा करना होगा कि उन्हें रेस में बराबरी के मौके मिल सकें आय कर हो या संपत्ति कर या विरासत पर कर, सबके पीछे भावना तो यही रही, पर कामयाबी मिलना आसान नहीं है। जिस दौर में भारत में मृत्यु कर लगा करता था, उस दौर में अमीरों को संपत्ति कर या वेल्थ टैक्स भी देना पड़ता था, जिनसे कोई खास फायदा नहीं हुआ, क्योंकि टैक्स इतना भारी था कि उसे बचाने के लिए कोशिश करना काफी मुनाफे का

Word Count: 0, Character Length: 3630 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-03-Test NO.-22284

मजबूत और दीर्घायु कैसे रह सकता है? आज जिस तरह लोगों की दिनचर्या हो गई है, वह घातक ही नहीं, जानलेवा भी है। और मैनचेस्टर में भारत के लिए टेस्ट जीत दुर्लभ रही है। यह भी ध्यान रखने की बात है कि भारत केवल तीन बार ही इंग्लैंड में टेस्ट श्रृंखला जीत सका है। पिछली बार साल 2007 में भारत को वहां टेस्ट श्रृंखला में जीत मिली थी, तब राहुल द्रविड़ कप्तान थे। इंग्लैंड में तीन टेस्ट मैचों में जीत दिलाने वाले सफलतम कप्तान विराट कोहली भी वहां श्रृंखला विजय में नाकाम रहे। अत: शुभमान गिल के पास स्वर्णिम इतिहास लिखने का पूरा मौका है। संभलकर खेलते हुए युवाओं की टीम को जल्दी ही लय में आना होगा। ध्यान रहे, अब युवाओं को पहले की तरह ज्यादा मौके नहीं मिलेंगे। आज देश में क्रिकेट प्रतिभाओं की भरमार है और बोर्ड टीम का एक मजबूत संयोजन प्राप्त करने तक बदलाव से नहीं चूकेगा। महज 25 वर्षीय शुभमान गिल पर भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने जो भरोसा जताया है, उस पर किसी भी दिग्गज क्रिकेट विशेषज्ञ ने प्रश्न नहीं किया है। शुभमान ने पांच साल पहले जब टेस्ट क्रिकेट में आगाज किया था, तभी से उनमें कप्तान की संभावना देखी जा रही थी। आज उनके सामने अच्छे खेल व सफल कप्तान होने की नई-पुरानी मिसालें बहुत हैं। इसी महीने दक्षिण अफ्रीका की टीम विश्व टेस्ट चैंपियन हुई है, जिसमें उनके कप्तान तेंबा बावुमा के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया जा रहा है। प्रतिभा में शुभमान गिल से कमतर होने के बावजूद बावुमा ने मात्र तीन वर्ष की टेस्ट कप्तानी में दक्षिण अफ्रीका को विश्व चैंपियन बना दिया। ठीक ऐसी ही उम्मीद क्रिकेट प्रेमियों को शुभमान से होगी। उन्हें भारतीय क्रिकेट के लिए शुभ साबित होते हुए अपने नेतृत्व में भारतीय क्रिकेट के नए दौर को अनछुई ऊंचाइयों तक ले जाना होगा।

Word Count: 1, Character Length: 3915 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22289

हर एक दिन का अपना कुछ महत्व होता है और हर दिन के पीछे एक इतिहास छुपा होता है। ठीक ऐसे ही पांच सितंबर का दिन भी हर एक छात्रों और शिक्षकों के लिए खासा महत्व रखता है। दरअसल, हर किसी के आगे बढ़ने में, जीवन को सफल बनाने में गुरू का हाथ होता है। शिक्षक अपने छात्रों को सही राह दिखाता है, सही ज्ञान देता है और मार्गदर्शन भी करता है। इसलिए बच्चों के जीवन में शिक्षकों का खास महत्व होता है। ऐसे में हर साल 5 सितंबर के दिन शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन स्कूलों में बच्चे शिक्षकों की भूमिका निभाकर स्कूल का संचालन करते हैं। लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि आखिर 5 सितंबर को ही क्यों शिक्षक दिवस मनाया जाता है? आखिर इस दिन का इतिहास क्या है? शायद नहीं, तो चलिए इस दिन के बारे में जानते हैं। हुआ ये था कि एक बार छात्रों ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन से पूछा कि उनके जन्मदिन का आयोजन किया जाए? इस पर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने जवाब दिया कि ये अच्छी बात है कि आप लोग मेरा जन्मदिन मनाना चाहते हैं। लेकिन आप अगर इस दिन को शिक्षकों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए योगदान और समर्पण को सम्मानित करते हुए मनाएं, तो मुझे सबसे ज्यादा खुशी होगी। बस इसी बात का सम्मान करते हुए हर साल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। जहां एक तरफ यूनेस्को ने साल 1994 में 5 अक्टूबर को शिक्षक दिवस मनाने की घोषणा की थी। तो वहीं, भारत में हर साल शिक्षक दिवस 5 सितंबर को मनाया जाता है। इस दिन स्कूलों में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और शिक्षक दिवस को मनाया जाता है। बात अगर शिक्षक दिवस को मनाने की करें, तो डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस (5 सितंबर) के मौके पर

Word Count: 0, Character Length: 3669 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22290

के बाद भाजपा मुक्त भारत का आह्वान कर नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय राजनीति में हाथ आजमाने का स्पष्ट संदेश दे दिया है। इस कड़ी में आज से उनका तीन दिवसीय दिल्ली प्रवास बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। साथ ही रक्षामंत्री राजनाथ सिंह आज अपनी पांच दिवसीय विदेश यात्रा पर रवाना होंगे। वह मंगोलिया और जापान की यात्रा करेंगे। जानकारी के मुताबिक, उनकी इस यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के साथ भारत के रक्षा और सुरक्षा संबंधों का विस्तार करना है। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना द्विपक्षीय रिश्ते को मजबूती देने के मकसद से चार दिवसीय दौरे पर आज भारत पहुंच रही हैं। इस दौरान दोनों देशों का मुख्य फोकस संपर्क, ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा के साथ ही कारोबार और निवेश के अवसरों पर रहेगा। हसीना अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से मुलाकात करेंगी। साथ ही वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय संबंधों से जुड़े मुद्दों पर वार्ता करेंगी। दोनों प्रधानमंत्रियों के बीच वार्ता के दौरान लंबित और नियमित द्विपक्षीय मुद्दों के अलावा दक्षिण एशिया में रक्षा सहयोग और स्थिरता के मुद्दे पर सबसे अधिक जोर रहेगा राजग से नाता तोड़ने के बाद भाजपा मुक्त भारत का आह्वान कर नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय राजनीति में हाथ आजमाने का स्पष्ट संदेश दे दिया है। खुद के नेतृत्व में विपक्षी दलों को भाजपा के खिलाफ एकजुट करने के लिए बिहार के मुख्यमंत्री सबसे पहले समाजवादी कुनबे को साधना चाहते हैं। उसके बाद क्षेत्रीय दलों को साधेंगे। इस कड़ी में सोमवार से उनका तीन दिवसीय दिल्ली प्रवास बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। नीतीश ऐसे समय में विपक्ष के नेता के रूप में अपनी दावेदारी पेश कर रहे हैं, जब राहुल गांधी की अगुवाई में कांग्रेस सात सितंबर से भारत जोड़ो यात्रा की शुरुआत कर रही है। विपक्षी दलों के नेतृत्व की महत्वाकांक्षा पालने वाले दल मसलन तृणमूल

Word Count: 0, Character Length: 4312 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22291

कुमार ने शनिवार को कहा था कि अगर विपक्षी पार्टियां भाजपा के खिलाफ एकजुट हो जाएं तो 2024 में 50 सीटों पर भाजपा सिमट जाएगी। रविवार को वह पलट गए। कार्यकारिणी बैठक के बाद उन्होंने कहा कि कोई संख्या की बात तो नहीं है, लेकिन अगर विपक्ष एकजुट हो जाए तो केंद्र में भाजपा को सत्ता से बाहर कर सकता है। उन्होंने कहा, अब भविष्य में कभी भाजपा से जदयू का समझौता नहीं हो सकता है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह सोमवार को अपनी पांच दिवसीय विदेश यात्रा पर रवाना होंगे। वह मंगोलिया और जापान की यात्रा करेंगे। जानकारी के मुताबिक, उनकी इस यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के साथ भारत के रक्षा और सुरक्षा संबंधों का विस्तार करना है। जापान में राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस जयशंकर अपने जापानी समकक्षों के साथ 'टू प्लस टू' प्रारूप में विदेश और रक्षा मंत्री स्तरीय संवाद करेंगे। राजनाथ सिंह पांच से सात सितंबर तक मंगोलिया की यात्रा पर होंगे, जबकि आठ और नौ सितंबर को उनका जापान दौरा प्रस्तावित है। माना जा रहा है कि 'टू प्लस टू' प्रारूप में भारत और जापान के बीच आठ सितंबर को वार्ता होगी। यह संवाद जापान के प्रधानमंत्री फूमियो किशिदा के वार्षिक भारत-जापान शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए नई दिल्ली आने के पांच महीने बाद हो रहा है। 'टू प्लस टू' संवाद के दौरान द्विपक्षीय रक्षा और सुरक्षा सहयोग को और बढ़ाने के तौर-तरीकों पर विचार-विमर्श के साथ-साथ हिंद प्रशांत क्षेत्र के घटनाक्रम पर भी चर्चा होने की उम्मीद है। जापान के साथ 2019 में हुई थी 'टू प्लस टू' की शुरुआत भारत और जापान के बीच 'टू प्लस टू' प्रारूप के संवाद की शुरुआत वर्ष 2019 में दोनों देशों के सुरक्षा एवं रक्षा सहयोग को और मजबूत बनाने तथा विशेष रणनीति एवं वैश्विक साझेदारी को गहरा करने के लिए की गई थी। सुप्रीम

Word Count: 7, Character Length: 3969 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22295

जयदीप गुप्ता को सुना था और माल्या के वकील अंकुर सहगल को सजा के पहलू पर अपनी लिखित दलीलें दाखिल करने का एक आखिरी मौका दिया था। पीठ ने अपने आदेश में कहा था कि भले ही वकील अंकुर सहगल ने प्रविष्ठियां पेश करने में असमर्थता व्यक्त की है, फिर भी हम उन्हें 15 मार्च 2022 तक एमिकस क्यूरी को एक अग्रिम प्रति के साथ अपनी प्रविष्ठियां दाखिल करने का एक और अवसर प्रदान करते हैं। माल्या के वकील ने कहा था कि उनके मुवक्किल जो यूके में हैं, उन्होंने उन्हें कोई निर्देश नहीं दिया था, इसलिए वह सजा की मात्रा पर बहस नहीं कर सकते थे। इस पर पीठ ने कहा था कि हमें बताया गया है कि यूनाइटेड किंगडम (यूके) में कुछ कार्यवाही चल रही है। जिसे हम नहीं जानते, मामलों की संख्या क्या है उसके बारे में भी हम नहीं जानते हैं। मुद्दा यह है कि जहां तक हमारे अधिकार क्षेत्र का सवाल है, हम कब तक इस तरह से आगे बढ़ सकते हैं। विजय माल्या ने जमा नहीं कराई कोई राशि बंगलूरू स्थित ऋण वसूली न्यायाधिकरण (डीआरटी) के अधिकारी ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि न तो भगोड़े कारोबारी विजय माल्या और न ही फंड हस्तांतरण के लाभार्थियों ने 18 अगस्त तक न्यायाधिकरण को कोई राशि जमा कराई है। माल्या को सुप्रीम कोर्ट ने अवमानना मामले में चार महीने जेल की सजा सुनाई थी। शीर्ष अदालत ने 11 जुलाई को अदालत की अवमानना के मामले में चार महीने की सजा सुनाई थी और चार करोड़ अमेरिकी डॉलर (40 मिलियन) उसे व फंड के लाभार्थियों को 8 फीसदी सालाना ब्याज के साथ डीआरटी में जमा कराने के निर्देश दिए थे। ये राशि चार हफ्ते के भीतर जमा करने को कहा गया था। पीठ ने इसके साथ ही केंद्र से भगोड़े कारोबारी की उपस्थिति सुनिश्चित कराने के लिए

Word Count: 0, Character Length: 3704 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22296

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस्लामाबाद में आतंकवाद को निशाने पर लेकर जो स्पष्ट संदेश दिया है, वह सुखद और स्वागतयोग्य है। पाकिस्तान में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) परिषद के शासनाध्यक्षों की 23वीं बैठक में विदेश मंत्री ने विकास के लिए वास्तविक साझेदारी, शांति और स्थिरता के महत्व पर पुरजोर प्रकाश डाला है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आतंकवाद का असर व्यापार, ऊर्जा संचार और संवाद-संपर्क पर पड़ता है। अगर हम यह देखें कि भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत क्यों बंद है, तो इसकी मूल वजह आतंकवाद ही है। भारत के प्रति पाकिस्तान का दुश्मनी भरा व्यवहार किसी से छिपा नहीं है। जब वह सुधरने को तैयार नहीं है, तब दोनों देशों के संबंधों में सुधार भला कैसे होगा? बड़ी बात यह भी है कि भारत की शिकायत पर कान देने वाले महत्वपूर्ण देशों की कमी है। विशेष रूप से शंघाई सहयोग संगठन में शामिल चीन की अगर भूमिका देखी जाए, तो दक्षिण एशिया में तानाशाही और आतंकवाद, दोनों के प्रति वह कतई गंभीर या ईमानदार नहीं है। शंघाई सहयोग संगठन में भी वह भारत की अनदेखी करते हुए केवल अपना फायदा देखना चाहता है। जब दुनिया के तमाम देश अपना हित देख रहे हैं, तब भारत को भी अपना हित देखना ही चाहिए। भारत विश्व स्तर पर अनेक बार यह बात दोहरा चुका है कि बंदूक और व्यवसाय, दोनों साथ नहीं चल सकते हैं। विभिन्न ध्रुवों में बंटी दुनिया में भारत की आवाज को पूरी तरह से सुना नहीं जा रहा है, तब संयुक्त राष्ट्र में सुधार की भारतीय कोशिशें स्वाभाविक हैं। इस्लामाबाद में भी विदेश मंत्री जयशंकर ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार के पक्ष में पैरोकारी की है। सुधार की यह बात वास्तव में चीन को भी संबोधित है। ध्यान रहे, लगभग नौ वर्षों में यह पहली बार है, जब भारत के विदेश मंत्री पाकिस्तान

Word Count: 1, Character Length: 3938 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22297

िदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस्लामाबाद में आतंकवाद को निशाने पर लेकर जो स्पष्ट संदेश दिया है, वह सुखद और स्वागतयोग्य है। पाकिस्तान में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) परिषद के शासनाध्यक्षों की 23वीं बैठक में विदेश मंत्री ने विकास के लिए वास्तविक साझेदारी, शांति और स्थिरता के महत्व पर पुरजोर प्रकाश डाला है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आतंकवाद का असर व्यापार, ऊर्जा संचार और संवाद-संपर्क पर पड़ता है। अगर हम यह देखें कि भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत क्यों बंद है, तो इसकी मूल वजह आतंकवाद ही है। भारत के प्रति पाकिस्तान का दुश्मनी भरा व्यवहार किसी से छिपा नहीं है। जब वह सुधरने को तैयार नहीं है, तब दोनों देशों के संबंधों में सुधार भला कैसे होगा? बड़ी बात यह भी है कि भारत की शिकायत पर कान देने वाले महत्वपूर्ण देशों की कमी है। विशेष रूप से शंघाई सहयोग संगठन में शामिल चीन की अगर भूमिका देखी जाए, तो दक्षिण एशिया में तानाशाही और आतंकवाद, दोनों के प्रति वह कतई गंभीर या ईमानदार नहीं है। शंघाई सहयोग संगठन में भी वह भारत की अनदेखी करते हुए केवल अपना फायदा देखना चाहता है। जब दुनिया के तमाम देश अपना हित देख रहे हैं, तब भारत को भी अपना हित देखना ही चाहिए। भारत विश्व स्तर पर अनेक बार यह बात दोहरा चुका है कि बंदूक और व्यवसाय, दोनों साथ नहीं चल सकते हैं। विभिन्न ध्रुवों में बंटी दुनिया में भारत की आवाज को पूरी तरह से सुना नहीं जा रहा है, तब संयुक्त राष्ट्र में सुधार की भारतीय कोशिशें स्वाभाविक हैं। इस्लामाबाद में भी विदेश मंत्री जयशंकर ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार के पक्ष में पैरोकारी की है। सुधार की यह बात वास्तव में चीन को भी संबोधित है। ध्यान रहे, लगभग नौ वर्षों में यह पहली बार है, जब भारत के विदेश मंत्री पाकिस्तान

Word Count: 1, Character Length: 3935 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-04-Test NO.-22298

चौदहवें दलाई लामा को अपना उत्तराधिकारी चुनना है और स्वाभाविक ही धर्मशाला से लेकर बीजिंग तक चर्चाएं तेज हैं। लोग उम्मीद कर रहे थे कि दलाई लामा उत्तराधिकारी की घोषणा करेंगे, पर उन्होंने यह साफ कर दिया कि उनके उत्तराधिकारी का चयन उनके निधन के बाद ही होगा। चयन स्थापित तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुसार होगा। इतना ही नहीं, दलाई लामा ने उत्तराधिकारी के चयन की जिम्मेदारी एक ट्रस्ट को सौंपी है। हालांकि, तय है, अगले दलाई लामा का चुना जाना आसान नहीं होगा और अभी से विवाद की स्थिति बनने लगी है। चीन ने कह दिया है कि अगला दलाई लामा चाहे जिसे चुना जाए, अंतिम मंजूरी चीन सरकार ही देगी। हालांकि, चीन की इस घोषणा को तिब्बती संगठनों ने गलत ठहराते हुए कह दिया है कि दलाई लामा के चयन में चीन सरकार की कोई भूमिका नहीं है। मतलब, धार्मिक मामले में अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक खींचतान तय है। दलाई लामा का पद ऐसा है, जिसका प्रभाव राजनीतिक और धार्मिक, दोनों ही स्तरों पर पड़ता है। इस सम्मानित पद को लेकर चीन पहले भी विवाद खड़े करता रहा है। ध्यान देने की बात है कि हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में बुधवार को 15वां तिब्बती धार्मिक सम्मेलन शुरू हुआ है, इस तीन दिवसीय आयोजन में भाग लेने के लिए अनेक देशों की हस्तियां आई हैं। तिब्बती बौद्ध मत के भविष्य पर भी चिंतन चल रहा है। ध्यान रहे, तिब्बती तिथि के हिसाब से 14वें दलाई लामा का जन्मदिन 30 जून का था, जबकि ग्रेगोरियन तारीख के हिसाब से उनका जन्मदिन 6 जुलाई को मनाया जाएगा। आने वाले कुछ दिनों में तिब्बती धर्मगुरु की खूब चर्चा होनी है। अपने वीडियो संदेश में भी दलाई लामा ने यही कहा है कि उत्तराधिकारी चयन में कोई अन्य व्यक्ति, संगठन या सरकार दखलअंदाजी नहीं कर सकती। उन्होंने यह भी दावा किया है कि उनकी मृत्यु

Word Count: 0, Character Length: 3922 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22303

इसमें उसने मई, 2017 के आदेश की समीक्षा की मांग की थी। माल्या मार्च, 2016 से ब्रिटेन में रह रहा है। वह 18 अप्रैल, 2017 को स्कॉटलैंड यार्ड द्वारा निष्पादित प्रत्यर्पण वारंट पर जमानत पर है। अपनी करतूतों पर न माफी मांगी और न ही जताया खेद माल्या के लिए सजा सुनाते हुए पीठ ने कहा था कि उसने अपनी करतूतों के लिए कोई माफी नहीं मांगी और न ही कोई खेद की जताया। कानून की गरिमा को अक्षुण्ण रखने के लिए उचित दंड दिया जाना चाहिए। पीठ ने इसके साथ ही माल्या पर 2000 रुपये का जुर्माना भी लगाया था। भारत और अमेरिका के बीच समुद्री सुरक्षा को लेकर अंतरसत्रीय वार्ता आज नई दिल्ली में शुरू होगी। पांच से आठ सितंबर तक चलने वाली इस बातचीत में अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लू के नेतृत्व में आज दिल्ली पहुंचेगा। अमेरिका के विदेश मंत्रालय ने बैठक की जानकारी देते हुए बताया कि बातचीत का मकसद दोनों देशों के बीच व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को गहरा करना है। अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल में सहायक रक्षामंत्री एली रैटनर व पूर्वी एशियाई और प्रशांत मामलों की उप सहायक विदेश मंत्री कैमिली डावसन भी शामिल होंगी। यह प्रतिनिधिमंडल भारत के विदेश और रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ स्वतंत्र, खुले, समृद्ध, लचीले और सुरक्षित हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए भारत-अमेरिका के बीच सहयोग के विस्तार और साझा हितों की रक्षा की रणनीति पर चर्चा करेगा। अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल वरिष्ठ भारतीय अधिकारियों के साथ इस बात पर चर्चा करेगा कि कैसे अमेरिका और भारत एक स्वतंत्र, खुले, समृद्ध, लचीले और सुरक्षित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करने के लिए सहयोग का विस्तार कर सकते हैं। इसके अलावा लू अमेरिका-भारत के बीच महिला उद्यमियों के आर्थिक सशक्तीकरण गठबंधन के तहत एक कार्यक्रम में भी शामिल होंगे। इसका उद्देश्य कार्यबल में महिलाओं की सार्थक भागीदारी बढ़ाकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा देना

Word Count: 4, Character Length: 4284 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22304

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता 46 शिक्षकों के साथ बातचीत की। इस संवाद के दौरान प्रधानमंत्री ने सफल शिक्षक होने के गुण भी बताए और भारत के दुनिया पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने पर खुशी जाहिर करते हुए स्वाधीनता आंदोलन की याद दिलाई। पीएम ने आह्वान किया कि अब एक बार फिर वैसा ही जोश और मिजाज चाहिए। इस वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों के साथ बातचीत के दौरान पीएम ने युवा दिमाग को सही आकार और दिशा देने के लिए हम शिक्षकों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि हमारे शिक्षकों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति तैयार करने में बड़ी भूमिका निभाई है। पीएम मोदी ने कहा कि ये हमारा सौभाग्य है कि हमारे वर्तमान राष्ट्रपति भी शिक्षक हैं। उनका जीवन का प्रारंभिक काल शिक्षक के रूप में बीता है। देश गढ़ने का काम वर्तमान के शिक्षकों के हाथ प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि देश भी आज नए सपने, नए संकल्प लेकर एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है कि आज जो पीढ़ी है, जो विद्यार्थी अवस्था में हैं, 2047 में हिंदुस्तान कैसा बनेगा ये उन्हीं पर निर्भर होने वाला है। उनका जीवन आप शिक्षकों के हाथ में है। पीएम ने कहा कि 2047 में देश गढ़ने का काम आज जो वर्तमान में शिक्षक हैं, आने वाले 10-20 साल तक जो सेवाएं देने वाले हैं, उनके हाथ में है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने में हमारे टीचर्स का बहुत बड़ा रोल रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ऐसा नहीं है कि शिक्षक का काम सिर्फ क्लास लेना या स्कूल की नौकरी करना ही हो। शिक्षक का काम विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना है। शिक्षक का कर्तव्य उनका जीवन स्तर सुधारने और उन्हें एक बेहतर नागरिक बनाना भी है। इसके लिए हमें बच्चों से जुड़ाव स्थापित करना होगा। इसी जुड़ाव से भविष्य के नेतृत्वकर्ता तैयार होंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि

Word Count: 1, Character Length: 4000 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22305

पवन ऊर्जा अब बिजली के सबसे किफायती रूप हैं, इसके बावजूद दुनिया भर की सरकारों को पिछले साल हरित बदलाव पर 1.8 ट्रिलियन डॉलर खर्च करने की जरूरत पड़ गई। यह तर्क देना कि पवन और सौर ऊर्जा सबसे सस्ते हैं, वैश्विक स्तर पर हरित ऊर्जा के पैरोकारों, कार्यकर्ताओं और राजनेताओं द्वारा तैयार किया गया विचार है। दुर्भाग्य से, 1.8 ट्रिलियन डॉलर का दावा भ्रामक है। पवन और सौर ऊर्जा केवल तभी बिजली पैदा करती है, जब सूरज चमक रहा हो या हवा चल रही हो। बाकी समय बैकअप की जरूरत पड़ती है, जिससे उनकी बिजली काफी महंगी हो जाती है। यही वजह है कि वैश्विक बिजली उत्पादन लगभग दो तिहाई जीवाश्म ईंधन पर निर्भर है। यही वजह है कि मौजूदा स्थिति के मुताबिक, बिजली उत्पादन से जीवाश्म ईंधन को विदा करने से हम एक पूरी सदी दूर हैं। आधुनिक मानव समाज को 24 घंटे बिजली चाहिए, इसलिए रुक रुककर चलने वाले सौर और पवन स्रोतों में बड़ी व अक्सर छिपी हुई लागत शामिल होती है। यह धनी देशों के लिए एक छोटी समस्या है, जिन्होंने पहले से ही जीवाश्म ईंधन वाले बिजली संयंत्रों का निर्माण कर रखा है और जिनका उपयोग वे बैकअप के रूप में कर सकते हैं। जो देश गरीब और बिजली की कमी वाले हैं, वहां जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के बुनियादी ढांचे का भी अभाव है। पाखंडी अमीर देश विकासशील दुनिया में अत्यधिक जरूरी जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के लिए धन देने से इनकार करने लगे हैं। इसके बजाय, वे इस बात पर जोर देते हैं कि विकासशील देशों में लोग हरित ऊर्जा आपूर्ति पर ही निर्भर रहें। क्या हरित ऊर्जा इतने बड़े पैमाने पर उपलब्ध हो सकती है कि दुनिया की एक बड़ी आबादी को गरीबी से निकाल सके, पानी के पंपों या कृषि मशीनरी के लिए अबाध बिजली मुहैया करा सके यह अक्सर कहा जाता

Word Count: 0, Character Length: 3781 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22309

पवन ऊर्जा अब बिजली के सबसे किफायती रूप हैं, इसके बावजूद दुनिया भर की सरकारों को पिछले साल हरित बदलाव पर 1.8 ट्रिलियन डॉलर खर्च करने की जरूरत पड़ गई। यह तर्क देना कि पवन और सौर ऊर्जा सबसे सस्ते हैं, वैश्विक स्तर पर हरित ऊर्जा के पैरोकारों, कार्यकर्ताओं और राजनेताओं द्वारा तैयार किया गया विचार है। दुर्भाग्य से, 1.8 ट्रिलियन डॉलर का दावा भ्रामक है। पवन और सौर ऊर्जा केवल तभी बिजली पैदा करती है, जब सूरज चमक रहा हो या हवा चल रही हो। बाकी समय बैकअप की जरूरत पड़ती है, जिससे उनकी बिजली काफी महंगी हो जाती है। यही वजह है कि वैश्विक बिजली उत्पादन लगभग दो तिहाई जीवाश्म ईंधन पर निर्भर है। यही वजह है कि मौजूदा स्थिति के मुताबिक, बिजली उत्पादन से जीवाश्म ईंधन को विदा करने से हम एक पूरी सदी दूर हैं। आधुनिक मानव समाज को 24 घंटे बिजली चाहिए, इसलिए रुक रुककर चलने वाले सौर और पवन स्रोतों में बड़ी व अक्सर छिपी हुई लागत शामिल होती है। यह धनी देशों के लिए एक छोटी समस्या है, जिन्होंने पहले से ही जीवाश्म ईंधन वाले बिजली संयंत्रों का निर्माण कर रखा है और जिनका उपयोग वे बैकअप के रूप में कर सकते हैं। जो देश गरीब और बिजली की कमी वाले हैं, वहां जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के बुनियादी ढांचे का भी अभाव है। पाखंडी अमीर देश विकासशील दुनिया में अत्यधिक जरूरी जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के लिए धन देने से इनकार करने लगे हैं। इसके बजाय, वे इस बात पर जोर देते हैं कि विकासशील देशों में लोग हरित ऊर्जा आपूर्ति पर ही निर्भर रहें। क्या हरित ऊर्जा इतने बड़े पैमाने पर उपलब्ध हो सकती है कि दुनिया की एक बड़ी आबादी को गरीबी से निकाल सके, पानी के पंपों या कृषि मशीनरी के लिए अबाध बिजली मुहैया करा सके यह अक्सर कहा जाता

Word Count: 0, Character Length: 3781 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22310

ऊर्जा की लागत मापने का सामान्य तरीका इसकी अविश्वसनीयता को नजरअंदाज कर देता है और जब सूरज चमक रहा होता है, तब हमें वह सौर ऊर्जा की कीमत बताता है। पवन ऊर्जा के बारे में भी यही सच है। अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन सौर ऊर्जा को 3.6 सेंट प्रति किलोवाट की दर पर रखता है, जो प्राकृतिक गैस के 3.8 सेंट से थोड़ा अधिक है, पर यदि आप कुल खर्च जोड़ें, तो हरित ऊर्जा की वास्तविक लागत बढ़ जाती है। एक अध्ययन के अनुसार, हरित ऊर्जा की वास्तविक लागत 11 से 42 गुना तक ज्यादा होती है। जिससे सौर ऊर्जा अब तक का सबसे महंगा स्रोत बन जाती है और पवन ऊर्जा दूसरे नंबर पर आती है। जब तेज हवा न चले, तब भी ऊर्जा चाहिए, जब धूप न हो, तब भी ऊर्जा चाहिए। हमारी बैटरी क्षमता भी पर्याप्त नहीं है। जर्मनी जैसे देश में जब पांच पांच दिन तक सौर ऊर्जा या पवन ऊर्जा से आपूर्ति प्रभावित होती है, तब 120 घंटे तक बैटरी बैकअप की जरूरत पड़ती है। क्या ऐसा हर जगह संभव है अगर अमेरिका चाहे कि सौर और पवन ऊर्जा से काम चला ले, तो उसे लगभग तीन महीने के उपयोग लायक वार्षिक बिजली भंडारण करने में सक्षम होना पड़ेगा। ध्यान रहे, केवल बैटरियों के भुगतान के लिए अमेरिका को अपनी वर्तमान जीडीपी का पांच गुना खर्च करना पड़ेगा। हरित ऊर्जा की अपनी व्यापक चुनौतियां हैं और कचरे व प्रदूषण की भी बड़ी समस्या है। फिर भी कम लागत का दावा दोहराया जाता है, क्योंकि यह सुविधाजनक है। यदि हम जलवायु परिवर्तन से निपटना चाहते हैं, तो हमें निम्न कार्बन ऊर्जा अनुसंधान व विकास में बहुत अधिक निवेश करना चाहिए। मैं जब छोटी थी, तो गरमी की छुट्टियों में बस्तर छत्तीसगढ़ अपने मौसा जी के घर जाया करती थी। वह फॉरेस्ट अफसर थे, इसलिए उनका बंगला

Word Count: 0, Character Length: 3708 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22311

गए, हमारे जीवन से नृत्य विदा होता गया। हम गंभीर हो गए, बैठकर काम करने लगे और रही सही कसर कंप्यूटर ने पूरी कर दी। अब हम नाच के वीडियो देखकर ही खुश हो लेते हैं। लोगों की उम्र बढ़ती है, तो डांस करना और मुश्किल लगने लगता है। कुछ शर्म के कारण, कुछ शारीरिक प्रतिबंधों के कारण। अब नृत्य करने के लिए किसी अवसर की तलाश होती है, जैसे शादी या कोई पार्टी। लेकिन नृत्य का उम्र या अवसर से क्या लेना देना यह तो शरीर की स्वाभाविक जरूरत है। शरीर में बह रही जैविक ऊर्जा की अभिव्यक्ति है। नृत्य के बारे में न्यूरो साइंस ने काफी शोध किया है। डॉक्टरों ने पाया कि नृत्य की गतिविधि स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है। हमारे मस्तिष्क के अंदर खुशी पैदा करने वाला एक हार्मोन होता है, जिसे डोपोमाइन कहते हैं। अगर मस्तिष्क इस हार्मोन को पैदा करना बंद कर दे, तो सारा रस खो जाता है और पार्किन्सन जैसे रोग होने लगते हैं। शरीर की मांसपेशियां, जोड़, नसें, सब तेज गतिविधि चाहती हैं, क्योंकि उससे वे मजबूत और तरोताजा रहती हैं। यदि आप तनावग्रस्त महसूस करते हैं, तो नृत्य करके अपना तनाव दूर करें। यदि आप दुखी या क्रोधित हैं, तो कोई बात नहीं, बस शरीर में उतर जाएं और इसे संगीत और लय में गतिमान करना शुरू करें। आपके जो भी लक्षण हों हृदय में भारीपन, गले में जकड़न, सिर में दर्द, वे सभी जादू की तरह गायब हो जाते हैं। भावनाओं के काले बादल ऊर्जा के स्रोत में बदल जाते हैं। सांसें खुल जाती हैं, दिल तेजी से धड़कने लगता है और पूरे शरीर में एक अनाम सी खुशी फैल जाती है। नृत्य स्वच्छता की प्रक्रिया है। यह शरीर में जमे विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। ओशो एक चिकित्सा के रूप में नृत्य का उपयोग करते हैं।

Word Count: 0, Character Length: 3734 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-05-Test NO.-22312

चीन को पुनर्जन्म की बात से खास शिकायत नहीं है, पर वह अंतिम फैसले का हक अपने पास रखना चाहता है। चीन कभी नहीं चाहेगा कि तिब्बती धर्मगुरु के पद पर किसी ऐसे व्यक्ति का चयन हो जाए, जो तिब्बती जमीन पर नए सिरे से दावे करने लगे। वैसे चीन किसी भी दलाई लामा की सत्ता को मन से स्वीकार नहीं करेगा। उसने 14वें दलाई लामा, तेनजिन ग्यात्सो को भी कभी मन से स्वीकार नहीं किया है। साल 1959 में मात्र 23 की उम्र में तेनजिन ग्यात्सो भारत भाग आए थे, क्योंकि चीनी सैनिकों ने तिब्बत पर नियंत्रण कर लिया था। दलाई लामा कोई भी बने, चीन में उसकी सलामती की गारंटी नहीं है। अत: भारत को इस मोर्चे पर संवेदनशील और तैयार रहना चाहिए। भारत के लिए यही सही है कि यह विवाद शांति से सुलझ जाए। यह भारत का ही प्रभाव है कि दलाई लामा का रुख चीन के प्रति भी नरम हुआ है और वह तिब्बत की स्वतंत्रता पर अब ज्यादा जोर नहीं देते हैं। भूलना नहीं चाहिए, जब वह तिब्बत की राजधानी ल्हासा से भागे थे, तब उनके कंधे पर एक बंदूक भी सुशोभित था, जिसे वह दशकों पहले उतार चुके हैं। आज सौम्यता के प्रतीक जो दलाई लामा हमारे साथ हैं, उन्हें नोबेल शांति सम्मान मिल चुका है और वह संसार में शांति-सद्भाव के उज्ज्वलतम हस्ताक्षर हैं। तिब्बतियों की सांस्कृतिक पहचान उनके नेतृत्व में संरक्षित और सुरक्षित रही है। यह पहचान आगे भी जीवंत रहे, इसके लिए भारत सरकार को भी समझदारी का परिचय देना चाहिए और चीन की सरकार को भी पूरी संवेदना के साथ पेश आना चाहिए। बिहार विधानसभा चुनावों से महज दो-तीन महीने पहले मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन की भारत निर्वाचन आयोग की कवायद न केवल संदेहास्पद, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की नींव पर सीधा हमला है। साल 2024 के लोकसभा

Word Count: 2, Character Length: 3772 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22317

बेटे उमर अब्दुल्ला को भी आने वाले दिनों में इसी तरह की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। सबसे ज्यादा परेशानी का सामना उमर अब्दुल्ला को जम्मू-कश्मीर के नए कानूनों और मुख्यमंत्री की ताकत को लेकर आने वाली है। पहली बार जब वह 2009 से 2015 तक मुख्यमंत्री थे, तब उनको पूरी शक्ति प्राप्त थी, लेकिन अब किसी केंद्रीय सेवा के सचिव के स्थानांतरण के लिए उनको उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा की सहमति की जरूरत होगी। बहरहाल, जिस तरह से नेशनल कांफ्रेंस को जनादेश मिला है, उससे अपेक्षाएं और बढ़ गई हैं। उमर अब्दुल्ला के लिए लोगों की सभी मांगों को पूरी करना मुश्किल होगा। राजनीतिक तौर पर कश्मीर में महबूबा मुफ्ती की पीडीपी और जम्मू में भाजपा आसानी से सरकार चलाने नहीं देगी। महबूबा मुफ्ती ने शपथ समारोह के बाद ही मांग कर दी है कि नई विधानसभा को 5 अगस्त, 2019 के केंद्र सरकार के फैसले को गलत ठहरना चाहिए। इस काम को तत्काल अंदाज देना उमर अब्दुल्ला के लिए खतरनाक होगा। हालांकि, उमर अब्दुल्ला ने भाजपा को जवाब देने के लिए राजौरी के नौशेरा विधानसभा सीट से भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रविंदर रैना को हराने वाले नेशनल कांफ्रेंस के नेता सुरिंदर चौधरी को उप-मुख्यमंत्री बना दिया है, मतलब उमर ने एक तीर से दो निशाने साधे हैं। कांग्रेस को जम्मू के हिंदू इलाके से सीट न मिलने के कारण नेशनल कांफ्रेंस के लिए भी जम्मू में दिक्कतें बढ़ गई हैं। डॉक्टर फारूक अब्दुल्ला ने भी माना है कि उनके बेटे उमर अब्दुल्ला को इस बार काफी मेहनत करनी पड़ेगी। हर कोई नाराज है। भारत कनाडा से उचित ही खफा है कि वह खालिस्तानी आतंकियों द्वारा भारत को दशकों तक दिए गए जख्मों को महसूस नहीं कर रहा। यहां तक कि ओटावा अपने इतिहास के सबसे दुखद विमान अपहरण कांड को भी भूलने को तैयार है, जिसे खालिस्तानी

Word Count: 3, Character Length: 3935 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22318

अधीन हो गया है। मगर ऐसा कहते हुए वे भूल रहे हैं कि यदि रंग से ही किसी की राजनीतिक विचारधारा तय होगी, तो दूरदर्शन के पिछले लोगो का रंग भी उत्तर प्रदेश की एक पार्टी से जुड़ा था, तो क्या उस समय उसे उस खास दल के अधीन बताया गया दूरदर्शन हमेशा से सरकार का मुखपत्र जैसा रहा है। वह वही चीजें प्रसारित करता है, जो सरकार के मुफीद होती हैं। मगर ऐसा करते हुए भी उसकी अपनी हैसियत है और अपना मुकाम है, जिसकी तस्दीक बड़े बड़े विश्लेषक भी करते रहे हैं। असल में, रंग बदलने की वजह से आलोचक अनजान हैं या जान बूझकर इस मामले को वे विवादित बनाना चाहते हैं। जैसा कि प्रसार भारती के सीईओ गौरव द्विवेदी ने भी कहा है कि लोगो में नए बदलाव का नाता किसी पार्टी या विचारधारा से नहीं है। उनके मुताबिक, छह सात महीने पहले जी 20 सम्मेलन के आयोजन से पहले डीडी इंडिया के लोगो को उसी रंग में अपडेट किया गया था, जिसके बाद नए ग्राफिक्स का फैसला लिया गया। देखा जाए, तो विजुअल्स और तकनीक के स्तर पर डीडी न्यूज के एक नए अवतार की शुरुआत हुई है और यह बदलाव सिर्फ लोगो में नहीं, बल्कि जगहों, आधुनिक उपकरणों, प्रस्तुतिकरण के तरीके आदि में भी किया गया है। यहां समझने की बात यह भी है कि लोगो में चमकीले रंगों का इस्तेमाल विज्ञापन रणनीति का हिस्सा है, इसलिए यह बदलाव चैनल के लिए है, किसी राजनीतिक दल के समर्थन के लिए नहीं, इस पूरे बदलाव का किसी राजनीति से कोई संबंध नहीं है। यह ठीक है कि दूरदर्शन का नया लोगो सनातन की वापसी की मुनादी करता है, इसीलिए भी कुछ लोगों में भ्रम की स्थिति बनी है, लेकिन हम सनातन को आखिर किसी खास दल से ही क्यों जोड़ते हैं वास्तव में, आज सभी

Word Count: 0, Character Length: 3615 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22319

अपने स्थापना काल से ही यह संस्थान सत्ता के प्रचार तंत्र के रूप में काम करता रहा है या इसे काम करने को मजबूर किया जाता रहा है, लेकिन आज यह प्रसारण संस्था जिस तरह से सरकार के कदमों में सिर रखकर काम कर रही है, वैसा पूर्व में कभी नहीं दिखा था। हालांकि, प्रसार भारती के मौजूदा सीईओ ने इन आरोपों से इनकार किया है और कहा है कि लोगो में चमकीले रंगों का इस्तेमाल केवल व्यावसायिक रणनीति के तहत किया गया है। मगर देश दुनिया का बच्चा बच्चा जानता है कि यह सब किसके इशारे पर किया गया है और क्यों देखा जाए, तो अब भारत की बुनियाद को ही खोखला किया जा रहा है। इतिहास बदलने का खेल चल रहा है। ऐतिहासिक चरित्रों व घटनाक्रमों को बदला जा रहा है। धर्मनिरपेक्षता पर हमला किया जा रहा है। इस तरह के कदमों का सीधा मतलब है, देश में धार्मिक विभेद को और गहरा करना। अगर यही सब चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब तिरंगे की जगह एक ही रंग का झंडा सभी लोगों के हाथों में होगा। यह खतरनाक स्थिति हो सकती है, क्योंकि विविधता ही हमारे देश की असल कुंजी है। अगर इस कुंजी को ही खत्म कर दिया जाएगा, तो यह देश भी संभवत खत्म हो जाएगा। प्रथम चरण के मतदान के फौरन बाद दूरदर्शन के लोगो का भगवा हो जाना एक खास संकेत करता है। गौर कीजिए, जैसे ही दूरदर्शन का लोगो भगवा हुआ, यह एलान किया गया कि इस बार चुनाव में इस तरह बटन दबाना है कि राम को मुंह दिखाने में शर्मिंदगी न हो। यानी, इस चुनाव में मुद्दों की कमी साफ दिख रही है, इसलिए तरह तरह के तिकड़म अपनाए जा रहे हैं, ताकि किसी तरह वोटों का ध्रुवीकरण हो सके। दूरदर्शन के लोगो को बदलना इसी रणनीति का

Word Count: 0, Character Length: 3541 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22323

किसी के साथ भेदभाव न हो। शिक्षक समभाव से काम करते हैं। उन्हें प्रत्येक छात्र की चिंता रहनी चाहिए। 250 वर्ष तक जिन्होंने राज किया, वे पीछे रह गए प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के दौरान अर्थव्यवस्था की भी बात की। पीएम ने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षकों से संवाद के दौरान कहा कि दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए भारत ब्रिटेन से आगे निकल गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस स्थान को हासिल करना विशेष है क्योंकि हमने उन लोगों को पीछे छोड़ दिया है जिन्होंने 250 वर्ष तक हम पर शासन किया। यह आनंद कुछ अलग है प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षक दिवस से दो दिन पहले आई इस खबर ने आज का आनंद दोगुना कर दिया। मोदी ने कहा कि आर्थिक क्षेत्र में छठे नंबर से पांच पर आने से ज्यादा आनंद इसमें आया कि हमने उन्हें पीछे छोड़ा जो हम पर 250 साल राज करके गए थे। पीएम मोदी ने कहा कि यह पांच बड़ा स्पेशल है। यह मिजाज बहुत आवश्यक है। संकल्प करें- मैं मेरे देश को पीछे नहीं रहने दूंगा। हजारों साल की गुलामी से बाहर निकले हैं अब रूकेंगे नहीं। महंगाई के खिलाफ दिल्ली के रामलीला मैदान में हुई कांग्रेस की हल्ला बोल रैली में हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने भीड़ जुटाकर हाईकमान को अपनी ताकत दिखाई हाईकमान की ओर से हरियाणा में हुड्डा को फ्री हैंड देने के बाद यह उनके लिए चुनौती के समान थी। हरियाणा से भारी संख्या में पहुंची भीड़ ने हुड्डा को हाईकमान के सामने और मजबूती से पेश किया है। रैली में हरियाणा से आए जनसमूह से उत्साहित हुड्डा ने प्रदेश की जनता का आभार जताते हुए लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। रैली को संबोधित करते हुए हुड्डा ने कहा कि आज हर वर्ग महंगाई

Word Count: 1, Character Length: 3850 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22324

राजग से नाता तोड़ने के बाद सोमवार को बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने मिशन दिल्ली का आगाज किया। इस क्रम में पहले पटना में राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव से मुलाकात कर विपक्ष को एकजुट करने का मंत्र लिया तो दिल्ली पहुंचकर सबसे पहले कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की। तीन दिवसीय दिल्ली प्रवास पर आए नीतीश ने कहा कि उनकी पीएम बनने की नहीं, बल्कि विपक्ष को भाजपा के खिलाफ एकजुट करने की इच्छा है। विपक्ष को एकजुट करने की शुरू हुई नई मुहिम के तहत नीतीश की अगले दो दिनों में दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, सपा प्रमुख अखिलेश यादव, एनसीपी प्रमुख शरद पवार, शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे, रालोद, इनेलो, टीएमसी सहित कई अन्य विपक्षी दलों के नेताओं से मुलाकात करेंगे। इस दौरान नीतीश राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से भी मिलेंगे। हम दोनों एक ही विचारधारा के दिल्ली रवाना होने से कुछ देर पहले नीतीश ने पटना में राजद प्रमुख लालू प्रसाद से मुलाकात की। मुलाकात के संदर्भ में उन्होंने कहा कि हम दोनों एक ही विचारधारा के लोग हैं। सभी बातों में हमारी सहमति है। नीतीश ने साल 2017 में भाजपा से हाथ मिलाने को गलत फैसला बताया। उन्होंने कहा कि फिलहाल विपक्ष को भाजपा के खिलाफ एकजुट करने की जरूरत है। पीएम बनने की नहीं, विपक्ष को एकजुट करने की इच्छा दिल्ली पहुंचने पर नीतीश ने कहा कि उनकी प्रधानमंत्री बनने की कोई इच्छा नहीं है। वह बस यह चाहते हैं कि भाजपा के खिलाफ समूचा विपक्ष एकजुट हो। उन्होंने कहा कि विपक्ष की एकजुटता देशहित में है। इसके लिए वह अपने तीन दिवसीय दिल्ली प्रवास में कई विपक्षी नेताओं से मुलाकात करेंगे। राहुल से भाजपा के खिलाफ अभियान छेड़ने पर हुई बात नीतीश ने केरल दौरे से वापस आए राहुल गांधी से करीब आधे घंटे चर्चा की। जदयू

Word Count: 0, Character Length: 4019 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22325

दौरान वह भारत अमेरिका रणनीतिक भागीदारी मंच सम्मेलन और हिंद प्रशांत आर्थिक समृद्धि की रूपरेखा (आईपीईएफ) की मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेंगे। गोयल आठ और नौ सितंबर को लॉस एंजिल्स में हिंद प्रशांत आर्थिक समृद्धि की रूपरेखा (आईपीईएफ) की दो दिन की मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेंगे। सैन फ्रांसिस्को में पीयूष गोयल ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। पीयूष गोयल ने कैलिफोर्निया के सैन फ्रांसिस्को में कहा कि अगले दो दिन यहां अलग अलग उद्योगों से जुड़ी कंपनियों के मालिकों के साथ चर्चा होगी। अमेरिका और भारत के संबंध लगातार अच्छे हो रहे हैं और दोनों देशों में अच्छा समन्वय बन रहा है। इंडो पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क की दो दिवसीय मंत्रिस्तरीय बैठक है, जिसमें अमेरिका, भारत, जापान, इंडोनेशिया और इंडो पैसिफिक के पास स्थित मित्र देशों के मंत्रियों के बीच एक नए आर्थिक समूह की बैठक होगी। उन्होंने कहा कि इंडो पैसिफिक के पास स्थित मित्र देशों के बीच एक नया आर्थिक समूह बने, जो देश एक ही सोच रखते हैं और जो लोकतंत्र, मानवाधिकार मूल्यों और जो व्यापार पारदर्शिता के साथ करना चाहते हैं और उनके साथ संबंध अच्छे हों उस दृष्टिकोण से यह समूह बनाया जा रहा है। गोयल ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में दुनिया में भारत का गौरव बढ़ा है। हमने अभी अभी आजादी का अमृत महोत्सव मनाया है। हर भारतीय के दिल में एक ही इच्छा है कि हम विश्व गुरु बनें। वाणिज्य मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को जारी आधिकारिक बयान के अनुसार, वह दोनों देशों के बीच साझेदारी बढ़ाने तथा व्यापार और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए यात्रा के दौरान अमेरिका के प्रमुख कारोबारियों, अधिकारियों और उद्योग जगत के शीर्ष व्यक्तियों के साथ भी मुलाकात करेंगे। वाणिज्य मंत्रालय ने कहा कि यह यात्रा भारत को निवेश का सबसे पसंदीदा गंतव्य के रूप में पेश करने पर केंद्रित होगी।

Word Count: 0, Character Length: 4172 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-06-Test NO.-22326

लंबे समय तक ब्रिटेन के औपनिवेशिक शासन के अधीन रहे। में कदम रखा। उस पहले ही मैच में उन्होंने विरोधी टीम के पांच खिलाड़ियों को पैवेलियन भेज दिया। हालांकि, नेशनल टीम में चयन को लेकर उन्हें शुरू में थोड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। दरअसल, पिता ने उनकी मूल नागरिकता केन्या से तब्दील नहीं कराई थी। मगर जिंबाब्वे की पूर्ण नागरिकता मिलते ही ओलोंगा का चयन पाकिस्तान के खिलाफ राष्ट्रीय टेस्ट टीम में हो गया। यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं थी। ओलोंगा जिंबाब्वे क्रिकेट टीम के पहले अश्वेत और सबसे युवा खिलाड़ी थे। उनका चयन टीम के लिए मुबारक साबित हुआ। तब जिंबाब्वे ने पहली बार टेस्ट क्रिकेट में पाकिस्तान पर जीत दर्ज की थी। इसके बाद ओलोंगा ने 30 टेस्ट मैच और 50 एकदिवसीय मैच खेले। कई बार 'मैन ऑफ द मैच' की ट्रॉफी भी अपने नाम की। मगर एक सवाल उन्हें हमेशा मथता रहता कि अगर उनका जीवन जिंबाब्वे के लोगों की जिंदगी में कोई फर्क न डाल सका, तो फिर इसका क्या मतलब? दरअसल, सन् 1980 में लोकप्रिय जन-समर्थन से जिंबाब्वे के प्रधानमंत्री बने रॉबर्ट मुगाबे धीरे-धीरे तानाशाह बनते चले गए। उनके शासन का दमन-चक्र तेज हो चला था। तब 27 साल के ओलोंगा ने टीम के साथी एंडी फ्लावर के साथ मिलकर इस दमन के शांतिपूर्ण विरोध का फैसला किया। 2003 के क्रिकेट वर्ल्ड कप में ओलोंगा काली पट्टी बांधकर मैदान में उतरे। वह एक आह्वान था कि जिंबाब्वे में लोकतंत्र को बचाया जाए जाहिर है, मुगाबे हुकूमत को यह दुस्साहस नागवार गुजरा। ओलोंगा को टीम से निकाल दिया गया, जान से मारने की धमकियां मिलने लगीं, उनके खिलाफ देशद्रोह का वारंट जारी हो गया। आखिरकार वह भागकर पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर ब्रिटेन पहुंचे। ओलोंगा का सब कुछ खत्म हो गया था। मंगेतर ने रिश्ता तोड़ लिया था, सारी संपत्ति छूट गई थी, सभी

Word Count: 3, Character Length: 3983 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-07-Test NO.-22331

तीन क्षेत्रों पर दोबारा नियंत्रण हासिल कर लिया है। इनमें दक्षिणी यूक्रेन के दो गांव और पूर्वी क्षेत्र में एक बस्ती के एक तिहाई हिस्से पर नियंत्रण करना शामिल है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने इसकी घोषणा करते हुए यूक्रेनी सेना की हौसला अफजाई की और कहा कि उनकी सेना जल्द ही अन्य रूसी कब्जे वाले इलाकों पर भी नियंत्रण कर लेगी। यूक्रेन के सैन्य आलाकमान ने सोमवार को कहा कि उनकी सेना ने खेरसॉन में रूसी कब्जे वाले बलों ने स्थानीय निवासियों की आवाजाही रोक दी है। लेकिन कई रुकावटों के बावजूद यूक्रेन की सेना ने जवाबी कार्रवाई की है। यूक्रेनी राष्ट्रपति कार्यालय के उप प्रमुख कायरो तिमोशेंको ने बताया कि उनकी सेना ने पूर्व में लिसिचंस्क सिवर्स क्षेत्र को रूसी सेना से मुक्त करा लिया है और दक्षिण में वैसोकोपिल्या तथा खेरसॉन क्षेत्र के एक गांव पर दोबारा नियंत्रण कर लिया है। इस क्षेत्र पर रूस के साथ साथ यूक्रेन का भी सबसे ज्यादा फोकस है क्योंकि यह रणनीतिक रूप से अहम इलाके हैं। इस बीच, दिनिप्रो नदी और उसके आसपास वाले क्षेत्रों में जबरदस्त संघर्ष जारी है। यह नदी खेरसॉन क्षेत्र को विभाजित करती है। दिनिप्रो नदी पर यूक्रेनी सेना का फोकस यूक्रेनी आक्रमण दिनिप्रो नदी के पश्चिमी हिस्से में रूसी सेना को अलग थलग करने पर केंद्रित है। उधर रूसी सेना गोला बारूद बढ़ाकर नदी की चार प्रमुख क्रॉसिंग पर हमला कर रही है ताकि यूक्रेनी सेना यहां प्रवेश न कर सके। जबकि यूक्रेनी सेना ने हमले बढ़ाते हुए रूसी सैनिकों को पीछे हटने या आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करने की रणनीति अपनाई है। रूस की 127वीं रेजिमेंट पिछड़ रही सोमवार को यूक्रेन की दक्षिणी सैन्य कमान ने दावा किया कि रूस की पहली कॉर्प की 127वीं रेजिमेंट ने लड़ाई से इनकार कर दिया था। यह दूसरी बार है जब उन्होंने कहा कि रूसी सेना

Word Count: 0, Character Length: 4104 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-07-Test NO.-22332

इतनी ही संजीदगी होती, तो निर्वाचन आयोग कम से कम इन चार राज्यों में एक साथ चुनाव कराके अपनी तैयारी का परिचय दे देता। मगर वह ऐसा करने में नाकाम रहा। इसी कारण यह आशंका बढ़ जाती है कि कहीं एक साथ चुनाव कराने की घोषणा महज ज्वलंत बुनियादी मुद्दों से ध्यान भटकाने का कोई शिगूफा तो नहीं? समय-असमय उछाले जाने वाले ऐसे मुद्दों से हमें फिलहाल बचना ही चाहिए। एक बार फिर एक देश, एक चुनाव पर सार्वजनिक चर्चा शुरू हो गई है। यह जानते हुए भी कि ऐसी कोई व्यवस्था संविधान की मूल संरचना का उल्लंघन है, इस पर आगे बढ़ने की बात कही जा रही है। वास्तव में, यह अलोकतांत्रिक कदम है और संघीय ढांचे को कमजोर करने की कोशिश भी है। इसका परिणाम राष्ट्रपति शासन की ओर ले जाएगा। इससे राज्यों की स्वायत्तता भी छिनेगी। यह ठीक है कि इससे कुछ करोड़ रुपये हम बचा लेंगे, लेकिन सवाल यह है कि कुछ करोड़ रुपये बचाने के लिए जनता को मिले सरकार चुनने का यह अधिकार छीना जा सकता है? इसका जवाब निश्चित तौर पर 'नहीं' ही होगा। फिर, भारत जैसे विविधताओं और विषमताओं से भरे देश में राष्ट्रपति चुनाव के मॉडल से हटकर लोकतंत्र की संसदीय प्रणाली अपनाने के पीछे हमारे संविधान-निर्माताओं की मंशा और सोच स्पष्ट थी कि जनता की अभिव्यक्ति को अधिकतम जगह मिले। याद कीजिए, राम मनोहर लोहिया का नारा- जिंदा कौमें पांच साल इंतजार नहीं करतीं। इस नारे के निहितार्थ का हमें हर हाल में ध्यान रखना ही चाहिए। किसी भी कामयाब लोकतंत्र में यह उम्मीद तो सभी करते हैं कि निर्वाचित सरकार अपना कार्यकाल पूरा करे और लोगों के भरोसे पर खरी उतरे। अपने यहां संविधान निर्माताओं ने विधायी संस्थाओं के कार्यकाल के लिए पांच साल का वक्त तय किया है। मगर इसमें दिक्कत तब होती है, जब पता चलता है

Word Count: 3, Character Length: 3870 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-07-Test NO.-22333

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आठ सितंबर को सेंट्रल विस्टा एवेन्यू का उद्घाटन करेंगे। इस कार्यक्रम को देखते हुए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने इंडिया गेट के सभी 10 मार्गों को शाम छह से रात नौ बजे तक बंद करने का फैसला किया है। सभी 10 मार्गों के बंद होने से करीब 17 मार्गों पर ट्रैफिक का दवाब बढ़ेगा और बड़े पैमाने पर जाम लगने की संभावना है। ऐसे में दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने ट्रैफिक के सुचारू संचालन के लिए पर्याप्त इंतजाम किए हैं। ट्रैफिक पुलिस ने लोगों को परेशानियां न हो ये देखते हुए ट्रैफिक एडवाइजरी मंगलवार को जारी की है दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के नई दिल्ली जिले के डीसीपी आलाप पटेल की ओर से जारी की गई एडवाइजरी में कहा गया है कि इंडिया गेट के सभी 10 मार्ग बंद होने से डब्ल्यू पाइंट, मथुरा रोड, अशोक रोड, क्यू प्वाइंट, पृथ्वीराज रोड, अकबर, एसबी मार्ग, एपीजे अब्दुल कलाम रोड, राजेश पायलट मार्ग, विंडसर प्लेस गोलचक्कर, क्लेरिज होटल गोलचक्कर, मान सिंह रोड, एमएलएनपी गोल चक्कर, जनपथ, फिरोजशाह रोड, मंडी हाउस गोलचक्कर और सिकंदरा रोड पर ट्रैफिक का दवाब बढ़ेगा। पुलिस ने सभी वाहन चालकों से आग्रह किया है कि वह अपनी यात्रा पहले से ही सुनिश्चित कर लें। इंडिया गेट सी-हैक्सागन के 10 मार्ग यहां से बंद रहेंगे सी-हैक्सागन से लेकर भगवानदास रोड क्रॉसिंग तक तिलक मार्ग, सी-हैक्सागन से मथुरा रोड तक पुराना किला रोड, सी-हैक्सागन से लेकर मथुरा रोड तक शेरशाह रोड, सी-हैक्सागन से लेकर एसबी भारती मार्ग क्रॉसिंग तक डॉ. जाकिर हुसैन मार्ग, सी-हैक्सागन से लेकर एसबी भारती मार्ग क्रॉसिंग तक पंडारा रोड, सी-हैक्सागन से लेकर क्यू प्वाइंट तक शाहजहां रोड, सी-हैक्सागन से लेकर मानसिंह रोड क्रॉसिंग तक अकबर रोड, सी-हैक्सागन से लेकर जसवंत सिंह रोड क्रॉसिंग तक अशोक रोड, सी-हैक्सागन से लेकर माधव राव सिंधिया मार्ग क्रॉसिंग तक केजी मार्ग और सी-हैक्सागन से लेकर माधव राव सिंधिया मार्ग क्रॉसिंग

Word Count: 11, Character Length: 4247 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-07-Test NO.-22337

यहां से पार्क एंड राइड की सुविधा उपलब्ध कराएगी दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने डीटीसी से पार्क एंड राइड की सुविधा उपलब्ध कराने का आग्रह किया है। डीटीसी भैरो रोड, राजघाट, कनॉट प्लेस और जेएलएन स्टेडियम से सी-हैक्सागन तक पार्क एंड राइड की सुविधा की उपलब्ध कराएगी। नेपाल के गोरखा, जिनकी बहादुरी को लेकर भारतीय सेना के भूतपूर्व थल सेनाध्यक्ष, फील्ड मार्शल सैम होर्मूसजी फ्रेमजी जमशेदजी मानेकशॉ ने कहा था, "अगर कोई ये कहता है कि मुझे मौत से डर नहीं लगता, या तो वह झूठ बोल रहा है, या फिर वह गोरखा है।" मानेकशॉ के इन शब्दों पर 'गोरखा' आज भी खरे उतरते हैं। भारतीय सेना में भर्ती के लिए शुरू की गई 'अग्निपथ' स्कीम पर नेपाल, भरोसा नहीं कर पा रहा है। उसे चिंता है कि चार साल बाद गोरखाओं का क्या होगा। दो पड़ोसी मुल्क, चीन और पाकिस्तान ऐसी साजिशों में लगे हैं कि नेपाल के गोरखा, इंडियन आर्मी का मोह त्याग दें। हालांकि पड़ोसियों की चाल से 'गोरखा' बेखबर नहीं हैं। भारतीय सेना प्रमुख मनोज पांडे अपनी पांच दिवसीय यात्रा पर नेपाल में हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि वे 'अग्निपथ' पर नेपाल की तमाम शंकाओं का निवारण करेंगे। अगर नेपाल को यह भरोसा मिल जाता है कि चार साल के बाद गोरखाओं को किसी भी दूसरी सरकारी सेवा में नियमित किया जाएगा तो वे 'अग्निवीर' बनने के लिए तैयार हो सकते हैं। नेपाल को चाहिए यह गारंटी भारतीय सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है, नेपाल के गोरखाओं में अग्निपथ को लेकर अमूमन वैसे ही सवाल उठ रहे हैं, जैसे शुरुआत में भारतीय युवाओं के जेहन में उठे थे। नेपाल में गोरखा, इस मामले में उतने चिंतित नहीं हैं, जितना कि वहां के राजनीतिक दल। सैन्य मामलों के विशेषज्ञ और एक्स-सर्विसमैन ग्रीवांस सेल के अध्यक्ष साधू सिंह कहते हैं, भारत सरकार को इस मामले में गंभीरता दिखानी

Word Count: 12, Character Length: 3973 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-07-Test NO.-22338

शीतलता और हरियाली के प्रतीक माने जाने वाले जंगल इन दिनों धधक रहे हैं। उत्तराखंड के जंगलों में लगी आग अब इतनी विकराल हो चुकी है कि उन पर काबू पाने के लिए सेना को उतारना पड़ा है। ऐसा नहीं है कि दावानल की घटनाएं पहले नहीं होती थीं। सदियों से पहाड़ इसके गवाह रहे हैं। उत्तराखंड का इतिहास तो यह भी है कि 1920-21 में जब जंगलों पर लोगों के हक-हुकूक खत्म कर दिए गए, तब खुद लोगों ने ही आंदोलन के तहत वनों में आग लगा दिए थे। मगर अब तो हर साल दावाग्नि की समस्या विकराल रूप में सामने आने लगी है। इसकी कुछ खास वजहें हैं। पहली वजह, जलवायु परिवर्तन के कारण ड्राई पीरियड यानी सूखे की अवधि बढ़ गई है। तापमान बढ़ रहा है, जिसके कारण नमी कम हो रही है। नतीजतन, जंगलों में सूखी पत्तियां या टहनियां आसानी से दहक उठती हैं। वन विभाग के आंकड़े बता रहे हैं कि इस साल 1 जनवरी से लेकर 14 फरवरी के बीच जंगलों में आग लगने की 100 से अधिक बड़ी घटनाएं हुई हैं, जिसकी एक बड़ी वजह ड्राई पीरियड और तापमान-वृद्धि है। पहले यह अवधि छोटी होती थी, लेकिन अब जनवरी-फरवरी से लेकर मई-जून तक हम इसका एहसास करते हैं। दूसरी वजह है, सन् 1980 में वन (संरक्षण) कानून में किया गया वह प्रावधान, जिसके तहत पहाड़ों पर 1,000 मीटर ऊंचाई से ऊपर हरे पेड़ों की व्यावसायिक रूप से कटाई प्रतिबंधित कर दी गई। इसका नुकसान यह हुआ कि चीड़ के पेड़ों की संख्या असीमित बढ़ गई। चीड़ दरअसल ऐसा पेड़ है, जो आग बढ़ाने में सहायक माना जाता है। मार्च-अप्रैल से चीड़ की पत्तियां सूखकर नीचे गिरने लगती हैं और तापमान में वृद्धि होने पर आग के फैलाव का एक बड़ा कारण बनती हैं। बेशक, हरे पेड़ों की कटाई बंद होनी चाहिए, लेकिन ऐसा

Word Count: 6, Character Length: 3651 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-07-Test NO.-22339

इसके कारण वन बढ़ते हुए गांवों तक पहुंच गए, जो दावानल की चौथी वजह है। पहले जंगल को रोकने के तमाम उपाय अपनाए जाते थे, लेकिन अब अव्वल तो पहाड़ी गांवों में लोग रहते नहीं, और जो रहते हैं, उनके घरों में एलपीजी गैस आदि की सुविधा बढ़ने से जंगलों पर उनकी निर्भरता खत्म हो गई है। नतीजतन, वे वनों को नियंत्रित करने में खास रुचि नहीं रखते। इसी कारण जंगल की आग अब रिहायशी इलाकों तक पहुंचने लगी है और वनाग्नि की विकरालता काफी ज्यादा बढ़ गई है। ऐसा नहीं है कि इस समस्या का समाधान नहीं निकल सकता। इसके लिए सबसे पहले मजबूत इच्छाशक्ति की दरकार है, फिर सही दिशा में कदम बढ़ाना होगा। सबसे पहले 1980 के वन संरक्षण कानून के प्रावधान ठीक करने होंगे। इसमें 1,000 मीटर की ऊंचाई के ऊपर हरे पेड़ों की कटाई संबंधी प्रतिबंध तत्काल खत्म किए जाने चाहिए। विशेषकर चीड़ के संबंध में तो इसे जरूर हटाना चाहिए और ऐसा प्रावधान करना चाहिए कि चीड़ की कटाई हो सके। इसके साथ-साथ गांव बसाने की तरफ भी ध्यान देना अनिवार्य है। गांवों में आबादी को इतना जागरूक करना ही होगा कि वे पहले की तरह जंगलों का प्रबंधन अपने हाथों में ले लें। तीसरा रास्ता है, वन विभाग को सक्रिय बनाना। पहले यह विभाग जंगलों का प्रबंधन किया करता था, फिर इस पर वन-संरक्षण की जिम्मेदारी डाल दी गई। इसको प्रबंधन का अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। अच्छी बात है कि सरकार अपने तईं कुछ प्रयास कर रही है, पर उसका खास असर नहीं पड़ रहा, इसलिए उसका बहुत फायदा नहीं दिखता। जाहिर है, हमें बुनियादी उपाय करने होंगे, तभी हम जंगलों को जलने से बचा पाएंगे। हमारी खाद्य नियामक एजेंसियों को दबावों का सामना करने में सक्षम बनाने की जरूरत है। खाद्य गुणवत्ता जांचने वालों को अधिक साधन संपन्न, सतर्क और अभेद्य होना

Word Count: 2, Character Length: 3884 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22343

आजकल जैसे उत्पाद बाजार से हमारे निवाले तक पहुंच रहे हैं, उनको लेकर बड़ी चिंता जताई जा रही है। एक हालिया रिपोर्ट पर नाराजगी है कि नेस्ले कंपनी भारत और कई अन्य विकासशील देशों में ऐसे शिशु आहार बेच रही है, जिसमें यूरोप में बेचे जा रहे शिशु आहार की तुलना में शर्करा की मात्रा ज्यादा है। जब यह रिपोर्ट सामने आई, तब हांगकांग व सिंगापुर की नियामक एजेंसियों ने दो भारतीय कंपनियों के कुछ मसालों पर रोक लगा दी, इससे भी चिंता की लहर दौड़ गई। नेस्ले के शिशु आहार सेरेलैक पर रिपोर्ट एक स्विस गैर-सरकारी संगठन पब्लिक आई द्वारा जारी की गई है, जिसने इंटरनेशनल बेबी फूड एक्शन नेटवर्क के साथ मिलकर यह शोध किया है। दरअसल, नेस्ले कंपनी मातृ-दूध का विकल्प पेश करने का दावा करती है। तमाम स्वास्थ्य अधिकारी जिंदगी के पहले छह महीनों तक केवल मां का दूध पिलाने की सलाह देते हैं, क्योंकि इससे आदर्श पोषक संरचना, प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले गुण और बच्चे की आंत में एक स्वस्थ माइक्रोबायोम के विकास में मदद मिलती है। जो कंपनियां मातृ-दूध के विकल्प को बढ़ावा देकर व्यावसायिक अभियान चलाती हैं, वे दरअसल मां और शिशु के स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी सोच को कमजोर करती हैं। कंपनियों ने प्रचार कर रखा है कि मां के दूध के बिना भी शिशु पोषण संभव है। आखिर, यह शिशु आहार संबंधी विवाद क्यों है क्या खाद्य उद्योग खाद्य पदार्थों में शर्करा की मात्रा बढ़ाते हुए स्वास्थ्य संबंधी खतरे की ओर से अपनी आंखें बंद कर ले रहा है यदि हां, तो वह पश्चिमी यूरोप में ऐसा न करने को लेकर क्यों सावधान है वह भारत सहित अनेक विकासशील देशों में ऐसा करने के लिए क्यों आजाद महसूस करता है क्या ऐसा इसलिए है, क्योंकि राष्ट्रीय नियामक एजेंसियों की क्षमता में अंतर है यूरोप की खाद्य नियामक एजेंसियां ज्यादा सतर्क हैं। वे खाद्य

Word Count: 3, Character Length: 4016 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22344

उत्पादक पीढ़ी की उम्मीद धूल में मिल जाती है। यह वही पीढ़ी है, जो हमारे भविष्य की प्रगति की ध्वजवाहक बन सकती है। यहां मसाला से जुड़ी कहानी अलग है। कथित तौर पर हांगकांग और सिंगापुर में नियामक एजेंसियों ने भारतीय मसालों में एथिलीन ऑक्साइड नाम का रासायनिक कैंसर कारक तत्व पाया है। इन दोनों देशों में प्रतिबंध के बाद, मीडिया ने बताया है कि सितंबर 2020 और अप्रैल 2024 के बीच यूरोपीय खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण ईएफएसए ने 527 भारतीय खाद्य उत्पादों में इस रसायन का पता लगाया था। इसका उपयोग मसालों को सुगंधित बनाने के लिए भी किया जाता है। एथिलीन ऑक्साइड के संपर्क में आने से लिंफोमा और ल्यूकेमिया जैसे कैंसर हो सकते हैं। वैसे, पैकेटबंद मसालों को लेकर जो शिकायत आ रही है, उसके पीछे निर्माण की गलत विधि जिम्मेदार है। मसाला प्रसंस्करण का काम जहां होता है, वहां औद्योगिक रासायनों की माजूदगी एक वजह हो सकती है। दूसरी ओर, शिशु आहार की अगर बात करें, तो इसमें जान-बूझकर ज्यादा शर्करा तत्व मिलाए जा रहे हैं। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण कथित तौर पर सेरेलैक के भारतीय और अंतरराष्ट्रीय संस्करणों पर किए गए परीक्षणों की रिपोर्ट जुटाने की कोशिश कर रहा है। यह उन भारतीय मसाला ब्रांडों के देशव्यापी नमूने भी एकत्र कर रहा है, जिन्हें कुछ विदेशी नियामकों ने लाल झंडी दिखाई है। बेशक, मसालों की जांच सक्षम भारतीय प्रयोगशालाओं में की जाएगी, पर यह देखना चाहिए कि भारत में बने खाद्य उत्पादों की जांच के लिए पहले क्या-क्या उपाय किए गए हैं क्या हमारी नियामक एजेंसियों के पास परीक्षण की तमाम जरूरी व्यवस्था है हमें विदेशी संगठनों के खुलासे पर ही क्यों निर्भर रहना चाहिए या विदेशी नियामकों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों से सतर्क क्यों रहना चाहिए जब हम भारत में कुछ बनाते हैं, तो क्या उसकी सही जांच यहीं नहीं करनी चाहिए हमारी

Word Count: 2, Character Length: 4127 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22345

समूची जिंदगी उसकी परछाइयां गुल खिलाती रहती हैं। तमाम मनोवैज्ञानिकों ने इस पर शोध प्रबंध लिखे हैं। नई दिल्ली के अंकुर की तरह उस अबोध का कुसूर क्या था? हमारे चारों ओर ऐसे हतभागी फैले हुए हैं। वे लगातार फैलते जा रहे हैं, लेकिन इसकी रोकथाम के लिए कोई कारगर रणनीति नहीं है। देश की राजधानी दिल्ली में सन् में ऐसे मामले सामने आए थे। अगले साल इनकी संख्या बढ़कर 84 तक पहुंच गई। इस साल अगस्त तक 62 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। मिस्टर ऑटो रोड सेफ्टी इंडेक्स के अनुसार, रोडरेज के मामलों में कोलकाता और मुंबई सबसे आगे हैं। एनसीआरबी और सड़क परिवहन मंत्रालय ने हादसों पर जो रिपोर्ट जारी की है, उससे ऐसा लगता है कि अभी तक उन्हें रोडरेज के मामलों में अलग श्रेणी बनाने की सुध नहीं आई है। यहां यह भी गौरतलब है कि रोडरेज के ज्यादातर मामले तो पुलिस के रोजनामचों तक पहुंच ही नहीं पाते हैं। केवल गंभीर मामलों में ही रिपोर्ट दर्ज कराई जाती है। एक और बात। इस कॉलम के लिए रिसर्च करते वक्त मैंने पाया कि न केवल आंकड़े आधे-अधूरे हैं, बल्कि बेहतरीन शोधार्थियों की भी दृष्टि इस मुद्दे पर नहीं पड़ी है। सरकार और समाज, दोनों की यह बेरुखी भारी पड़ सकती है। समय आ गया है कि हम इसे सामाजिक बुराई मानते हुए नई रणनीति तय करें, पर ऐसा कब होगा? इसके लिए कितने अंकुर और अबोधों को बलि देनी होगी? रोडरेज के ज्यादातर मामले तो पुलिस के रोजनामचों तक पहुंच ही नहीं पाते हैं। केवल गंभीर मामलों में ही रिपोर्ट दर्ज कराई जाती है। एक और बात। इस कॉलम के लिए रिसर्च करते वक्त मैंने पाया कि न केवल आंकड़े आधे-अधूरे हैं, बल्कि बेहतरीन शोधार्थियों की भी दृष्टि इस मुद्दे पर नहीं पड़ी है। सरकार और समाज, दोनों की यह बेरुखी भारी पड़ सकती है।

Word Count: 2, Character Length: 3817 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22349

तो एक ऐसे दौर में, जब पश्चिम एशिया विस्फोटक मुहाने पर खड़ा है और दुनिया के सबसे ताकतवर मुल्क अमेरिका की बागडोर के लिए एक महिला (कमला हैरिस) पूरे दमखम के साथ अपनी दावेदारी पेश कर रही है, यह दलील अचानक मौजूं हो उठी है कि दुनिया में अगर सचमुच शांति चाहिए, तो इसकी निजामत औरतों के हवाले कर दीजिए! यकीनन, इस तर्क के प्रतिकार में कुछ नजीरें पेश की जा सकती हैं, मगर आज भी यही माना जाता है कि महिलाएं मर्दों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील और शांतिकामी होती हैं। फिलीपींस की मिरियम कोरोनेल फेर्रर इसकी नई मिसाल हैं, जिन्हें हाल ही में प्रतिष्ठित रेमन मैगसायसाय अवॉर्ड से नवाजा गया है। फिलीपींस की राजधानी मनीला में पैदा मिरियम आगामी 10 नवंबर को अपने जीवन के 63 साल पूरे कर लेंगी। छह भाई-बहनों के साथ उनका बचपन काफी अच्छा गुजरा था। दोनों बहनें बड़ी थीं, उनके बाद चार भाई पैदा हुए थे। पिता डीन एंटोनियो कोरोनेल की गिनती मुल्क के दिग्गज क्रिमिनल वकीलों में होती थी और मां डोरोटिया सोटो अंग्रेजी की शिक्षिका होने के साथ-साथ उद्यमी भी थीं। लिहाजा, उन सबको हर किस्म की सहूलियतें फराहम थीं। बड़ी बहन शीला से करीब डेढ़ साल छोटी मिरियम का मिजाज बिल्कुल जुदा था। शीला जहां खामोश तबियत की एक पढ़ाकू लड़की थीं, तो वहीं मिरियम बेहद बेबाक और खेल-कूद में माहिर। परिवार का माहौल बेहद खुला और लोकतांत्रिक था। मां दोनों बेटियों को बार-बार यह एहसास कराती रहतीं कि वह उन्हें इसलिए तालीम नहीं दिला रहीं कि वे आगे अपनी जिंदगी रसोईघरों में गर्क करें। पिता भी लैंगिक बराबरी के कायल थे। उन्होंने शीला व मिरियम को साफ-साफ कह दिया था कि वे अपनी जिंदगी में जो कुछ करना चाहती हैं, कर सकती हैं। तब उन्हें कहां इलहाम था कि वह घर के भीतर अपने खिलाफ एक महाज भी खोल

Word Count: 5, Character Length: 3924 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22350

उन्हें कई रातें अपने खेतों में बितानी पड़ीं। अलग-अलग कस्बों में बसे रिश्तेदारों के यहां छिपना पड़ा। फौजी जुल्म बढ़ता गया। सन् 1983 में राष्ट्रपति मार्कोस के मुखर विरोधी निनॉय एक्विनो की हत्या के मामले में जब जनरल फैबियन वेर का मुकदमा लड़ने के लिए मिरियम के पिता को कहा गया, तो उन्होंने अपने पूरे परिवार को बुलाया और उनकी राय पूछी। बड़ी बेटी शीला ने इसका खुलकर विरोध किया, मगर मिरियम का जवाब था, जिस तरह आपने हमें अपने निर्णय की आजादी दी, आपको भी वही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। मिरियम पिता के पेशेवर दाव-पेंच को समझ रही थीं। दरअसल, वह अपने परिवार को आततायी सत्ता से इसी तरह से बचा सकते थे। मिरियम के कई दोस्त फौजी कार्रवाइयों में मार दिए गए, कई महिला कार्यकर्ताओं के साथ बलात्कार हुआ और काफी सारे लोग कैद में सैन्य उत्पीड़न के शिकार हुए। जुल्म जब इंतिहा पर पहुंचा, तो 1986 में पीपुल्स पावर रिवॉल्यूशन के झंडे तले आम अवाम सड़कों पर उमड़ आया। मार्कोस को देश छोड़कर भागना पड़ा। जाहिर है, एक बड़ी फतह तो मिल गई थी, मगर फिलीपींस का इम्तिहान अभी मुकम्मल तौर पर खत्म नहीं हुआ था, क्योंकि मुल्क के अलग-अलग हिस्सों में कई तरह के संघर्ष जारी थे। इस बीच दर्शनशास्त्र में स्नातक मिरियम की शादी हो चुकी थी। जीवनसाथी के रूप में एंथनी के भरोसे और साथ ने उन्हें केंट यूनिवर्सिटी से साउथ-ईस्ट एशियन स्टडीज में मास्टर्स की डिग्री लेने के लिए ब्रिटेन पहुंचा दिया। वहां से लौटने के बाद उन्हें फिलीपींस यूनिवर्सिटी के थर्ड वर्ल्ड स्टडीज सेंटर में बतौर निदेशक काम करने का मौका मिला। पांच वर्ष के उस कार्यकाल में मानवाधिकार, लोकतंत्र और शांति प्रयास से जुड़ी कई अकादमिक गतिविधियों में वह सक्रिय रहीं। बहुत सारे हमवतनों की तरह मिरियम भी चाहती थीं कि फिलीपींस में स्थायी शांति कायम हो। उनकी ईमानदार कोशिशों को साल

Word Count: 4, Character Length: 4108 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22351

पर दस्तखत करने वाले पांच लोगों में से तीन महिलाएं थीं। फिलीपींस यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान की प्रोफेसर रहीं मिरियम कोरोनेल फेर्रर बाद में संयुक्त राष्ट्र के कई शांति अभियानों से भी जुड़ीं। रेमन मैगसायसाय सम्मान हासिल करते हुए मिरियम के शब्द थे- संघर्षों का सबसे अच्छा समाधान कभी किसी एक पक्ष के सफाये से नहीं मिलता, बल्कि सभी पक्षों में एक-दूसरे के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव लाने और साझा जिम्मेदारी का एहसास जगाने से हासिल होता है। स्थायी शांति तो हृदय-परिवर्तन में ही बसती है! कच्ची उम्र में जो बीज मन में पड़ जाते हैं, वही बाद के जीवन में वटवृक्ष की तरह फैल जाते हैं। परिवार हो या समाज, माहौल का बड़ा असर होता है। वैसे जरूरी नहीं कि लगातार मिलने वाला माहौल ही हमेशा प्रेरित करता हो। हो सकता है, जिंदगी में भोगे गए दो-चार शानदार पल ही किसी बच्चे को अपनी ओर खींच ले जाएं। उस दिन शायद यही हुआ था। अंग्रेजों का राज था और उन्हें खुश करने के लिए पटना के एक महल में शाम की पार्टी चल रही थी। कई अमीर, रसूखदार जुटे थे। महफिल में आंखों को सुकून पहुंचाती रोशनी का सिलसिला था। पकवानों की खुशबू रह-रहकर खुशियों में रस घोल रही थी। कहीं संगीत, तो कहीं ठहाके, तो कहीं प्यार की फुसफुसाहट। कहीं गाने-बजाने वाले गुलजार थे, तो कहीं नाचने वालों का जलवा था। ऐसे खुशनुमा माहौल में वह ग्यारह वर्षीय लड़का भी शामिल था। एक पूर्व सूबेदार की औलाद, महल के पास ही शासकीय आवास में मां के साथ रहता था और आसपास पूरी शालीनता से डोलता रहता था, तो उसे कोई टोकता नहीं था। वहां जितने सेवादार थे, सब उसे जानते थे। सुंदर शामियाना, मखमली कालीन, नरम मसनद और जिधर देखो, मुस्कराते मेहमान। महफिल में खुशी का अतिरेक होते ही सेवक आतिशबाजी से इजहार करने लगते थे। लगता था,

Word Count: 6, Character Length: 3948 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-08-Test NO.-22352

चुनाव इसी मतदाता सूची के आधार पर कराए गए। अब अगर वह सूची गलत थी, तो क्या उसी सूची के आधार पर बनी सरकार की वैधता पर सवाल नहीं उठता? यदि वास्तव में मतदाता सूची में कोई सुधार करना था, तो यह लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद और पूरे देश में समान रूप से किया जा सकता था। सिर्फ बिहार को क्यों टारगेट किया गया? जन-प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 मतदाता सूची में नामों को शामिल करने और हटाने के लिए स्पष्ट प्रक्रिया निर्धारित करता है। यह सांप्रदायिक या अटकलबाजी के आधार पर विशेष संशोधनों को अधिकृत नहीं करता है। इस अभ्यास के पीछे कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं दिया गया है। इसके बजाय, अवैध मतदाताओं और सीमा पार से घुसपैठ के अस्पष्ट व निराधार दावे किए गए हैं। अगर इन दावों में रत्ती भर का भी सच है, तो क्या चुनाव आयोग ने गृह मंत्रालय की इस मामले में अक्षमता और असफलता पर कोई सवाल उठाया है? महाराष्ट्र में 2024 और दिल्ली में 2025 के विधानसभा चुनाव से पहले दक्षिणपंथी टिप्पणीकारों और शिक्षाविदों ने अवैध मतदाताओं के बारे में निराधार चिंता जताते हुए संदिग्ध अध्ययन किए। कोई आधिकारिक डाटा इन दावों का समर्थन नहीं करता। अवैध प्रवासियों या फर्जी मतदाताओं के नाम पर भय फैलाना कभी वैचारिक स्थिति हुआ करती थी- अब यह संस्थागत रूप से वंचित करने का एक साधन बन गया है। इस फ्रेमिंग का उपयोग मतदाता सूचियों के आक्रामक व अपारदर्शी संशोधनों को सही ठहराने के लिए किया जाता है, जो असंगत रूप से मुस्लिम, दलित व गरीब प्रवासी समुदायों के मतदाताओं को अपना शिकार बनाते हैं। डॉग व्हिसल राजनीति विशिष्ट समूहों को लक्षित करने की रणनीति से आधिकारिक कार्रवाई में बदलाव- खासकर चुनाव आयोग जैसी सांविधानिक संस्था द्वारा- हमारे जनतंत्र में एक खतरनाक मोड़ है। पैटर्न स्पष्ट है मतदाता सूचियों में हेर-फेर करके व्यवस्थित रूप

Word Count: 5, Character Length: 4060 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22357

अगर अग्निपथ योजना में बदलाव संभव नहीं है तो कम से कम, गोरखाओं को चार साल के बाद किसी दूसरी नौकरी में स्थायित्व की गारंटी देना तो बनता है। भारतीय सेना में 43 गोरखा बटालियनें नेपाल में 'अग्निपथ' को 1947 के समझौते की भावना के खिलाफ बताया जा रहा है। गोरखा, भारतीय सेना का हिस्सा रहे हैं। इसके पीछे केवल, समझौता है, ये कहना भी ठीक नहीं होगा। गोरखाओं को भारतीय सेना में अच्छा वेतन और आकर्षक पेंशन मिलती रही है। इतना ही नहीं, सेना से आने के बाद उन्हें दूसरे सरकारी महकमों में भी जॉब मिल जाती है। इन सबके चलते ही गोरखा, भारत व ब्रिटेन की सेना में शामिल होते हैं। गोरखाओं ने अपने शौर्य को साबित किया है। उन्हें जहां भी भेजा जाता है, वे वहां से विजयी हुए बिना वापस नहीं लौटते। भारतीय सेना में इनकी वफादारी, निष्ठा और ईमानदारी के चर्चे सुने जा सकते हैं। भारतीय सेना में 43 गोरखा बटालियनें हैं, ये कोई छोटी संख्या नहीं है। अगर ये भारतीय सेना का हिस्सा नहीं रहती तो उसका असर देखने को मिलेगा भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे, रविवार को अपने पांच दिवसीय दौरे पर नेपाल पहुंचे हैं। उनका प्रयास है कि नेपाल के राजनीतिक दलों, सामान्य जन और सेना भर्ती की तैयारी में जुटे युवाओं का भ्रम दूर किया जाए। नेपाल सेना प्रमुख प्रभु राम शर्मा के निमंत्रण पर नेपाल पहुंचे मनोज पांडे का राष्ट्रपति विद्या देवी भंडारी और प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा सहित कई प्रमुख लोगों से मुलाकात का कार्यक्रम तय है। उन्हें नेपाली सेना के मानद जनरल रैंक से नवाजा जाएगा। जनरल मनोज पांडे का नेपाल दौरा उस वक्त हो रहा है, जब नेपाल ने पिछले दिनों बुटावल और धारन में गोरखा सैनिकों की भर्ती को स्थगित कर दिया था। नेपाल के राजनीतिक दलों का कहना है कि वे भारत से अग्निपथ

Word Count: 2, Character Length: 3912 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22358

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कहा कि यह गंभीर चिंता का विषय है कि सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66 ए का अब भी उपयोग किया जा रहा है, जबकि इसे 2015 में असांवैधानिक घोषित कर दिया गया है। कोर्ट ने संबंधित राज्यों के मुख्य सचिवों को तीन हफ्ते के भीतर मामले को वापस लेने का निर्देश जारी किया। धारा 66ए के तहत कंप्यूटर डिवाइस के माध्यम से झुंझलाहट, असुविधा, खतरा, बाधा, अपमान, आपराधिक धमकी, दुश्मनी, घृणा या दुर्भावना आदि के उद्देश्य से आपत्तिजनक संदेश भेजने पर तीन साल की कैद और जुर्माना का प्रावधान था। 2015 में शीर्ष अदालत ने इस प्रावधान को असंवैधानिक घोषित कर रद्द कर दिया था। सीजेआई उदय उमेश ललित और जस्टिस एस रवींद्र भट की पीठ ने केंद्र सरकार से कहा कि वह राज्यों से इस प्रावधान का इस्तेमाल नहीं करने के लिए कहे। इसके अलावा केंद्र सरकार के वकील जोहेब हुसैन को संबंधित राज्यों के मुख्य सचिवों से संपर्क करने का निर्देश दिया सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश तब दिया है, जब याचिकाकर्ता संगठन पीयूसीएल की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील संजय पारिख ने श्रेया सिंघल मामले में फैसला आने के बाद भी आईटी एक्ट की धारा 66ए के तहत दर्ज मामलों का ब्योरा पेश किया। तीन हफ्ते के बाद होगी सुनवाई सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कहा कि आधिकारिक घोषणा के बाद भी इस धारा में केस दर्ज होना आश्चर्यजनक है। पीठ ने केंद्र को राज्यों के मुख्य सचिवों से संपर्क करके जल्द से जल्द उपचारात्मक उपाय करने के लिए कहा। साथ ही सभी राज्यों और हाईकोर्ट को नोटिस भी जारी किया। पीठ ने कहा कि अदालत अब इस मामले पर तीन हफ्ते के बाद विचार करेगी। हजारों मामले हुए हैं दर्ज : याचिकाकर्ता संगठन पीयूसीएल ने दावा किया कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भी देश में हजारों

Word Count: 0, Character Length: 3887 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22359

अधिकारियों की पदोन्नति के लिए यथास्थिति बनाए रखने को लेकर 15 अप्रैल, 2019 के आदेश का उल्लंघन पर अवमानना हुआ था। सीजेआई यूयू ललित और जस्टिस एस रवींद्र भट की पीठ ने कहा, हमें इस अवमानना याचिका पर विचार करने का कोई कारण नहीं दिखता है। सुप्रीम कोर्ट ने अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल और याचिकाकर्ता देबानंद साहू की ओर से पेश हुए कुमार परिमल को सुनने के बाद यह आदेश पारित किया। सुप्रीम कोर्ट में दायर हलफनामे में भल्ला ने कहा था कि कोई अवमानना नहीं हुई है। सजा कम कर अनुचित सहानुभूति से कानून पर भरोसा होगा प्रभावित सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अपराध की गंभीरता उचित सजा तय करने के लिए प्रमुख विचार होना चाहिए, यदि सजा को न्यूनतम तक कम करके अनुचित सहानुभूति दिखाई जाती है तो यह कानून लोगों की आस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। शीर्ष अदालत ने कहा कि अदालत को हमेशा सजा की गंभीरता और परिस्थितियों पर गौर करना होता है। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस एएस ओका की एक पीठ, बॉम्बे हाई कोर्ट के एक फैसले के खिलाफ सुनवाई कर रही थी। सुप्रीम कोर्ट ने सजा को एक साल के अलावा और छह महीने के लिए बढ़ा दिया। दरअसल, 1992 में हाईकोर्ट ने चार अभियुक्तों की सजा को तीन साल से घटाकर एक साल कर दिया था। शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में कहा कि अभियुक्तों में से एक की मृत्यु हो गई थी और शिकायतकर्ता द्वारा दायर अपील उसके खिलाफ समाप्त हो जाती है। जहां तक सजा का संबंध है, न्यायिक विवेक हमेशा विभिन्न विचारों द्वारा निर्देशित होता है जैसे कि अपराध की गंभीरता, परिस्थितियां जिनमें अपराध किया गया था, और अभियुक्त की पृष्ठभूमि। निचली अदालत ने गंभीरता से नहीं लिया पीठ ने पाया कि अपीलकर्ता के शरीर पर 11 जख्म थे। लेकिन गंभीर जख्म के बावजूद निचली अदालत ने

Word Count: 0, Character Length: 3898 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22363

जबकि संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी टीम (आईएईए) क्षेत्र के हालात का आकलन सुरक्षा परिषद में पेश करने वाली है। यूक्रेन और रूस दोनों ही देश इस संयंत्र के आसपास हो रही बमबारी को लेकर एक-दूसरे पर आरोप लगाते हुए इसे पहले ही बेहद खतरनाक बता चुके हैं। बता दें कि इस संयंत्र को रूस ने 24 फरवरी को यूक्रेन पर किए हमले के तुरंत बाद कब्जे में ले लिया था और फिलहाल यहां यूक्रेनी कर्मचारी काम कर रहे हैं। सरकारी कंपनी एनर्गोतोम ने कहा है कि बिजली इकाई (रिएक्टर) नंबर-6 को अनलोड कर ग्रिड से काट दिया गया है। संयंत्र में लगे छह रिएक्टरों में से यह अंतिम इकाई ही काम कर रही थी जिसे बंद कर दिया गया है। अधिक गोलाबारी से परमाणु तबाही का भय जपोरिझिया परमाणु संयंत्र में दो सप्ताह में दूसरी बार बिजली काटी गई है। इसे लेकर कीव ने जहां मॉस्को पर क्षेत्र को परमाणु तबाही के कगार पर धकेलने का आरोप लगाया वहीं रूस फिलहाल आईएईए टीम की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दी गई रिपोर्ट का इंतजार कर रहा है। दोनों देश एक-दूसरे पर क्षेत्र में एटमी तबाही का आरोप लगा रहे हैं। उधर, जेलेंस्की ने कहा कि रूस इस बात की परवाह नहीं करेगा कि आईएईए क्या कहेगा, वह यहां बड़े हमले जारी रखेगा। उन्होंने कहा, अधिक गोलाबारी से क्षेत्र में परमाणु भय की आशंका बढ़ेगी। खारकीव पर रूसी मिसाइल हमले में 3 मरे रूसी मिसाइल हमले में खारकीव क्षेत्र में एक बुजुर्ग महिला समेत तीन लोग मारे गए हैं। क्षेत्र के गवर्नर ओलेह सिनेहुबोव ने टेलीग्राम एप पर इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा, औद्योगिक जिले में एक दो मंजिला इमारत क्षतिग्रस्त हो गई और एक निजी आवासीय भवन भी तबाह हो गया है। इसमें रह रही 73 वर्षीय महिला की मौत हो गई है। इसके अलावा खारकीव को उत्तरमें

Word Count: 3, Character Length: 3865 characters

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22364

कोरिया से कितने हथियार खरीदना चाहता है। इससे पहले उत्तर कोरिया ने देश के पूर्व में रूसी कब्जे वाले क्षेत्रों के पुनर्निर्माण में मदद के लिए मजदूर भेजने को लेकर भी रुचि दिखाई थी।राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनकैप) में शामिल और इससे बाहर रखे शहरों के पीएम 2.5 प्रदूषण स्तर में खास फर्क नहीं है। यह खुलासा ब्लू स्काय डे पर नई रिपोर्ट जारी कर सेंटर फॉर साइंस एंड नवायरनमेंट (सीएसई) ने किया है। एनकैप के तहत देश में 2017 के मुकाबले साल 2024 तक पीएम 2.5 का स्तर 20 प्रतिशत और पीएम 10 का स्तर 30 प्रतिशत घटाने का लक्ष्य रखा गया है। पीएम 2.5 ऐसे प्रदूषण तत्व हैं, जो आकार में 2.5 माइक्रोमीटर से छोटे होते हैं। वे सांस के साथ हमारे शरीर में दाखिल होकर गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं। एनकैप शहरों में गाजियाबाद सबसे ज्यादा प्रदूषित मिला इसके बाद दिल्ली थी। 8 एनकैप और 16 गैर-एनकैप शहरों में प्रदूषण क्षेत्रीय औसत से अधिक मिला। अध्ययन : शिशु में बढ़ा मोटापा व मधुमेह का जोखिम एक चिकित्सीय अध्ययन में पता चला है कि जन्म से छह महीने के बीच वायु प्रदूषण के संपर्क में रहने वाले बच्चों में एलर्जी, मोटापा और मधुमेह का खतरा बढ़ सकता है। यहां तक कि इनमें मस्तिष्क विकास पर भी असर पड़ सकता है। मेडिकल जर्नल गट माइक्रोब्स में प्रकाशित इस अध्ययन में कहा है...शिशु के पेट में मौजूद बैक्टीरिया प्रभावित होने के कारण अन्य जोखिम बढ़ जाते हैं। कोलोराडो बोल्डर विवि के सहायक प्रोफेसर तान्या एल्डरेटे ने बताया, बच्चों में वायु प्रदूषण जोखिम, विकास और महत्वपूर्ण प्रभावों के साथ पेट में मौजूद माइक्रोबायम पर गंभीर असर डालता है। अध्ययन में शोधकर्ताओं ने दक्षिणी कैलिफोर्निया में 103 शिशुओं के मल नमूना का विश्लेषण किया था जिसमें उन्होंने पीएम 2.5 और पीएम 10 प्रदूषित कण मिले। नाइट्रोजन डाइऑक्साइड जैसे रासायनिक कण भी शामिल थे।

Word Count: 1, Character Length: 4090 characters

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22365

कहना है कि फार्मा कंपनियों को यह भी उम्मीद है कि इस तकनीक की मदद से संक्रमण के हल्के मामलों को रोक सकते हैं और इसके प्रसार को भी नियंत्रण में लाया जा सकता है। इसे स्टेरलाइजिंग इम्यूनिटी के रूप में जाना जाता है। कुछ म्यूकोसल टीके पहले से ही अन्य बीमारियों के लिए स्वीकृत हैं, जिनमें इन्फ्लूएंजा के खिलाफ स्प्रे करने योग्य टीका भी शामिल है। फिलहाल सुई वाली टीका ज्यादा असरदार विशेषज्ञों के अनुसार, मौजूदा समय में मांसपेशियों के जरिये दी जाने वाले कोरोना रोधी टीका काफी बेहतर परिणाम दिखा रहे हैं। नई दिल्ली स्थित आरएमएल अस्पताल के वरिष्ठ डॉ. अमित कुमार का कहना है कि इसका एक कारण मांसपेशियों में टीका इंजेक्ट करना है। उन्होंने बताया कि इंट्रा मस्कुलर शॉट्स एक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया का संकेत देते हैं, जिसमें टी कोशिकाएं शामिल हैं। इससे दवा सीधे कोशिकाओं में पहुंचती है। 20 टीके परीक्षण तक पहुंचे लंदन की हेल्थ एनालिटिक्स कंपनी एयर फिनिटी के अनुसार, दुनियाभर में अब तक करीब 20 नाक से दिए जाने वाले टीके परीक्षण तक पहुंचे हैं, जिनमें से चार भारत व ईरान और दो चीन में तीसरा अध्ययन पूरा कर चुके हैं। कुछ अभी परीक्षण की स्थिति में है। एहतियाती खुराक के रूप में भी कारगर नाक के जरिये दिया जाने वाला टीका इनकोवैक एहतियाती खुराक के रूप में भी 94 फीसदी तक कारगर है। यह टीका निजी व सरकारी, सभी केंद्रों में मिलेगा। गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र व तेलंगाना में उत्पादन होगा। इसका भंडारण भी आसान है। 2 से 8 डिग्री सेल्सियस पर रखा जा सकता है। देशभर के 14 अस्पतालों में चार हजार से ज्यादा लोगों पर इस टीके का अध्ययन किया गया। यह चिंपैंजी एडिनोवायरस वेक्टर तकनीक पर तैयार हुआ है और कोवाक्सिन का उन्नत स्वरूप है। वायरस को यह टीका ऊपरी श्वसन तंत्र में ही रोक लेता है वायरस। देश का

Word Count: 0, Character Length: 4041 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-09-Test NO.-22366

दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों व गरीबों को बाहर रखना। अर्थशास्त्री अबुसालेह शरीफ द्वारा कर्नाटक में किए गए मतदाता सूची ऑडिट में पता चला कि लगभग 20 प्रतिशत वयस्क मुस्लिम मतदाता सूची से गायब थे। यह व्यवस्थागत बहिष्कार है। ऐसा लगता है, राज्य मतदाता आधार को आकार देने के लिए नौकरशाही के औजारों का इस्तेमाल कर रहा है। लोकतंत्र न सिर्फ पिछड़ रहा है, बल्कि धीरे-धीरे खत्म भी हो रहा है। सत्ता के इस दुरुपयोग को बिना चुनौती के आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। चुनाव आयोग का आदेश है कि बिहार की संपूर्ण मतदाता सूची रद्द करते हुए प्रत्येक नागरिक को नए सिरे से आवेदन देना होगा। बिहार में आठ करोड़ योग्य मतदाताओं में से 59 प्रतिशत 40 वर्ष या उससे कम आयु के हैं। इसका अर्थ है, लगभग चार करोड़, 76 लाख लोगों को 31 दिनों में अपनी नागरिकता सिद्ध करनी होगी। इन लोगों को तीन समूहों में बांटा जा सकता है- 19 लाख लोगों को अपनी नागरिकता के दस्तावेज देने होंगे, चार करोड़ से कुछ अधिक लोगों को अपने माता-पिता की नागरिकता के दस्तावेज और 50 लाख से अधिक युवाओं को अपने माता-पिता के नागरिकता संबंधी प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने होंगे। चुनाव आयोग द्वारा मान्य 11 दस्तावेजों की वास्तविक स्थिति चौंकाने वाली है। स्वयं भारत सरकार के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे एनएफएचएस -3 के अनुसार, 2001 से 2005 में जन्मे बच्चों में से केवल 2.8 प्रतिशत के पास जन्म प्रमाणपत्र था। एनएफएचएस-2 के मुताबिक, आज 40-60 वर्ष के पुरुषों में से केवल 10-13 फीसदी ने हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी की है। वहीं मानव विकास सर्वे के अनुसार, अनुसूचित जातियों के लगभग 20 प्रतिशत और अन्य पिछड़े वर्ग के करीब 25 फीसदी लोगों के पास ही जाति प्रमाणपत्र था। स्पष्ट है, अधिकांश लोगों के पास ऐसा कोई दस्तावेज नहीं है, जिससे उनकी जन्मतिथि और जन्म-स्थान सिद्ध हो सके। आधार

Word Count: 9, Character Length: 4066 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22371

जवाब मिला, मेरा नाम दीन मोहम्मद है, मेरे पिता आपकी सेना में सूबेदार थे। कुछ ही दिनों पहले जंग में शहीद हो गए। बेकर ने बिना समय गंवाए पूछा, तुम हम यूरोपीयन के साथ कैसे जुड़ना चाहते हो? लड़के ने जवाब दिया, सेवा का मौका दिया जाए, निराश नहीं करूंगा। दीन मोहम्मद को कंपनी की सेना के साथ रख लिया गया। मौका मिला, तो दीन की प्रतिभा निखरकर सामने आने लगी। पिता ने बाल संवारने, चंपी करने और रोजमर्रा की आयुर्वेदिक औषधियों के बारे में पहले ही बता रखा था। दीन की उपयोगिता को मानो पंख लग गए। अक्सर दिन में जंगी आलम होता था, पर रात महफिलों में ढलती थी। दीन तरक्की करते सूबेदार हो गए, पर अचानक इवान ने नौकरी छोड़ देश लौटने का फैसला ले लिया। दीन को दुख हुआ, पर उन्होंने भी साथ जाने का इरादा जता दिया। बेकर से ही ऐसी जिंदगी हासिल हुई थी, तो बेकर का साथ छोड़ना गवारा न था। दीन की उम्र 25 होगी और बेकर की 33, दोनों ने भारत छोड़ दिया। मेहनत-लगन से भरपूर बिहारी दीन ने पराए देश के साथ खुद को ढालने के लिए फिर स्कूल जाना शुरू किया। वहीं मन लगाया, जबकि स्वदेश लौटकर बेकर शायद भारत को ही खोजते रहे, ऐसे बीमार पड़े कि 37 की उम्र में चल बसे। खैर, दीन ने नए माहौल में खुद को ढाल लिया। वहीं एक अंग्रेजन को भगाकर विवाह किया और अंग्रेजी में पहली किताब लिखी- द ट्रेवल्स ऑफ दीन मोहम्मद। यह किसी भारतीय द्वारा लिखी पहली अंग्रेजी किताब है। कभी हार न मानने वाले दीन को अपने देश के व्यंजन अक्सर याद आते थे, भारत से लौटे अफसर भी भारतीय व्यंजनों के लिए मचल उठते थे। वहां न रोटी मिलती थी, न मुगलई कबाब। तब पुरुषार्थ से भरे दीन ने लंदन के जॉर्ज स्ट्रीट पर हिन्दुस्तानी कॉफी

Word Count: 2, Character Length: 3646 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22372

जवाब मिला, मेरा नाम दीन मोहम्मद है, मेरे पिता आपकी सेना में सूबेदार थे। कुछ ही दिनों पहले जंग में शहीद हो गए। बेकर ने बिना समय गंवाए पूछा, तुम हम यूरोपीयन के साथ कैसे जुड़ना चाहते हो? लड़के ने जवाब दिया, सेवा का मौका दिया जाए, निराश नहीं करूंगा। दीन मोहम्मद को कंपनी की सेना के साथ रख लिया गया। मौका मिला, तो दीन की प्रतिभा निखरकर सामने आने लगी। पिता ने बाल संवारने, चंपी करने और रोजमर्रा की आयुर्वेदिक औषधियों के बारे में पहले ही बता रखा था। दीन की उपयोगिता को मानो पंख लग गए। अक्सर दिन में जंगी आलम होता था, पर रात महफिलों में ढलती थी। दीन तरक्की करते सूबेदार हो गए, पर अचानक इवान ने नौकरी छोड़ देश लौटने का फैसला ले लिया। दीन को दुख हुआ, पर उन्होंने भी साथ जाने का इरादा जता दिया। बेकर से ही ऐसी जिंदगी हासिल हुई थी, तो बेकर का साथ छोड़ना गवारा न था। दीन की उम्र 25 होगी और बेकर की 33, दोनों ने भारत छोड़ दिया। मेहनत-लगन से भरपूर बिहारी दीन ने पराए देश के साथ खुद को ढालने के लिए फिर स्कूल जाना शुरू किया। वहीं मन लगाया, जबकि स्वदेश लौटकर बेकर शायद भारत को ही खोजते रहे, ऐसे बीमार पड़े कि 37 की उम्र में चल बसे। खैर, दीन ने नए माहौल में खुद को ढाल लिया। वहीं एक अंग्रेजन को भगाकर विवाह किया और अंग्रेजी में पहली किताब लिखी- द ट्रेवल्स ऑफ दीन मोहम्मद। यह किसी भारतीय द्वारा लिखी पहली अंग्रेजी किताब है। कभी हार न मानने वाले दीन को अपने देश के व्यंजन अक्सर याद आते थे, भारत से लौटे अफसर भी भारतीय व्यंजनों के लिए मचल उठते थे। वहां न रोटी मिलती थी, न मुगलई कबाब। तब पुरुषार्थ से भरे दीन ने लंदन के जॉर्ज स्ट्रीट पर हिन्दुस्तानी कॉफी

Word Count: 2, Character Length: 3646 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22373

वह मौका भी जल्दी आया। बेकर ने गौर किया और नाम पूछा। हाउस नाम से ब्रितानिया के पहले हिन्दुस्तानी रेस्तरां का आगाज किया। दीन मोहम्मद (1759-1851) ने ही अंग्रेजों को चंपी करना सिखाया। चंपी से शैंपू का जन्म हुआ और जटाधारी अंग्रेजों को सुनहरी जुल्फेंलहराने का मौका मिला। उन्हें आज भी इंग्लैंड में मसाज थेरेपी वाले डॉक्टर के रूप में याद किया जाता है और दुनिया में कामयाब बिहारियों की जब गिनती होती है, तब दीन मोहम्मद का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाता है। अंग्रेज तब तक हिन्दुस्तानियों को अपने देश से जबरन लौटा दिया करते थे, पर अंग्रेजों ने अपने सम्राट तक पहुंच रखने वाले इस बिहारी को कभी भारत लौटने न दिया। आलोचना मुझे सीरियसली ले या न ले, मैं इसको सीरियसली लेता हूं। पचास साल से आलोचना में खुट-खुट करता आ रहा हूं, सो इसकी कीमत भी समझता हूं। इसमें अपना न्यस्त स्वार्थ भी है कि कविता-कहानी रहे न रहे, लेकिन आलोचना तो रहेगी और अपनी दुकान चलती रहेगी। फिर कोई चेला इस आलोचक को भी आलोचना के आधार स्तंभों में शुमार कर लेगा, ताकि अगली पीढ़ियां पढ़ती रहें और जानती रहें कि अपन ने भी आलोचना में कैसे-कैसे माइल स्टोन स्थापित किए। यूं भी हिंदी आलोचना की पांच-सात सीटें अभी तक खाली पड़ी हैं, जिनको देखकर कुछ आलोचक खुलकर कह चुके हैं कि उनके बाद यह कुरसी मेरी, मेरे बाप की अब सिर्फ मैं ही तो बचा हूं आज मैं ही शर्मा, मैं ही साही, मैं ही सिंह, मैं ही पांडे, श्रीवास्तव और मलयज हूं। इनमें से कई आलोचना के पार्ट टाइमर हैं। कभी आलोचना करते हैं, तो कभी कविता करने लगते हैं और कई आलोचक तो अपनी आलोचना में खुद की ही कविता उद्‌धृत कर इतिहास में घुसने के चक्कर में रहते हैं। ऐसों को मैं फिफ्टी-फिफ्टी छाप मानता हूं- फिफ्टी आलोचक, फिफ्टी कवि!

Word Count: 7, Character Length: 3880 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22374

बुधवार अपने देश में अनेक जगहों पर कुछ सेवाओं के प्रभावित होने का दिन रहा। कोई दोराय नहीं कि पिछले वर्षों में देश में बंद और हड़ताल की संख्या घटी है, क्योंकि संगठित क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से स्थितियां सुधरी हैं। वेतन आयोगों का सतत लाभ केंद्रीय और अन्य सरकारी कर्मचारियों को मिलता रहा है। केंद्रीय श्रम संगठनों की अगर बात करें, तो पिछले साल फरवरी के बाद पहली बार हड़ताल देखी गई। विशेष रूप से बैंकिंग, बीमा, डाक और कोयला खनन क्षेत्र में ज्यादा असर दिखा है। पूरे देश में तो न सही, पर जहां-जहां केंद्रीय कर्मचारी संगठन मजबूत हैं, वहां काम रुके या प्रभावित हुए। कर्मचारी संगठनों की पहली शिकायत यही है कि कुछ ऐसे फैसले हो रहे हैं, जो श्रम बल के हितों के विरुद्ध हैं। वैसे यहां यह सवाल हो सकता है कि केंद्रीय कर्मचारियों को सभी श्रमिकों की चिंता है या केवल अपनी? वार्षिक श्रमिक सम्मेलन आयोजित करने की मांग भी जोर-शोर से की गई। श्रमिक संगठनों ने आरोप लगाया है कि आर्थिक नीतियां मजदूरों को नुकसान पहुंचा रही हैं। बेरोजगारी, महंगाई बढ़ने की शिकायत करते हुए श्रम-मूल्यों में गिरावट रोकने के लिए भी गुहार लगाई गई है। वैसे, इस हड़ताल में सारे श्रमिक संगठन शामिल नहीं थे। वाम या समाजवादी विचार के संगठन ही हड़ताल पर गए। पिछले कुछ दशकों से भारत में श्रमिक संगठनों में एकता का अभाव देखा जा रहा है। हालांकि, सोचने वाली बात है कि राष्ट्रव्यापी हड़ताल की बात क्यों आई? आमतौर पर देखा गया है कि संसद सत्र या चुनाव से पहले इस तरह की हड़तालें होती हैं। अभी दोनों ही स्थितियां हैं, संसद सत्र भी शुरू होने वाला है और बिहार विधानसभा के लिए चुनाव भी होने हैं। अत: ऐसे मौकों पर मजदूर दशकों से अपनी बात रखते रहे हैं। इसे सकारात्मक रूप में ही लेना चाहिए, हालांकि

Word Count: 3, Character Length: 3968 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22375

में आठवें वेतन आयोग के गठन की घोषणा हुई है। कर्मचारियों के वेतन में दो से तीन गुना वृद्धि हो सकती है। वास्तव में, चिंता संगठित क्षेत्र से ज्यादा असंगठित क्षेत्र की होनी चाहिए। बहरहाल, हड़ताल के अलावा बिहार बंद भी चर्चा का विषय है। आगामी चुनाव की वजह से भी बिहार की राजनीति गर्माने लगी है। चुनाव आयोग वहां मतदाता सूची का पुनरीक्षण कर रहा है और विपक्षी दल इसका मुखर विरोध कर रहे हैं। विपक्षी दलों को चुनाव आयोग की यह कवायद मंजूर नहीं है। बिहार बंद के चलते अनेक जगह ट्रेन और सड़क यातायात प्रभावित हुआ है। विपक्षी नेताओं ने पटना में रैली निकाली है। इससे भी खास बात यह है कि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट सुनवाई के लिए सहमत हो गया है। इस पर जल्द फैसला आने की उम्मीद है। अत: सियासी बंद के बजाय विरोध के दूसरे तरीके आजमाए जा सकते हैं। वैसे पहले की तुलना में बंद की राजनीति भी कम हुई है और यह देश के लिए सुखद संकेत है। भारत के साथ संभावित व्यापार समझौते की खबरों के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फिर से टैरिफ (सीमा शुल्क) बढ़ाने की धमकी दी है। स्टील और एल्युमीनियम के बाद उन्होंने तांबे पर 50 फीसदी, साथ ही अगले साल से आयातित दवाओं पर 200 फीसदी तक शुल्क-वृद्धि की चेतावनी दी है। बेशक, ऐसे बयानों पर अभी स्पष्टता आनी शेष है, लेकिन सीमा शुल्क में यदि इस तरह की बढ़ोतरी होती है, तो भारत पर भी इसका कुछ हद तक असर पड़ सकता है, खासकर दवा उद्योग पर। दरअसल, भारत का सबसे बड़ा दवा बाजार अमेरिका ही है। वित्त वर्ष 2025 में उसने 9.8 अरब डॉलर की दवाइयां मंगवाई थीं, जो पिछले साल के मुकाबले 21 फीसदी ज्यादा थी। भारत जितनी दवाइयां दूसरे देशों को बेचता है, उसका 40 फीसदी हिस्सा अमेरिकी बाजार

Word Count: 1, Character Length: 3767 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22376

ज्यादा तांबा सऊदी अरब (26 प्रतिशत) और चीन (18 प्रतिशत) अमेरिका भेजते हैं। मगर अच्छी बात यह है कि तांबे की गिनती काफी महत्वपूर्ण खनिजों में होती है और इसका ऊर्जा, विनिर्माण व बुनियादी ढांचे सहित तमाम क्षेत्रों में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है। नए शुल्क के बाद यदि अमेरिकी बाजार में इसकी मांग घटती भी है, तो घरेलू उद्योग से उसकी भरपायी की जा सकेगी। लिहाजा, ट्रंप यदि अपनी धमकी को अमल में लाते हैं, तब भी हमें कुछ हद तक ही परेशानी होगी। मगर मूल सवाल तो यह है कि क्या वह ऐसा करेंगे? दरअसल, ट्रंप अब तक टैरिफ को लेकर अपने बयान बार-बार बदलते रहे हैं। वह कभी नई टैरिफ का एलान करते हैं, तो अगले ही दिन उसे टाल देने की बात भी कहने लगते हैं। इससे लगता है कि वह दो कदम आगे बढ़ते हैं और एक कदम पीछे हट जाते हैं। उनकी उलझन वाजिब भी दिखती है। असल में, उन्होंने पद संभालने के साथ ही सख्त टैरिफ नीति लाने का एलान किया था। उनका मानना था कि ऐसा कहने से तमाम देश अमेरिका के साथ नया समझौता करने को बाध्य होंगे और वाशिंगटन को अपने व्यापार-घाटा से पार पाने में मदद मिलेगी। उस वक्त उन्होंने 90 दिनों में 90 समझौते करने की उम्मीद जताई थी। मगर ऐसा हो नहीं सका। अब तक बमुश्किल दो-तीन समझौते ही वह कर सके हैं, वे भी पूरी तरह से लागू नहीं हो सके हैं। मसलन, ब्रिटेन व वियतनाम के साथ उन्होंने संधि का एलान किया, जबकि चीन के साथ सीमित प्रावधानों पर सहमति बन सकी है। जाहिर है, ट्रंप अपनी नीतियों पर मनमर्जी आगे नहीं बढ़ सके हैं। उनकी यह सोच साकार होती नजर नहीं आ रही कि सख्त टैरिफ नीति के जवाब में अन्य देश अमेरिका के आगे झुकने को मजबूर होंगे। अब तो उनके

Word Count: 3, Character Length: 3635 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22380

प्रकरण में न केवल आयुर्वेद, बल्कि एलोपैथी की दुनिया को भी सबक लेने की जरूरत है। एलोपैथी को सफलतम व्यावहारिक उपचार विधि माना जाता है, पर यह नहीं मानना चाहिए कि वह सोलह आना सही है। आईएमए अध्यक्ष ने अहंकार और दुस्साहस का प्रदर्शन करते हुए यहां तक कह दिया था कि न्यायालय अस्पष्ट और अप्रासंगिक टिप्पणी कर रहा है और देश के चिकित्सा पेशे के खिलाफ व्यापक रुख अपनाना सर्वोच्च न्यायालय को शोभा नहीं देता है। जाहिर है, उनकी यह टिप्पणी बड़बोलापन भी है। हमने कोविड महामारी के समय ही देखा है कि किस तरह से चिकित्सा जगत में अफरातफरी का जानलेवा माहौल था। हर सांस का सौदा किया जा रहा था, मगर किसी अस्पताल या किसी चिकित्सक पर शायद ही आंच आई। गंभीर मरीजों पर नानाविध अपुष्ट प्रयोग किए गए और न जाने कितने मरीजों को अपनी मौत मरने के लिए छोड़ दिया गया। चिकित्सा क्षेत्र की कमियों का खमियाजा स्वयं चिकित्साकर्मियों ने भी बड़ी संख्या में भुगता था। एलोपैथी स्वयं को संत-सज्जन मानकर दूसरी चिकित्सा विधाओं को निशाना न बनाए, तो बेहतर है। सर्वोच्च न्यायालय ने भ्रामक विज्ञापन मामले का यथोचित विस्तार किया है। उन सभी उत्पादों की जांच होनी चाहिए, जो भ्रामक विज्ञापन जारी करते रहे हैं और जनता को धोखा देते रहे हैं। इसी से जुड़ा एक मामला कोविड वैक्सीन का है। ब्रिटिश दवा कंपनी एस्ट्राजेनेका ने स्वीकार किया है कि उसकी कोविड वैक्सीन दुष्प्रभाव पैदा कर सकती है। वैक्सीन निर्माता ने अदालत में कहा है कि कोविशील्ड ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है, जिससे रक्त के थक्के जम सकते हैं और प्लेटलेट काउंट कम हो सकता है। ध्यान रहे, एस्ट्राजेनेका को ब्रिटेन में मुकदमे का सामना करना पड़ रहा है कि उसके टीके के चलते कई लोगों की जान गई है। भारत में किसी दवा कंपनी से मुआवजे के लिए कोई आगे नहीं आया

Word Count: 1, Character Length: 4013 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22381

भारत के गोवा मूल की सुएला ब्रेवरमैन को शामिल कर उन्हें गृह मंत्री का पद सौंपा है। सुएला अब तक अटार्नी जनरल थीं। कंजरवेटिव पार्टी की नेता लिज ट्रस ने मंगलवार को बैरिस्टर (अधिवक्ता वकील) सुएला ब्रेवरमैन को गृहमंत्री नियुक्त करने के अलावा अपनी कैबिनेट में पूर्व में शिक्षा मंत्री रहे जेम्स क्लेवरली को अब विदेश मंत्रालय का जिम्मा दिया है। बेन वालेस को रक्षा मंत्री बरकरार रखा है। विंडी मोर्टन को चीफ व्हिप बना दिया गया है। क्वासी क्वारटेंग को वित्त मंत्री बनाया गया है। थेरेसे कॉफे स्वास्थ्य मंत्री और उपप्रधानमंत्री भी हैं। कौन हैं सुएला ब्रेवरमैन, पहले भी ब्रिटेन सरकार में थीं कार्यरत सुएला ब्रिटेन सरकार में पहले भी कई पदों पर काम कर चुकी हैं। 42 सुएला ब्रेवरमैन बोरिस जॉनसन के नेतृत्व वाली सरकार में अटॉर्नी जनरल के पद पर काम कर रही थीं। अब लिज ट्रस ने भी उनको नई सरकार की शीर्ष टीम में शामिल किया है। ब्रेवरमैन के अलावा भारतीय मूल की प्रीति पटेल पर भी बड़े पद को लेकर फैसला किया जाना है। ब्रिटेन का गृहमंत्री नियुक्त किए जाने के करीब पांच घंटे पहले सुएला ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर एक ट्वीट के माध्यम से लिज ट्रस को कंजरवेटिव पार्टी का नेता चुने जाने और प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने पर बधाई दी थी। इस ट्वीट में उन्होंने लिज ट्रस और महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की फोटो भी शेयर की थी। ब्रेवरमैन ने जुलाई में अपने एक राजनीतिक अभियान के लॉन्च वीडियो में अपने माता-पिता के बारे में कहा था कि वे ब्रिटेन से प्यार करते थे। उन्हें यहां आशा दिखाई दी थी।उन्हें यहां सुरक्षा मिली। इस देश ने उन्हें मौका दिया है। मुझे लगता है कि मेरी पृष्ठभूमि वास्तव में राजनीति के प्रति मेरे दृष्टिकोण से सूचित है। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से लॉ में डिग्री प्राप्त की सुएला ब्रेवरमैन ने कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से

Word Count: 1, Character Length: 4148 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22382

अनंतनाग के बिजबिहाड़ा इलाके में मुठभेड़ के दौरान दो आतंकी मारे गए। अन्य की तलाश में सुरक्षाबलों ने अभियान चलाया है। दोनों की पहचान करवाई जा रही है। सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि जिले के थजीवारा इलाके में संदिग्धों के होने की सूचना स्थानीय पुलिस को मिली थी। इसके बाद पूरे क्षेत्र में तलाशी अभियान और चेकिंग शुरू की गई। एक ठिकाने के पास पुलिस को कुछ हलचल नजर आई। इसके बाद फायरिंग शुरू हो गई। पुलिस ने जवाबी कार्रवाई करते हुए दो आतंकियों को मार गिराया है।इससे पहले मंगलवार को अनंतनाग जिले में ही सुरक्षा बलों ने हिजबुल मुजाहिदीन के दो आतंकियों को मार गिराया था। मारे गए आतंकी टेरिटोरियल आर्मी के दो जवानों की हत्या समेत सुरक्षाबलों पर हमले और नागरिकों पर अत्याचार के कई मामलों में शामिल थे मारे गए आतंकियों से भारी मात्रा में हथियार बरामद हुए हैं। पुलिस ने बताया कि अनंतनाग के पोशक्रीरी इलाके में आतंकियों की मौजूदगी की सूचना पर तलाशी अभियान चलाया गया। इस दौरान आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई से हुई मुठभेड़ में दो दहशतगर्दों को मार गिराने में सफलता मिली। इनकी शिनाख्त जबलीपोरा बिजबिहाड़ा के दानिश अहमद भट उर्फ कोकब और फथेहपोरा अनंतनाग के बशारत नबी लोन के रूप में हुई। पुलिस के अनुसार मारे गए दोनों आतंकी 2019 से सक्रिय थे। वे टेरिटोरियल आर्मी के जवान सडूरा अनंतनाग निवासी मंजूर अहमद की छह जून 2019 और बिजबिहाड़ा के मोहम्मद सलीम की नौ अप्रैल 2021 को हुई हत्या में शामिल थे। इसके साथ ही 29 मई 2021 को जबलीपोरा बिजबिहाड़ा में दो नागरिकों की हत्या में भी शामिल थे। मारे गए आतंकियों से एक एके 56 राइफल, 35 गोलियां, दो मैगजीन, एक पिस्टल और अन्य आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई सेब के बगीचे में छिपाकर रखी गई थी आईईडी आतंकियों की मौजूदगी की सूचना पर श्रीनगर के

Word Count: 0, Character Length: 4041 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-10-Test NO.-22383

बाद उनका पुनर्जन्म होगा। से कार्ड और मनरेगा कार्ड जैसे आम दस्तावेजों को वैध नहीं माना जा रहा है। एक तरफ, आधार कार्ड को वोटर लिस्ट से जोड़ने की कवायद हो रही है, वहीं इस पुनरीक्षण में आधार कार्ड को मान्य दस्तावेज नहीं माना जा रहा। ये तमाम शर्तें असम में बदनाम राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर एनआरसी के सर्वेक्षण से अजीब समानता रखती हैं। असम जैसे डिटेंशन सेंटर, दिल्ली में घरों पर बुलडोजर और महाराष्ट्र से प्रवासी मजदूरों को बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के देश की सीमा के पार अनजान देश में धकेल देने जैसे घिनौने कृत्यों को अब बिहार में भी अंजाम देने के मनसूबे बनाए जा रहे हैं। 22 वर्षों बाद ऐसे अभूतपूर्व निर्णय के पीछे का राजनीतिक मकसद साफ दिखाई दे रहा है। सबसे गंभीर बात। पिछली बार विशेष गहन पुनरीक्षण में लगभग दो साल का समय लगा था, अब मात्र एक महीने में इसे पूरा करने का दावा किया जा रहा है। यह न केवल अव्यावहारिक है, बल्कि इस पूरी प्रक्रिया की गंभीरता पर सवाल खड़े करता है। मानसून के दौरान यह कवायद और भी कठिन है, क्योंकि बिहार का 73 फीसदी क्षेत्रफल बाढ़ प्रभावित है। ऐसी स्थिति में सरकारी कर्मचारी और लोग बाढ़ से जान-माल की रक्षा में व्यस्त होंगे, न कि दस्तावेजों के सत्यापन में। भारत सरकार के अनुसार, बिहार के 2 करोड़, 90 लाख पंजीकृत मजदूर राज्य से बाहर कार्यरत हैं। इन प्रवासी मजदूरों के लिए दस्तावेज प्रस्तुत करना और भी कठिन होगा। इसलिए विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया को लेकर हमारी मुख्य मांगें हैं- सभी फॉर्मों व दस्तावेजीकरण आवश्यकताओं की वैधता की समीक्षा की जाए। उन निवार्चन क्षेत्रों में स्वतंत्र ऑडिट कराए जाएं, जहां बड़े पैमाने पर मतदाताओं के नाम काटे या जोड़े गए हैं। साथ ही जोड़े या हटाए गए मतदाताओं के ब्योरे भी जारी किए जाएं। किसी चुनाव की वैधता वोट डाले जाने

Word Count: 2, Character Length: 4044 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22388

सेलिब्रिटीज को करना पड़ेगा। इन दिशा-निर्देशों पालन नहीं करने वालों पर सरकार ने जुर्माना लगाने की भी तैयारी कर ली है। सरकार से जुड़े सूत्र के मुताबिक इस गाइडलाइन को जारी करने करने के लिए सभी स्टेकहोल्डर्श से सलाह-मशविरा का कार्य पूरा किया जा चुका है। एक आधिकारिक सूत्र के मुताबिक उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय की ओर से इन दिशा-निर्देशों को जारी करने की तैयारी चल रही है। इसमें यह बताया जाएगा कि सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर्स को क्या करना है या क्या नहीं करना है? सूत्रों के मुताबिक कई सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर्स जिनकी बड़ी फैन फॉलोइंग है वे मीडिया प्लेटफार्म्स जैसे इंस्टाग्राम आदि पर प्रोडक्ट इंडोर्समेंट के लिए पैसे ले रहे हैं। इसलिए सरकार ने अब उन्हें दिशा-निदेर्शों के दायरे में लाने का निर्णय लिया है। सूत्रों के अनुसार प्रस्तावित दिशा-निर्देशों के तहत अगर किसी सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर ने किसी भी ब्रांड का पैसे लेकर प्रचार किया है तो उन्हें उस ब्रांड के साथ अपने जुड़ाव (एसोसिएशन) की घोषणा करनी होगी। इन दिशा-निर्देशों के अनुसार सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को पैसे लेकर किसी ब्रांड का प्रचार करने की स्थिति में संबंधित पोस्ट में एक डिस्क्लेमर लगाना होगा। इसके अनुसार उपभोक्ता मामलों का विभाग ई-कॉमर्स वेबसाइट्स पर पोस्ट की गई फर्जी समीक्षाओं पर अंकुश लगाने की तैयारी कर रहा है। इसके लिए एक रूपरेखा विकसित करने की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। इसे भी जल्द ही जारी किया जाएगा। इसी वर्ष मई महीने में भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (एएससीआई) के साथ विभाग ने ई-कॉमर्स संस्थाओं सहित हितधारकों के साथ उनके प्लेटफार्मों पर नकली समीक्षाओं के असर पर चर्चा करने के लिए एक आभासी बैठक की थी। बता दें कि किसी प्रोडक्ट की नकली समीक्षाएं उपभोक्ताओं को ऑनलाइन उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिए गुमराह करती हैं। प्रोडक्ट के समीक्षक और ईकॉमर्स प्लेटफॉर्म की जिम्मेदारी तय करना जरूरी

Word Count: 8, Character Length: 4332 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22389

विजय चौक और इंडिया गेट जिस सड़क से जुड़ती है, बुधवार वह इतिहास बन गई। करीब 3.20 किमी लंबा राजपथ नए रंग-रूप में अब कर्तव्य पथ के नाम से जाना जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बृहस्पतिवार शाम सात बजे इसका उद्घाटन करेंगे। अपने नए रूप में कर्तव्य पथ के आस-पास लाल ग्रेनाइट से करीब 15.5 किमी का वॉकवे बना है। बगल में करीब 19 एकड़ में नहर भी है। इस पर 16 पुल बनाए गए हैं। फूड स्टॉल के साथ दोनों तरफ बैठने का भी इंतजाम है। पूरे क्षेत्र के करीब 3.90 लाख वर्ग मीटर में फैली हरियाली भी दर्शनीय है। दिलचस्प यह कि वॉक वे व बेहतर पार्किंग स्थल विकसित करने के साथ पैदल यात्रियों के लिए नए अंडरपास बने हैं। शाम ढलने पर इसका नजारा बदला-बदला होगा। अंधेरा घिरने पर जिन अत्याधुनिक लाइट्स से यह जगमगाएगा, उसका अनुभव ही अलग होगा। शुक्रवार से यह हिस्सा आम लोगों के लिए आम होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इंडिया गेट पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 28 फुट ऊंची प्रतिमा का भी अनावरण करेंगे। ग्रेनाइट पत्थर पर उकेरी गई इस प्रतिमा का वजन 65 मीट्रिक टन है। बुधवार इसे उसी स्थान पर स्थापित की जा रही है, जहां बीते 23 जनवरी पराक्रम दिवस पर नेताजी की होलोग्राम प्रतिमा का अनावरण किया गया था। आजादी से पहले राजपथ को किंग्स वे और जनपथ को क्वींस वे के नाम से जाना जाता था। स्वतंत्रता मिलने के बाद क्वींस वे का नाम बदलकर जनपथ कर दिया गया था। जबकि किंग्स वे राजपथ के नाम से जाना जाने लगा। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के बाद अब इसका नाम कर्तव्य पथ कर दिया गया है। केंद्र सरकार का मानना है कि राजपथ से राजा के विचार की झलक मिलती है, जो शासितों पर शासन करता है। जबकि लोकतांत्रिक भारत में जनता सर्वोच्च। नाम में बदलाव जन

Word Count: 3, Character Length: 3765 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22390

वर्ग मीटर का ग्रीन एरिया है। लोगों के टहलने के लिए 15.5 किमी लंबा रास्ता तैयार किया गया है। इस पर रेड ग्रेनाइट लगा हुआ है। पूरा इलाका सीसीटीवी की जद में है। वहीं, करीब 80 सुरक्षा कर्मी हर वक्त तैनात रहेंगे। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने बुधवार को राजपथ और सेंट्रल विस्टा लॉन का नाम बदलकर कर्तव्य पथ किया। इस संबंध में हुई एनडीएमसी की विशेष बैठक में प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास किया। विजय चौक से इंडिया गेट तक राजपथ और सेंट्रल विस्टा लॉन एनडीएमसी के अधिकार क्षेत्र में आते है। यहां केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालय, विभाग, कार्यालय स्थित है। बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय विदेश एवं संस्कृति राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी ने की। उन्होंने बताया कि आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय से एनडीएमसी को राजपथ और सेंट्रल विस्टा लॉन का नाम बदलने के संबंध में एक अनुरोध प्राप्त हुआ था। एनडीएमसी ने लोकतांत्रिक व्यवस्था, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वसम्मति से प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इसके पीछे लोक कल्याण और राष्ट्र विकास की दिशा में कर्तव्यों को अपनाने की प्रेरणा देने और इस क्षेत्र के पूरे औपनिवेशिक इतिहास को लोकतांत्रिक राष्ट्र की थीम और मूल्यों पर बदलने की मंशा है। उन्होंने राजपथ और सेंट्रल विस्टा लॉन का नाम बदलकर कर्तव्य पथ करने के निर्णय को ऐतिहासिक करार दिया। हरियाणा के भिवानी में तीन भूखंडों की बिक्री में अनियमितता के मामले में मुख्यमंत्री पर आरोप लगाए गए हैं। लोकायुक्त के नाम भेजी गई एक शिकायत पर उपराज्यपाल ने दिल्ली के मुख्य सचिव को इसकी जांच करने को कहा है। इस मामले में जमीन की कीमत कम आंकते हुए आयकर, स्टांप ड्यूटी और पूंजीगत लाभ (कैपिटन गेन टैक्स) के मद में राजस्व के नुकसान पहुंचाने के आरोप लगाए गए हैं। लोकायुक्त को दी गई शिकायत में अरविंद केजरीवाल पर उनकी पत्नी सुनीता

Word Count: 0, Character Length: 4229 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22394

तो दिल्ली में एक स्कूल की दीवार के पास आईईडी विस्फोट होता है। विमानों को बम से उड़ाने की धमकी का सिलसिला तो मानो थम ही नहीं रहा, अलबत्ता विदेशी जमीन पर बैठा एक खालिस्तानी आतंकी भारतीयों को 1 से 19 नवंबर के बीच एअर इंडिया के विमान से यात्रा न करने की चेतावनी जारी करता है। ऊपरी तौर पर इसे देखकर कोई भी खौफजदा हो सकता है, लेकिन व्यापकता में यदि विश्लेषण करें, तो हमें राहत का ही अनुभव होगा। गांदरबल घटना को जोड़ लें, तब भी इस साल जम्मू-कश्मीर की 48 घटनाओं में कुल 102 लोगों की जान गई है। इनमें से 52 आतंकी हैं। जबकि, पिछले साल ऐसी 72 वारदातों में 87 आतंकियों को मार गिराया गया था। बेशक, आम नागरिकों के हताहत होने की संख्या बढ़ी है और पिछले साल के 12 के मुकाबले इस वर्ष 26 नागरिकों की मौत हो चुकी है, लेकिन साल 2022 में 30, तो 2021 में 36 लोगों की जान गई थी। बाहरी मजदूरों पर हमले की भी यह कोई नई प्रवृत्ति नहीं है। लिहाजा, समग्रता में ये आंकड़े घटते ही दिख रहे हैं। कुछ ऐसी ही बात दिल्ली-धमाके को लेकर कही जा सकती है। 7 सितंबर, 2011 के बाद राष्ट्रीय राजधानी में यह पहला विस्फोट है। दिल्ली हाईकोर्ट से बाहर हुए उस धमाके में 15 लोग मारे गए थे और 75 से अधिक घायल हुए थे। जबकि, रविवार की सुबह दिल्ली के रोहिणी सेक्टर-14 में जो धमाका हुआ, उसमें आसपास की कुछ इमारतों के शीशे चटक गए, जबकि सड़क किनारे खड़ी कुछ गाड़ियों को नुकसान पहुंचा। यह कम तीव्रता का धमाका था और जांच एजेंसियां तत्काल अपने काम में जुट गईं। भले ही हमें अभी तक यह नहीं पता कि इसके पीछे कौन है, लेकिन यह जरूर पता है कि दिल्ली को दहलाने के प्रयास अनवरत जारी हैं। शक के

Word Count: 3, Character Length: 3561 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22395

दायरे में सभी हैं- फिर चाहे वह जम्मू-कश्मीर के अतिवादी हों या खालिस्तानी गुट या फिर कुछ गैंगस्टर या इस्लामिक स्टेट या अल-कायदा समर्थित स्थानीय समूह या फिर पीएफआई से जुड़े लोग। सोशल मीडिया पर खालिस्तान जिंदाबाद के नारे के साथ इस घटना की जिम्मेदारी ली गई है, लेकिन इस दावे की पुष्टि अभी बाकी है। जांच के नतीजे पर पहुंचते ही हमें गुनहगार का पता चल जाएगा, तब तक किसी तरह की कयासबाजी से बचना ही उचित होगा। वास्तव में, पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षा के मोर्चे पर हमें काफी सफलता मिली है। साल 2001 में पूरे देश में 2,802 आतंकी घटनाओं में 5,504 लोगों की जान गई थी। इसमें जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर, माओवादी, इस्लामी आतंकवाद आदि सभी चुनौतियां शामिल हैं। इन लोगों में 1,508 आम नागरिक शामिल थे, तो 883 सुरक्षा बलों के जवान। आतंकियों की संख्या 3,005 थी। पिछले साल ऐसी घटनाओं की संख्या गिरकर 278 रह गई, जिनमें कुल 150 आम नागरिक सहित 467 लोग मारे गए। 82 सुरक्षा बल के लोग भी मारे गए, जबकि 229 आतंकियों को ढेर किया गया। हां, साल 2024 में अब तक जरूर 499 लोग आतंकी घटनाओं में मारे गए हैं, इनमें नागरिकों की संख्या 123 है। जाहिर है, किसी साल आंकड़ों में ऊपर-नीचे हो सकता है, पर इसे ज्यादा तूल नहीं देना चाहिए। आतंकी घटनाओं के लिहाज से जो सबसे खराब दौर था, जिसमें 1,500 से अधिक आम नागरिक मारे जाते थे, वह बीत चुका है। अब यह आंकड़ा घटकर 150 तक सिमट गया है। पिछले पांच साल में तो जम्मू-कश्मीर के बाहर इस्लामिक आतंकवाद की घटनाओं में तीन साल ऐसे हैं, जिसमें किसी आम नागरिक के हताहत होने की खबर नहीं आई। 2020 में एक और 2022 में तीन आम नागरिक ऐसी वारदातों में मारे गए थे। पिछले 25 वर्षों की यह उपलब्धि है। कमी आतंकी घटनाओं में ही

Word Count: 6, Character Length: 3720 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22396

में देखते भी रहते हैं। रही बात छोटी-मोटी घटनाओं की, तो वे सामने आ सकती हैं। उनको रोकना सुरक्षा बलों के लिए भी नामुमकिन है, क्योंकि कोई भी एक-दो सिरफिरा किसी सॉफ्ट टारगेट को निशाना बना सकता है। रविवार को दिल्ली में हुआ धमाका भी कुछ ऐसा ही कहा जा सकता है। मुमकिन है, ऐसा सनसनी पैदा करने के लिए किया गया हो। चूंकि बड़े संसाधन जुटाने के लिए बड़े आतंकी संगठनों के नेटवर्क का अब अभाव है, इसलिए छोटी-मोटी कार्रवाइयां करके आतंकी अपनी प्रासंगिकता बनाने के कुत्सित प्रयास करते रहते हैं। आज सुरक्षा चुनौतियों से हम पार पाने लगे हैं, तो इसका श्रेय सुरक्षा बलों को देना चाहिए। उनकी लक्षित कार्रवाइयों से हमें काफी लाभ मिला है। पिछले दो दशकों में उनको अपनी कार्रवाई करने की पूरी छूट दी गई है, उनकी संख्या और क्षमता, दोनों बढ़ाई गई है, इन सबका लाभ हमें मिला है। किसी नीतिगत बदलाव को इसका श्रेय नहीं देना चाहिए। पहले की सरकारें भी ये सब करती रही हैं। हां, जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद-370 के हटने के बाद आतंकी घटनाओं में एक उछाल दिखा था, लेकिन लगता है कि सुरक्षा बलों ने उसे भी अब नख-दंत विहिन कर दिया है। पाकिस्तान की बढ़ती अपनी उलझनें भी इसका कुछ हद तक कारण हैं। दरअसल, उसने सोचा था कि अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार बनने से उसे काफी लाभ मिलेगा, लेकिन ऐसा हो नहीं सका, उल्टे तालिबानी शासन से उसे परेशानी ही होने लगी है। फिर, उसकी आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। ऐसे में, जम्मू-कश्मीर में आतंकियों को शह देने का पुराना खेल फिलहाल कुछ देर तक उसी स्तर पर नहीं खेला जा सकता। कुल मिलाकर, सुरक्षा चुनौतियों के मोर्चे पर हमने मुश्किल दौर को पार कर लिया है। आज भी चुनौतियां हैं, मगर वे ऐसी नहीं हैं कि आम नागरिकों को खौफ खाना चाहिए। हमारे

Word Count: 7, Character Length: 3908 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-11-Test NO.-22397

बड़े क्षेत्र शामिल नहीं किए जाएंगे। यह हमारे लिए आर्थिक रूप से भी मुफीद नहीं है और इससे देश में राजनीतिक भूचाल आ सकता है । हां, कपड़ा व फार्मास्यूटिकल्स जैसे मुद्दों पर भारत पीछे हट सकता है, जो आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि किसी भी समझौते में दोनों पक्षों के हितों को तवज्जो मिलती है। यही वजह है कि संभावित समझौते को मिनी ट्रेड डील कहा जा रहा है। बहरहाल, हमें इस तरह के समझौते पर जल्द से जल्द पहुंच जाना चाहिए। अगर अमेरिका के साथ बात नहीं बनती है, तो हमारी चिंताएं बढ़ सकती हैं। भारत नहीं चाहेगा कि हमारे दूसरे सबसे बड़े बाजार चीन पर हमारी निर्भरता और बढ़े। ऐसा इसलिए, क्योंकि चीन के साथ हमारे कूटनीतिक संबंध बहुत अच्छे नहीं रहे हैं। व्यापार में उस पर निर्भरता हमारे हितों के प्रतिकूल साबित हुई है। मगर दिक्कत यह है कि भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को कच्चा माल चीन से ही मिलता है। यहां तक कि मेक इन इंडिया को भी हम तभी आगे बढ़ा सकते हैं, जब संसाधनों की पूर्ति चीन से हो। गलवान घटना के बाद हमने बहुत कोशिश की, लेकिन अपने इस पड़ोसी देश पर से अपनी निर्भरता को कम नहीं कर सके हैं। ऐसे में, अमेरिका के साथ व्यापार समझौता में यदि अड़ंगा लगता है, तो भारत की उलझन बढ़ सकती है। एक तर्क यह भी दिया जाता है कि अमेरिका निर्यात किए जाने वाले उत्पादों को हमें अन्य देशों में भेजना चाहिए। कागज पर तो यह काम काफी सरल दिखता है, लेकिन व्यवहार में इसे अमल में लाना काफी मुश्किल है। अमेरिका इतना बड़ा बाजार है कि उसकी तुरंत भरपायी किसी दूसरे देश से नहीं की जा सकती। ऐसे में, हमारे घरेलू बाजार पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ेगा। अभी वैश्विक अर्थव्यवस्था भी चरमराई हुई है, लिहाजा उथल-पुथल जैसी स्थिति में अमेरिका जैसे भरोसेमंद

Word Count: 1, Character Length: 3865 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22402

साल 2019 के लोकसभा चुनाव में भी यूडीएफ 19 सीटें जीतने में कामयाब रहा था। इस लिहाज से केरल वाकई कांग्रेस पार्टी के लिए मजबूत गढ़ साबित हुआ है, तो क्या मान लिया जाए कि आगामी उप-चुनावों में भी कांग्रेस वहां बेहतर प्रदर्शन जारी रखने वाली है? इसके अलावा एक पहलू यह भी है कि लगातार दो बार सत्ता में रहने वाली पी विजयन सरकार को सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ रहा है। नवंबर में राज्य में एक लोकसभा और दो विधानसभा उपचुनाव होने हैं। वायनाड लोकसभा सीट राहुल गांधी के इस्तीफेके बाद खाली हो गई है, जिन्होंने अपनी रायबरेली सीट बरकरार रखने का फैसला किया है। उन्होंने वायनाड के प्रति आभार व्यक्त करने के प्रयास के तहत अपनी बहन प्रियंका को सीट देने का फैसला किया है। दो विधानसभा सीटें- पलक्कड़ व चेल्लाकारा, कांग्रेस के शफी परंबिल और सीपीएम के राधाकृष्णन के इस्तीफे के बाद खाली हुई हैं। ये दोनों लोकसभा के लिए चुने गए हैं। पलक्कड़ कांग्रेस का गढ़ रहा है और चेल्लाकारा, एक आरक्षित सीट, 1996 से सीपीएम के पास है। कांग्रेस को पलक्कड़ बरकरार रखने और चेल्लाकारा को वाम दलों से छीनने के लिए काफी पसीना बहाना पड़ सकता है। असली लड़ाई पलक्कड़ में ही है। यह सीट 2021 के विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस के शफी परंबिल के लिए चुनौती थी। वह मेट्रो-मैन ई श्रीधरन से महज 3,859 वोटों से जीते थे। श्रीधरन को भाजपा ने बड़ी उम्मीद के साथ मैदान में उतारा था और उन्हें मुख्यमंत्री पद के दावेदार के रूप में देखा जा रहा था। कांग्रेस के लिए चिंता की बात है कि भाजपा उन निर्वाचन क्षेत्र में अपना समर्थन आधार बढ़ाती दिख रही है, जहां वाम दल तीसरे स्थान पर रहे हैं। शफी की सिफारिश पर पलक्कड़ सीट राज्य के युवा कांग्रेस प्रमुख राहुल ममकुताथिल को दी गई। झटका तब

Word Count: 3, Character Length: 3898 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22403

के जरिए बाजार में प्लाटों की बिक्री 45,000 रुपये प्रति वर्ग गज की दर पर बिक्री कर दी। दस्तावेज पर यह राशि महज 8,300 रुपये प्रति वर्ग गज दशाई गई। इस संबंध में एलजी के पास 28 अगस्त को लोकायुक्त के नाम भेजी गई शिकायत मिली। शिकायती पत्र में आरोप है कि केजरीवाल ने सरकारी खजाने को ठगा। स्टाम्प ड्यूटी के मद में 25.93 लाख रुपये जबकि कैपिटल गेन टैक्स के रूप में 76.4 लाख की चोरी के आरोप लगाए गए हैं। उपराज्यपाल ने शिकायत को गंभीरता से लेते हुए इसे उचित कार्रवाई के लिए भेज दिया है। शिकायत मे लगाए गए आरोप शिकायत में कहा गया है कि देश का एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक के रूप में यह मेरा कर्तव्य है कि देश के कानून का पालन करें। किसी भी गलत काम को चिह्नित करें। इसलिए मैं एक ज्वलंत मामला आपके ध्यान में लाना चाहता हूं। दिल्ली के मुखिया द्वारा संपत्ति का अवमूल्यन किया गया। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल के जरिये खुद की तीन संपत्तियां हरियाणा के भिवानी में बेचीं। इनमें दो संपत्तियां खुद अरविंद केजरीवाल के नाम थी जबकि तीसरी संपत्ति उनके पिता गोविंद राम के नाम थी। उन्होंने तीन शहरी वाणिज्यिक भूखंडों की कीमत कम आंकते हुए बेचा। शिकायत के अनुसार, भिवानी के एक बाजार स्थित 100 फुट की सड़क पर 15 फरवरी, 2021 में बेचीं। वास्तव में 4.54 करोड़ रुपये की संपत्ति कागज पर बेहद कम कीमत (72.72 लाख रुपये) में दिखाई गई। इस सिलसिले में उन्हें ना केवल 3.8 करोड़ रुपये की नकदी (बगैर हिसाब) मिली बल्कि स्टांप ड्यूटी के मद में 5.93 लाख रुपये जबकि 76.4 लाख रुपये कैपिटल गेन टैक्स की भी चोरी की। एक ही दिन में 340, 416 और 254 वर्ग गज के भूखंडों की बिक्री सीएम की पत्नी के जरिये बेचने के आरोप लगाए गए

Word Count: 0, Character Length: 3762 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22404

कनाडा सरकार की नीतियों की साफ शब्दों में निंदा होनी चाहिए और भारत सरकार ने सोमवार को कनाडा के उप-उच्चायुक्त को बुलाकर ऐसा ही किया था। अब बुधवार को कनाडा के प्रधानमंत्री का एक ऐसा साक्षात्कार प्रकाशित हुआ है, जिससे दोनों देशों के संबंधों में कटुता बढ़ने के कारक साफ नजर आ रहे हैं। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपनी स्थानीय सियासत को तात्कालिक रूप से मजबूत रखने के लिए खालिस्तान के समर्थन में खड़े हो गए हैं। खालिस्तान का विचार कतई नया नहीं है, पर उसकी अव्यावहारिकता अनेक बार उजागर हो चुकी है। स्वयं सिख समुदाय में बहुमत इस विचार से सहमत नहीं है और परदेश में जा बसे, वहां की नागरिकता ले चुके चंद अलगाववादियों को संतुष्ट रखने के लिए ट्रूडो ने जो बयान दिए हैं, वे सोचने पर मजबूर करते हैं। एक संभावना यह है कि कनाडा की स्थानीय राजनीति की मजबूरी समझने हुए वहां के प्रधानमंत्री की बात को गंभीरता से न लिया जाए, पर क्या इससे चंद अलगाववादियों के मानसिक दुराग्रह का समाधान हो जाएगा अव्वल तो कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो ऐसे किसी अलगाववादी कार्यक्रम में गए ही क्यों थे, जहां भारत विरोधी नारे लग रहे थे क्या भारत में धर्मों की पृष्ठभूमि या इतिहास का उन्होंने अध्ययन किया है कनाडा सरकार के सलाहकारों के ज्ञान पर तरस आता है। ये कैसे लोग हैं, जो आज की दुनिया में भी धार्मिक आधार पर भूगोल बदलने की कल्पना कर पा रहे हैं ये कैसे देश हैं, जिनका मजहबी विभाजनों से अभी भी जी नहीं भरा है एक अलगाववादी आतंकी निज्जर की हत्या का ट्रूडो के लिए इतना बड़ा मामला है कि वह भारत के साथ संबंधों में इसे एक समस्या मान रहे हैं। आज आतंकवाद और अलगाववाद के खिलाफ खड़े होने की जरूरत है, पर कनाडा जहां खड़ा है, वह जमीन नीचे से खोखली है। शायद

Word Count: 1, Character Length: 3907 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22408

बहकावे में आ गई है। आज के समय में दुनिया की किसी भी सरकार को सांप्रदायिकता के आधार पर नहीं सोचना चाहिए। पंजाब ही नहीं, कश्मीर में भी अलगाववादियों का समर्थन करते हुए पाकिस्तान किस स्थिति तक पहुंच गया है, यह जरूर देखना चाहिए। हिंसक तत्वों की घातक सियासत को समझदार लोग लोकतांत्रिक रूप से ठिकाने लगाएं, तो ज्यादा बेहतर है। लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हिंसा व अलगाववाद को बढ़ावा देने के नतीजे हमेशा घातक ही सिद्ध हुए हैं। भारतीय राजनय के लिए यह जरूरी है कि वह कनाडा ही नहीं, कुछ अन्य देशों में भी फैल रहे भारत विरोध के पटाक्षेप के लिए योजनाबद्ध ढंग से काम करे। भारत अपने बंटवारे और अलगाववाद से आगे लोकतांत्रिक उदारता की ओर बढ़ चुका है, अब उसके लिए विविधता में एकता ही जीत का एकमात्र फॉर्मूला है। अठारहवां लोकसभा चुनाव रोचक बनता जा रहा है। दोनों प्रमुख दल, भाजपा और कांग्रेस चुनावी बहसों को अपनी-अपनी दिशा में ले जाने के लिए जी-जान लगाए हुए हैं। किसी भी जनतंत्र में चुनाव मात्र जीत-हार, सरकार बनाने-गिराने का माध्यम नहीं होते हैं, ये वस्तुत राजनीतिक चेतना को प्रेरित करने का माध्यम होते हैं। चुनाव समाज में संवाद, विकास एवं राष्ट्र निर्माण के विमर्शों को प्रेरित करने का माध्यम होते हैं। चुनाव के दिनों में ये बहसें मूलत राजनीतिक दलों द्वारा जारी किए गए घोषणापत्रों, रैलियों में नेताओं के दिए गए भाषणों और बयानों से बनती-बिगड़ती हैं। वैसे तो मेरा मानना है कि यह चुनाव छवियों के टकराव का चुनाव है, जिसमें इस चुनाव के दौरान नेताओं द्वारा कही गई बातों से ज्यादा एक लंबे काल खंड में बनी-बिगड़ी उनकी छवियों का असर है। इस चुनाव में कथनी से ज्यादा करनी की स्मृतियों एवं प्रभाव में जनता वोट डाल रही है। चुनाव में कुछ बहसें दीर्घकालिक परिवर्तन की दृष्टि से होती हैं,

Word Count: 6, Character Length: 4076 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22409

आर्थिक वर्गों को केंद्र में रखकर योजनाओं को प्रचारित कर रही है। दूसरी तरफ, कांग्रेस अपने घोषणापत्र में अन्य वादों के साथ समाज कल्याण कार्यक्रमों को आरक्षण आधारित जाति केंद्रित सामाजिक न्याय की अवधारणा के साथ मिलाकर लोकप्रिय वादे के रूप में प्रचारित कर रही है। इसके लिए वह पूरे देश में जातीय जनगणना कराने को भी एक लोकप्रियतावादी नारे के रूप में अपने चुनावी विमर्श में इस्तेमाल कर रही है। अगर इस चुनाव की बहसों के निर्माण की प्रक्रिया को देखें, तो साफ लगता है कि भाजपा इस चुनाव को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि, सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमों पर केंद्रित एवं विकसित भारत की संकल्पना के इर्द-गिर्द रखना चाहती है। इस चुनाव में टिकट बंटवारे में परोक्ष जातीय जोड़-घटाव को छोड़ दें, तो उसने अपने घोषणापत्र एवं अपने नेताओं के भाषणों में जातीय अस्मिता की राजनीति से दूरी बनाने की कोशिश की है। वहीं कांग्रेस ने अपने चुनावी विमर्श में शुरू से ही भारतीय समाज में जाति आधारित सामाजिक अन्याय को मुद्दा बनाते हुए पारंपरिक ढंग के आरक्षण आधारित सामाजिक न्याय को लोकप्रिय बहस बनाने की कोशिश की है। इस बार अल्पसंख्यकों के संदर्भ में धार्मिक अस्मिता एवं सामाजिक न्याय के संदर्भ में जातीय अस्मिता कांग्रेस के घोषणापत्र केंद्रीय तत्व बने हुए हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इन जातीय एवं धार्मिक अस्मिताओं को न्याय-अन्याय जैसी शब्दावली में बार-बार उठाया है। कांग्रेस ने भाजपा के शासन में आने पर संविधान बदल दिया जाएगा , चुनाव नहीं होंगे आदि अनेक भय व चिंता जगाने वाले विमर्श खड़े कर दिए हैं। कांग्रेस के चुनावी विमर्श की इसी रणनीति ने भाजपा को अपने चुनावी विमर्श की रणनीति में परिवर्तन के लिए बाध्य किया। कांग्रेस के इन पारंपरिक राजनीतिक अस्त्रों का जबाब देने के लिए भाजपा ने अपने विकास, भारत गर्व एवं विकसित भारत के विमर्श के साथ ही कांग्रेस पर तुष्टिकरण

Word Count: 4, Character Length: 4290 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22410

वृतांत में पीरो दिया। भारतीय चुनावों में वृतांतों या नैरेटिव्स की राजनीति में प्रधानमंत्री मोदी का यह मास्टर स्ट्रोक माना जाना चाहिए, जिसमें उन्होंने मध्यवर्गीय मानस को तो झकझोरा ही, गरीबों, पिछड़ों एवं दलितों की अस्मिताओं को भी पारंपरिक जाति आधारित सामाजिक न्याय की राजनीति के खांचे से बाहर निकाल हिंदुत्व, सामाजिक न्याय एवं विकास की आकांक्षा का संतुलित मिश्रण तैयार किया। राजनीति में यह ऐसा मारक आक्रमण है, जिसका सामना कांग्रेस के विमर्शकार कैसे कर पाते हैं, यह देखना होगा। यह बार-बार देखने में आता है कि जाति कई बार सामाजिक न्याय के वितरण की एक इकाई के रूप में मददगार तो होती है, किंतु आगे चलकर अनेक प्रकार के सामाजिक अन्याय को जन्म भी देती है। कांगेस को यह समझना होगा कि जाति से जाति को काटना भारतीय समाज में अत्यंत मुश्किल है। हमने देखा है कि ऐसे अनेक प्रयोग अब तक विफल ही हुए हैं। आजादी के बाद सामाजिक न्याय की राजनीति के एक अनोखे प्रयोगकर्ता कांशीराम शुरुआती सफलताओं के बाद अंतत कमजोर पड़ते देखे गए। समझना होगा कि भारतीय समाज में जाति की धार को आर्थिक विकास की प्रक्रियाओं से ही कुंद किया जा सकता है। अगर गहराई से विवेचना करें, तो भारतीय जनतांत्रिक राजनीति को एक नई भाषा की जरूरत है, एक आधुनिक भाव बोध की भी। इसे एक नई राजनीति भी चाहिए। विकास की राजनीति की भाषा को अन्य प्रकार की राजनीति केंद्रित भाषा की तुलना में ज्यादा अधुनातन, अग्रगामी एवं प्रगतिशील तो माना ही जाता है। जैसे ही इस भाषा को हम जाति एवं धर्म आधारित राजनीतिक भाषा की सीमा में जाने के लिए मजबूर करते हैं, वैसे ही हम तीन-चार दशक पीछे की राजनीतिक परिदृश्य में पहुंच जाते हैं। हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार फणिश्वर नाथ रेणु ने अपनी कहानी पंचलाइट पंचलैट में एक गांव में एक ऐसे जाति विभाजित समाज का वर्णन

Word Count: 2, Character Length: 4089 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-12-Test NO.-22411

तब उन्होंने ख्वाबों में भी नहीं सोचा होगा कि आने वाले समय में इनमें रहने वाला शख्स यहां बने रहने के लिए तमाम वजहें बताएगा। ताजा मामले में भारत के पूर्व प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ अपने 5 कृष्ण मेनन मार्ग के बंगले को न छोड़ने के कारण गिनवा रहे थे। वह समय-सीमा खत्म होने के बाद भी उसमें जमे रहे। इस लिहाज से बाबा साहब आंबेडकर पहले नेता रहे, जिन्होंने मंत्री पद छोड़ने के अगले ही दिन लुटियंस दिल्ली का अपना सरकारी बंगला खाली कर दिया था। बाबा साहब ने 27 सितंबर, 1951 को नेहरू मंत्रिमंडल से अप्रत्याशित रूप से त्यागपत्र दे दिया था। दोनों में हिंदू कोड बिल को लेकर गहरे मतभेद उभर आए थे। वह दिन में करीब चार बजे अपने 22, पृथ्वीराज रोड स्थित आवास लौटे। तब उन्होंने अपने साथी नानक चंद रत्तू को पास बुलाकर कहा कि वह चाहते हैं कि सरकारी आवास अगले दिन तक खाली कर दिया जाए। इस बीच, करोल बाग क्षेत्र से बाबा साहब के सैकड़ों समर्थक 22, पृथ्वीराज रोड पहुंचने लगे। करोल बाग से आने वालों की चाहत थी कि बाबा साहब करोल बाग शिफ्ट कर जाएं। पर अपने समर्थकों से सोच-विचार करने के बाद अगले ही दिन वह 26, अलीपुर रोड (अब राजपुर रोड) शिफ्ट कर गए और अपने जीवन के अंत तक उसी बंगले में रहे। काश! दूसरे नेता, अफसर और बड़े सरकारी पदों को संभाल रहे खास लोग उनसे कुछ सीख ले पाते। दरअसल, लुटियंस दिल्ली के बंगले को छोड़कर किसी अन्य जगह पर जाकर रहना आसान नहीं होता। बेहद खूबसूरत और सुविधा-संपन्न है लुटियंस जोन। गर्मियों में जब सूरज देवता दिल्ली में आग उगलते हैं, तब भी यहां के 26 वर्ग किलोमीटर में फैले हरे-भरे क्षेत्र में मीठी बयार ही बहती है। इधर की हर सड़क के दोनों तरफ लगे घने दरख्तों की भारी-भरकम टहनियां सड़क

Word Count: 5, Character Length: 3790 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22416

करोड़ रु में तीनों भूखंडों की बिक्री की। पत्र में आरोप लगाया कि अरविंद केजरीवाल और उनकी पत्नी ने स्टांप ड्यूटी के मद में 10.68 लाख (416 वर्ग गज), 8.73 लाख (340 वर्ग गज) और 6.52 लाख रुपये (254 वर्ग गज) के भूखंड पर प्रदेश के राजस्व के खजाने में 25.93 लाख रुपये का नुकसान पहुंचाया। आरोप है कि केजरीवाल ने वास्तव में तीनों भूखंडों को 4.54 करोड़ रुपये की बाजार दर पर बेचा जबकि इसकी कीमत (20 फीसदी कम) का भ्रामक अनुमानित आकलन किया गया। कागज पर सर्किल रेट के मुताबिक महज 72.72 लाख रुपये थी जबकि तत्कालीन दर के मुताबिक पूंजीगत लाभ के मद में 76.4 लाख रुपये की चोरी के भी आरोप लगाए गए हैं। मामले की जांच सक्षम अधिकारी से जल्द करवाने का आग्रह शिकायत में आश्चर्य जताते हुए आरोप लगाया कि दोनों पूर्व राजस्व अधिकारी रह चुके हैं, बावजूद इसके कैसे स्टांप ड्यूटी, आयकर और कैपिटल गेन टैक्स की चोरी की साजिश रची गई। शिकायतकर्ता ने दिल्ली के मुख्यमंत्री की भूमिका पर सवाल उठाते हुए इस मामले की जांच सक्षम अधिकारी और संबंधित एजेंसियों से जल्द करवाने का आग्रह किया है। मामले की निष्पक्ष जांच से इस मामले की सच्चाई सामने आने पर आरोपियों को निशुल्क सजा दी जा सकेगी। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बुधवार को कहा है कि मॉस्को अपने लक्ष्यों को हासिल करने तक यूक्रेन में सैन्य कार्रवाई जारी रखेगा। उन्होंने प्रतिबंधों के जरिये रूस को अलग-थलग करने संबंधी पश्चिमी देशों के प्रयासों का भी उपहास किया। पुतिन ने सुदूर पूर्वी बंदरगाह शहर व्लादिवोस्तोक में आर्थिक मंच की वार्षिक बैठक में कहा कि यूक्रेन में सेना भेजने के पीछे आठ साल की लड़ाई के बाद उस देश के पूर्वी क्षेत्र में नागरिकों की रक्षा करना मुख्य लक्ष्य था। उन्होंने कहा- हम वे नहीं, जिन्होंने सैन्य कार्रवाई शुरू की थी, हम इसे खत्म

Word Count: 2, Character Length: 3971 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22417

भाजपा के लिए यहां बड़ी लड़ाई है, क्योंकि फिलहाल विधानसभा में उसका कोई प्रतिनिधि नहीं है। 2016 में भाजपा के ओ राजगोपाल ने नेमोम विधानसभा सीट जीती, लेकिन 2021 में हार गए। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अभिनेता सुरेश गोपी की थिरुसूर में जीत के साथ अपना खाता खोला। वह अब केंद्रीय मंत्री हैं। चिंतित कांग्रेस सत्तारूढ़ वाम मोर्चा से अपील कर रही है कि वह उसके खिलाफ उम्मीदवार न उतारे। राज्य कांग्रेस प्रमुख वी एम सुधीरन ने कहा है कि वाम मोर्चा- एलडीएफ को भाजपा के खिलाफ लड़ाई को मजबूत करने के लिए प्रियंका के खिलाफ अपना उम्मीदवार वापस ले लेना चाहिए। प्रियंका 23 अक्तूबर को नामांकन दाखिल करने वाली हैं। वैसे भाजपा केरल में कोई कसर छोड़ना नहीं चाहती। भाजपा ने कोझिकोड निगम में पार्षद और मैकेनिकल इंजीनियर नव्या हरिदास को मैदान में उतारा है। भाजपा की भी परेशानियां बढ़ गई हैं, क्योंकि पार्टी के तीन शीर्ष नेता- राज्य पार्टी प्रमुख सुरेंद्रन, उपाध्यक्ष शोभा सुरेंद्रन और महासचिव सी कृष्णकुमार पलक्कड़ सीट से टिकट के लिए होड़ कर रहे हैं। फिर भी, कुल मिलाकर भाजपा की तुलना में कांग्रेस की राह में ज्यादा रोड़े हैं। ध्यान क्या है? एकाग्रचित्त होना ध्यान नहीं है, क्योंकि जहां रुचि होती है, वहां किसी वस्तु पर एकाग्रचित्त होना सरल होता है। युद्ध और नरसंहार की योजना बनाने वाला सेनापति बड़ा एकाग्रचित्त होता है। पैसा कमाने वाला व्यापारी बड़ा एकाग्रचित्त होता है। वह कठोर भी हो सकता, क्योंकि वह दूसरी प्रत्येक भावना को एक ओर करके जो चाहता है, उस पर पूर्णतया एकाग्रचित्त होता है। ऐसी एकाग्रता ध्यान नहीं है। वह केवल बहिष्करण है। फिर ध्यान क्या है? निस्संदेह, ध्यान समझ है- हृदय का ध्यान समझ है। यदि बहिष्करण होगा, तो समझ कैसे हो सकती है? जहां निवेदन है, अनुनय है, वहां समझ कैसे हो सकती है? बोध में, सम में शांति

Word Count: 3, Character Length: 4123 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22418

होती है, स्वतंत्रता होती है; जिसे आप समझ लेते हैं, उससे आप मुक्त हो जाते हैं। केवल एकाग्रचित्त होना या प्रार्थना करना समझ नहीं लाता। समझ ध्यान का आधार है, ध्यान की मूलभूत प्रक्रिया है। यदि आप प्रार्थना और एकाग्रता का सावधानी से परीक्षण करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि इनमें से कुछ भी समझ नहीं ला सकता। इनका परिणाम केवल दुराग्रह, दृढ़ता और भ्रम है, जबकि ध्यान में, जिसमें बोध होता है, स्वतंत्रता, स्पष्टता और समग्रता आती है। अब बोध का, समझ का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है, सभी वस्तुओं को उचित अर्थवत्ता, उचित मूल्य प्रदान करना। अज्ञानी होने का अर्थ है गलत मूल्य प्रदान करना, मूर्खता का स्वभाव ही है कि वह उचित मूल्यों को नहीं समझती। बोध तभी होता है, जब उचित मूल्यों की स्थापना होती है। तो उचित मूल्यों को स्थापित कैसे किया जाए- संपत्ति के उचित मूल्य को, संबंध के उचित मूल्य को, धारणाओं के उचित मूल्य को? उचित मूल्य स्थापित हो सके, इसके लिए यह आवश्यक है कि आप विचारकर्ता को समझें। यदि मैं विचारकर्ता को नहीं समझता, जो मैं स्वयं हूं, तो मेरे चुनाव का, मेरे वरण का कोई अर्थ नहीं है, अर्थात यदि मैं अपने आप को नहीं जानता, तो मेरे कर्म का, मेरे विचार का कोई भी आधार नहीं है। अत स्वबोध ध्यान का आरंभ है। यह वह बोध नहीं, जिसे आप पुस्तकों से, अधिकारी व्यक्तियों से और गुरुओं से प्राप्त करते हैं, बल्कि यह वह समझ है, जो आत्म-अन्वेषण से आती है। यह आत्म-सजगता है। स्वबोध के बिना ध्यान संभव नहीं है। यदि मैं अपने विचारों, अपनी भावनाओं के तौर-तरीकों को नहीं समझता, यदि मैं अपने अभिप्रायों, अपनी आकांक्षाओं, अपनी मांगों, कर्म के विभिन्न प्रारूपों के अपने अनुशीलन, यानी धारणाओं को नहीं समझता; यदि मैं स्वयं को नहीं जानता, तो चिंतन के लिए कोई आधार नहीं होता। खुद को

Word Count: 4, Character Length: 3947 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22422

रही है। हैं, जिसमें दो से अधिक बच्चे पैदा करने पर सरकारी सुविधाओं से वंचित करने का प्रावधान हो। यानी, ऐसी नीतियों के पालनकर्ताओं को प्रोत्साहित और न पालन करने वालों को दंडित करने का प्रावधान तय करने की मांग लगातार होती रही है। मगर चंद्रबाबू नायडू ठीक इसके विपरीत जाते हुए अपने राज्य में जनसंख्या नियंत्रण की नहीं, बल्कि आबादी बढ़ाने की नीति लाने की वकालत कर रहे हैं। वह ज्यादा बच्चे पैदा करने वालों को प्रोत्साहित और कम बच्चे पैदा करने वाले को दंडित करने का मन बना रहे हैं। नायडू का मानना है कि राज्य में लोगों की बढ़ती औसत उम्र चिंता का विषय है। परिवारों को कम से कम दो या उससे ज्यादा बच्चे पैदा करने चाहिए। आने वाले समय में जिनके दो या उससे ज्यादा बच्चे होंगे, वही स्थानीय निकाय का चुनाव लड़ पाएंगे। राज्य सरकार इसके लिए जल्द ही कानून बनाएगी। उनका यही मानना है कि आंध्र प्रदेश के कई जिले ऐसे हैं, जहां गांवों में अब सिर्फ बुजुर्ग ही बचे हैं। दक्षिण के राज्यों में प्रजनन दर लगातार गिरती जा रही है। देश में औसत प्रजनन दर जहां 2.1 है, वहीं दक्षिण के राज्यों में यह आंकड़ा गिरकर 1.6 तक पहुंच गया है। सवाल है कि क्या सच में भारत बूढ़ा हो रहा है? ऐसा इसलिए, क्योंकि युवा आबादी लगातार घट रही है। केंद्र की यूथ इन इंडिया-2022 की रिपोर्ट बताती है कि 2036 तक देश की 34.55 करोड़ आबादी ही युवा होगी, जो अभी 47 फीसदी से ज्यादा है। अभी देश में 25 करोड़ नौजवान 15 से 25 साल के बीच के हैं। साफ है, अगले 15 साल में यह आंकड़ा तेजी से गिरेगा। कम से कम इस मामले में चंद्रबाबू नायडू एक समझदार और दूरदर्शी नेता मालूम पड़ रहे हैं, क्योंकि हम सबको चीन से सबक लेना चाहिए, जो अपने 80

Word Count: 1, Character Length: 3694 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22423

चीन में रूसी राजदूत एंड्री डेनिसोव ने कहा, दोनों नेता 15-16 सितंबर को उज्बेकिस्तानी शहर समरकंद में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में मिलेंगे। हम इसकी तैयारी कर रहे हैं। इससे पहले दोनों नेताओं की मुलाकात रूस द्वारा यूक्रेन में सेना भेजे जाने के पहले बीजिंग में हुई थी। रूस को आतंक प्रायोजक राष्ट्र नामित करना आसान नहीं व्हाइट हाउस का कहना है कि रूस को आतंकवाद के प्रायोजक देश के रूप में नामित करना उसे जवाबदेह ठहराने के लिए प्रभावी रास्ता नहीं है क्योंकि यूक्रेन और शेष दुनिया के लिए इसके अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं। प्रेस सचिव कैरन ज्यां पियरे ने कहा, यह वैश्विक खाद्य संकट को कम करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण मानवीय और वाणिज्यिक निकायों को खाद्य निर्यात की सुविधा से दूर कर सकता है और काला सागर बंदरगाह समझौते को खतरे में डाल सकता है, जिसके कारण दुनिया में 10 लाख टन से अधिक यूक्रेनी खाद्यान्न का निर्यात हो रहा है। आईएईए की मांग, यूक्रेनी एटमी संयंत्र के चारों तरफ बने सुरक्षा क्षेत्र संयुक्त राष्ट्र परमाणु निगरानी एजेंसी (आईएईए) ने रूस और यूक्रेन से जपोरिझिया परमाणु ऊर्जा संयंत्र के चारों ओर परमाणु सुरक्षा तथा सुरक्षा संरक्षा क्षेत्र बनाने की मांग की है। संगठन के प्रमुख राफेल ग्रोसी ने परमाणु संयंत्र का निरीक्षण करने के बाद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में कहा, हम आग से खेल रहे हैं और कुछ बेहद विनाशकारी हो सकता है। यहां आसपास के क्षेत्र में गोलीबारी तत्काल रोकी जानी चाहिए। यूक्रेन से लौटे भारतीय छात्र दूसरे देशों से पूरी कर सकेंगे पढ़ाई युद्ध प्रभावित यूक्रेन से लौटे भारतीय छात्र अब दूसरे देशों से अपनी चिकित्सा की पढ़ाई पूरी कर सकेंगे। विशेष परिस्थितियों पर संज्ञान लेते हुए राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) ने यूक्रेन के अकैडमिक मोबिलिटी प्रोग्राम को मंजूरी देने का फैसला किया है, ताकि भारतीय छात्र अपनी डिग्री

Word Count: 1, Character Length: 4294 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22424

नीट कट ऑफ और एनटीए नीट मेरिट कम ऑल इंडिया रैंक लिस्ट भी जारी कर दी है। अंडर ग्रेजुएट मेडिकल पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए नीट परीक्षा 17 जुलाई, 2022 को आयोजित की गई थी। उम्मीदवारों की सहायता के लिए हम यहां टॉप 10 रैंक धारकों के बारे में विस्तृत जानकारी दे रहे हैं। बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पूर्व से सटे पूर्व मध्य में चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र बनने से ओडिशा में अगले तीन दिनों तक भारी से बहुत भारी बारिश होने की संभावना है। आईएमडी भुवनेश्वर के वैज्ञानिक उमाशंकर दास ने बताया कि दक्षिण पूर्व बंगाल की खाड़ी से सटे पूर्व मध्य में बुधवार रात चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र बन गया है। इसकी वजह से अगले 24 घंटे में पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी के ऊपर निम्न दबाव का क्षेत्र बनेगा। जिससे राज्य में 9-11 सितंबर से भारी से बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है। उमाशंकर दास ने बताया कि "ओडिशा के संवेदनशील पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की संभावना बनी हुई है। मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी गई है। महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में बारिश की संभावना वहीं, आईएमडी मुंबई ने बुधवार देर रात करीब साढ़े 12 बजे बताया कि अगले 3-4 घंटे यानी गुरुवार तड़के ठाणे, रायगढ़, पालघर, नासिक, पुणे, अहमदनगर, सोलापुर, उस्मानाबाद और लातूर जिलों में अलग-अलग स्थानों पर 30-40 किमी घंटा की रफ्तार से चलने वाली तेज हवाओं के साथ बिजली और मध्यम से तीव्र बारिश की संभावना है। बेंगलुरु के लिए बुरा वक्त खत्म नहीं हुआ, 8 से 10 दिसंबर के बीच भारी बारिश के लिए रेड अलर्ट जारी बेंगलुरु के कुछ हिस्सों में बुधवार को बाढ़ का पानी कम जरूर हो गया, लेकिन आईटी राजधानी के लिए सबसे खराब स्थिति कम नहीं हुई है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने अगले दो दिन में शहर समेत दक्षिणी कर्नाटक में भारी

Word Count: 6, Character Length: 3925 characters

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-13-Test NO.-22425

फिर एडिलेड में जन्मी शिक्षिका तारा जिंदगी में आईं, तो जीवन संगिनी ही बन गईं। लंदन के उन दिनों में ओलोंगा ने संगीत का सहारा लिया। वह क्रूज पर, छोटी-छोटी पार्टियों में गाया-बजाया करते। आखिरकार 2015 में पत्नी तारा के साथ वह वुडक्रॉफ्ट (ऑस्ट्रेलिया) बसने आ गए। तारा मुश्किलें कैसी भी हों, इंसानी हौसले के सामने घुटने टेक देती हैं। किशोर ने एक फैसला किया, चट्टानों को दोस्त बना लिया जाए। मैंने चट्टानों का कुछ नहीं बिगाड़ा, चट्टानें मेरी दुश्मन नहीं हैं। चट्टानें तो अपनी जगह स्थिर हैं, रत्ती भर भी टस-मस नहीं होती हैं। चट्टानें धोखेबाज नहीं हैं। दुनिया में मुश्किलों के बेहिसाब पहाड़ हैं। उस बच्चे की राह में भी कुछ पहाड़ खड़े थे और कुछ अभी खड़े हो रहे थे। उसे पता था कि मेरी आंखें एक रोग की वजह से धीरे-धीरे जवाब देने लगी हैं और एक दिन आएगा, जब दिखना बंद हो जाएगा। तब जिंदगी में चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ या गड्ढे व खाइयां रह जाएंगी। डॉक्टर ने कहा था कि बच्चे को बचाकर रखो, ताकि यह आंखों से ज्यादा दिन तक देखता रहे। घर के सभी लोग उसे ज्यादा दौड़-भाग से बचाते थे, पर एक दिन आया, जब सारे जतन विफल हो गए। किशोरवय के शुरू होते ही आंखों ने जवाब दे दिया। मुश्किल का एक और पहाड़ टूटा, बेटे का दुख देखने के लिए मां भी नहीं रहीं, एक दुर्घटना में उनकी जान चली गई। खैर, पिता अपने बेटे के साथ चट्टान की तरह खड़े हो गए। पिता ने बेटे को ख्वाबों से जुदा नहीं किया, बल्कि खूब ख्वाब दिखाए और कहा कि तुम सब कुछ कर सकते हो, तुम्हें कौन रोकेगा? ब्रेल के माध्यम से पढ़ाई चल रही थी, कुश्ती में भी मन लगने लगा था, पर उन्हीं दिनों ब्रेल में लिखा एक न्यूजलैटर उस किशोर के हाथ लगा, जिसमें अंधे

Word Count: 5, Character Length: 3731 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22430

गोगरा हॉट स्प्रिंग्स के क्षेत्र में भारतीय और चीनी सैनिकों ने समन्वित और नियोजित तरीके से डिसइंगेज करना शुरू कर दिया है। भारत चीन की ओर से संयुक्त बयान जारी कर यह जानकारी दी गई। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि आज भारत चीन कोर कमांडर स्तर की बैठक के 16वें दौर में बनी आम सहमति के अनुसार, गोगरा हॉटस्प्रिंग्स (पीपी 15) के क्षेत्र में भारतीय और चीनी सैनिकों ने समन्वित और नियोजित तरीके से पीछे हटना शुरू कर दिया है। इससे सीमावर्ती क्षेत्रों में शांतिपूर्ण माहौल बनाने में मदद मिलेगी। इससे पहले 16वें दौर की भारत चीन कोर कमांडर स्तर की बैठक 17 जुलाई को भारत की तरफ चुशुल मोल्दो सीमा मिलन स्थल पर हुई थी। इसमें दोनों पक्ष पश्चिमी क्षेत्र में जमीन पर सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने पर सहमत हुए थे। इस दौरान हॉट स्प्रिंग क्षेत्र के पेट्रोलिंग प्वाइंट 15 से सैनिकों की वापसी पर सहमति बनी थी। बैठक में दोनों पक्ष संपर्क में रहने और सैन्य एवं राजनयिक माध्यमों की मदद से बातचीत बनाए रखने और शेष मुद्दों को पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान पर जल्द से जल्द काम करने पर सहमत हुए थे। भारत और चीन के बीच 16वें दौर की सैन्य वार्ता करीब साढ़े बारह घंटे तक चली थी। इस दौरान भारत ने फिर से चीन पर दबाव डाला कि वह पूर्वी लद्दाख के विवाद वाले क्षेत्रों से सेना पूरी तरह पीछे हटाए। गौरतलब है कि मई 2020 में जब दोनों देशों की सेनाओं के बीच गतिरोध बढ़ा था तब से भारत चीन के सैनिकों को पैट्रोलिंग पॉइंट 15 के पास एक दूसरे के विपरीत तैनात किया गया है। भारत और चीन ने पैंगोंग त्सो लेक के दोनों किनारों से सैनिकों को हटा भी चुके हैं। शिखर सम्मेलन से पहले शुरू हुई प्रक्रिया सेनाओं को पीछे हटाने की प्रक्रिया उज्बेकिस्तान में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ)

Word Count: 0, Character Length: 3901 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22431

एलिजाबेथ द्वितीय ने कंजरवेटिव पार्टी की नेता लिज ट्रस को मंगलवार को ही औपचारिक रूप से ब्रिटेन का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। ट्रस महारानी से मिलने के लिए स्कॉटलैंड के एबर्डीनशायर पहुंची थी। यहां के बाल्मोरल कैसल में महारानी का आवास है। बकिंघम पैलेस की ओर से जारी बयान में कहा गया कि महारानी बाल्मोरल में हैं। उनके बेटे प्रिंस चार्ल्स और पोते प्रिंस विलियम महारानी के पास जाने के लिए रवाना हो गए हैं। महारानी की उम्र 96 वर्ष बताई जा रही है। इस बीच पीएम ट्रस ने कहा कि बकिंघम पैलेस की इस खबर से पूरा देश चिंतित है। इस समय मेरी और पूरे देश की शुभकामनाएं महारानी और उनके परिवार के साथ हैं। हम उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं। पाकिस्तान में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पेशावर में हुई रैली के दौरान यूट्यूब को प्रतिबंधित करने के शहबाज शरीफ सरकार सरकार के कथित कदम से देश के एक बड़े जनमत में भारी गुस्सा पैदा हुआ है। जानकारों ने इसे शरीफ के नेतृत्व वाली पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट (पीडीएम) सरकार के दौरान बढ़ रही तानाशाही की मिसाल बताया है। शरीफ सरकार इसके पहले इमरान खान समर्थक एआरवाई और बोल न्यूज जैसे मीडिया चैनलों का प्रसारण रोक चुकी है। मंगलवार रात पेशावर रैली के समय पाकिस्तान में यूट्यूब का प्रसारण बाधित हो गया। सरकार ने ये कदम पाकिस्तान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रेगुलेटरी अथॉरिटी (पेमरा) के पेशावर रैली के प्रसारण से रोक हटा लेने के बावजूद उठाया। पाकिस्तान में इंटरनेट ट्रैक करने वाली गैर सरकारी संस्था नेटब्लॉक ने यूट्यूब का प्रसारण बंद हो जाने की पुष्टि की है। उसने एक बयान में कहा नेटब्लॉक राजनीतिक भाषण का प्रसारण रोकने के मकसद से नेटवर्क में रुकावट डालने और सोशल मीडया पर प्रतिबंध लगाने की सलाह कभी नहीं देता। ऐसे कदमों से अभिव्यक्ति और सभा करने की बुनियादी आजादी पर

Word Count: 0, Character Length: 4157 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22432

यूट्यूब को ब्लॉक कर दे, जब इमरान खान का भाषण हो रहा हो। यह एक गैर कानूनी सेंसरशिप है। सरकार को संविधान का मखौल उड़ाने और इस देश को एक वीडियो गेम समझने से बाज आना चाहिए। इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ (पीटीआई) के नेताओं इस घटना को लेकर शरीफ सरकार पर जोरदार हमला बोला है। पार्टी नेता फव्वाद चौधरी ने कहा कि अब पाकिस्तान आधिकारिक रूप से बनाना रिपब्लिक बन गया है। पीटीआई नेता और पूर्व मानवाधिकार मंत्री शिरीन मजारी ने कहा इमरान खान का भाषण लोग किसी ना किसी तरीके से सुन लेंगे। लेकिन ऐसा मैंने कभी नहीं सोचा था कि पाकिस्तान के अंदर अपनी ही जनता के खिलाफ साइबर युद्ध छेड़ दिया जाएगा। पेशावर रैली में इमरान खान जो बातें कहीं, वे बुधवार के पाकिस्तानी अखबारों में प्रमुख सुर्खियां बनी हैं। खान ने अपने भाषण के दौरान अपना ये बयान दोहराया कि किसी भी सूरत में चोरों को देश के अगले सेनाध्यक्ष की नियुक्ति का मौका नहीं दिया जा सकता। ये बात खान ने रविवार को कही थी। उसको लेकर सोमवार को सेना और शरीफ सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया जताई। सरकार ने खान के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की धमकी भी दी। लेकिन मंगलवार को इमरान खान सेना और सरकार की नाराजगी से बेपरवाह नजर आए। इमरान ने कहा अगले सेनाध्यक्ष की नियुक्ति मेरिट के आधार पर होनी चाहिए। नवाज शरीफ और आसिफ अली जरदारी जैसे चोरों को ये नियुक्ति करने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ का 96 वर्ष की आयु में स्कॉटलैंड के बाल्मोरल महल में निधन हो गया। बकिंघम पैलेस, यूनाइटेड किंगडम ने बताया कि आज दोपहर बाल्मोरल में रानी एलिजाबेथ का निधन हो गया। उनकी जगह प्रिंस चार्ल्स को राजा बनाया गया है। पिछले साल अक्तूबर से स्वास्थ्य समस्याओं जूझ रहीं कुछ समय से महारानी एलिजाबेथ कहीं

Word Count: 0, Character Length: 3963 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22436

आकाशगंगा के केंद्र से मील प्रति घंटे से भी अधिक गति से गैस बाहर की ओर निकलने लगी। इस गैस का द्रव्यमान इतना ज्यादा है कि इससे हमारे सूर्य जैसे पांच करोड़ सूर्य बन सकते हैं। दूसरी तरफ, हमारे सूर्य की सतह पर भी विस्फोट हो रहे हैं। वैज्ञानिक इनके कारणों की खोजबीन कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं की एक टीम ने ब्रह्मांड के विर्गो, यानी कन्या क्लस्टर में आकाशगंगा एनजीसी 4383 का अध्ययन किया, जिससे पता चला कि गैस का प्रवाह इतना विराट है कि प्रकाश को एक से दूसरी तरफ जाने में 20,000 साल लगेंगे। यह खोज रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी की मंथली नोटिस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इंटरनेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोनॉमी रिसर्च आईसीआरएआर में यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया नोड के प्रमुख लेखक डॉ एडम वाट्स ने कहा है कि बहिर्प्रवाह आकाशगंगा के मध्य क्षेत्रों में शक्तिशाली तारकीय विस्फोटों का नतीजा था, जो बड़ी मात्रा में हाइड्रोजन व भारी तत्वों को बाहर निकाल सकता था। उत्सर्जित गैस का द्रव्यमान पांच करोड़ सूर्य से अधिक के बराबर है। डॉ वाट्स ने कहा, बहिर्प्रवाह की भौतिकी और उनके गुणों के बारे में बहुत कम जानकारी है, क्योंकि बहिर्प्रवाह का पता लगाना बहुत कठिन है। निकली गैस भारी तत्वों से भरपूर होती है, जो हमें बाहर निकलने वाली गैस में हाइड्रोजन और धातुओं के बीच मिश्रण की जटिल प्रक्रिया का एक अनूठा दृश्य प्रदान करती है। इस विशेष मामले में हमने ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, सल्फर और कई अन्य रासायनिक तत्वों का पता लगाया। आकाशगंगाएं कितनी तेजी से और कितने समय तक तारे बनाती रह सकती हैं, इसे नियंत्रित करने के लिए गैस का बहिर्प्रवाह महत्वपूर्ण होता है। इन विस्फोटों से निकली गैस आकाशगंगा के भीतर तारों के बीच, यहां तक कि आकाशगंगाओं के बीच के स्थान को भी प्रदूषित कर देती है और अंतरिक्ष में हमेशा के लिए तैर सकती है।

Word Count: 0, Character Length: 4160 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22437

राजधानी दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण से जुड़े मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने जो टिप्पणियां की हैं, उनके गहरे निहितार्थ हैं। अदालत ने पराली जलाने के मामले में पंजाब और हरियाणा सरकार की आधी-अधूरी कार्रवाइयों पर न केवल गहरी नाराजगी जताई, बल्कि केंद्रीय पर्यावरण संरक्षण कानून को दंतहीन तक करार दिया। गहराते वायु प्रदूषण के संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट की गंभीरता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि उसने पंजाब और हरियाणा सरकार के जवाबी हलफनामों की विसंगतियों को उजागर करते हुए पंजाब के मुख्य सचिव को गलतबयानी के लिए अवमानना की कार्रवाई तक की चेतावनी दे डाली। अदालत की नाराजगी बिल्कुल जायज है, क्योंकि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों की सांसों पर वायु प्रदूषण पिछले कई दिनों से कहर ढा रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़े बताते हैं कि बुधवार को राजधानी दिल्ली के कुछ इलाकों में वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 के पार पहुंच गया, जो घातक श्रेणी में आता है। ऐसे में, क्या आश्चर्य कि यहां सांस संबंधी रोगों में 15 फीसदी तक उछाल की खबरें सुर्खियां बटोरने लगी हैं? निस्संदेह, राजधानी दिल्ली की आबोहवा की इस हालत के लिए किसी एक सूबे या सरकार को पूरी तरह दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि पराली दहन के साथ-साथ कई अन्य कारकों का इस प्रदूषण में योगदान है। मगर एक संघ के तौर राज्य सरकारों का रवैया यह सोचने को मजबूर करता है कि अपने ही देश के किसी इलाके की जान पर भारी साबित होती समस्या को लेकर भी उनका रुख इतना असंवेदनशील क्यों है? इस समस्या को तो कार्यपालिका को आपसी तालमेल और मानवीय आधार पर सुलझाना चाहिए था, जिसमें किसानों के हितों की भी अनदेखी न होती और राजधानी के लोगों को भी राहत मिल पाती, मगर न सिर्फ आला अदालत को इसके लिए हस्तक्षेप करना पड़ रहा है

Word Count: 2, Character Length: 4040 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22438

बल्कि वहां भी सभी पक्ष कानूनी दांवपेच अपना रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने उचित ही फटकार लगाई है कि आप जवाब पर जवाब दाखिल करते रहेंगे और यह सिलसिला यूं ही चलता रहेगा। कोर्ट ने केंद्र से भी पूछा है कि यदि राज्य आपके नोटिस को गंभीरता से नहीं ले रहे, तो आप उनके खिलाफ मुकदमे कायम क्यों नहीं करते? स्पष्ट है, अदालत पराली दहन मामले में सभी पक्षों से असरकारी पहल चाहता है। प्रदूषण की समस्या से निपटने में शहरी जन-भागीदारी के पहलू को भी गंभीरता से लेने की जरूरत है। राजधानी के लोग इस तथ्य से वाकिफ हैं कि हर वर्ष इन्हीं दिनों में यह समस्या अधिक गंभीर रूप अख्तियार करती है। ऐसे में, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों से क्या यह अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए कि वे इन दिनों में निजी गाड़ियों का कम से कम इस्तेमाल करें? एनडीएमसी ने मंगलवार को पार्किंग शुल्क दोगुना करने की घोषणा की है, ताकि राजधानी के लोगों की कम दूरी के लिए गाड़ी लेकर निकलने की आदत को हतोत्साहित किया जा सके। यहां के बाशिंदों को समझना होगा कि शहरों को साफ-सुथरा रखने की जितनी जिम्मेदारी सरकारों व स्थानीय निकायों की है, उससे कम दायित्व नागरिकों का नहीं होता। एक स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान ही यही है कि उसमें सत्ता प्रतिष्ठानों को न्यूनतम बल प्रयोग करना पड़ता है। मगर बढ़ते प्रदूषण सरीखे संकट और पराली दहन जैसे मामले हमें बताते हैं कि सार्वजनिक हितों की कीमत पर निजी लाभ की संस्कृति से छुटकारा पाने के लिए हमें सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप की अभी कितनी जरूरत है। महाराष्ट्र में बिसात सज चुकी है। गठबंधनों में सीटों का बंटवारा हो चुका है। कई पार्टियों ने उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है और कई उम्मीदवारों के नामांकन पत्र भरने का सिलसिला भी शुरू हो गया है। इस बार के विधानसभा चुनाव

Word Count: 2, Character Length: 3965 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-14-Test NO.-22439

एक बड़े भाग को अपनी आगोश में लिए रहती हैं। इनकी मीठी बयार गर्मी में भी खुशनुमा एहसास देती हैं। लुटियंस दिल्ली में मुख्य रूप से इमली, अमलतास, जामुन, बरगद वगैरह के पेड़ लगे हैं। पर शायद सबसे ज्यादा जामुन है। सफदरजंग रोड, सुनहरी बाग, राजाजी मार्ग, कुशक रोड, त्यागराज मार्ग, मोतीलाल नेहरू मार्ग में जामुन हैं। अकबर रोड और तीन मूर्ति मार्ग पर इमली के पेड़ हैं। अकबर रोड के पीछे कुछ अमलतास भी हैं। पृथ्वीराज रोड, औरंगजेब रोड, तीस जनवरी मार्ग, कृष्ण मेनन मार्ग पर नीम हैं, तो बाबा खड़क सिंह मार्ग, तिलक मार्ग, फिरोजशाह रोड, तीन मूर्ति मार्ग इमली के पेड़ों से लबरेज है। यहां बड़े-बड़े बंगलों, हरी-भरी सड़कों के बीच देश के सबसे शक्तिशाली नेता, सांसद, मंत्री, सरकारी बाबू और जज रहते हैं। लुटियंस दिल्ली का इतिहास और उसकी बनावट इसे खास बनाती है। यह पूरा इलाका ब्रिटिश काल में बनाया गया था। मशहूर आर्किटेक्ट एडविन लुटियंस ने इसे रॉबर्ट टोर रसेल, वाल्टर जॉर्ज जैसे अपने साथियों के साथ मिलकर डिजाइन किया था। इसका ले-आउट इतना शानदार है कि आज भी यह दुनिया के सबसे खूबसूरत और सुनियोजित इलाकों में गिना जाता है। यहां की चौड़ी सड़कें, बड़े-बड़े बंगले और हरियाली देखकर कोई भी मंत्रमुग्ध हो जाए। लुटियंस दिल्ली में रहना स्टेटस सिंबल है। यहां की सुविधाओं के क्या कहने? लुटियंस दिल्ली के बंगले सरकारी खर्च पर मेंटेन किए जाते हैं। बिजली, पानी, बागवानी और सुरक्षा- सब कुछ सरकार की तरफ से होता है। इसीलिए, एक बार यहां रहने आए लोग आसानी से बंगला छोड़ने को तैयार नहीं होते। लुटियंस दिल्ली में देश के चोटी के उद्योगपतियों के भी आशियाने हैं। इनकी कीमत 300 करोड़ रुपये से कम नहीं होगी। इस इलाके में करीब 250 निजी बंगले भी हैं। ये पृथ्वीराज रोड, एपीजी अब्दुल कलाम रोड, तुगलक रोड, तुगलक लेन वगैरह में हैं। बहरहाल, कभी-कभी तो

Word Count: 6, Character Length: 4093 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22444

लोकसभा सीटों में से सिर्फ 19 सीटों पर जीत हासिल कर सका था। लोकसभा चुनाव में चपत लगने के बाद महाराष्ट्र के सियासी गलियारों में चर्चा थी कि विधानसभा चुनाव के बाद महायुति की सत्ता में वापसी मुश्किल हो सकती है और महाविकास आघाड़ी का पलड़ा भारी था, लेकिन बीते चंद दिनों में कुछ ऐसे घटनाक्रम हुए, जिनसे अब टक्कर कांटे की नजर आ रही है। महाविकास आघाड़ी में फिलहाल कांग्रेस, उद्धव ठाकरे की शिव सेना और शरद पवार की एनसीपी ने 85-85 सीटों पर लड़ने का एलान किया है। 18 सीटें छोटी पार्टियों के लिए छोड़ने और शेष 15 पर आगे बात जारी रखने की घोषणा की गई है। सत्ताधारी महायुति में भाजपा 155, शिव सेना 80 और एनसीपी 53 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है। समस्या यह है कि हर पार्टी से बगावत की आवाज आ रही है। महाराष्ट्र में मुद्दों की चर्चा करें, तो मराठा आरक्षण का मुद्दा फिर नतीजों को प्रभावित कर सकता है। लोकसभा चुनाव में महायुति को मराठा समुदाय के गुस्से का खमियाजा भुगतना पड़ा था। शिक्षा और रोजगार में आरक्षण को लेकर मनोज जरांगे पाटिल के नेतृत्व में जो आंदोलन शुरू हुआ, उसका मुख्य निशाना भाजपा ही थी। इस बार जरांगे पाटिल के इस एलान ने महायुति के नेताओं की नींद उड़ा दी है कि वे कई सीटों पर मराठा उम्मीदवार उतारेंगे और जहां नहीं उतार सकते, वहां दूसरी पार्टी के उम्मीदवारों का समर्थन करेंगे। मराठा वोटों के नुकसान से बचने के लिए ओबीसी जातियों को अपने साथ करने का पुरजोर प्रयास महायुति के घटक दल कर रहे हैं। वैसे तो हरियाणा और महाराष्ट्र की सियासी जटिलताएं अलग-अलग हैं, पर हरियाणा चुनाव के नतीजों का असर महाराष्ट्र में भी नजर आ रहा है। जिस तरह तमाम एग्जिट पोल व अनुमानों में हार की भविष्यवाणी के बावजूद भाजपा हरियाणा में सरकार बनाने में कामयाब

Word Count: 2, Character Length: 3893 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22445

इस योजना के तहत गरीबी रेखा से नीचे आने वाली 21 से 65 उम्र की महिलाओं को हर महीने सरकार की तरफ से 1,500 रुपये दिए जाते हैं। अब तक योजना की पात्र महिलाओं को तीन किस्तें मिल भी गई हैं। इसके अलावा महिलाओं को साल में तीन बार मुफ्त गैस सिलेंडर देने का भी एलान है। चुनाव से ठीक पहले शिंदे सरकार ने मुंबई में प्रवेश पर लिए जाने वाले टोल टैक्स को भी खत्म कर दिया है। सिर्फ भारी वाहनों को टोल टैक्स भरना होगा। सरकार ने गौसेवकों को प्रतिदिन 50 रुपये का भत्ता देने और मदरसा शिक्षकों की वेतन-वृद्धि का भी एलान किया है। गौर करने की बात है कि आम चुनाव में महायुति की हार के पीछे एक बड़ा कारण किसानों का आक्रोश था। चुनाव से ठीक पहले शिंदे सरकार ने 2023 के नुकसान के लिए राहत के तौर पर 4,111 करोड़ रुपयों की मंजूरी दी है। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में इस साल के शुरुआती छह महीनों में 1,267 किसान आत्महत्या कर चुके हैं। हर पार्टी किसानों को लुभाने में लगी है। महाराष्ट्र में एक खास पहलू यह है कि लोकसभा चुनाव में शरद पवार और उद्धव ठाकरे के प्रति सहानुभूति दिखी थी। शरद पवार की पार्टी ने अजीत पवार से दोगुनी सीटें जीती थीं। लोगों को अजित पवार की अपने चाचा शरद पवार से बगावत पसंद नहीं आई। यह देखना दिलचस्प होगा कि विधानसभा चुनाव में शरद पवार के प्रति कैसी सहानुभूति रहती है? उद्धव ठाकरे का मामला भी शरद पवार की तरह ही है। एनसीपी से एक साल पहले जून 2022 में शिवसेना में बगावत हुई। पार्टी का आधिकारिक नाम और चुनाव चिह्न धनुष-बाण एकनाथ शिंदे को मिल गया। 56 में से 42 विधायक और 12 सांसद शिंदे के साथ चले गए। इसके बावजूद लोकसभा चुनाव में उद्धव ठाकरे की पार्टी ने शिंदे

Word Count: 2, Character Length: 3649 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22446

ds bl ,yku us egk;qfr ds usrkvksa dh uhan mMk nh gS fd os dbZ lhVksa ij ejkBk mEehnokj mrkjsaxs vkSj tgka ugha mrkj ldrs] ogka nwljh ikVhZ ds mEehnokjksa dk leFkZu djsaxsA ejkBk oksVksa ds uqdlku ls cpus ds fy, vkschlh tkfr;ksa dks vius lkFk djus dk iqjtksj iz;kl egk;qfr ds ?kVd ny dj jgs gSaA oSls rks gfj;k.kk vkSj egkjk"Vª dh fl;klh tfVyrk,a vyx&vyx gSa] ij gfj;k.kk pquko ds urhtksa dk vlj egkjk"Vª esa Hkh utj vk jgk gSA ftl rjg reke ,fXtV iksy o vuqekuksa esa gkj dh Hkfo";ok.kh ds ckotwn Hkktik gfj;k.kk esa ljdkj cukus esa dke;kc jgh] mlus egkjk"Vª esa Hkh Hkktik dk;ZdrkZvksa esa ubZ tku Qwadh gSA tc gfj;k.kk esa opZLo j[kus okyh tkV tkfr dk >qdko dkaxzsl dh rjQ utj vk;k] rks Hkktik us viuk /;ku ckdh tkfr;ksa ij dsafnzr dj fn;k] mlh rjg ls egkjk"Vª dh lcls cMh tkfr ejkBk ds foeq[k gksus ij Hkktik vU; tkfr;ksa dk leFkZu ikus dh dksf'k'k dj jgh gSA bl pquko esa yksdyqHkkou ?kks"k.kkvksa dk Hkh cMk tksj gSA e/; izns'k dh ykMyh cguk ;kstuk dh rtZ ij blh lky vxLr esa egkjk"Vª esa Hkh f'kans ljdkj us eq[;ea=h ek>h ykMdh cfg.k ;kstuk dh 'kq#vkr dh gSA bl ;kstuk ds rgr xjhch js[kk ls uhps vkus okyh 21 ls 65 mez dh efgykvksa dks gj eghus ljdkj dh rjQ ls 1]500 #i;s fn, tkrs gSaA vc rd ;kstuk dh ik= efgykvksa dks rhu fdLrsa fey Hkh xbZ gSaA blds vykok efgykvksa dks lky esa rhu ckj eq¶r xSl flysaMj nsus dk Hkh ,yku gSA pquko ls Bhd igys f'kans ljdkj us eqacbZ esa izos'k ij fy, tkus okys Vksy VSDl dks Hkh [kRe dj fn;k gSA flQZ Hkkjh okguksa dks Vksy VSDl Hkjuk gksxkA ljdkj us xkSlsodksa dks izfrfnu 50 #i;s dk HkÙkk nsus vkSj enjl

Word Count: 339, Character Length: 1552 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22450

अध्यक्ष रहे प्रो दीपांकर बनर्जी के अनुसार, सूरज की सतह पर विस्फोट होते रहते हैं, पर इसका प्रभाव पृथ्वी या अन्य किसी ग्रह तक तभी पहुंचता है, जब विस्फोटों की झड़ी लग जाए। इन दिनों सूर्य की सतह पर कुछ ऐसा ही चल रहा है। उन्होंने कहा, सौर तूफानों का प्रभाव कई तरीके से पड़ सकता है। इनमें प्रमुख है, रेडिएशन का धरती की ऊपरी सतह को प्रभावित करना, पृथ्वी की कक्षा में चक्कर लगा रहे सैटेलाइट्स पर असर पड़ना या उनकी कार्य-क्षमता प्रभावित होना, धरती की ऊपरी सतह का तापमान तेजी से बढ़ना, दूरसंचार में बाधा आना आदि। जाहिर है, हमें इन सब पर नजर बनाए रखनी होगी। एक बूढ़े आदमी के पास बहुत सुंदर घोड़ा था, एक रात वह चोरी चला गया। घोड़ा बेशकीमती था। बड़े-बड़े सम्राटों ने उसे मोल लेना चाहा था, लेकिन उस बूढ़े ने किसी को नहीं दिया। सुबह गांव के लोग इकट्ठे हुए, भीड़ से किसी ने कहा, बहुत बुरा हुआ। इतनी कीमती चीज थी, बेच ही देते तो अच्छा रहता। बूढ़े व्यक्ति ने हंसते हुए लोगों से कहा, ऐसा मत कहो कि बुरा हुआ। हमें कुछ भी पता नहीं है कि क्या हुआ इतना ही कहो कि रात घोड़ा अस्तबल में था, अब नहीं है, इससे ज्यादा कहना भगवान के प्रति विरोध होगा। गांव के लोगों ने समझा घोड़ा चोरी चले जाने से बूढ़े का दिमाग खराब हो गया है। अव्यावहारिक बातें कर रहा है। मगर पंद्रह दिन बाद वही घोड़ा दोपहर में वापस लौट आया। उसके साथ पंद्रह-बीस जंगली घोड़े भी थे। वह जंगल में भाग गया था। सांझ में गांव के लोग जमा हुए और कहा, बाबा, ठीक कहते थे तुम, मजा आ गया। पंद्रह-बीस घोड़े साथ आ गए। चलना सीख जाएंगे, तो ये भी कीमती हो जाएंगे। बहुत अच्छा हुआ कि घोड़ा गायब हुआ और इतने घोड़ों को भी साथ

Word Count: 4, Character Length: 3672 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22451

वह एक 'चट्टान' की तरह थीं जिस पर आधुनिक ब्रिटेन का निर्माण हुआ था। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के निधन पर किंग चार्ल्स का बयान महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के निधन पर ब्रिटेन के राजा चार्ल्स ने बयान जारी कर कहा कि "मेरी प्यारी मां महारानी का निधन हो गया है। हम एक संप्रभु और बहुत प्यारी मां के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। यह मेरे और मेरे परिवार के सभी सदस्यों के लिए सबसे बड़े दुख का क्षण है 70 साल तक महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने शासन करने के बाद बृहस्पतिवार को स्कॉटलैंड में अंतिम सांस लीं। महारानी के निधन के बाद शाही परिवार में उत्तराधिकारी के चयन की प्रक्रिया शुरू हो गई। निधन के बाद किस तरह से पूरी प्रक्रिया का पालन किया जाना है, इसके लिए ब्रिटेन की सरकार ने योजना बनाकर रखी है। वैसे आपको बता दें कि खबर लिखे जाते समय यह पूरी प्रक्रिया जारी थी। 10 दिन बाद होगा अंतिम संस्कार महारानी का अंतिम संस्कार उनके निधन के 10 दिन बाद होगा। इससे पहले, उनके ताबूत को लंदन से बकिंघम पैलेस से वेस्टमिंस्टर के पैलेस तक निधन के पांच दिन बाद औपचारिक मार्ग से ले जाया जाएगा, जहां रानी तीन दिनों के लिए राज्य में लेटी रहेंगी। इस दौरान लोग उनके अंतिम दर्शन कर सकेंगे, यह स्थल प्रतिदिन 23 घंटे तक खुला रहेगा। अंतिम संस्कार का दिन राष्ट्रीय शोक का दिन होगा, जिसमें वेस्टमिंस्टर एब्बे में होने वाली सेवा और पूरे ब्रिटेन में दोपहर में दो मिनट का मौन रखा जाएगा। अंतिम संस्कार के बाद रानी को विंडसर कैसल के किंग जॉर्ज षष्ठम मेमोरियल चैपल में दफनाया जाएगा। महारानी के निधन के बाद क्या होता है? जानकारी के मुताबिक, महारानी के निधन के बाद प्रधानमंत्री लिज ट्रस को फोन करके सूचना दी गई। इसके बाद शाही परिवार ने सारी तैयारियों के तहत महारानी के

Word Count: 2, Character Length: 3920 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22452

महारानी को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि दिवंगत महारानी अपने पीछे एक महान विरासत छोड़ गई हैं और उन्होंने देश को "स्थिरता और ताकत" भी प्रदान की है। उन्होंने कहा कि महारानी के निधन से ब्रिटेन सदमे में है। वह एक 'चट्टान' की तरह थीं जिस पर आधुनिक ब्रिटेन का निर्माण हुआ था। पीएम के बाद अन्य सभी मंत्रियों को प्रतीक्षा करने के लिए कहा जाता है। इसके बाद प्रिंस चार्ल्स शाम 6 बजे शोक संदेश के तहत राष्ट्र को टेलीविजन पर संबोधित करने की भी जानकारी सामने आई है। इसके बाद वह संसद तक यात्रा करने और स्मारक सेवाओं में भाग लेने के लिए स्कॉटलैंड, उत्तरी आयरलैंड और वेल्स के दौरे का कार्यक्रम पूरा करेंगे। वहीं रक्षा मंत्रालय महारानी के सम्मान में तोपों की सलामी की व्यवस्था करेगा। बकिंघम पैलेस के गेट पर लगेगा नोटिस महारानी के निधन के बाद बकिंघम पैलेस के मुख्य द्वार पर शोक के कपड़े पहनकर सेवक खड़ा रहेगा। वह दरवाजे पर एक नोटिस लगाएगा। निधन के बाद यूके की संसद, स्कॉटलैंड, वेल्स और नॉर्दन आयरलैंड की संसद को स्थगित कर दिया जाएगा। यदि संसद नहीं हो रही है तो इसे बुलाया जाएगा। इस दौरान महल की वेबसाइट शोक संदेश में बदल जाएगी। सभी सरकारी वेबसाइट्स भी काले बैनर्स के साथ दिखाई देंगी। बता दें कि खबर लिखे जाने तक ब्रिटेन की अधिकांश वेबसाइट पर काले बैनर्स दिखाई देने लगे थे। लोग सड़कों पर थे और आंसुओं के साथ अपना दुख्य व्यक्त कर रहे थे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के निधन पर शोक जताया है। पीएम मोदी ने कहा कि उन्हें हमारे समय की दिग्गज के रूप में याद किया जाएगा। उन्होंने अपने देश और लोगों को प्रेरक नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में गरिमा और शालीनता का परिचय दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया, महामहिम महारानी एलिजाबेथ द्वितीय

Word Count: 2, Character Length: 4088 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-15-Test NO.-22453

उन खासमखास लोगों से सहानुभूति होती है, जिन्हें इधर रहने के बाद कहीं और जाना पड़ता है। सच में, बड़ी तकलीफ होती होगी अर्श से फर्श पर आते हुए। व्यास पूजा, अर्थात गुरु पूर्णिमा शिष्यों और साधकों के जीवन में एक दिव्य तिथि होती है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि क्या हमने सच्चे शिष्य होने का धर्म निभाया? क्या हमने अपने श्रीगुरु के वचनों का पालन किया, उनके ज्ञान को अपने जीवन में उतारा? यह पर्व आत्म-परीक्षण का अवसर देता है। एक सच्चा साधक जानता है कि जीवन केवल भौतिक सुखों को इकट्ठा करने के लिए नहीं है। यह जीवन धर्म को समझने, उसे जीने और फिर धर्मपूर्वक अर्जित धन से संसार का संचालन करने के लिए मिला है। विवेक और वैराग्य के जागरण के लिए मिला है। गृहस्थ जीवन जीते हुए भी साधक सजग रह सकता है। विवाह करें, परिवार बनाएं, पर स्मरण रहे कि शरीर और उससे जुड़े सुख नश्वर हैं। इसलिए भोग में लिप्त होकर चेतना को गिरने न दें। विशेषकर गृहस्थ के लिए यह जागरूकता अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वह रोज संसार, बाजार और भोगवाद से घिरा होता है। वहीं यदि साधना प्रबल हो, तो वही गृहस्थ उत्तम साधक बन जाता है। एक शिष्य वही है, जो साधना करता है। चाहे वह कितना भी व्यस्त हो, उसके अंदर एक मस्ती, साधना की खुशबू, सुख बना रहता है। जो प्रातःकाल ध्यान करे और सायंकाल जप, वह अपने जीवन की दिशा को सार्थक करता है। जो कभी ध्यान, प्राणायाम और सिमरन न करे, ऐसा व्यक्ति गुरु-शिष्य परंपरा का अंग नहीं हो सकता। जब शिष्य ही न रहे, तो गुरु की उपस्थिति का क्या अर्थ? संपूर्ण सृष्टि के प्रथम गुरु महादेव हैं। ज्ञान की यह परंपरा महादेव से चली और ऋषि वेदव्यास तक पहुंची। वेदव्यास ने वेदों को चार भागों में संहिताबद्ध किया, ब्रह्मसूत्र की रचना की,

Word Count: 2, Character Length: 3825 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22458

हाथ मिलाते हुए देखा जा सकता है। बहरहाल, बीते बुधवार को ही महारानी को वरिष्ठ मंत्रियों के साथ ऑनलाइन माध्यम से बैठक करनी थी। परंतु इस बैठक को उन्होंने टाल दिया था। इसके बाद गुरुवार को दिन में जब महारानी की स्वास्थ्य जांच की गई तो चिकित्सकों ने इसे लेकर चिंता जताई थी। महारानी के चिकित्सकों ने उन्हें आराम की सलाह दी थी, साथ ही लगातार नजर बनाए हुए थे। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय को इसी वर्ष फरवरी में कोरोना भी हो गया था। हालांकि उस वक्त उन्हें हल्की सर्दी जैसे लक्षण उभरे थे। महारानी के निधन की सूचना मिलते ही उनके बेटे प्रिंस चार्ल्स, उनकी पत्नी कैमिला, पोते प्रिंस विलियम्स भी गुरुवार को स्कॉटलैंड पहुंच गए थे। प्रिंस हैरी और उनकी पत्नी मीगन भी महारानी का स्वास्थ्य जानने स्कॉटलैंड गए थे। एपिसोडिक मोबिलिटी प्रॉब्लम एक तरह से उठने-बैठने में दिक्कत से जुड़ी बीमारी है। इसकी वजह से मरीज को कुर्सी पर बैठने और उठने में परेशानी जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है। वह ठीक ढंग से चल-फिर भी नहीं पाते हैं। जोड़ों में दर्द उनके लिए एक आम बात होती है, इसमें काफी दर्द भी होता है। चिकित्सकों के अनुसार, इस बीमारी में मांसपेशियों की कमजोरी, जोड़ों की समस्याएं, दर्द और तंत्रिका संबंधी (मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र) परेशानी होती है। कभी-कभी कई हल्की समस्याएं एक समय में होती हैं और गंभीर रूप से गतिशीलता प्रभावित करती हैं। बता दें कि यह बीमारी सिर्फ बुजुर्गों में ही नहीं होती, बल्कि यह किसी भी आयुवर्ग में हो सकती है। चिकित्सकों के अनुसार, एपिसोडिक मोबिलिटी प्रॉब्लम का औपचारिक निदान नहीं है। इसमें व्यक्ति की गतिशीलता में उतार-चढ़ाव होता है या यह अंतराल यानी एपिसोड में आता है। इसमें पुराना दर्द उभरना, मौसम (उदाहरण के लिए बैरोमीटर का दबाव, जोड़ों में सूजन) और चोट भी एपिसोडिक को प्रभावित कर सकती है। ब्रिटेन की महारानी

Word Count: 4, Character Length: 4174 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22459

उस बूढ़े व्यक्ति ने टोका- बस, बस, बस। ज्यादा मत बढ़ो, क्योंकि अभी तुम अच्छा कहोगे, तो कल तुम्हें बुरा कहने का मौका मिल जाएगा। इतना ही कहो कि घोड़ा लौट आया, पंद्रह घोड़े भी आ गए, इससे ज्यादा मत कहो, क्योंकि हम कुछ जानते नहीं हैं। पता नहीं क्या छिपा हो इसके पीछे लोगों ने कहा, अब रहस्य की बातें करने की कोई जरूरत नहीं, नगद फायदा है। लेकिन आठ दिन बाद ही गांव के लोगों को अपनी बात बदल लेनी पड़ी। उस बूढ़े का एक ही जवान लड़का था, वही उसके बुढ़ापे का सहारा था। वह एक जंगली घोड़े को दौड़ना सिखा रहा था, उसने पटक दिया, उसके दोनों पैर टूट गए। गांव के लोगों ने कहा- बाबा, यह तो बहुत बुरा हुआ। घोड़े क्या आए, दुर्भाग्य आ गया घर में। बूढ़े आदमी ने कहा- फिर तुम लोग वही कहे जा रहे। मत कहो कुछ। इतना ही काफी है कि कल तक लड़के की टांगें थीं, आज टूट गईं। अच्छा हुआ कि बुरा, हम क्या जानें जो तोड़ता होगा वह जोड़ना भी जानता ही होगा। लोगों ने कहा- अब इस बकवास को हम सुनने को राजी नहीं हैं। वे क्रोध से भरे चले गए। लेकिन पंद्रह दिन बाद ही उस राज्य पर हमला हो गया। राजा ने गांव के जितने जवान लड़के थे, सबको जबरदस्ती फौज में भर्ती कर लिया, सिर्फ उस बूढ़े का लड़का रह गया। धार्मिक व्यक्ति तथ्य को कह देता है और चुप हो जाता है, क्योंकि एक तथ्य अनंत तथ्यों से जुड़ा है क्या अच्छा है, क्या बुरा है, कोई भी नहीं कह सकता है। हम मौन में सिर्फ धन्यवाद दे सकते हैं! भारत सात दशकों से अनवरत लोकतंत्र की लौ जलाए हुए है, लेकिन इसे मलिन करने के लिए वैश्विक स्तर से लेकर देश के भीतर तक लगातार कसरत जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र

Word Count: 4, Character Length: 3521 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22460

मतदान करेगा। जाहिर है, साल 2024 तमाम देशों के आपसी रिश्तों में व्यापक बदलाव ला सकता है। मगर सबकी नजरें भारत पर ही टिकी हुई हैं। सवाल है कि किन-किन उपायों से लोकतंत्र को कमजोर किया जा रहा है इसमें सबसे ऊपर है, फर्जी सूचना। इसके तहत वास्तविक सूचनाओं से छेड़छाड़ करके उसे किसी एक पार्टी के पक्ष में पेश किया जाता है और दूसरे के खिलाफ माहौल बनाया जाता है। टूलकिट जैसी शब्दावली इसी का हिस्सा है। मतदाता अगर बहुत जागरूक नहीं हुआ, तो वह इन गलत सूचनाओं के प्रभाव में आसानी से आ सकता है और भ्रमित होकर किसी ऐसे दल को वोट दे सकता है, जो देश को रसातल में पहुंचा दे। भ्रम पैदा करके अपने पक्ष में माहौल बनाने का सिर्फ यही एक तरीका नहीं है। इसके अतिरिक्त फर्जी अकाउंट बनाए जाते हैं और फेक न्यूज का प्रसार किया जाता है। इस क्रम में ट्रोलिंग भी जमकर की जाती है, जो हम इन दिनों भारत में खूब देख रहे हैं। देश के गृह मंत्री का फर्जी वीडियो प्रसारित करके मतदाताओं को भ्रमित करने की कवायद पिछले दिनों की गई थी। उसके संदर्भ में उचित कार्रवाई की जा रही है। इन सबका मकसद एक ही है, किसी भी तरह से चुनाव की निष्पक्षता को प्रभावित करना या इसमें किसी न किसी तरह से दखल देना। अच्छी बात है कि सरकार इसको रोकने के लिए हरसंभव उपाय कर रही है। कानून भी अपना काम ईमानदारी से कर रहा है। फिर भी, जनता को तैयार रहना होगा। ऑनलाइन सूचनाओं पर आंखें मूंदकर विश्वास करने से हमें बचना चाहिए। ऐसी किसी सूचना को पहले परखना चाहिए, फिर उसे आगे फॉरवर्ड करना चाहिए। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इसमें शायद ही किसी को कोई संदेह है, लेकिन जिस तरह से यहां आम चुनाव, विशेषकर ईवीएम को लेकर स्थानीय स्तर

Word Count: 1, Character Length: 3740 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22464

परिवारवाद का विस्तार भी रोचक होगा। 2019 के विधानसभा चुनाव में उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे ने वर्ली से चुनाव जीतकर चुनावी राजनीति में कदम रखा था। इस बार राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे पदार्पण कर रहे हैं। अजीत पवार के दूसरे बेटे जय पवार और शरद पवार के पोते युगेंद्र पवार मैदान में उतर सकते हैं। तय है, महाराष्ट्र के महा मुकाबले से देश की निगाह नहीं हटेगी। रेस्तरां में कॉफी बनाते और ड्रिंक डालते रोबोट अब जगह-जगह दिखने लगे हैं। स्वचालित व प्रतिक्रिया देने वाले रोबोट को हवाईअड्डों और मॉल में भी काम करते देखा जा सकता है। कुछ रेस्तरां तो ऐसे भी हैं, जहां रोबोट इस्तेमाल की गई प्लेटों को एकत्र करते हैं और उनको रसोई में ले जाते हैं। साफ है, तमाम आकार-प्रकार के रोबोट अब हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। बावजूद इसके चलते-फिरते इंसानी रोबोट हमारे बीच आज भी आश्चर्य, उत्साह व विमर्श पैदा करते हैं। टेस्ला ऑप्टिमस ऐसा ही एक रोबोट है, जिसे टेस्ला के संस्थापक एलन मस्क ने पिछले दिनों जारी किया है। इसने इंसानी रोबोट के प्रभाव व उपयोगिता को लेकर नई बहस छेड़ दी है। मस्क ने रोजमर्रा के कामों के लिए भी रोबोट बनाने की घोषणा की है। साथ-साथ उन्होंने पूरी तरह से स्वचालित कैब और वैन का भी प्रदर्शन किया, जो बिना स्टीयरिंग के चलेंगी। ये तीनों उत्पाद वैश्विक बाजार में व्यापक खपत को ध्यान में रखते हुए बनाए जाएंगे। वास्तव में, रोबोटिक उत्पादों का बाजार बीते कुछ वर्षों में काफी बढ़ा है। इसमें इंसानी रोबोट की मांग अधिक है। गोल्डमैन सैक्स की ह्यूमनॉइड रोबोट द एआई एक्सेलेरेंट रिपोर्ट तो यह भी बताती है कि यदि डिजाइन, उपयोग, प्रौद्योगिकी, सामर्थ्य और आम लोगों में स्वीकृति जैसी चुनौतियों से पार पा लिया जाए, तो 2035 तक यह बाजार 154 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है।

Word Count: 4, Character Length: 3994 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22465

रत-चीन संबंधों में नाटकीय ढंग से तनाव घटने से दुनिया भर के विदेशी कार्यालयों में आश्चर्य पसर गया है। चार साल के सीमा गतिरोध के बाद नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग ने विवाद की बड़ी गांठ खोल दी है। पिछले चार वर्षों से दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर डटे हुए थे। बीजिंग को दिल्ली का संदेश था कि रिश्ते की बड़ी तस्वीर के बारे में सोचने से पहले आइए, सीमा पर जो स्थिति पहले थी, उसे ही बहाल किया जाए। खैर, चीन का तरीका अलग है, उसके लिए सीमा विस्तार और वहां सर्वांगीण सामान्यीकरण आपस में जुड़ा हुआ विषय है। अब जब चीनी स्थिति में बदलाव आया है, तो ऐसा लग सकता है कि भारत की स्थिति प्रबल हुई है। चीन वास्तव में सीमा पर स्थिरता बहाल करने के लिए पहला कदम उठाने के लिए सहमत हो गया है। सेना की वापसी शुरू हो गई है। चीन अब व्यापक शांति और साझा स्थिति चाहता है। कजान में मोदी-शी की बैठक के बाद दोनों पक्षों के बयानों से इसमें कोई संदेह नहीं है कि संबंध सामान्य बनाने की दिशा में प्रक्रिया अब शुरू हो गई है। कई लोग इस बात से चकित हैं कि चीन ने देपसांग और डेमचोक के सबसे विवादास्पद मोर्चों पर अपने फायदे पर जोर नहीं दिया। वैसे, माना जाता है कि चीनी सेना - पीएलए के कट्टरपंथी झुकना नहीं चाहते थे, तो फिर चीन के ताजा लचीलेपन को कैसे समझा जाए? इसमें एक पहलू यह है कि बीजिंग को अमेरिका पर बढ़त हासिल करने का मौका मिला है, जो न केवल भारत-चीन संबंधों को अस्थिर करने के लिए बहुत कुछ कर रहा है, बल्कि लगभग एक साथ कई प्रमुख गैर-पश्चिमी शक्तियों के साथ संबंधों को भी खराब कर रहा है। दूसरा, 1950 के दशक से पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र व अन्य कुछ क्षेत्रों में अमेरिका की वजह से

Word Count: 6, Character Length: 3659 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22466

यूक्रेन संघर्ष के बाद से अमेरिकी वैश्विक भू-रणनीति यूरेशियन नियंत्रण में स्थानांतरित हो गई है। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का मुकाबला करने के इस नए चरण में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता या गुटनिरपेक्षता को एक बड़ी बाधा के रूप में देखा जाता है। इसका असर अमेरिका-भारत संबंधों पर महसूस किया गया है। यहां तक कि अमेरिका ने पूर्वी एशिया में अपने मुख्य गठबंधन सहयोगियों की संख्या दोगुनी कर ली है। जहां तक मुख्य क्षेत्रीय और महाद्वीप-व्यापी सुरक्षा का सवाल है, भारत की भूमिका पहले से सीमित हुई है। इस परिस्थिति ने दिल्ली में इस विश्वदृष्टि को और मजबूत किया है कि अनेक भारतीय हितों की रक्षा के लिए भारत को लाभप्रद स्थिति में रहना ही होगा और इसके लिए दुनिया की तमाम बड़ी शक्तियों के बीच एक बड़ा समायोजन बनाकर चलना जरूरी होगा। कुल मिलाकर, समय माकूल था, भारत और चीन, दोनों ने पाया कि अगर चंद द्विपक्षीय समस्याओं के बावजूद संबंधों में स्थिरता बहाल कर लें, तो नई विश्व व्यवस्था में दोनों ही देशों के हाथ मजबूत होंगे। चीन के साथ संबंधों में नई भारतीय सोच को आकार देने वाला एक अन्य कारक अमेरिकी घरेलू राजनीति में फैली अराजकता है। ऐसा लगता है, दिल्ली में एक मंथन चल रहा है कि अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था के उस स्तर तक स्थिर होने की संभावना नहीं है, जो भारत के प्रति पुरानी अनुकूल अमेरिकी नीति को फिर जीवंत कर दे। चाहे डोनाल्ड ट्रंप हों या कमला हैरिस, लेन-देन की नीति पर चलते हुए ही आगे बढ़ेंगे। अत: इसका मतलब है कि भारत अपने संबंधों के फूल केवल अमेरिका को समर्पित करने के बजाय कहीं और भी चढ़ाए। भारत ने इस बार बिल्कुल यही किया है। भू-अर्थशास्त्र या अर्थव्यवस्थाओं ने भी इस तनाव में एक भूमिका निभाई है। चीन से आर्थिक जुड़ाव और बाजार तक उसकी पहुंच को सीमित करने के मामले में भारत

Word Count: 5, Character Length: 4033 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-16-Test NO.-22467

संपूर्ण भारत में भ्रमण कर उन्होंने ऋषियों व आचार्यों को तैयार किया और उन्हें निर्देश दिया कि अपने-अपने क्षेत्रों में ज्ञान की वह धारा फैलाएं। इसलिए गुरु पूर्णिमा, ऋषि वेदव्यास को समर्पित है। इस दिन हम उनको और समस्त ऋषियों-मुनियों, ऋषिकाओं, योगियों और योगिनियों को स्मरण करते हैं। हम उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं और याचना करते हैं कि हम भी उनके पदचिह्नों पर चल सकें। इस अवसर पर शिष्य प्रार्थना करते हैं कि हम शरीर और मन के भोगों में फंसकर इस दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ न करें, बल्कि इसे साधना और जागृति के लिए समर्पित कर सकें। अपने सद्गुरु से यह आशीर्वाद मांगने का दिन है कि हमारे साधना-पथ में कोई विघ्न न आए, कोई भ्रम या विचलन न हो। यदि इस दिन अधिक ध्यान करें, मौन रहें, अपने भीतर की यात्रा करें, तो यह संभव है कि एक ही क्षण में कोई ऐसी कृपा घट जाए, जिससे साधक को समाधि का अनुभव हो जाए। आदि शंकराचार्य के शब्दों में कहें, तो न गुरोरधिकं तत्त्वं, यानी गुरु से बढ़कर कोई सत्य नहीं। गुरु वह दीपक हैं, जो हमारे अंतर्मन के अंधेरे को मिटाकर आत्म-साक्षात्कार का पथ प्रशस्त करते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 75 प्रतिशत लोग मानते हैं कि किसी गुरु का मार्गदर्शन उनकी सफलता और व्यक्तित्व-निर्माण में निर्णायक रहा। इससे एक बात तो साफ हो जाती है कि गुरु के बिना सफलता नहीं मिलती। यह पर्व आत्म-मंथन का एक अवसर है, जो हमें गुरु की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने और स्वयं को परखने की प्रेरणा देता है। गुरु पूर्णिमा का पर्व पवित्रता और श्रद्धा का प्रतीक है। डिजिटल शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में भी गुरु का स्थान अपरिवर्तनीय है। जब विश्व तकनीकी प्रगति की ओर अग्रसर है, तब भी यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि सच्चा ज्ञान वही है

Word Count: 6, Character Length: 3931 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22472

एक समावेशी दिशा में ले जाना आज ज्यादा मुफीद है। अगर आज वैश्वीकरण का लाभ सबको मिले, तो लुप्त हो रहे नवउदारवादी युग को लौटाया जा सकता है। विश्व में नई सार्वजनिक पूंजी या सुविधा का निर्माण हो सकता है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की भागीदारी और मूल्य संवर्धन को बढ़ाया जा सकता है। इतनी सारी संभावनाओं के बावजूद निकट भविष्य में चीन के साथ संबंधों की कुछ मूलभूत विशेषताओं को मौलिक रूप से नहीं बदला जा सकता। हमारी हिमालयी सीमा शायद अस्थिर ही बनी रहेगी। ताकत की विषमता खत्म नहीं होगी, न ही प्रभाव जमाने के लिए क्षेत्रीय प्रतिस्पर्द्धा घटेगी। हालांकि, दोनों दिग्गज बहुध्रुवीयता चाहते हैं, पर दिल्ली और बीजिंग में इसका मतलब हमेशा एक ही नहीं होता है, खासकर जब उप-महाद्वीप और आसपास के पड़ोस की बात आती है। दूसरी ओर, दोनों दो बड़े पड़ोसी, दो सभ्यतागत देश, दो प्रमुख गैर-पश्चिमी शक्तियां, दो बड़ी विकासशील अर्थव्यवस्थाएं हैं, जिनकी बहुध्रुवीय दुनिया में सबसे बड़ी हिस्सेदारी है, जिनकी सुधरी हुई विश्व व्यवस्था में भी पूरी जगह बरकरार रहने वाली है। परस्पर जटिल हालात भी दोनों नेतृत्वों के लिए यह अनिवार्य बना देते हैं कि दोनों एक सुदृढ़ नीति बनाकर आगे बढ़ें। ऐसी नीति, जो उनके पुराने विरोधाभासों को भी संभाले, उन्हें साथ-साथ आगे बढ़ाए और नई बहुध्रुवीय दुनिया के निर्माण में भी सक्षम बनाए। सर्वोच्च न्यायालय ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा की सजा पर रोक लगाने से इनकार कर राजनीति में शुचिता का पक्ष मजबूत किया है। मधु कोड़ा को साल 2017 में कोयला ब्लॉक आवंटन मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद आगामी राज्य विधानसभा चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया गया था। निचली अदालत ने भी सजा पर रोक लगाने से इनकार किया था। दरअसल, मधु कोड़ा फिर चुनाव लड़ना चाहते हैं, पर उन्हें सजा ऐसी मिली है कि उनका चुनाव लड़ना मुश्किल है। कोई अदालत सजा

Word Count: 3, Character Length: 4194 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22473

मैंने पहले ही यह भी बता दिया था कि शहजादे वायनाड में हार के डर से अपने लिए दूसरी सीट खोज रहे हैं। अब इन्हें अमेठी से भागकर रायबरेली सीट चुननी पड़ी है। ये लोग घूम घूमकर सबको कहते हैं डरो मत मैं भी इन्हें यही कहूंगा डरो मत भागो मत अपनी चुटीली शैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगे जोड़ते हैं मैं पहले भी आपसे कहता था कि इनकी सर्वोच्च नेता भाग जाएंगी, वह भाग गईं। उन्होंने उत्तर प्रदेश छोड़कर राजस्थान से चुनाव लड़ा। प्रधानमंत्री को सोनिया और राहुल गांधी पर तंज कसने का यह मौका खुद कांग्रेस पार्टी ने दिया है। गए गुरुवार की शाम से ही संकेत मिलने लगे थे कि राहुल गांधी रायबरेली से और किशोरी लाल शर्मा उर्फ केएल शर्मा अमेठी से ताल ठोकेंगे। शर्मा जी अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सचिव हैं और पिछले तीन दशकों से परिवार की ओर से रायबरेली व अमेठी निर्वाचन क्षेत्रों में कामकाज संभाल रहे हैं। जो उनके इतिहास और भूगोल से वाकिफ नहीं हैं, उन्हें बता दें कि वह मूलत पंजाब के रहने वाले हैं, पर परिवार का स्थायी प्रतिनिधि होने के नाते उनके दोनों संसदीय सीटों के कार्यकर्ताओं से बेहतरीन संबंध हैं। कांग्रेस का कहना है कि इस नाते केएल शर्मा अमेठी से चुनाव लड़ने के हकदार हैं, और वह स्मृति ईरानी को हरा देंगे। क्या ऐसा संभव है लोकतंत्र में असंभव तो कुछ भी नहीं। जब 1977 में राज नारायण इंदिरा गांधी को हरा सकते हैं और 2019 में स्मृति ईरानी राहुल गांधी को क्लीन बोल्ड कर सकती हैं, तो नतीजे घोषित होने तक इस सिलसिले में कुछ न बोलना ही बेहतर रहेगा। हालांकि, स्मृति ईरानी और केएल शर्मा की फेस वैल्यू में जमीन आसमान का अंतर है। शर्मा अब तक नेपथ्य से कामकाज सम्हालते थे, जबकि स्मृति बेहद आक्रामक हैं। यह लड़ाई फिलहाल बराबर की प्रतीत

Word Count: 0, Character Length: 3905 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22474

लग्जरी कार निर्माता मर्सिडीज बेंज ने उद्योगपति साइरस मिस्त्री की कार दुर्घटना पर अपनी अंतरिम रिपोर्ट पालघर पुलिस को सौंप दी है। इसमें जिक्र किया गया है कि सड़क के डिवाइडर से टकराने के पांच सेकंड पहले कार के ब्रेक लगाए गए थे। एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने यह भी कहा कि मर्सिडीज बेंज के विशेषज्ञों का एक दल सोमवार को हांगकांग से कार का निरीक्षण करने के लिए मुंबई का दौरा करने वाला है। इस बीच जर्मन वाहन कंपनी ने एक बयान में कहा कि वह कार दुर्घटना की जांच में अधिकारियों के साथ सहयोग कर रही है और केवल उनके साथ ही नतीजे साझा करेगा क्योंकि यह ग्राहक की गोपनीयता का सम्मान करता है। दुर्घटना से कुछ सेकंड पहले कार 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ रही थी पालघर पुलिस अधीक्षक बालासाहेब पाटिल ने कहा कि मर्सिडीज-बेंज ने पुलिस को अपनी अंतरिम रिपोर्ट सौंप दी है। इसके मुताबिक दुर्घटना से कुछ सेकंड पहले कार 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ रही थी, जबकि पुल पर डिवाइडर से टकराते समय इसकी गति 89 किमी प्रति घंटे थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि दुर्घटना से पांच सेकंड पहले कार के ब्रेक लगाए गए थे। पाटिल ने कहा कि क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) ने भी अपनी रिपोर्ट सौंप दी है, जिसमें कहा गया है कि दुर्घटना के बाद कार में चार एयर बैग खुले थे। तीन ड्राइवर की सीट पर और एक बगल की सीट पर। कार की जांच के लिए हांगकांग से मुंबई आ रही एक टीम उन्होंने कहा कि मर्सिडीज बेंज के विशेषज्ञों का एक दल 12 सितंबर को कार की जांच के लिए हांगकांग से मुंबई आ रहा है। तब तक कार को ठाणे के हीरानंदानी में मर्सिडीज शोरूम में रखा जाएगा। निरीक्षण के बाद लग्जरी कार निर्माता

Word Count: 1, Character Length: 3791 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22478

उम्मीद जताई जा रही थी कि 21 अगस्त को यह चांद की सतह पर पहुंच जाएगा। रूस इससे पहले 1976 में चांद पर लूना-24 उतार चुका है। विश्व में अबतक जितने भी चांद मिशन हुए हैं, वे चांद के भूमध्य रेखा पर पहुंचे हैं। लूना-25 सफल होता तो ऐसा पहली बार होता कि कोई मिशन चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंड किया। हालांकि, यह सब कुछ हो पता इससे पहले ही मिशन चांद की सतह से टकराकर क्रैश हो गया। इसके वजहों पर बात करें तो लूना-25 से शनिवार को संपर्क साधने में परेशानी हुई थी। इसके बाद उससे संपर्क करने की कई बार कोशिश की गईं, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकल सका। रासकास्माज के मुताबिक, शुरुआती जांच में पता चला है कि लूना-25 असली पैरामीटर्स से अलग चला गया था। इसके साथ ही वह तय कक्षा की जगह दूसरी कक्षा में चला गया जहां पर उसे नहीं जाना चाहिए था। इसके कारण वह सीधे चांद के दक्षिणी ध्रुव के पास जाकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। साल 1976 के बाद लान्च होने वाला यह मिशन रूस के लिए बेहद अहम था। सोवियत संघ के पतन के बाद रूस ने पहला चंद्र मिशन लॉन्च किया था। फ्रांसीसी अंतरिक्ष विज्ञानी फ्रेंक मार्चिस के मुताबिक, एक सॉफ्टवेयर की गड़बड़ी की वजह से लूना-25 क्रैश हो गया। इस गड़बड़ी से लूना-ग्लोब लैंडर तबाह हो गया। मार्चिस कहते हैं, निर्णायक कक्षा समायोजन के समय अप्रत्याशित लंबे इंजन के ओवरफायर की वजह से यह चंद्रमा पर क्रैश हो गया। तकनीकी खामी के बाद करीब 10 घंटे तक लूना-25 से संपर्क नहीं साधा जा सका विज्ञान की भाषा में अक्सर कहा जाता है कि कोई भी प्रयोग असफल नहीं माना जाता बल्कि हम इससे कुछ न कुछ सीखते हैं। पिछले चार वर्षों में, चार देशों भारत, इस्राइल, जापान और अब रूस की सरकारी और निजी अंतरिक्ष एजेंसियों ने

Word Count: 7, Character Length: 3735 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22479

अलग थीं। यह मुख्य रूप से शीत युद्ध की प्रतिद्वंद्विता के बीच हो रहा था, जो अमेरिका और तत्कालीन यूएसएसआर को इन चंद्रमा मिशनों को भेजने के लिए प्रेरित कर रहीं थीं। बेहद महंगे और ऊर्जा अकुशल होने के बावजूद कई मिशन सफल रहे। चंद्रयान-1 के निदेशक रहे एम. अन्नादुरई कहते हैं, उन चंद्रमा मिशनों को भेजने में जिस तरह के जोखिम उठाए गए, वे अब पूरी तरह से अस्वीकार्य होंगे। अब उन मिशनों पर होने वाले खर्च को भी उचित नहीं ठहराया जा सकता। साथ ही, चंद्रमा मिशन के मौजूदा दौर के लिए इस्तेमाल की जा रही प्रौद्योगिकियां बहुत अलग हैं। वे अधिक सुरक्षित, सस्ते और अधिक ईंधन कुशल हैं। लेकिन इसका मतलब यह भी है कि इनकी तुलना 1960 और 1970 के दशक में इस्तेमाल किए गए उपकरणों से नहीं की जा सकती और इनका परीक्षण अभी ही किया जा रहा है। लूना-25 एक शक्तिशाली रॉकेट पर सवार होकर 10 अगस्त को प्रक्षेपण के बाद केवल छह दिनों में चंद्रमा की कक्षा में पहुंच गया था। चंद्रयान 3 को 14 जुलाई को लॉन्च होने के बाद 23 दिन लग गए। दरअसल, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के लिए बूस्टर या कहें शक्तिशाली रॉकेट यान के साथ उड़ते हैं। अगर आप सीधे चांद पर जाना चाहते हैं, तो आपको बड़े और शक्तिशाली रॉकेट की जरूरत होगी। इसमें ईंधन की भी अधिक आवश्यकता होती है, जिसका सीधा असर प्रोजेक्ट के बजट पर पड़ता है। यानी अगर हम चंद्रमा की दूरी सीधे पृथ्वी से तय करेंगे तो हमें ज्यादा खर्च करना पड़ेगा। नासा भी ऐसा ही करता है लेकिन इसरो का चंद्र मिशन सस्ता है क्योंकि उसने चंद्रयान को सीधे चंद्रमा पर नहीं भेजा है। फिलहाल, चंद्रयान-3 मिशन चंद्रमा की कक्षा में हैं और लैंडिंग की उल्टी गिनती शुरू होने को है। दरअसल, 23 अगस्त वह तारीख है जिस दिन

Word Count: 3, Character Length: 3793 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22480

बोल दिया है। प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री, गृह मंत्री सहित सभी के शब्दबाण चुनावी फिजां को गरमा रहे हैं। नेहरू गांधी परिवार ने अमेठी का परित्याग क्यों किया कांग्रेस के कर्णधारों ने संभवत सोचा होगा कि अगर प्रियंका और राहुल पड़ोसी सीटों से चुनाव लड़ते हैं, तो उन पर परिवारवाद का आरोप सघन हो जाएगा। जीत जाने की स्थिति में भाई बहन सदन में खुद भले ही सहज रहते, पर विपक्ष और नुक्ताचीनी के अभ्यस्त आलोचक, दोनों को मौका मिल जाता, वे तुलना शुरू कर देते। किसने क्या, कितना और क्यों बोला, सत्र दर सत्र यह बहस चलती, इससे गलत संदेश जा सकता था। गांधी परिवार इस मामले में बेहद सजग रहता है। वहां जिम्मेदारियां साफ तौर पर विभाजित की जाती रही हैं। यही वजह है कि किसी पारिवारिक कलह के संकेत एक बार के अलावा कभी बाहर नहीं आए। वह मौका था, संजय गांधी के दुखद अवसान के बाद मेनका गांधी की 1 सफदरजंग रोड से रवानगी। तब से अब तक मेनका और वरुण गांधी के राजनीतिक रास्ते राहुल गांधी और उनके परिवार से अलग हैं। कांग्रेस के नेता इस तथ्य से वाकिफ हैं कि अमेठी को छोड़ना गलत संदेश दे सकता है, इसीलिए वे तर्क दे रहे हैं कि रायबरेली से नेहरू गांधी परिवार का नाता अमेठी के मुकाबले दशकों पुराना है। वर्ष 1952 में फिरोज गांधी यहां से जीते थे। उनके बाद इंदिरा गांधी, इंदिरा के पश्चात सोनिया और सोनिया के रोजमर्रा की राजनीति से बैक सीट पर जाने के बाद राहुल इस विरासत को संभालने के लिए आगे आए हैं। उनके नामांकन में समूचे परिवार के साथ कांग्रेस के आला पदाधिकारी जुटे। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एकजुटता दिखाते हुए उनके साथ थे। मतलब साफ है, गठबंधन अमेठी परित्याग को तार्किक जामा पहनाना चाहता है। इस विमर्श में एक और अहम सवाल उठता है कि अगर राहुल गांधी

Word Count: 0, Character Length: 3887 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-17-Test NO.-22481

जो मनुष्य को नैतिकता, करुणा और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाए। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 65 प्रतिशत युवा मानते हैं कि उनके शिक्षक या मेंटर ने उनके करियर और जीवन को दिशा दी। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम जैसे शिक्षकों ने तो लाखों नौजवानों को विज्ञान और नैतिकता का पाठ पढ़ाकर प्रेरित किया। जाहिर है, गुरु का आशीर्वाद वह अमूल्य शक्ति है, जो हर चुनौती से पार पाने का साहस देती है। यह पर्व हमें सिखाता है कि भौतिक सफलता से कहीं अधिक मूल्यवान वह आंतरिक शांति है, जो सद्‌गुरु की शिक्षाओं से हमें मिलती है। यह केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन को अर्थ और प्रेरणा देने वाला आध्यात्मिक संदेश भी है। गुरु पूर्णिमा वह पावन अवसर भी है, जो हमें अपने गुरुओं के प्रति हृदय की गहराई से कृतज्ञता व्यक्त करने और उनके दिखाए मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें उस शाश्वत सत्य से जोड़ता है कि गुरु के बिना जीवन अधूरा है- न ज्ञान, न गति, न सार्थकता। ऋग्वेद का एक सूत्र है, आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः , यह हमें विश्व भर से श्रेष्ठ विचार ग्रहण करने की प्रेरणा देता है। गुरु पूर्णिमा यही संदेश देता है- ज्ञान की अनवरत खोज, अनुशासन का पालन और अपने गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा। जब-जब हम अपने श्रीगुरु के चरणों में अपना सिर झुकाते हैं, तब-तब हम उस अनंत शक्ति को प्रणाम करते हैं, जो हमें अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाती है। यह पर्व हमें विश्वास दिलाता है कि गुरु का आलोक वह अमर ज्योति है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन, बल्कि समस्त विश्व को आलोकित करती है। इसे लिए गुरुओं का हर सूरत में सम्मान कीजिए। कोई भी सफलता पाने के लिए गुरु का मार्गदर्शन निस्संदेह आवश्यक होता है, लेकिन यह बात भी उतनी ही सच है कि जब तक शिष्य

Word Count: 5, Character Length: 3810 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22486

प्रमोद तिवारी के ही संबंधों, संपर्कों का असर था कि समाजवादी पार्टी ने यहां से उम्मीदवार न उतारकर उनकी राह आसान की। दूसरे हैं, महाराजगंज जनपद के फरेंदा से वीरेंद्र चौधरी। चौधरी साहब अब कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। क्षेत्र में उनका जो भी प्रभाव हो, पर समूचे प्रदेश में उन्हें जानने वालों की संख्या कुछ खास नहीं है। ऐसे में, राहुल अगर जीत भी जाएं, तो उससे कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में कोई खास फायदा होता नहीं दिख रहा है। इसके लिए उन्हें उत्तर प्रदेश में अधिक समय लगाने के साथ लोगों को समझाने के लिए पर्याप्त नैतिक आधार भी जुटाना होगा। सोशल मीडिया के इस दौर में सभी जानते हैं कि वह कुछ दिनों पहले वायनाड में वायदा कर रहे थे कि यही मेरा परिवार है और मैं इसे छोड़कर नहीं जाऊंगा। आज रायबरेली में वह विरासत के नाम पर ताल ठोक रहे हैं। अगर वह दोनों सीट जीत जाते हैं, तो किसका परित्याग करेंगे केरल छोड़ेंगे, तो यह उन लोगों की अवहेलना होगी, जिन्होंने संकट के समय में उन्हें जिताया। यदि रायबरेली छोड़ेंगे, तब भी इसी तरह की बातें उठेंगी। यहां एक और तथ्य गौरतलब है। कन्नौज में अखिलेश यादव ने अपने भतीजे तेजप्रताप यादव को चुनावी मैदान में उतारा था। पता नहीं क्यों, दो दिन के भीतर उनका इरादा बदल गया और वह खुद चुनावी मैदान में ताल ठोकने उतर आए। क्या उन्हें आभास हो गया था कि गांधी परिवार इस बार अमेठी को अलविदा बोलने वाला है अब अगर राहुल और अखिलेश, दोनों विजयी घोषित होते हैं, तब भी अखिलेश यादव लोकसभा में उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा चेहरा होंगे। इससे उनकी राजनीतिक छवि मजबूत होगी। कभी मायावती ने भी लोकसभा की सदस्यता का बेहतरीन उपयोग किया था। यहां एक चेतावनी। राजनीति में मतदाता का निर्णय ही सर्वोपरि होता है। यदि

Word Count: 0, Character Length: 3914 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22487

असाधारण परिस्थितियों में ही जारी की जानी चाहिए। यह देश अभी मधु कोड़ा को भूला नहीं है और शायद भूलेगा भी नहीं। निर्दलीय होने के बावजूद वह कैसे झारखंड के मुख्यमंत्री बने और पद पर रहते हुए कैसी विरासत पीछे छोड़ गए, यह किसी से छिपा नहीं है। साल 2006 से 2008 तक राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान कोलकाता स्थित विनी आयरन ऐंड स्टील लिमिटेड को कोयला ब्लॉक आवंटन से संबंधित मामले में भ्रष्टाचार विरोधी कानून के तहत दिसंबर 2017 में दोषी ठहराया गया था। ऐसे और भी मामले हैं, जो मधु कोड़ा का पीछा कर रहे हैं। यह दुर्भाग्य राजनीति का है कि ऐसे दागी नेता आज भी अनेक मंचों पर दिख जाते हैं। भला हो, जन-प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा का, जो दोषसिद्ध किसी व्यक्ति को सजा भुगतने के बाद छह साल के लिए संसद या विधानसभा का चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर देती है। गौरतलब है कि मधु कोड़ा की टीम ने यह तर्क दिया है कि कोड़ा को चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं देने से न केवल सार्वजनिक जीवन में बने रहने का उनका अधिकार प्रभावित हुआ, बल्कि मतदाताओं का उन्हें चुनने का अधिकार भी प्रभावित हुआ। बहरहाल, कोर्ट ने इन दलीलों पर उचित ही कोई ध्यान नहीं दिया। यह हमारी राजनीति का एक स्याह पहलू है कि हर तरह के नेता के पास अपने समर्थक होते हैं। वास्तव में, सफाई का काम तो जनता का है। जब वह सफाई नहीं रखती है, तो ऐसी शिकायतें सामने आती हैं। जो लोग दागदार हैं, उन्हें जनसेवा करने से नहीं रोका जा सकता, पर ऐसे लोगों को राजनीति से दूर रखने में कोई गलत बात नहीं है। वैसे तो जब दोष गंभीर हो, तो नेताओं को स्वयं चुनाव लड़ने से परहेज करना चाहिए। जनसेवा के लिए दूसरे भी तरीके और अवसर होते हैं

Word Count: 1, Character Length: 3725 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22488

उन्हें भी आजमाना चाहिए। जन-प्रतिनिधि होकर जनसेवा करना तो एक मामूली बात है, जिससे आपको अनेक प्रकार से लाभ होते हैं, खूब बदनामी के भी अवसर होते हैं। मतलब, चुनाव की राजनीति वास्तव में जनसेवा की राजनीति नहीं, बल्कि सत्ता की राजनीति है, यह बात समझना ज्यादा जरूरी है। जो भी नई पीढ़ी या नए लोग राजनीति में आ रहे हैं, सभी को अपना दामन पूरी तरह पाक-साफ रखना चाहिए। यहां एक बार जब दाग लग जाए, तो आसानी से पीछा नहीं छोड़ता है। तापमान के गिरने के साथ इन दिनों कई बीमारियों का खतरा बढ़ चला है। विशेषकर इस मौसम में वायरस या बैक्टीरिया जनित रोग काफी तेजी से फैलते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि इन दिनों सुबह और शाम मौसम सर्द रहता है, पर दिन का तापमान तुलनात्मक रूप से अधिक होता है। नतीजतन, वायरस या बैक्टीरिया की वृद्धि के लिए माहौल अनुकूल बन जाता है। सांस की बीमारी भी इन दिनों बढ़ जाती है, क्योंकि हम अपनी गतिविधियां बढ़ा लेते हैं और एक-दूसरे से हमारा संपर्क भी कहीं अधिक बढ़ जाता है। मगर जिस गुलाबी सर्दी को खुशनुमा होना चाहिए था, वह बीते कुछ वर्षों में यदि डराने लगी है, तो इसका एक बड़ा कारण है प्रदूषण। इन दिनों प्रदूषण का स्तर काफी अधिक बढ़ जाता है। स्थिति यह हो जाती है कि देश के कई शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक लाल रेखा के पार चला जाता है। यह पीएम-2.5 जब नमी वाले तापमान में घुलता है, तो काफी खतरनाक संयोग बनता है। लंबे समय तक ऐसे दूषित माहौल में रहना मानव शरीर को दुष्प्रभावित कर सकता है। स्वस्थ लोगों में इसके कारण भले ही आंखों में जलन, थकान, सिरदर्द आदि हो, लेकिन जिन्हें सांस संबंधी बीमारी होती है, उनके लिए यह स्थिति जानलेवा होती है। हमने पहले भी देखा है कि इन दिनों अस्पतालों में

Word Count: 4, Character Length: 3801 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22492

ऐसा देखा गया है कि गर्भवती मां के अधिक समय तक प्रदूषित माहौल में रहने से बच्चा या तो गर्भ में दम तोड़ देता है या उसका वजन कम हो जाता है। यानी, प्रदूषण हमारे वर्तमान को ही नहीं, बल्कि भविष्य को भी बुरी तरह नुकसान पहुंचा रहा है। हृदयाघात की घटनाएं मौसमी परिस्थितियों से भी बढ़ती हैं। खासतौर से रात तीन से चार बजे के बीच दिल का दौरा पड़ने की आशंका अधिक होती है। यह वह समय होता है, जब हमारी धमनियों में स्पाज्म, यानी ऐंठन आ जाती है और रक्त-प्रवाह प्रभावित होने लगता है। सीओपीडी व लकवा के मरीजों की संख्या बढ़ाने में भी ठंड का योगदान स्थापित बात है। आखिर इनसे बचा कैसे जाए? जीवनशैली में सुधार और स्वस्थ खान-पान हमें इनसे काफी हद तक बचा सकता है। ठंड के कारण इन दिनों हम तली-भुनी चीजें खाना ज्यादा पसंद करते हैं। इससे रक्तचाप (बीपी) और मधुमेह (डायबिटीज) बढ़ने का खतरा बढ़ जाता है। दिल पर भी इनका असर होता है। इसी कारण, इन दिनों डॉक्टर पौष्टिक भोजन पर अधिक जोर देते हैं। हरी सब्जियां ही नहीं, हमें इन दिनों पानी का भी पर्याप्त सेवन करना चाहिए, रोजाना आठ से दस ग्लास पानी जरूर पीना चाहिए। चूंकि सर्दियों में शरीर को पानी की जरूरत महसूस नहीं होती, इसलिए लोग कम पानी पीते हैं, जिसका उनको नुकसान होता है। रही बात प्रदूषण की, तो सरकारें इसे थामने के प्रयास करेंगी ही, मगर व्यक्तिगत स्तर पर भी हमें कोशिश करनी चाहिए। जैसे, जब वायु की गुणवत्ता बहुत खराब हो, तब अनावश्यक बाहर निकलने से बचना चाहिए। यह उनके लिए ज्यादा जरूरी है, जो सांस व दिल की बीमारी से पीड़ित हैं। हमें ऐसी कोई गतिविधि नहीं करनी चाहिए, जिनसे प्रदूषण से हमारा संपर्क बढ़ जाए। अत्यधिक कसरत या धड़कनों को तेज करने वाले व्यायाम से प्रदूषकों के शरीर के

Word Count: 3, Character Length: 3856 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22493

विराट आकाश की तुलना में बहुत तुच्छ हैं। हालांकि, आम तौर पर यह कभी आपके अनुभव में नहीं आता। तो आकाश की विशालता का ही वास्तविक अस्तित्व है। सूरज, तारे, आप और मैं, हम सभी सिर्फ क्षणिक घटनाएं हैं। आप जिसे व्यक्ति कहते हैं, वह बस एक बुलबुले जैसा है। इस बुलबुले में स्वयं का कोई तत्व नहीं होता। उसमें तो बस हवा थी। उसने अपने चारों ओर एक आवरण बना लिया और अब अचानक उसका स्वयं का एक अलग गुण हो गया। मोटे बुलबुले हैं, पतले बुलबुले हैं, बड़े बुलबुले हैं, छोटे बुलबुले हैं, लोगों की तरह ही। अन्य प्राणियों की तरह भी। लेकिन कभी गौर किया है कि जब बुलबुला फूटता है, तो उसके अंदर का तत्व कहां चला जाता है? हवा ने उसे वापस ले लिया; वायुमंडल ने अंदर वापस ले लिया। इस प्रकार, एक बुलबुला आकाशीय शरीर के रूप में, प्राणिक शरीर के रूप में, मानसिक शरीर के रूप में और स्थूल शरीर के रूप में बनता है। स्थूल शरीर को हम जिस क्षण चाहें, गोली मार सकते हैं। अगर हम चाहें, तो स्थूल शरीर को दो हिस्सों में काटना हमारे सामर्थ्य में है, लेकिन दूसरे शरीर को काटने में हम समर्थ नहीं हैं। जिसे आप अस्तित्व कहते हैं, सिर्फ वही यह कर सकता है। जिसे आप आध्यात्मिक प्रक्रिया कह रहे हैं, वह बस यही है। यह आत्मघात का एक गूढ़ तरीका है। यह स्थूल शरीर की हत्या के संबंध में नहीं है। आप अपने अंदर शरीर बनने की बुनियाद को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं। आप उस मूलभूत ढांचे को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे एक शरीर बन सकता है। कार्मिक तत्व जो आकाशीय, प्राणिक और मानसिक शरीर के रूप में होते हैं, यह भौतिक शरीर सिर्फ इन्हीं तत्वों से बनता है। तो आप आध्यात्मिक प्रक्रिया द्वारा उसे नष्ट करने

Word Count: 0, Character Length: 3682 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22494

परिचितों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। पिता तो खैर नाराज थे ही। भावेश को अब अक्सर व्यंग्य सुनना पड़ता यह किसी काम का नहीं है इसे जायदाद से बेदखल कर दो, वरना घर जमीन, सब कुछ बेच देगा ऐसे निठल्ले को भला कौन अपनी बेटी देगा सितंबर 2019 में बिहार के भागलपुर से उन्हें पहला ऑर्डर मिला। 1,125 रुपये का वह भुगतान भावेश जीवन भर नहीं भूल सकेंगे। काम बढ़ा, कमाई बढ़ी, तो अपनों का भरोसा भी बहाल हुआ। भावेश आज सालाना करीब आठ करोड़ रुपये का देसी घी का कारोबार कर रहे हैं। हिन्दुस्तान नौजवानों का देश है। इसकी 65 फीसदी से अधिक आबादी की उम्र 35 साल से कम है। ऐसे में, रोजगार देश का सबसे अहम मुद्दा होना चाहिए और है भी। सेंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटीज , यानी सीएसडीएस ने अपने हालिया सर्वे में इस बात की पुष्टि भी की है। इस समस्या से जुड़ी एक कटु हकीकत यह भी है कि कोई सरकार इतनी विशाल युवा आबादी के लिए सरकारी नौकरियों का सृजन नहीं कर सकती, अलबत्ता उनकी आजीविका के उपाय करने का दायित्व उसी का है। मगर इस समस्या के हल का एक ठोस रास्ता भावेश चौधरी जैसे युवा दिखा रहे हैं, जो न सिर्फ तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आज एक सफल उद्यमी हैं, बल्कि उन्होंने अपने आसपास के 150 से भी ज्यादा किसानों की जिंदगी पर सकारात्मक असर डाला है। राजस्थान के झुंझुनू जिले में एक तहसील है सूरजगढ़। इसी के बेरला आसलवास गांव में आज से करीब 25 साल पहले भावेश पैदा हुए। पिता शेर सिंह चौधरी सीमा सुरक्षा बल में जवान थे और गांव में अपनी खेती बाड़ी भी थी, इसलिए भावेश का बचपन कभी किसी अभाव में नहीं गुजरा। गांव के तमाम बच्चों की तरह स्थानीय स्कूल में ही पढ़ाई लिखाई हुई, पर स्कूल में कभी

Word Count: 0, Character Length: 3694 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-18-Test NO.-22495

खुद प्रयत्न नहीं करता, तब तक सफलता उसे नहीं मिल सकती, यानी शिष्य के स्वयं के प्रयासों और उसकी अपनी सक्रियता से ही सफलता उसके कदम चूम पाती है। इसलिए शिष्य की प्रगति के लिए उसे भी शाबाशी मिलनी चाहिए, न कि सिर्फ गुरुओं को पूरा श्रेय दे दिया जाए। इस लिहाज से यह भी कह सकते हैं कि सफलता एक संयुक्त प्रयास है, जिसमें गुरु का मार्गदर्शन व शिष्य की सक्रिय भागीदारी, दोनों की बराबर जरूरत होती है। मगर भारतीय सनातन परंपरा में गुरु को ही महत्व दिया गया है और उनको ही यह दिन समर्पित किया गया है। फिर, आजकल गुरु कैसे-कैसे हो गए हैं, यह कोई छिपा रहस्य नहीं है। अखबारों की सुर्खियां भी बनती हैं कि किस तरह किसी गुरु ने अपने विद्यार्थियों का शोषण किया। इस सामाजिक विकृति के पनपने की एक बड़ी वजह शिक्षकों की सोच में आया बदलाव है। अब गुरु पूरी तरह से पेशेवर हो गए हैं। पहले के गुरु बेशक अपने शिष्यों के प्रति आग्रही होते थे और उनके सुख-दुख का वे पूरा ख्याल रखते थे, लेकिन आज तो उनको बस पढ़ाने से मतलब होता है, शिष्य ने कितना सीखा या शिष्य क्यों नहीं सीख पा रहा, ऐसे सवालों से उलझने से वे बचते हैं। साफ है, गुरु तभी अपनी प्रतिष्ठा अर्जित कर सकेंगे, जब वे अपने शिष्यों को समग्र ज्ञान देंगे शब्द सुनते ही मेरे दिमाग में सीधा यही ख्याल आता है कि यह दुष्ट गुरुओं द्वारा अपने ज्ञान का व्यापार करने और लोगों को वेबकूफ बनाने के लिए तय किया गया दिवस है। वैसे भी, यदि गुरु किसी खास दिन की महिमा बताए और उस खास दिन से अपना नाम जोड़े, तो वह दिन का नहीं, बल्कि अपना महत्व बता रहा है। यहां यह भी समझने वाली बात है कि गुरुओं से अधिक महत्व शिष्यों का है, क्योंकि गुरु

Word Count: 2, Character Length: 3665 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22500

फौज या पुलिस में अपना करियर बनाएं। मगर भावेश ने कोई लक्ष्य ही नहीं बनाया। वह बस कक्षाएं पास करते और बढ़ते चले आए। बारहवीं का इम्तिहान पास करने के बाद पहली बार लक्ष्य संबंधी सवाल ने उन्हें परेशान किया कि अब क्या जाहिर है, जब शहरी इलाकों में ही किशोरों की अभिरुचि जांचने परखने और उन्हें उनकी पसंद के क्षेत्र में दक्ष बनाने के प्रयास आधे अधूरे हैं, तो बेरला आसलवास के युवाओं की सुध कौन लेता आगे पढ़ने की बहुत इच्छा नहीं थी, पर परिवार के दबाव में उन्होंने बीएससी में दाखिला ले लिया। पढ़ाई करते हुए सरकारी नौकरियों की कई परीक्षाएं दीं, मगर किसी में कामयाबी हाथ नहीं आई। इस दौरान उनके कई दोस्त सरकारी मुलाजिम बन चुके थे। परिजनों व पड़ोसियों के व्यंग्य का सिलसिला शुरू हो गया था। मगर भावेश के दिमाग में यह साफ हो चुका था कि दूसरों के हुक्म मानने वाली नौकरी उनको करनी नहीं है, और आदेश देने वाली कोई नौकरी उनको मिलने से रही लिहाजा, उन्होंने कॉलेज के सेकेंड ईयर में पढ़ाई छोड़ परिवार में एलान कर दिया कि वह अपना कोई काम करेंगे। परिचितों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। पिता तो खैर नाराज थे ही। भावेश को अब अक्सर सुनना पड़ता यह किसी काम का नहीं है इसे जायदाद से बेदखल कर दो, वरना घर जमीन, सब बेच देगा ऐसे निठल्ले को कौन अपनी बेटी देगा हरियाणा राजस्थान के इस इलाके की एक निर्मम सच्चाई यही है कि जिन युवाओं के पास सरकारी या मोटी पगार वाली निजी नौकरी नहीं या जिनके पास जमा जमाया कारोबार नहीं, उनकी शादी नहीं होती। पिता के दबाव के आगे घुटने टेकते हुए भावेश ने पड़ोस के शहर लोहारू के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला तो ले लिया, मगर उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा था, क्योंकि वहां अंग्रेजी माध्यम से

Word Count: 0, Character Length: 3817 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22501

बंद कर सकते हैं। अवलोकनों और प्रयोगों के लिए अधिकतम समय मिले इस लिहाज से चंद्रयान-3 का चंद्र दिवस की शुरुआत में उतरना जरूरी है। सीधे शब्दों में कहें तो चंद्रयान-3 23 अगस्त से पहले उतर नहीं सकता और 24 अगस्त के बाद उतरना भी नहीं चाहेगा। इस बीच, इसरो ने रविवार को कहा कि उसने चंद्रयान-3 मिशन के लैंडर मॉड्यूल एलएम को कक्षा में थोड़ा और नीचे सफलतापूर्वक पहुंचा दिया और इसके अब बुधवार को शाम छह बजकर चार मिनट पर चंद्रमा की सतह पर उतरने की उम्मीद है। जैसे-जसे चंद्रमा की धरती पर चंद्रयान के उतरने की घड़ी नजदीक आती जा रही है वैसे वैसे सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि समूची दुनिया इस ऐतिहासिक घटनाक्रम पर बहुत करीब से नजर बनाए रखने की तैयारी में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक, देश और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में इसरो के बनाए गए 19 टेलिमेटरी एंड ट्रैकिंग सेंटर्स के माध्यम से इस ऐतिहासिक फल का साक्षी बनने के लिए वैज्ञानिकों की टीम ने पूरी तैयारी कर ली है। बेंगलुरु,श्रीहरिकोटा, पोर्ट ब्लेयर, तिरुअनंतपुरम समेत लखनऊ और ब्रूनई के साथ साथ पापुआ न्यूगिनी के समुद्री इलाके में मौजूद आईलैंड बियाक और मॉरीशस के टेलिमेटरी एंड ट्रैकिंग सेंटर्स के माध्यम से न सिर्फ एक सेकंड का हिसाब भी रखा जा रहा है बल्कि वैज्ञानिकों की पूरी टीम अगले 50 से 60 से घंटों के लिए कंप्यूटर पर निगाहें लगाकर बैठ गई है। इसरो के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के मुताबिक अगले दो दिन न सिर्फ देश बल्कि समूची दुनिया के लिए चंद्रमा को खंगालने के लिए सबसे महत्वपूर्ण हो गए हैं। इस तरह से हो रही है मजबूत तैयारियां वैज्ञानिकों के मुताबिक अगले 48 से 50 घंटे मिशन चंद्रयान के लिहाज से बहुत महत्वपूर्ण है। नासा और इसरो के साथ काम कर चुके वरिष्ठ वैज्ञानिक संजीव सहजपाल कहते हैं कि जैसे-जैसे चंद्रयान चंद्रमा की

Word Count: 6, Character Length: 3978 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22502

फेल होने या कम ब्रेक फ्लुइड जैसे तकनीकी समस्याओं की पहचान करने में मदद कर सकता है। रविवार दोपहर मिस्त्री (54) और उनके दोस्त जहांगीर पंडोले की उस समय मौत हो गई, जब उनकी मर्सिडीज कार पालघर जिले में सड़क के डिवाइडर से टकरा गई थी। कार चला रही अनाहिता पंडोले (55) और उनके पति डेरियस पंडोले (60) को चोटें आईं और उन्हें मुंबई के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह दुर्घटना सूर्या नदी पुल पर उस समय हुई जब वे गुजरात से मुंबई जा रहे थे। एशिया कप में भारत का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा। टीम सुपर-4 राउंड में ही हारकर बाहर हो गई। मैच के बाद कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि टीम इंडिया का पूरा फोकस अब अगले महीने शुरू हो रहे टी-20 वर्ल्ड कप पर होगा। भारतीय टीम उस टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करना चाहती है। वर्ल्ड कप से पहले टीम इंडिया को ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दो घरेलू सीरीज भी खेलनी है। ये दोनों सीरीज टीम इंडिया के प्रैक्टिस के लिहाज से महत्वपूर्ण होगी। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज की शुरुआत 20 सितंबर से होगी। इससे पहले यानी अगले हफ्ते भारतीय चयनकर्ता टी-20 वर्ल्ड कप के लिए टीम का एलान कर देंगे। ऐसे में देखने वाली बात यह होगी क्या चयनकर्ता ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए टी-20 वर्ल्ड कप वाली ही टीम चुनते हैं या उस सीरीज में भी अन्य खिलाड़ियों को मौका दिया जाएगा और प्रयोग किया जाएगा। भारतीय टीम इस साल आईपीएल के बाद से ऋषभ पंत और दिनेश कार्तिक दोनों को लगातार बारी-बारी से मौका दे रही है। ऐसा माना जा रहा है कि टी-20 वर्ल्ड कप के लिए भी दोनों पर भरोसा जताया जाएगा। जरूरत पड़ने पर पंत को बतौर विकेटकीपर और कार्तिक को बतौर फिनिशर खिलाया जा सकता है। साथ

Word Count: 7, Character Length: 3815 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22506

अफसरों की मिलीभगत और भ्रष्टाचार की नींव पर खड़े लेवाना सुइट्स होटल अग्निकांड की रिपोर्ट शुक्रवार देर रात प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद को सौंप दी गई। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब और पुलिस आयुक्त एसबी शिरडकर की जांच में मुख्य रूप से लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) और अग्निशमन विभाग के अधिकारियों को दोषी पाया गया है। जांच रिपोर्ट में इनके खिलाफ कार्रवाई की सिफारिश की गई है। सूत्रों के अनुसार भविष्य में लेवाना अग्निकांड जैसी घटनाओं को रोकने के लिए जांच रिपोर्ट में महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए हैं। इस बीच, एलडीए ने राजधानी में अवैध तरीके से बने 200 होटलों की सूची शासन व मंडलायुक्त को सौंप दी है। इनमें से 60 अवैध होटलों को सील करने का आदेश जारी कर दिया गया है। शासन ने एलडीए से ऐसे अवैध होटलों की सूची मांगी थी जिनके खिलाफ उसने कार्रवाई का दावा किया था। इस संबंध में सचिव आवास अजय चौहान की ओर से शुक्रवार को एलडीए को पत्र भेज भी भेजा गया था। दरअसल, लेवाना मामले में गला फंसते देख एलडीए ने शासन को भरमाने के लिए उसी दिन अवैध निर्माण के लिए 22 इंजीनियरों को जिम्मेदार ठहराते हुए अनुशासनात्मक कार्रवाई की सिफारिश कर दी थी। मामले को ठंडा करने के लिए यह भी बताया कि 140 अवैध होटलों के खिलाफ कार्रवाई चल रही है। इस पर अवैध होटलों की सूची तलब की गई थी। इससे पहले प्रमुख सचिव आवास नितिन रमेश गोकर्ण ने अवैध निर्माण के लिए सिर्फ इंजीनियरों को जिम्मेदार ठहराने पर आपत्ति जताते हुए संबंधित अफसरों की सूची भी तलब की थी। बिना मानचित्र स्वीकृत कराए खड़े कर दिए होटल एलडीए ने शासन को अवैध होटलों की जो सूची सौंपी है, उसमें बताया गया है कि उनमें क्या कमियां हैं? अधिकांश होटल ऐसे हैं जिनके लिए एलडीए से मानचित्र स्वीकृत नहीं कराए

Word Count: 0, Character Length: 3964 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22507

की भी तैयारी थी लेवाना सुइट्स में आग लगने के बाद जागे प्राधिकरण ने शुक्रवार को इसको सील कर दिया। बहरहाल एलडीए के अधिकारियों का कहना है कि एसएसजे इंटरनेशनल होटल को सील करने के साथ ही अवैध निर्माण करने वाले होटलों के खिलाफ कार्रवाई की शुरुआत कर दी गई है। 200 करोड़ रुपये की महाठगी का आरोपी सुकेश रंजन न केवल फिल्म अभिनेत्री नोरा फतेही, जैक्लीन फर्नांडीज व लीना मारिया पाल से बात करता था, बल्कि इन अभिनेत्रियों समेत वह बॉलीबुड की 12 से ज्यादा अभिनेत्रियों से बात करता था। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) की जांच में ये सनसनीखेज खुलासा हुआ है। उसने सभी अभिनेत्रियों को महंगे गिफ्ट दिए हैं। कुछ अभिनेत्रियों से वह सीधे लगातार बात करता था। इनमें एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता व निर्देशक की अभिनेत्री बेटी भी शामिल हैं। सुकेश रंजन ने इस अभिनेत्री बेटी को कई बार कॉल भी कीं हैं। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) सभी अभिनेत्रियों से पूछताछ की तैयारी कर रही है और सभी के लिए नोटिस तैयार किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि 200 करोड़ रुपये से अधिक की ठगी के आरोपी सुकेश चंद्रशेखर ने अभिनेता नोरा फतेही, जैक्लीन फर्नांडीज व लीना मारिया पाल पर करोड़ रुपये खर्च किए। आरोपी ने उनको करोड़ों रुपये के गिफ्ट दिए। इस मामले में दिल्ली पुलिस की ईओडब्ल्यू ने सबसे पहले मामला दर्ज किया था। शुरूआती जांच में पता लगा कि वह नोरा, जैक्लीन व मारिया पाल से बात करता था। मगर जैसे जैसे ईओडब्ल्यू की जांच आगे बढ़ी तो पता लगा कि बॉलीबुड की करीब 12 अभिनेत्रियां सुकेश रंजन के संपर्क में थीं। उसने वर्ष 2016 2017 से ही अभिनेत्रियों से बात करना शुरू कर दिया था। ईओडब्ल्यू के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बालीबुड में पूरी तरह दखल रखने वाली रानी नाम की महिला ने सुकेश

Word Count: 0, Character Length: 3991 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22508

उससे निपटने के लिए कई तरह के नियम भी लागू किए जा चुके हैं। मगर क्या सचमुच इसके लिए सरकारों को दोष देना उचित होगा? देखा जाए, तो आम जनता इसके लिए कहीं अधिक जिम्मेदार है, पर आदत से मजबूर हम उंगली सरकारों पर ही उठाने लगते हैं। लोगों की गलती यह है कि थोड़ी दूर जाने के लिए भी वे झट गाड़ी निकाल लेते हैं और लाल बत्ती पर भी उसे चालू रखते हैं। लाख पाबंदियों के बावजूद पराली जलाते हैं और दीपावली में जमकर आतिशबाजी करते हैं। निर्माण-कार्यों की तो यहां चर्चा ही बेकार है। ऐसे में, यह कहना गलत नहीं होगा कि दिल्ली में जो प्रदूषण पसरा हुआ है, वह आम आदमी की ही देन है। इसके लिए सरकारों को घेरना उचित नहीं। यहां पढ़े-लिखे लोग भी वही गलती करते हैं, जो अपेक्षाकृत बेवकूफ करते हैं। स्थिति और विकट न हो जाए, इससे पहले सभी को सतर्क हो जाना चाहिए। प्रदूषण के मामले में आम आदमी को निर्दोष नहीं माना जा सकता। हालांकि, उसके पास साधन सीमित होते हैं, पर ऐसी कई गतिविधियां वे भी करते हैं, जो प्रदूषण बढ़ाने में योगदान करती हैं। मसलन, निजी वाहनों का अत्यधिक प्रयोग, कचरे का अनुचित प्रबंधन, प्लास्टिक पर बढ़ता भरोसा, ध्वनि प्रदूषण आदि। सरकारें अपने तईं कई तरह के प्रयास करती हैं। दिल्ली में ही राज्य सरकार ने ग्रैप की व्यवस्था लागू कर रखी है और कुछ ऐसे नियम तय किए हैं, जिनका पालन आम लोगों को करना ही चाहिए, लेकिन ऐसी विकट परिस्थिति में भी लोग अपनी जिम्मेदारियों का पालन करने में कोताही बरतते हैं। मिसाल के तौर पर, कचरा उठाने वाली सरकारी गाड़ी में गीले और सूखे कचरे की अलग-अलग व्यवस्था होती है और लोगों से भी अपेक्षा की जाती है कि वे अपने घरों में कचरे को बांटकर रखेंगे, लेकिन लोग शायद ही ऐसा करना पसंद

Word Count: 3, Character Length: 3779 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22509

लेकिन सच्चे शिष्य यदा-कदा ही मिलते हैं। अगर सच्चा शिष्य मिल जाए, तो वह दुर्लभ घटना मानी जाती है। अगर शिष्य सच्चा होगा, तो उसे यदि झूठा गुरु भी मिल जए, तो वह उसके माध्यम से सत्य तक पहुंच जाएगा, लेकिन यदि किसी सच्चे गुरु को झूठा शिष्य मिल जाए, तो वह कुछ भी कर ले, अपने उस शिष्य को सत्य का ज्ञान नहीं करा सकते। इसलिए सदा सच्चे शिष्य की तलाश को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं। मैं तो कहता हूं, शिष्यों के लिए भी एक दिवस मनाएं के से पहले ही शुरू हो जाती है। यदि लोकतंत्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा को बचाए रखना है, तो भाजपा के रुख का बचाव करने के बजाय चुनाव आयोग को अपनी इस कवायद का औचित्य साबित करना होगा। मधुर उदारता देखता हूं। दुरुस्त नहीं करता, बल्कि मानसिक तौर पर भी स्वस्थ बनाता है। यह इंसान का प्रकृति से भी तालमेल बढ़ाता है। आज बहुत से लोगों को शारीरिक और मानसिक, दोनों तरह की बीमारियों ने जीना दुश्वार किया करने में मदद कर सकता है। आज की भागमभाग भरी जिंदगी में लोगों के पास बिल्कुल समय नहीं है। जीवन शैली इतनी बदल गई है कि आदमी हंसना तक भूल गया है। नशा, बुरी लतों आदि ने व्यक्ति को अंदर से पूरी तरह खोखला कर दिया है। ऐसे में मानव जीवन का असली मूल्य ही खो गया है। पैसा ही आदमी का मुख्य मकसद हो गया है। इसी वजह से वह अवसाद ग्रस्त भी होता है। मानव जीवन को हर तरह की गतिविधियों की आवश्यकता है। ऐसे में, अगर मनुष्य जीवन का असली आनंद लेता है, तो तनाव से मुक्त होकर हास्य के साथ ही तनाव मुक्त जीवन जीना होगा। लेकिन इसके लिए समय कहां है? हमारी दिनचर्या ऐसी हो गई है, नौकरी-पेशा की ऐसी भागमभाग है कि एक मिनट

Word Count: 2, Character Length: 3571 characters

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-19-Test NO.-22510

ysfdu lPps f'k"; ;nk&dnk gh feyrs gSaA vxj lPpk f'k"; fey tk,] rks og nqyZHk ?kVuk ekuh tkrh gSA vxj f'k"; lPpk gksxk] rks mls ;fn >wBk xq# Hkh fey t,] rks og mlds ek/;e ls lR; rd igqap tk,xk] ysfdu ;fn fdlh lPps xq# dks >wBk f'k"; fey tk,] rks og dqN Hkh dj ys] vius ml f'k"; dks lR; dk Kku ugha djk ldrsA blfy, lnk lPps f'k"; dh ryk'k dks gh vius thou dk y{; cuk,aA eSa rks dgrk gwa] f'k";ksa ds fy, Hkh ,d fnol euk,a ds ls igys gh 'kq: gks tkrh gSA ;fn yksdra= ds :i esa Hkkjr dh izfr"Bk dks cpk, j[kuk gS] rks Hkktik ds #[k dk cpko djus ds ctk; pquko vk;ksx dks viuh bl dok;n dk vkSfpR; lkfcr djuk gksxkA e/kqj mnkjrk ns[krk gwaA nq#Lr ugha djrk] cfYd ekufld rkSj ij Hkh LoLFk cukrk gSA ;g balku dk iz—fr ls Hkh rkyesy c<+krk gSA vkt cgqr ls yksxksa dks 'kkjhfjd vkSj ekufld] nksuksa rjg dh chekfj;ksa us thuk nq'okj fd;k djus esa enn dj ldrk gSA vkt dh HkkxeHkkx Hkjh ftanxh esa yksxksa ds ikl fcYdqy le; ugha gSA thou 'kSyh bruh cny xbZ gS fd vkneh galuk rd Hkwy x;k gSA u'kk] cqjh yrksa vkfn us O;fä dks vanj ls iwjh rjg [kks[kyk dj fn;k gSA ,sls esa ekuo thou dk vlyh ewY; gh [kks x;k gSA iSlk gh vkneh dk eq[; edln gks x;k gSA blh otg ls og volkn xzLr Hkh gksrk gSA ekuo thou dks gj rjg dh xfrfof/k;ksa dh vko';drk gSA ,sls esa] vxj euq"; thou dk vlyh vkuan ysrk gS] rks ruko ls eqä gksdj gkL; ds lkFk gh ruko eqä thou thuk gksxkA ysfdu blds fy, le; dgka gS gekjh fnup;kZ ,slh gks xbZ gS] ukSdjh&is'kk dh ,slh HkkxeHkkx gS fd ,d feuV

Word Count: 328, Character Length: 1447 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22514

महाराष्ट्र में इंसान जैसे रोबोट अब कई वजहों से अधिक स्मार्ट, सस्ते व मानवीय बन गए हैं। सबसे बड़ा कारण तो इनमें लगने वाली मशीनों का दाम घटना है। फिर, लगातार सुधरती कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने कहीं अधिक प्रयोग करने की सुविधा दे दी है। गोल्डमैन सैक्स की रिपोर्ट कहती है कि पिछले साल एक इंसानी रोबोट को बनाने में 50 हजार डॉलर से 2.5 लाख डॉलर के बीच खर्च आता था, जो अब घटकर 30 हजार डॉलर से 1.5 लाख डॉलर के बीच हो गया है। लिहाजा आश्चर्य की बात नहीं कि मस्क ने ऑप्टिमस के जल्द ही 20 हजार डॉलर में उपलब्ध होने की घोषणा की है। ये रोबोट घर के कामों में मदद करेंगे, पौधों को पानी देंगे, खाना परोसेंगे और कई दूसरे काम करेंगे। रोबोट अब तक दुकानों और गोदामों तक ही सिमटे रहे हैं। लेकिन घरों में उनका यूं प्रवेश मानव समाज और अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला साबित होगा। मॉर्गन स्टेनली का आकलन है कि वर्ष 2040 तक अमेरिका में 80 लाख इंसानी रोबोट काम कर रहे होंगे, जिससे वेतन पर 357 अरब डॉलर का प्रभाव पड़ेगा। वहीं, 2050 तक ऐसे रोबोट की संख्या 6.3 करोड़ हो सकती है, जो संभवत: 75 फीसदी व्यवसाय, 40 फीसदी कर्मचारी और करीब तीन ट्रिलियन वेतन प्रभावित करेंगे। अनुमान है, सिर्फ अमेरिका में निर्माण-कार्यों के 70 फीसदी, खेती-बाड़ी, मछली मारने और वानिकी के 67 फीसदी काम प्रभावित हो सकते हैं। भारत में औद्योगिक रोबोट के इस्तेमाल में 59 फीसदी की वृद्धि हुई है। साल 2023 में 8,510 रोबोट काम कर रहे थे, जो इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रोबोटिक्स के मुताबिक, एक नई ऊंचाई थी। कार-निर्माताओं और आपूर्तिकर्ताओं, दोनों ने इसके विकास में योगदान दिया है। स्टैटिस्टा के मुताबिक, भारत में रोबोटिक्स बाजार का राजस्व साल 2024 में 44.67 करोड़ डॉलर तक पहुंच सकता है। सबसे ज्यादा

Word Count: 3, Character Length: 3887 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22515

के सामने इनसे चुनौतियां पैदा नहीं होंगी। कुल मिलाकर, इंसानी रोबोट हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक तेजी से हमारे घरों में प्रवेश कर सकते हैं। भारत और अन्य देशों को इसके लिए तैयार रहना होगा। जीवन में आपको समस्याओं का सामना इसलिए करना पड़ता है कि आप घटनाओं को अत्यधिक महत्व देते हैं। आप छोटे रह जाते हैं और घटनाएं आपसे बड़ी हो जाती हैं। मान लीजिए, आप किसी व्यस्त सड़क पर मोटर साइकिल चला रहे हैं और आपके सामने एक गाड़ी है, जो बहुत धुआं छोड़ रही है। ऐसे में, आपके पास तीन उपाय हैं। एक, आप शिकायत करके, किसी तरह बर्दाश्त करते हुए गाड़ी के पीछे-पीछे चलते रहें। दूसरा, थोड़ी देर रुककर या अपनी गति को धीमी करके उस गाड़ी को दूर आगे निकल जाने दें और तीसरा, कुशलतापूर्वक उस गाड़ी से आगे निकल जाएं और उस घटना को भूल जाएं। पहले विकल्प की भांति प्राय: हर व्यक्ति घटनाओं में फंसा रहता है और दुखी होता है। दूसरे विकल्प में भी आपको पूर्ण राहत नहीं मिलती, क्योंकि कोई दूसरी बड़ी गाड़ी आपके सामने आ सकती है। इसलिए, ज्ञानी लोग अपनी कुशलता के प्रयोग से घटनाओं से आगे निकल जाते हैं। जब वाहन की अवस्था उत्तम हो, तब आपकी कुशलता प्रभावशाली होती है। साधना और अभ्यास वाहन को सुचारू रूप से चलाते हैं और गुरु-कृपा से कुशलता आती है। जितने अधिक आप जागृत होते हैं, उसी के अनुसार अपने चारों ओर की घटनाओं या वातावरण से ज्ञान अर्जित कर पाते हैं। यदि आप जागृत नहीं, तो सबसे कीमती ज्ञान भी अर्थहीन है। जागरूकता, सजगता पर निर्भर करती है। अपनी खिड़कियों को खोलने और बंद करने की आपकी कुशलता पर। जब तूफान हो, तब अपनी खिड़कियों को बंद करने की जरूरत पड़ती है और जब भीतर गर्मी और घुटन हो, तब आपको अपनी खिड़कियों को खोलने की आवश्यकता है। आपकी

Word Count: 2, Character Length: 3837 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22516

पका हुआ पात्र बनाती है। आप ध्यान करने में असमर्थ हैं, क्योंकि आपका मन चंचल है, तब महसूस कीजिए कि आप थोड़े से बेवकूफ हैं। तब आप गहन ध्यान में डूब सकेंगे। बुद्धि आपकी चेतना का एक छोटा सा अंश है। जब आप खुद को मूर्ख मानते हैं, तब बुद्धि से परे हो जाते हैं। यह सही है कि प्रस्तावना सिर्फ संविधान की आवश्यक विशेषताओं को परिभाषित नहीं करती, बल्कि उन मूलभूत शर्तों की तरफ भी हमारा ध्यान खींचती है, जिनके आधार पर एकीकृत समुदाय बनाने के लिए इसे अपनाया गया था। मगर दिक्कत तब पेश आती है, जब इसमें तथ्यात्मक गलती नजर आती है। मौजूदा विवाद का मूल कारण यही है। प्रस्तावना में जो समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्द अंकित है, उसे साल 1976 में संविधान के 42वें संशोधन के तहत शामिल किया गया था, लेकिन प्रस्तावना की आखिरी पंक्ति कहती है- अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ईस्वी (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। अब बताइए जरा, क्या समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्द 1949 में प्रस्तावना का हिस्सा थे, जिसकी गवाही प्रस्तावना की आखिरी पंक्ति दे रही है? कदापि नहीं, यह दर्शाना गलत है कि भारतवासी 26 नवंबर, 1949 को भारत को एक समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष गणराज्य बनाने के लिए सहमत हुए थे। वास्तविकता तो यह है कि इन शब्दों को इंदिरा गांधी की सरकार ने आपातकाल के दौरान जोड़ा। ऐसे में, अगर इन शब्दों को मूल प्रस्तावना से हटाने की मांग हो रही है, तो इसमें क्या गलत है? जाहिर है, जिन लोगों को इस याचिका से पेट में दर्द हो रहा है, उसकी वजह यह नहीं है कि वे प्रस्तावना में कथित छेड़छाड़ का विरोध कर रहे हैं, बल्कि ऐसा विरोध न करने से एक खास राजनीतिक परिवार के

Word Count: 1, Character Length: 3868 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22520

12 सितंबर को ईओडब्ल्यू कार्यालय बुलाया गया है। इस मामले में ईओडब्ल्यू के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने पूरी तरह चुप्पी साध रखी है। कर्तव्य पथ की पहली शाम आम लोगों के नाम रही। इंडिया गेट और कर्तव्य पथ पर लगी रंगबिरंगी लाइटों को देखने के लिए भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी। करीब दो साल के बाद शुक्रवार की शाम सैलानियों ने इंडिया गेट का नजदीक से दीदार किया। बड़ी संख्या में लोग इंडिया गेट को एक टक निहारते रहे। लोगों ने सेल्फी खींचीं, लाइट शो का आनंद उठाया, देश के विभिन्न राज्यों के लोक संगीत और नृत्य का लुत्फ उठाया। दरअसल, कोविड काल की बंदिशों के बाद पहली बार आम लोग कर्तव्य पथ से होते हुए इंडिया गेट के नजदीक तक पहुंचे। करीब दो साल बाद यहां पहुंचने की खुशी भी उनके चेहरों पर साफ दिख रही थी। दिलचस्प यह कि इस बीच इंडिया गेट की रौनक पूरी तरह से बदल गई है। सबकुछ अत्याधुनिक और चकाचौंध करने वाला था। कर्तव्य पथ की पहली शाम आम लोगों के नाम रही। इंडिया गेट और कर्तव्य पथ पर लगी रंगबिरंगी लाइटों को देखने के लिए भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी। करीब दो साल के बाद शुक्रवार की शाम सैलानियों ने इंडिया गेट का नजदीक से दीदार किया। बड़ी संख्या में लोग इंडिया गेट को एक टक निहारते रहे। लोगों ने सेल्फी खींचीं, लाइट शो का आनंद उठाया, देश के विभिन्न राज्यों के लोक संगीत और नृत्य का लुत्फ उठाया। दरअसल, कोविड काल की बंदिशों के बाद पहली बार आम लोग कर्तव्य पथ से होते हुए इंडिया गेट के नजदीक तक पहुंचे। करीब दो साल बाद यहां पहुंचने की खुशी भी उनके चेहरों पर साफ दिख रही थी। दिलचस्प यह कि इस बीच इंडिया गेट की रौनक पूरी तरह से बदल गई है। सबकुछ अत्याधुनिक और चकाचौंध करने वाला था। साकेत के अंकित

Word Count: 0, Character Length: 3760 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22521

उपयोग किया है। यहां की भीड़ देखकर लगता है कि किसी मेले में आए हैं। सैलानियों को बेहतरीन लग रहा कर्तव्य पथ सैलानियों को राजपथ से कर्तव्य पथ पर चले जाना बेहतरीन लग रहा है। उत्तराखंड के रहने वाले अनिल उनियाल ने कहा कि यहां आकर देश के नागरिकों को अपने कर्तव्यों का एहसास होगा। दरअसल, नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन से इंडिया गेट तक 3.2 किलोमीटर तक सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट का री डेवलपमेंट किया गया है। इसके बाद इसकी खूबसूरती पहले से कई गुना अधिक बढ़ गई है। साल 1911 में किंग जॉर्ज पंचम ने भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित किया। नई दिल्ली की प्रमुख इमारतों को विकसित करने का जिम्मा एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर को मिला। इन दोनों ने ही सेंट्रल विस्टा को डिजाइन किया। इसी प्रोजेक्ट के तहत राजपथ का निर्माण भी किया गया। बाद में 1921 में इंडिया गेट की नींव रखी गई। देश की आजादी के बाद इंडिया गेट दिल्ली के सबसे ज्यादा देखे जाने वाले पर्यटन स्थलों में शामिल हो गया। इतने सालों के बाद भारत सरकार ने सेंट्रल विस्टा का पुनर्विकास कराया। रंग बिरंगी लाइट से नहाया कर्तव्य पथ सूरज ढलते ही कर्तव्य पथ रंगीन लाइटों से नहा उठा। दूर तक सफेद लाइटों की दो कतारें, बीच में हरी और केसरिया लाइटें मनोहारी लग रही थीं। लाइट जलने पर सैलानियों की भीड़ ने सीटियां बजाकर इसका स्वागत किया। इंडिया गेट और लाइटों के साथ सेल्फी लेने की होड़ लगी हुई थी। विभिन्न राज्यों के लोकगीत नृत्य की प्रस्तुति इंडिया गेट पर शाम से देश के विभिन्न राज्यों के लोकगीत संगीत की जबरदस्त प्रस्तुति हुई। लोगों ने लाइट शो के साथ संगीत की प्रस्तुति का आनंद उठाया। मध्य प्रदेश के सागर से आए लोक कलाकारों के समूह ने भगवान कृष्ण के जन्म का बधाई नृत्य प्रस्तुत किया। झारखंड के गुमला

Word Count: 0, Character Length: 3984 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22522

अपने दो तीन दोस्तों से उन्होंने कर्ज के तौर पर रुपये जुटाए और उस रकम से एक वेबसाइट बनवाई, मगर इस पर किस तरह से मार्केटिंग करनी है, यह तो उन्हें आता ही नहीं था उनका सारा निवेश बेकार चला गया। भावेश को थोड़ी निराशा हुई, पर उन्होंने हार नहीं मानी। यू ट्यूब पर देशी घी खाने के फायदे के बारे में वीडियो देखे। उनमें नीचे टिप्पणी करने वालों से उन्होंने संवाद करना शुरू किया और फिर ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए मां से मिले रुपये से नई शुरुआत की। सितंबर में वह मुबारक दिन आया, जब बिहार के भागलपुर से उन्हें पहला ऑर्डर मिला। रुपये का वह भुगतान भावेश जीवन भर नहीं भूल सकेंगे। काम बढ़ा, कमाई बढ़ी, तो अपनों का भरोसा भी बहाल हुआ। फिर पिता के सहयोग से गायों की तादाद भी बढ़ी, गौशाला का भी विस्तार हुआ। फिर उन्होंने आस पड़ोस के छोटे छोटे देसी गाय पालकों व दुग्ध उत्पादकों को जोड़ा। भावेश आज सालाना करीब आठ करोड़ रुपये का देसी घी का कारोबार कर रहे हैं। अपनी सरकारी मुलाजिम दोनों बहनों को वह मजाक में छेड़ते हैं सरकार तुमको जितनी तनख्वाहें देती है, उससे ज्यादा तो हम उसे जीएसटी चुकाते हैं बकौल भावेश, बेरोजगारी का हल सिर्फ सरकारी नौकरी नहीं, यह बात परिवारों को भी समझने की जरूरत है। न शिशु से मोह और न ममता की परवाह, न मानवता का लिहाज क्या नफरत ही दुनिया का मूल स्वभाव है और बाकी धर्म पंथ उसके पीछे पीछे घिसट रहे हैं क्या ईश्वर भी धर्म देखकर बचाव के लिए आगे आता है क्या ईश्वर भी विधर्मियों की मौत का तमाशा देखता है दुनिया में ज्यादातर इंसान मन हारे बैठे रहते हैं कि मुझसे कुछ नहीं हो सकता। मैं छोटा आदमी किस काम का मेरे पास ज्यादा धन नहीं, ज्ञान नहीं, मैं क्या कर सकता हूं कई

Word Count: 0, Character Length: 3756 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22523

बच्चों को रॉक क्लाइम्बिंग या चट्टानों पर चढ़ना सिखाने वाले एक समूह के बारे में बताया गया था। ब्रेल में लिखे शब्दों पर यकीन नहीं हुआ कि कौन ऐसा पागल होगा कि एक अंधे बच्चे को रॉक क्लाइम्बिंग कराने ले जाएगा? पर बुलंद इरादा तो देखो, कुछ लोग हैं, जो अंधों को पहाड़ चढ़ना सिखाना चाहते हैं, तो चलो आजमाने में क्या हर्ज है? खैर, जब चट्टान चढ़ने का मौका आया, तो हालत पस्त हो गई। एक कदम चढ़ने के लिए भी बहुत जूझना पड़ रहा था। ऐसा लग रहा था, मानो चट्टानें दुश्मन हैं, धकेलकर गिरा देना चाहती हैं। कहा जाता है कि मुश्किलें कैसी भी हों, इंसानी हौसले के सामने घुटने टेक देती हैं। किशोर ने एक फैसला किया, चट्टानों को दोस्त बना लिया जाए। मैंने चट्टानों का कुछ नहीं बिगाड़ा, चट्टानें मेरी दुश्मन नहीं हैं। चट्टानें तो अपनी जगह स्थिर हैं, अपनी जगह से रत्ती भर भी टस-मस नहीं होती हैं। चट्टानें धोखेबाज नहीं हैं। चट्टानों की अपनी ऊष्मा है। अपनी आवाज है, जिसे गौर से सुनने की जरूरत है। चट्टानों की अपनी त्वचा है, कहीं चिकनी, कहीं खुरदुरी, कहीं नुकीली, कहीं सपाट-साफ, तो कहीं परतदार। एक बार स्पर्श करो, तो चट्टानें खुद बताने लगती हैं कि उनको कैसे छुआ जाए, उन पर से कैसे गुजरा जाए, उन्हें कैसे थामा जाए या उन पर कैसे पैर जमाया जाए? जब उस दृष्टिबाधित किशोर ने चट्टानों को पूरे जिस्म व दिल से थामा, तो एक दोस्ताना पनप आया। ऐसा लगा, मानो तमाम इंद्रियां जागृत होने लगी हों। उसने चट्टान को और चट्टान ने उसे गले लगा लिया, दोनों ने मानो वादा किया कि एक-दूजे को धोखा नहीं देना है। एक-दूजे का पूरा मान-सम्मान करना है। चढ़ते समय सामने पर्वत होता था और पीछे विशाल-खुला आसमान, जिसमें ठंडी हवा, धूप और बारिश होती थी। सब मिलकर बताने लगते थे कि

Word Count: 6, Character Length: 3849 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22524

दी कि उनके अंधेपन की बेड़ियां बेमतलब हो गईं और वह अथक एक के बाद एक सर्वोच्च शिखर चढ़ते चले गए। 25 मई, 2001 तो उनके और पूरी दुनिया के लिए एक ऐतिहासिक दिन बन गया। पूरी दुनिया जान गई कि एरिक वेहेनमायेर(जन्म 1968) नाम के एक दृष्टिबाधित पर्वतारोही हैं, जिन्होंने दुनिया के सबसे ऊंचे शिखर - माउंट एवरेस्ट पर पहुंचकर अपने विरल पुरुषार्थ का परचम लहरा दिया है। आज वह दुनिया के अकेले दृष्टिबाधित हैं, जो संसार के सात सर्वोच्च शिखर फतह कर चुके हैं। दुनिया के सबसे रोमांचक और प्रसिद्ध एथलीटों में शुमार एरिक एक कुशल पर्वतारोही, पैराग्लाइडर और स्कीयर हैं, जिन्होंने अपने अंधेपन को जिंदगी में कभी आड़े आने न दिया। कोई बंधन नहीं अर्थात नो बैरियर नाम से वह अपना अभियान चलाते हैं। युवाओं का उत्साह बढ़ाने वाली अनेक पुस्तकों की रचना कर चुके हैं। उनकी पुस्तक टच द टॉप ऑफ द वर्ल्ड बहुत लोकप्रिय है। वह दुनिया भर में घूमते हैं और प्रेरित करते हैं कि वाकई, मन के हारे हार है और डर के आगे जीत। पिछली बार उनको वह वाला सम्मान मिला, तो दिल जला। ऊपर से बधाई दी, लेकिन अंदर-अंदर कुढ़ता रहा। मन कहता रहा कि कमाल है, ये मुंह और मसूर की दाल? किस फ्रिज से निकाल के लाए इस दुर्लभ आइटम को? और क्या मर गए थे (यानी क्या मैं मर गया था?) ऐसे हर मौके पर लगता है कि हर सम्मान मेरा है, अब आया, अब आया मेरे हाथ में, लेकिन हर बार कोई दूसरा ले जाता है और मैं उसे सिर्फ बधाई देने के लिए बचा रह जाता हूं। सम्मानों के सीजन में हर बरस बहुत दिनों तक मैं अपने दिल के इस दर्द को छिपाता रहता हूं और औरों की तरह कहता रहता हूं, जिनको मिला, वह सचमुच इस सम्मान के सर्वथा योग्य थे। सम्मान देने वालों

Word Count: 2, Character Length: 3662 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-20-Test NO.-22525

मेरा दुख कुछ-कुछ दूर होने लगता है, जलन कुछ शांत होने लगती है। ऐसा हर बार होता है। जब कुछ दिन गुजर जाते हैं, तो दिल को समझाने के लिए दिमाग अपने आप कुछ कहानियां बुनने लगता है और दिल को तसल्ली देने लगता है कि इस बेईमान जमाने में तुझे कोई क्यों सम्मान दे? जब अपने ही जैसा कोई वंचित लेखक मिल जाता है, तो बताता है कि नाम तो मित्र आपका (यानी मेरा) ही चल रहा था, ऐन टाइम पर काट दिया गया। किसी ने कहा कि यह तो कमर्शियल लेखक हैं, मास्टर अलग से हैं, लेकिन उसके पास कुछ नहीं है। मिल जाएगा, तो कुछ दिन रोटी खा लेगा। उसी को दे दो। इसे अगली बार देख लेना। लेकिन यह अगली बार कभी नहीं आता! मैं हर बार मन मसोसकर रह जाता हूं। बताइए जिऊं, तो जिऊं कैसे? इस बार भी तीन-चार महीने गुजर चुके हैं। जो सम्मान घोषित होने थे, हो चुके हैं। अब कहीं कोई और सम्मान नहीं बचा, जो मेरे लायक हो। बार-बार चोट खाकर बने समझदार दिमाग ने इस बार टूटे हुए दिल को समझाया कि देख, यह सारी दुनिया सिर्फ साहित्य से नहीं, लेन-देन से चलती है। जरा सोच, तूने कब किसी को कुछ दिया कि कोई कुछ तुझे दे? साहित्य के बारे में अपनी गलतफहमी दूर कर ले। साहित्य की दुनिया कोई देवताओं की दुनिया नहीं है। जिस तरह दुनिया मैनेज की जाती है, उसी तरह साहित्य भी मैनेज किया जाता है, और सम्मानों को भी मैनेज किया जाता है। अगर तुझे कुछ चाहिए, तो तू पहले साहित्य को, फिर सम्मानों को मैनेज कर। मैनेज करना ही सबसे बड़ा विचारधारात्मक संघर्ष है। इस संघर्ष का एक ही फॉर्मूला है : पहले संपर्क से साधना, फिर साधना से संपर्क साधना, फिर साहित्य-सेवा से साहित्य के महानुभावों को प्रसन्न करना। जो कुछ लिख

Word Count: 5, Character Length: 3591 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22530

वह अपने परिवार से बिछड़ गई थी। वह नजरें झुकाए, मुंह छिपाए घर से निकलती थी कि पता नहीं, कब कोई नई मुसीबत टूट पड़े। सामान्य कद की दुबली पतली, मृदुभाषी, नीली आंखों और घने सुनहरे बालों वाली युवती को तमाम झमेलों से बचकर रहना ही मुफीद लगता था। वह सोचती रहती थी कि वह सोचकर भी क्या कर लेगी, किसे बचा लेगी अक्सर वह आंखें मूंद लेती थी, जैसे ज्यादातर लोग करते हैं, पर एक दिन हद हो गई। अप्रैल का महीना था। साल 1942 चल रहा था। बाजार में कोहराम मचा था। नाजी दरिंदे लोगों को मार रहे थे। एक नवजात को भी उन्होंने उसकी मां से छीन लिया था। छीनते ही एक नाजी अफसर ने उसे हवा में उछाल दिया था और जमीन पर गिरने से पहले ही गोली मार दी थी। हैवानियत के बेरहम मंजर में नाजी पागल जानवरों से भी ज्यादा खूंखार नजर आ रहे थे। उनकी रगों में सिर्फ नफरत का सैलाब था, जिसमें इंसानियत का नामोनिशान न था। ये नाजी भी कभी बेबस शिशु रहे होंगे, उन्हें किसी ने मां की गोद से नहीं छीना होगा, उन्हें किसी ने हवा में नहीं फेंका होगा, उनके सीने को कोई गोली पार न कर गई होगी न शिशु से मोह और न ममता की परवाह, न मानवता का लिहाज क्या नफरत ही दुनिया का मूल स्वभाव है और बाकी धर्म पंथ उसके पीछे पीछे घिसट रहे हैं क्या ईश्वर भी धर्म देखकर बचाव के लिए आगे आता है क्या ईश्वर भी विधर्मियों की मौत का तमाशा देखता है उस युवती का ईश्वर से यकीन उठने लगा। शायद कोई ईश्वर नहीं होता। खुद अपनी मदद के लिए इंसान को सजग रहना पड़ता है। तब बहुत आसान था तमाशबीन बनकर रह जाना, पर उस युवती ने यह नहीं सोचा कि वह इन दिनों बेघर बेपरिवार नौकरानी है।

Word Count: 0, Character Length: 3496 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22531

साथ ले आई। सभी यहूदी मुंह पर ताले लगाए, रात भर उस बड़े घर के तहखाने में छिपे रहते थे और तभी ऊपर घर में आते थे, जब नाजी अफसर काम पर चला जाता था। दिन के समय प्यारे यहूदी रसोई से सफाई तक मिलकर घर का पूरा काम करते थे और शाम होने से पहले ही तहखाने में कैद हो जाते थे। महीनों बीत गए, पर एक दिन भेद खुल गया। युवती नाजी अफसर के पैरों में गिर पड़ी कि मैं हर सजा भुगतने को तैयार हूं, पर किसी की जान न लेना। तब जान बच गई, पर कुछ ही दिन बाद सबको लेकर जंगल में छिपना पड़ा। खैर, एक दिन युद्ध खत्म हुआ और वह युवती किसी तरह अमेरिका पहुंच गई। वहां वह संकोची युवती जीवन के नए संघर्ष में खो गई, पर दुनिया में जब यहूदी कुछ संभले, तब उन्होंने अपने मददगारों को याद किया और मददगारों के इतिहास में युवती आइरीन गट ओपडाइक का नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हुआ। 5 मई को जन्म लेने वाली आइरीन (1922 2003) को यहूदियों के देश के सर्वोच्च सम्मान इजरायल मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। उनकी करुण दास्तान वाली पुस्तक इन माई हैंड्स मेमोरीज ऑफ ए होलोकॉस्ट रेस्क्यूअर की लाखों प्रतियां बिक चुकी हैं। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम तीस वर्ष स्कूली बच्चों को अपनी कहानी सुनाने और देशाटन करते बिताए। वह बार बार कहती थीं कि राष्ट्रीयता, धर्म, रंग या पंथ की परवाह किए बिना सबसे लगाव रखिए। हम एक ही परिवार हैं, प्यार करना सीखिए और मौका मिलते ही एक दूजे की मदद कीजिए, तभी दुनिया रहने लायक रहेगी। दिल्ली में एक राष्ट्रीय सेमिनार चल रहा है सुबह के भाषण भूषण हो चुके हैं, लंच टाइम हुआ है। एक से एक नामी साहित्यकार, बुद्धिजीवी, एक्टिविस्ट लाइन से अपनी अपनी प्लेट में अपने अपने भोजन का

Word Count: 0, Character Length: 3652 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22532

सबको जानते हैं, कई तो एक दूसरे को जरूरत से ज्यादा जानते हैं, पर उनके बीच हलो हाय तक नहीं सुनाई पड़ती। यह सीन एक युवा साहित्यिक गोष्ठी का है एक से एक चमकते, पढ़े लिखे, हाईफाई, तकनीक सेवी; एक से एक नामी ब्लॉगर, फेसबुकिया, यू टयूबरिया, इंस्टाग्रामिया व एक्स में जीने वाले बैठे हैं, पर आपस में नो खुसर पुसर , नो डायलॉग और नो गप्प शप्प और यह तीसरा सीन है मैं फोन करता हूं, कल आपने बढ़िया बोला। मित्र कुछ सेकंड हकलाता है, फिर एक धन्यवाद मारता है और बात खत्म होने लगती है। मैं पूछता हूं कि कैसे हैं नपा तुला जवाब आता है, ठीक हूं। फिर सूखा सा प्रतिप्रश्न, आप कैसे हैं मैं भी कह देता हूं, ठीक हूं और बातचीत खत्म हो जाती है। जिन दिनों सोशल मीडिया पर हर बंदा ओपिनियनकार, रचनाकार, आलोचक है, उन्हीं दिनों में जब वे किसी गोष्ठी आदि में आमने सामने होते हैं, तो ऐसे मिलते हैं, जैसे कोई पहचान न थी सभी हजारों द्वारा लाइक्ड व व्यूड सेलिब्रिटी हैं और अपने अपने साइबर जगत में असरदार हैं। मगर सबके बीच एक अजीब खामोशी की सरकार है मन करता है कि पूछूं, इतने बंद क्यों हो भाई बात कर लोगे, हलो हाय कर लोगे, किसी से खुलकर मिल लोगे, तो क्या कुछ लुट जाएगा क्या है ऐसा, जिसे बचा रहे हो क्या तुम्हारी कविता, कहानी या ओपिनियन कोई स्टेट सीक्रेट है कि बात बात में कहीं बाहर न निकल जाए पुरखे बहुत पहले समझा गए, वादे वादे जायते तत्वबोध, पर अफसोस आज साहित्य में न एक वाद है, न प्रतिवाद है, न विवाद है और न संवाद है। ऐसा सन्नाटा क्यों है भाई वह भी हिंदी साहित्य की हंगामेबाज गप्पी दुनिया में। इतिहास गवाह है, जब एक ने लिखा टेढ़े मेढ़े रास्ते, तो जवाब में दूसरे ने लिखा सीधे

Word Count: 0, Character Length: 3641 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22536

ताकि लोगों को सच का पता चल सके। रही बात धर्मनिरपेक्षता या समाजवाद की, तो भारत शुरू से एक धर्मनिरपेक्ष देश है और इसे साबित करने के लिए इसको किसी प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं है। यहां धर्म, जाति, नस्ल आदि के मद्देनजर किसी तरह का कोई भेदभाव नहीं किया जाता, फिर चाहे प्रस्तावना में इसकी चर्चा हो या न हो।देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र पर हमला करते हुए सन् 1976 के 42वें संविधान संशोधन को चुनौती दी गई है। दरअसल, संविधान की मूल प्रस्तावना में भारत को एक संप्रभु व लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में वर्णित किया गया था। इन दोनों शब्दों के साथ 1976 में आपातकाल के दौरान 42वें संशोधन के माध्यम से धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी शब्द भी जोड़े गए थे। अब आपत्ति इसी संशोधन को लेकर की गई है। याचिकाकर्ताओं को शायद अदालत का दरवाजा इसलिए खटखटाना पड़ा है, क्योंकि मौजूदा सरकार के पास इतनी शक्ति नहीं है कि वह संविधान में संशोधन करके 42वें संशोधन को रद्द कर सके। इन्हीं याचिकाकर्ताओं ने जन-प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के उस प्रावधान को भी चुनौती दी है, जिसके तहत राजनीतिक दलों को पंजीकृत होने के लिए धर्मनिरपेक्षता को बनाए रखने का वचन देना होता है। इसका मतलब यह है कि याचिकाकर्ता इस देश को एकधर्मी राष्ट्र बनाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि भारत में सिर्फ एक समुदाय के ही लोग रहें और बाकियों को इसी समुदाय के रहमो-करम पर रहना पड़े। सुप्रीम कोर्ट ने उचित ही सोमवार को कहा कि धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद संविधान की मूल विशेषताएं हैं। उसने मौखिक रूप से यह आश्चर्य भी जताया कि क्या प्रस्तावना से इन दो शब्दों को हटाने के लिए कोई न्यायिक निर्देश दिया जाना चाहिए, जैसा कि जनहित याचिका दायर करने वाले याचिकाकर्ताओं ने मांग की है। वास्तव में, सर्वोच्च न्यायालय ने मौलिक अधिकारों के साथ-साथ संविधान की बुनियादी विशेषताओं के रूप

Word Count: 3, Character Length: 4080 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22537

पिछले ढाई साल से अधिक समय से जारी कोरोना महामारी कब तक खत्म होगी, फिलहाल इस बारे में न तो किसी अध्ययन में कोई स्पष्टता है, न ही विशेषज्ञ किसी खास नतीजे पर पहुंच पाए हैं। जिस तरह से हाल के महीनों में कोरोना वायरस के वैरिएंट्स में म्यूटेशन देखा गया है, उस आधार पर विशेषज्ञों का कहना है कि संभव है कि आने वाले दिनों में कोरोना के और भी खतरनाक रूप देखने को मिल सकते हैं। इस जोखिम को देखते हुए सभी लोगों को लगातार सावधानी बरतते रहना चाहिए। जिन लोगों का टीकाकरण हो चुका है, उन्हें भी इसके जोखिमों से सुरक्षित नहीं माना जा सकता है। कोरोना का खतरा कब तक जारी रहेगा इस बारे में कोई पुख्ता अध्ययन रिपोर्ट भी नहीं है, इस बीच वैज्ञानिकों ने चेताया है कि आने वाले समय में हमें और भी कई बीमारियों के महामारी का सामना करना पड़ सकता है। कई अध्ययनों में वैश्विक स्तर पर बढ़ते मोटापे, हृदय रोग और डायबिटीज जैसी स्थितियों के खतरे को लेकर अलर्ट किया जाता रहा है। एक हालिया शोध में वैज्ञानिकों ने बड़ा दावा करते हुए चेतावनी दी है कि अगर दवाइयों के सही इस्तेमाल पर ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले वर्षों में लोगों में एंटी-माइक्रोबियल रेजिस्टेंस हो सकता है, जिसके कारण कई तरह की गंभीर स्थितियां पनप सकती हैं। डॉक्टर्स को इस बारे में विशेष सावधानी बरतते रहने की सलाह दी गई है। आइए इस अध्ययन के बारे में जानते हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने एक हालिया अध्ययन में पाया कि पिछले कुछ वर्षों में बढ़े एंटीबायोटिक दवाओं के अंधाधुंध सेवन के कारण भारतीय लोगों में एंटी-माइक्रोबियल रेजिस्टेंस हो गया है। यह ऐसी स्थिति है जिसमें रोगाणु, ऐसे तंत्र विकसित कर लेते हैं जिससे वह एंटीबायोटिक दवाओं के प्रभाव से बच जाते हैं। आमतौर पर एंटीबायोटिक दवाओं के

Word Count: 2, Character Length: 3989 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22538

देश में तेजी से एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस विकसित होता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप उपलब्ध दवाओं के साथ आने वाले दिनों में कुछ संक्रमणों का इलाज करना मुश्किल हो सकता है। की रिपोर्ट के अनुसार, ई कोलाई बैक्टीरिया से होने वाले संक्रमण के इलाज के लिए दवा का प्रयोग किया जाता रहा है। इस दवा के खिलाफ लोगों में रेजिस्टेंस काफी बढ़ गया है। साल में जो रेजिस्टेंस की दर थी वह में बढ़कर हो गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि जिस तरह से लोगों ने बिना डॉक्टरी प्रिस्क्रिप्शन के खुद से ही दवाइयां लेने की आदत बना ली है, यह उसी का परिणाम है। ऐसे में आशंका है कि इलाज के लिए उपयुक्त दवाइयों की कमी के कारण आने वाले वर्षों में कई प्रकार के संक्रमण को लेकर महामारी जैसी स्थिति हो सकती है, क्योंकि उन संक्रमणों के इलाज के लिए उपलब्ध दवाइयों का मरीजों पर ज्यादा असर ही नहीं होगा। इसी तरह द लैंसट जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बढ़ते मोटापे की समस्या को गंभीर बताते हुए इसे भी एक खतरनाक महामारी का संभावित कारण माना था। अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बताया कि जिस तरह से वैश्विक स्तर पर लोगों में मोटापे की समस्या बढ़ती जा रही है, इसके कारण कई बीमारियों जैसे हृदय रोग और डायबिटीज का जोखिम भी पहले के वर्षों की तुलना में काफी अधिक हो गया है। अगर समय रहते मोटापे पर नियंत्रण के लिए उपाय नहीं किए गए तो आने वाले वर्षों में यह बड़े संकट के रूप में उभरती समस्या हो सकती है, संभवत: कोरोना के बाद हम मोटापे की महामारी का सामना कर रहे होंगे। चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनके विपक्षी एकता के दावे पर निशाना साधा। उन्होंने भागलपुर में कहा कि बिहार में जो राजनीतिक घटनाक्रम है वो केवल राज्य

Word Count: 0, Character Length: 3902 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-21-Test NO.-22539

लेकिन सच्चे शिष्य यदा-कदा ही मिलते हैं। अगर सच्चा शिष्य मिल जाए, तो वह दुर्लभ घटना मानी जाती है। अगर शिष्य सच्चा होगा, तो उसे यदि झूठा गुरु भी मिल जए, तो वह उसके माध्यम से सत्य तक पहुंच जाएगा, लेकिन यदि किसी सच्चे गुरु को झूठा शिष्य मिल जाए, तो वह कुछ भी कर ले, अपने उस शिष्य को सत्य का ज्ञान नहीं करा सकते। इसलिए सदा सच्चे शिष्य की तलाश को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं। मैं तो कहता हूं, शिष्यों के लिए भी एक दिवस मनाएं के से पहले ही शुरू हो जाती है। यदि लोकतंत्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा को बचाए रखना है, तो भाजपा के रुख का बचाव करने के बजाय चुनाव आयोग को अपनी इस कवायद का औचित्य साबित करना होगा। मधुर उदारता देखता हूं। दुरुस्त नहीं करता, बल्कि मानसिक तौर पर भी स्वस्थ बनाता है। यह इंसान का प्रकृति से भी तालमेल बढ़ाता है। आज बहुत से लोगों को शारीरिक और मानसिक, दोनों तरह की बीमारियों ने जीना दुश्वार किया करने में मदद कर सकता है। आज की भागमभाग भरी जिंदगी में लोगों के पास बिल्कुल समय नहीं है। जीवन शैली इतनी बदल गई है कि आदमी हंसना तक भूल गया है। नशा, बुरी लतों आदि ने व्यक्ति को अंदर से पूरी तरह खोखला कर दिया है। ऐसे में मानव जीवन का असली मूल्य ही खो गया है। पैसा ही आदमी का मुख्य मकसद हो गया है। इसी वजह से वह अवसाद ग्रस्त भी होता है। मानव जीवन को हर तरह की गतिविधियों की आवश्यकता है। ऐसे में, अगर मनुष्य जीवन का असली आनंद लेता है, तो तनाव से मुक्त होकर हास्य के साथ ही तनाव मुक्त जीवन जीना होगा। लेकिन इसके लिए समय कहां है? हमारी दिनचर्या ऐसी हो गई है, नौकरी-पेशा की ऐसी भागमभाग है और यही होगा

Word Count: 2, Character Length: 3574 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22544

बिहार की राजनीति में सक्रिय होने के बाद चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर एक बार फिर मीडिया के सामने आए और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर तीखा हमला बोला। प्रशांत किशोर ने सीएम नीतीश के दिल्ली दौरे पर सवाल उठाते हुए कहा कि केवल नेताओं से मिलने और साथ चाय पीने से राष्ट्रीय राजनीति नहीं बदलती है। उनके इस कदम से जनता के ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। सीएम नीतीश कुमार के दिल्ली दौरे को अनुचित महत्व दिया गया: प्रशांत किशोर वहीं प्रशांत किशोर ने नीतीश कुमार के बिहार में भाजपा छोड़ने और महागठबंधन में शामिल होने की बात कहते हुए कहा कि यह राज्य आधारित घटना है। इसका अन्य राज्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि पहले महाराष्ट्र में महागठबंधन की सरकार थी, लेकिन वर्तमान में एनडीए की सरकार है लेकिन इसका असर बिहार पर नहीं पड़ा। उन्होंने कहा कि सीएम नीतीश कुमार के दिल्ली दौरे को अनुचित महत्व दिया गया और राष्ट्रीय राजनीति पर इसका प्रभाव न के बराबर होगा। बिहार में कुछ नहीं सुधरा है, नीतीश कुमार कुर्सी से चिपके हुए हैं: प्रशांत किशोर प्रशांत किशोर ने कहा कि नीतीश कुमार ने बिहार में कोई विकास नहीं किया है। बिहार आज भी पिछड़ा राज्य है। नीतीश कुमार बगैर सरकारी सुरक्षा के निकल जाएं फिर उन्हें विकास समझ में आ जाएगा। नीतीश कुमार 10 वर्षों से राजनीतिक बाजीगरी दिखा रहे हैं और कुर्सी से चिपके हुए हैं। कुर्सी से चिपकने से कुछ नहीं होने वाला है। धरातल पर काम करना होगा। प्रशांत किशोर का राहुल पर हमला राहुल गांधी को उन राज्यों में यात्रा करनी चाहिए जहां कांग्रेस के सामने भाजपा है। बिहार में अब नीतीश कुमार को जनता के समर्थन से जीत पाना मुश्किल है। नीतीश कुमार के खिलाफ लोगों में गुस्सा है। हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले में दर्दनाक हादसा हुआ है। हादसे में

Word Count: 0, Character Length: 4028 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22545

इसरो ने चंद्रयान-3 को चंद्रमा की सतह दक्षिणी ध्रुव पर उतारने के लिए पूरी तैयारी कर ली है। 23 अगस्त की शाम को चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग कराई जाएगी। भारत के इस मिशन पर दुनिया की नजरें टिकी हैं। चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग के बाद भारत, दुनिया में रूस, अमेरिका और चीन के बराबर आ जाएगा। अभी तक इन्हीं तीन देशों को चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने का मुकाम हासिल है। अंतरिक्ष वैज्ञानिकों का कहना है कि इसरो ने चंद्रयान 3 की सॉफ्ट लैंडिंग के लिए प्लान बी तैयार किया है। ये प्लान तभी अमल में लाया जाएगा, जब चंद्रमा पर विशालकाय आकार का कोई गड्ढा यानी क्रेटर सामने होगा। हालांकि, इसरो ने चट्टान और विशाल गड्ढे से भी निपटने का इंतजाम किया है। अंतिम क्षण में सॉफ्ट लैंडिंग की प्रक्रिया को 26 अगस्त तक बढ़ाया जा सकता है। अगर क्रेटर ज्यादा बड़ा और गहरा नहीं है तो चिंता की कोई बात नहीं होगी। लैंडर और रोवर के सोलर पैनल को पर्याप्त धूप यानी एनर्जी मिलेगी। चंद्रमा पर लैंडर के उतरने का समय भी वही तय किया गया है, जब उस हिस्से में सूर्य की पर्याप्त रोशनी उपलब्ध होगी। बता दें कि चंद्रमा पर विशालकाय गड्ढों की अच्छी खासी संख्या है। गहरे गड्ढों में सदियों से सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचा है। इन क्षेत्रों में तापमान माइनस 245 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। चंद्रमा की सतह पर उल्कापिंड का गिरना, ज्वालामुखी फटना या भूगर्भ में किसी अन्य कारण से हुए विस्फोट के चलते ये विशालकाय आकार के गड्ढे क्रेटर बन जाते हैं। इन्हें प्रहार क्रेटर, धंसाव क्रेटर, ज्वालामुखीय क्रेटर, बिल क्रेटर और विस्फोट क्रेटर जैसी श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। पूर्व वैज्ञानिक एवं प्रमुख रेडियो कार्बन डेटिंग लैब, बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान, लखनऊ, डॉ. सीएम नौटियाल का कहना है कि चंद्रयान 3 की सॉफ्ट लैंडिंग सफलतापूर्वक

Word Count: 3, Character Length: 4101 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22546

बूस्टर रॉकेट का इस्तेमाल यहां पर स्पीड को बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। यही कारण है कि इसे इसे उल्टी दिशा में फायर किया जाता है। इससे लैंडर की स्पीड कम होती चली जाती है। वह नीचे की तरफ तेजी से गिरना थम जाता है। लैंडिंग के समय दो तीन मीटर प्रति सेकंड की स्पीड रखी जाती है। इसरो ने चंद्रयान 3 मिशन के लिए हर तरह से सतर्कता बरती है। जितनी भी आशंकाएं हैं, उनकी काट निकाली गई हैं। हालांकि, इसके बावजूद कुछ अप्रत्याशित हो जाता है। इसके लिए प्लान बी तैयार किया गया है, लेकिन इसकी जरुरत पड़ेगी, यह संभावना कम ही नजर आती है। पिछली बार लैंडिंग के लिए आधे किलोमीटर का क्षेत्र तय किया गया था, इस बार 4 किमी 2.4 किमी का क्षेत्र लिया गया है। लैंडिंग की जगह ऐसी रहेगी, जहां पर रोवर के बाहर निकलते ही उसे एनर्जी मिलनी शुरु हो जाए। यानी उस पर सूरज की लाइट आने लगे। अगर क्रेटर में रोवर उतर गया है तो उसे दीवार पर चढ़ने में दिक्कत आ सकती है। उसके गिरने की संभावना बन सकती है। ऐसे में रोवर अधिक एनर्जी चाहिए। चंद्रमा पर उतरने वाला लैंडर जब उसकी सतह पर उतरेगा तो उसकी स्पीड करीब दो मीटर प्रति सेकेंड होगी। वैज्ञानिकों ने जो प्रोग्रामिंग और मॉनिटरिंग की है उसके मुताबिक चंद्रमा की सतह को छूने के लिए इससे ज्यादा की स्पीड बेहद चुनौतीपूर्ण हो सकती थी। यही नहीं जब लैंडर चंद्रमा की सतह पर उतर जाएगा तो उसमें से निकलने वाला रोवर भी कुछ सेंटीमीटर की गति के हिसाब से ही चलना शुरू करेगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि महज 14 दिनों तक चंद्रमा की सतह पर सक्रिय रूप से काम करने वाला रोवर महज पांच सौ मीटर ही चलकर चंद्रमा के राज खोल देगा। अमर उजाला

Word Count: 0, Character Length: 3703 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22550

यह स्पीड दो मीटर प्रति सेकंड की होती है लेकिन चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण इसकी प्रोग्रामिंग और प्रणाली ऐसी होती है कि यह सतह पर पहुंचते ही शून्य हो जाए। प्रोफेसर सहजपाल का कहना है कि जैसे-जैसे लैंडर चंद्रमा की सतह के नजदीक आता जाएगा उसकी गति सबसे महत्वपूर्ण होती जाएगी। क्योंकि चंद्रमा के जिस हिस्से पर लैंडर उतरने वाला है वहां की सतह सामान्य जैसी नहीं है। इसलिए अनुमानित गति उतरते करते वक्त 2 मीटर प्रति सेकंड की होगी। आखिरी के 13 मिनट होंगे महत्वपूर्ण वैज्ञानिकों का कहना है कि चंद्रमा की सतह पर लांच होने वाले लैंडर के आखिरी 13 मिनट सबसे महत्वपूर्ण होंगे। क्योंकि यही वक्त होगा जब लैंडर चंद्रमा की सतह के सबसे करीब पहुंचने वाला होगा और उसके अपने गुरुत्वाकर्षण के चलते उसकी गति को भी प्रभावित कर सकता है। हालांकि वैज्ञानिकों का कहना है कि चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण को ध्यान में रखकर ही लैंडिंग की पूरी योजना बनाई गई हैं। एक अनुमान के मुताबिक चंद्रमा की सतह से 30 किलोमीटर की ऊंचाई से लैंडिंग शुरू करने पर लैंडर की स्पीड तेज होगी। क्योंकि इसी तेज स्पीड के साथ चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण भी उसको अपनी ओर खींचेगा। वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रोफेसर संजीव सहजपाल कहते हैं कि इसी प्रक्रिया के दौरान चंद्रयान के सिस्टम से लैंडर के उतरने की विपरीत दिशा में रेट्रो फायर शुरू होगी। इस प्रक्रिया से चंद्रयान की गति चंद्रमा की सतह पर उतरते वक्त न सिर्फ कंट्रोल में रहेगी बल्कि अनुमानतः दो मीटर प्रति सेकंड होगी। और सतह को छूते वक्त करीब करीब शून्य रह जाएगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि लैंडर से निकलने वाला रोवर जब चंद्रमा की सतह पर उतरेगा तो वह अपनी सबसे धीमी गति से उसको छुएगा। वैज्ञानिकों के मुताबिक रोवर की स्पीड चंद्रमा की सतह पर 1 सेंटीमीटर प्रति सेकंड की रहने वाली है। क्योंकि चंद्रमा पर

Word Count: 1, Character Length: 4112 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22551

भारत में हमले या विस्फोट की धमकियों का सिलसिला चिंताजनक और विचारणीय है। हालांकि, अच्छी बात है कि यह मामला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भी संज्ञान में है और सरकार दोषियों पर शिकंजा कसती चली आ रही है। विशेष रूप से भारतीय विमान सेवाओं को निशाना बनाने की मिल रही धमकियों के बीच सुरक्षा एजेंसियां पूरी सतर्कता बरत रही हैं। सरकार फर्जी बम धमकी संदेशों और कॉल को गंभीरता से ले रही है, तो यह जरूरी भी है। ऐसी धमकियों में से अगर एक भी सही हो जाए, तो एक बड़ा झटका हो जाएगा। उन तमाम स्रोतों पर चौकसी बढ़ा देनी चाहिए, जहां से धमकियां आ रही हैं। इंटरनेट की दुनिया में निजी कंपनियों का वर्चस्व है, लेकिन सरकार की पहरेदारी कमजोर नहीं पड़नी चाहिए। मेटा, एक्स या किसी भी अन्य प्लेटफॉर्म के जरिये अगर धमकी मिल रही है, तो उसका गंभीरता से पीछा करना चाहिए। कई बार बहुत सामान्य किस्म के लोग भी किसी न किसी सनक के वशीभूत होकर धमकी देने पर उतर आते हैं और बाद में पुलिस का जब शिकंजा कसता है, तो गिड़गिड़ाने लगते हैं। ऐसे लोगों को भी आसानी से जाने नहीं देना चाहिए। ऐसी एक-एक धमकी कड़ी कार्रवाई की मांग करती है। सोशल मंचों को भी सलाह दी गई है कि इस तरह की धमकियों को लोगों के बीच प्रसारित होने से रोका जाए। इसलिए ऐसी धमकियों को तत्काल प्लेटफार्म से हटा लिया जाए। फर्जी धमकियों का लोगों के लिए कोई महत्व नहीं है, पर सुरक्षा एजेंसियों केलिए ये धमकियां मायने रखती हैं। केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को भी पूरी तरह सतर्क रहना चाहिए। धमकियों से निपटना और सतर्क रहना किसी एक विभाग की जिम्मेदारी नहीं है। बम की धमकियों के संदर्भ में विमानन कंपनियों के अधिकारियों को भी परस्पर सतत सहयोग के साथ काम करना चाहिए। ध्यान देने की बात

Word Count: 1, Character Length: 3933 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22552

पहली मई को जैसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के स्कूलों को बम की धमकी वाले ई-मेल मिले थे, ठीक उसी तरह अहमदाबाद के स्कूलों को भी ई-मेल मिले हैं। सप्ताह भर में यह दूसरी बार है, जब स्कूलों को निशाना बनाने की धमकी मिली है। पहले राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कम से कम स्कूल निशाने पर थे और सोमवार को अहमदाबाद के कम से कम स्कूलों को दहशत में लाने की साजिश हुई है। दिल्ली की तरह अहमदाबाद में भी पुलिस ने पूरी सतर्कता बरती और खतरे की किसी भी आशंका के समाधान के तमाम प्रबंध किए। अहमदाबाद में भय पैदा करने की यह साजिश तब सामने आई है, जब गुजरात में आज मतदान होने जा रहा है। क्या कोई ऐसा आतंकी संगठन है, जो भारत में चुनाव के समय किसी कारस्तानी को अंजाम देना चाहता है? यह विशेष रूप से ध्यान देने की बात है कि इस बार भारत में चुनाव बेहद शांतिपूर्ण माहौल में हो रहे हैं। ऐसे में, स्कूलों को निशाना बनाने की धमकी के निहितार्थ को समझना मुश्किल नहीं है। खैर, साइबर क्राइम, अहमदाबाद की पुलिस उपायुक्त ने प्राथमिक जांच के आधार पर जो इशारा किया है, उसके अनुसार, धमकी भरे ई-मेल रूस से आए हैं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के स्कूलों को भी रूस से ही धमकियां मिली थीं। मतलब, 1 मई और 6 मई को धमकी देने वाले आतंकी एक ही समूह के हो सकते हैं। अहमदाबाद के स्कूलों में तमाम तरह से सुरक्षा जांच कर ली गई है, पर आगामी दिनों में भी तमाम स्कूलों की सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध होने चाहिए। पता नहीं, किस देश में छिपकर कायर आतंकी अपराध को अंजाम दे रहे हैं? स्कूलों को निशाना बनाने के बारे में सोचने वाले हैवानों को जल्द से जल्द शिकंजे में लाना चाहिए। कथित डार्क वेब का हवाला दिया जा रहा है, जहां छिपे

Word Count: 3, Character Length: 3724 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-22-Test NO.-22553

विमान सेवाओं में शिकायतों का बढ़ना बहुत अफसोस और चिंता की बात है। विमान संबंधी एक शिकायत थमती नहीं कि दूसरी शिकायतों का अंबार लगने लगता है। सोमवार को कोच्चि से आ रहा विमान जब मुंबई में उतरा, तो रनवे से भटक गया और उसके तीन टायर फट गए। विमान का इंजन भी क्षतिग्रस्त हो गया। हालांकि, यह अच्छी बात रही कि यात्री और चालक दल पूरी तरह सुरक्षित रहे। फिर भी यह पड़ताल का विषय है कि विमान के टायर को कैसे बचाया जा सकता है? क्या यह दुर्घटना केवल बारिश या रनवे पर ज्यादा पानी की वजह से हुई? किसी विमान के उतरते समय रनवे से बाहर चले जाने के पीछे क्या कार्य-कारण हैं? ऐसे ही अनेक तरह के सवाल लोगों के मन में उमड़ रहे हैं। अहमदाबाद में हुए विमान हादसे को लोग भूल नहीं पा रहे हैं। अगर छोटे हादसों या दुर्घटनाओं का सिलसिला नहीं थमेगा, तो लोग हवाई सेवा की सुरक्षा के प्रति पूरे मन से आश्वस्त नहीं हो पाएंगे। यह ध्यान देने की बात है कि बीते मंगलवार से इस सोमवार तक करीब 20 दुर्घटनाएं या गड़बड़ियां हैं, जिन्हें उड्डयन के विशेषज्ञों ने दुनिया भर में दर्ज किया है। इंजन में आग लगना, केबिन में खराबी, पक्षी का टकराना, इंजन का बंद हो जाना, विमान का एक ओर गोते लगाकर संभलना, कॉकपिट में कोई खराबी, इत्यादि नाना प्रकार की शिकायतें बीते सप्ताह में ही सामने आई हैं। भारत में ही नहीं, अमेरिका व यूरोपीय देशों में भी विमानों में लगातार गड़बड़ियां दर्ज की जा रही हैं। ऐसा क्यों हो रहा है? क्या विमानों की गुणवत्ता घटी है? क्या विमानों के संचालन, रख-रखाव में कमी आई है? विमानन कंपनियों को पूरे विस्तार में अपनी सेवाओं की समीक्षा करनी चाहिए। भारत में शिकायतें केवल एअर इंडिया तक सीमित नहीं हैं। इसी 16 जुलाई को इंडिगो एयरबस

Word Count: 2, Character Length: 3821 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22558

स्वयं स्कूलों को अपने स्तर पर सुरक्षा के लिए चौकस रहना चाहिए। बच्चों को भयभीत करने के बजाय सतर्क रहना सिखाना चाहिए। एक सतर्क समाज ही अपनी मुकम्मल सुरक्षा सुनिश्चित रख पाता है। अगर धमकियां फर्जी हैं, तब भी ये बहुत गंभीर हैं। इनकी पूरी पड़ताल से ही आशंकाओं का समाधान किया जा सकता है। खुफिया अधिकारियों और सुरक्षा अधिकारियों के साथ ही साइबर विशेषज्ञों के लिए भी यह एक बड़ी चुनौती है। अगर विदेश में बैठकर कोई धमका रहा है और उसकी हरकतों को हम रोक न पाएं, तो इससे दूसरे अपराधियों का भी दुस्साहस बढ़ेगा। दूसरी ओर, हमारे स्कूलों को भी सुरक्षा की दृष्टि से सभी प्रबंध सीखने पड़ेंगे। स्कूल में सीढ़ियों, गलियारों, भवनों, कक्षाओं, पानी, बिजली की गुणवत्ता को परख लेना चाहिए। स्कूलों के संसाधन और सुरक्षा पर सरकारों को भी निवेश बढ़ाने की जरूरत है। प्राथमिक रूप से यह स्कूलों की जिम्मेदारी है कि वे अपने छात्रों की सुरक्षा से कोई समझौता न करें। कर्नाटक में भाजपा ने यह सोचकर जनता दल सेक्युलर के साथ गठबंधन किया था कि इससे उसे लाभ मिलेगा, पर अब उसे यहां अपने ही बल से पूरा जोर लगाना पड़ रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने दक्षिण भारत में चुनावी लाभ का जो सपना देखा था, वह कर्नाटक के बदले घटनाक्रम से जैसे घिरता हुआ दिख रहा है। पिछली बार प्रदेश की 28 में से 25 सीटें जीतने वाली भाजपा को इस बार बड़ी जीत के लिए ज्यादा जोर लगाना पड़ रहा है। सबकी जुबान पर सवाल है कि क्या पेन-ड्राइव सेक्स स्कैंडल और लिंगायत समाज उत्तरी कर्नाटक में भगवा दल का पारंपरिक वोट बैंक में उत्साह की कमी से भाजपा की संभावनाओं पर असर पड़ सकता है? दरअसल, जनता दल सेक्युलर के संरक्षक एचडी देवेगौड़ा के पोते प्रज्वल रेवन्ना का सेक्स स्कैंडल एक अप्रत्याशित झटके की तरह पार्टी के सामने

Word Count: 1, Character Length: 3958 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22559

रेवन्ना परिवार की घरेलू सहायिका थी और कहा जाता है कि परिवार का राज न खुले, इसलिए उसे एक फॉर्म हाउस में बंधक बनाकर रखा गया था। साफ है, अपने दादा की पारंपरिक लोकसभा सीट हासन से एक और कार्यकाल की उम्मीदें पालने वाले प्रज्वल रेवन्ना ने अपने कारनामे से पूरे परिवार को बेतहाशा दुख और शर्मिंदगी में डुबो दिया है। उल्लेखनीय है, पूर्व प्रधानमंत्री देवेगौड़ा ने अपनी बढ़ती उम्र (वह 90 साल से अधिक आयु के हैं) की परवाह किए बिना जोरदार प्रचार किया था और मतदाताओं से अपने पोते को एक और मौका देने की भावनात्मक अपील की थी। दूसरे चरण के चुनाव-प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी प्रज्वल और एचडी देवेगौड़ा के साथ मंच साझा किया था। हालांकि, जब यह स्कैंडल सामने आया, तब तक कर्नाटक में पहले चरण की 14 सीटों के लिए चुनाव हो चुके थे, लेकिन इसका असर शेष 14 निर्वाचन क्षेत्रों पर पड़ने की आशंका है, जो कर्नाटक के उत्तरी हिस्से की सीटें हैं। पहले चरण का मतदान राज्य के दक्षिणी हिस्से में हुआ था, जहां वोक्कालिगा समुदाय प्रभावी है और देवेगौड़ा का पारंपरिक वोटर है। कर्नाटक में भाजपा ने यह सोचकर जनता दल (सेक्युलर) के साथ गठबंधन किया था कि इससे उसे लाभ मिलेगा। मगर रिपोर्टों के मुताबिक, वोक्कालिगा समुदाय के ही डीके शिवकुमार (उप-मुख्यमंत्री) की मदद से कांग्रेस यहां भाजपा को टक्कर दे रही है। इसीलिए माना जा रहा है कि इस बार 2019 की तरह भाजपा को आसानी से शायद ही सफलता मिल सकेगी। विधानसभा चुनाव में अप्रत्याशित जीत हासिल करने वाली कांग्रेस ने भाजपा पर दबाव बनाए रखा है। उसने अपने जमीनी कार्यकर्ताओं में एक नई जान फूंक दी है और अपने सभी विधायकों-मंत्रियों अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में वोट हासिल करने का लक्ष्य दे दिया है। एनडीए नेताओं ने यह कहकर मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास

Word Count: 4, Character Length: 4048 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22560

वह कड़ा विरोध करते रहे। देवराज के मुताबिक, उन्होंने इस वीडियो की जानकारी भाजपा के राज्यस्तरीय नेताओं के साथ-साथ कई केंद्रीय मंत्रियों को भी दी थी। जाहिर है, इससे कांग्रेस को प्रधानमंत्री व गृह मंत्री को घेरने का पूरा मौका मिल गया है कि उन्होंने समय पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की? इस मामले के जल्द समापन की संभावना नहीं दिखती, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि कई अन्य नेता भी इसमें शामिल हैं। जनता दल (सेक्युलर) मानो धराशायी होने जा रहा है, क्योंकि हालिया विधानसभा चुनाव में हार के बाद अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के आखिरी प्रयास के तहत इसने भाजपा से चुनावी गठबंधन किया था। देवेगौड़ा के छोटे बेटे और पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी ने, जो पार्टी का नेतृत्व भी कर रहे हैं, प्रज्वल को पार्टी से निलंबित कर दिया है। अब देखना यह है कि उनके पिता व कुमारस्वामी के बड़े भाई एचडी रेवन्ना पर कोई गाज गिरती है या नहीं? ऐसा इसलिए भी, क्योंकि देवेगौड़ा की सियासी विरासत को लेकर परिवार में मतभेद रहे हैं। इस बीच, लिंगायतों के प्रभुत्व वाले उत्तर कर्नाटक में भाजपा को अपनी सीटें बरकरार रखने की उम्मीद है, क्योंकि 2019 के चुनाव में उसे अभूतपूर्व समर्थन मिला था। मगर ऐसा लगता है कि लिंगायत नेता संघ की बातों को मानने को तैयार नहीं दिखते। इनमें बीएस येदियुरप्पा भी शामिल हैं। वे एक स्वतंत्र समुदाय होने पर गर्व महसूस करते हैं। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने भी इस समुदाय के साथ अपने संबंध बढ़ाए हैं। लिंगायतों के एक बड़े उप-संप्रदाय पंचमसाली का भी एक हिस्सा एनडीए से नाराज बताया जा रहा है। दरअसल, इस समुदाय के भीतर आरक्षण की मांग को हवा देकर इन्हें बांटने का कोशिश हुई थी। इन सबने कर्नाटक में भाजपा की आसान राह मुश्किल बना दी है। इसी कारण यह माना जा रहा है कि पार्टी के लिए 2019 के

Word Count: 2, Character Length: 4022 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22564

टकरा कर खेतों में जा गिरी है। घटना का पता लगते ही स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और युवकों को गाड़ी से बाहर निकाला। हादसे में राजन जसवाल व अमल निवासी सलोह हरोली जिला ऊना की मौके पर ही मौत हो गई थी जबकि हादसे में कार चालक विशाल चौधरी निवासी मजारा, सिमरन जीत सिंह निवासी हाजीपुर तहसील नंगल व अनूप सिंह निवासी झलेड़ा को उपचार के लिए क्षेत्रीय अस्पताल ऊना ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने उन्हें उपचार के दौरान मृत घोषित कर दिया है। मृतकों की पहचान राजन जसवाल पुत्र कुलदीप जसवाल और अमल पुत्र नंद लाल निवासी सलोह, विशाल चौधरी उर्फ अमनदीप पुत्र बलदेव सिंह निवासी मजारा, सिमरन जीत सिंह पुत्र दर्शन सिंह निवासी हाजीपुर तहसील नंगल जिला रुपनगर पंजाब व अनूप सिंह पुत्र जनक राज निवासी झलेड़ा के रूप में हुई है। डीएसपी मुख्यालय अंकित शर्मा ने बताया कि मामले में हादसे के कारणों का पता लगाया जा रहा है पापुआ न्यू गिनी में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए हैं। रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 7.7 मापी गई है। भूकंप आने के बाद आसपास के इलाकों में हड़कंप मच गया है। लोग आनन-फानन में घर के बाहर निकल गए। वहीं अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण से सुनामी की चेतावनी भी जारी की गई है। जिस तरह से भूकंप की तीव्रता थी उससे भारी नुकसान की आशंका भी जताई जा रही है। बता दें, पापुआ न्यू गिनी, इंडोनेशिया के पास प्रशांत महासागर क्षेत्र का एक देश है जो कि भूकंप के मद्देनजर बेहद संवेदनशील है। भूकंप का केंद्र राजधानी पोर्ट मार्सबे से करीब 60 किलोमीटर दूर लाई में था जानें क्यों आता है भूकंप धरती मुख्य तौर पर चार परतों से बनी होती हैं। इनर कोर, आउटर कोर, मैनटल और क्रस्ट। क्रस्ट और ऊपरी मैन्टल कोर को लिथोस्फेयर कहते हैं। ये 50 किलोमीटर की मोटी परत कई

Word Count: 1, Character Length: 3890 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22565

झटका तेज होता है। फिल्म अभिनेता और निर्देशक राजू खेर आज अपना 65वां जन्मदिन मना रहे हैं। बता दें कि राजू खेर मशहूर अभिनेता अनुपम खेर के छोटे भाई हैं। राजू खेर ने फिल्मों में कई शानदार सपोर्टिंग किरदार निभाए हैं। फिल्मों के अलावा राजू खेर छोटे पर्दे का भी जाना-पहचाना नाम रहे हैं। उन्होंने कई टीवी सीरियल्स में अहम रोल निभाए हैं। इसके अलावा उन्होंने वर्ष 1999 में चर्चित टीवी शो 'संस्कार' का निर्देशन भी बखूबी किया। आइए जानते हैं राजू खेर के बारे में एलिजाबेथ द्वितीय के निधन के साथ भारत में कोहिनूर को लेकर उत्सुकता बढ़ गई है। सोशल मीडिया पर लोगों ने इसे भारत को लौटाने की मांग शुरू कर दी है। लेकिन कोहिनूर ही इकलौता बेशकीमती नगीना नहीं है, जिसे अंग्रेज अपने साथ ले गए। आइये जानते हैं और क्या-क्या लेकर गए अंग्रेज टीपू सुल्तान की अंगूठी अंग्रेजों ने 1799 की जंग में शहीद हुए टीपू सुल्तान के शव से यह अंगूठी चुराई। माना जाता है कि इसे ब्रिटेन में एक नीलामी में अज्ञात खरीदार को 1.45 लाख ब्रिटिश पाउंड (आज करीब 134 करोड़ रुपये) में बेच दिया गया ग्रेट स्टार ऑफ अफ्रीका डायमंड विश्व के सबसे बड़े और 530 कैरेट वजनी हीरे की कीमत 3,200 करोड़ रुपये आंकी जाती है। 1905 में दक्षिण अफ्रीकी खदान मिला। इसे एडवर्ड सप्तम को तोहफे में देने का दावा है लेकिन कई इतिहासकारों के मुताबिक, ब्रिटिश सरकार चुराकर या लूट कर इसे ले गई। ग्रेट स्टार ऑफ अफ्रीका रानी के राजदंड में जड़ा है। 2218 साल पुराना रोसेटा स्टोन मिस्र के पुरातत्ववेत्ता और कार्यकर्ता चाहते हैं कि उनका रोसेटा स्टोन ब्रिटेन लौटाए। यह ब्रिटिश म्यूजियम में रखा है। कहते हैं कि इसे भी अंग्रेजों ने लूटा था। यह 196 ईसापूर्व यानी करीब 2218 साल पुराना माना जाता है। 18वीं शताब्दी में फ्रांस से एक युद्ध जीतने के बाद

Word Count: 4, Character Length: 3955 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22566

रूप से स्कूल में प्रवेश और यात्रा के लिए उपयोगी होता है। इसके अलावा, प्लेटफॉर्म आगामी टीकाकरण की खुराकों के लिए एसएमएस द्वारा सूचना भेजता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि अभिभावक और स्वास्थ्य परिचर्याकर्मी खुराकों के बीच निर्धारित न्यूनतम अंतराल का पालन करें। यू-विन एक इंटीग्रेटर के रूप में कार्य करता है, जो माता-पिता/अभिभावकों, डॉक्टरों, स्वास्थ्य परिचर्याकर्मियों और व्यापक स्वास्थ्य परिचर्या प्रणाली को एक मंच पर लाता है। यू-विन के माध्यम से पूरे देश में टीकाकरण की प्रगति व कवरेज की प्रभावी निगरानी आसानी से की जा सकती है। यू-विन के लाभार्थियों द्वारा आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (आभा) और शिशु आभा आईडी बनाई जा सकती है। इससे रोगी की पूर्व सहमति से उसकी चिकित्सकीय जानकारी चिकित्सा पेशेवरों को उपलब्ध हो सकती है। इससे चिकित्सा पेशेवरों द्वारा एक ही नजर में रोगी के पूर्व-चिकित्सा विवरण को समझकर उसके इलाज के परिणामों में सुधार लाया जा सकता है। पिछले 10 वर्षों में भारत ने स्वास्थ्य देखभाल व इलाज में क्रांति लाने के लिए देश में ही विकसित स्वास्थ्य प्रणालियों पर भरोसा किया है। वर्ष 2014 में शुरू किए गए इलेक्ट्रॉनिक वैक्सीन इंटेलिजेंस नेटवर्क (ई-विन) ने टीकों को प्राप्त करने, संग्रहीत करने और अंतिम छोर तक वितरित करने के तरीके को बदल दिया है। कोविड-19 महामारी के दौरान, दुनिया ने भारत के कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम हेतु आधारभूत प्रौद्योगिकी को-विन की सफलता देखी, जिसने 18 महीने से भी कम समय में कोविड टीकाकरण की 220 करोड़ खुराकें लगाने में मदद की। अब यू-विन से टीकाकरण सेवाओं का समस्त परिदृश्य परिवर्तन के लिए तैयार है। भारत जैसे-जैसे एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपने शताब्दी-वर्ष की ओर अग्रसर है, सुदृढ़ टीकाकरण कार्यक्रमों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता सिर्फ एक स्वास्थ्य पहल नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक आधारभूत निवेश है। उन्नत डिजिटल अव

Word Count: 12, Character Length: 4286 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-23-Test NO.-22567

जुड़े लोग पूरी तरह से सजग रहें, विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाने के लिए तैयार रहें, इसी में सबका हित है। आज लोगों के बीच आम चर्चा से लेकर संसद तक विमान हादसे की गूंज है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय को संसद में यह बताना पड़ा है कि विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो पूरी तरह से निष्पक्ष है। मतलब साफ है, लोगों के मन में सवाल हैं, उन्हें लग रहा है कि पूरा सच सामने नहीं आएगा। अगर वायु सेना के विमानों की बात करें, तो इसी महीने चुरु, राजस्थान में एक जगुआर यान गिरा, जिसमें दो पायलट की मौत हो गई। इस साल यह तीसरा जगुआर हादसा था। वैसे इस वर्ष भारतीय वायुसेना पांच विमान गंवा चुकी है। साल 2020 के बाद भारत अपने 42 यान गंवा चुका है। गौर कीजिए, युद्धकाल की तुलना में शांतिकाल में हमें ज्यादा नुकसान हुआ है। लोग भूले नहीं हैं, पहले के समय में मिग 21 को उड़ता ताबूत कहते थे, अब जगुआर को लेकर भी यही चर्चा होने लगी है। अत: सबसे पहले हमारी वायुसेना को सुरक्षित उड़ान सुनिश्चित करते हुए समग्र भारतीय विमानन क्षेत्र को प्रेरित करना होगा राजनीति में जो घटनाएं सामने दिखती हैं, हूबहू वे वैसी होती नहीं हैं। उप-राष्ट्रपति पद से अपने इस्तीफे में जगदीप धनखड़ ने स्पष्ट लिखा है कि स्वास्थ्य कारणों से वह पद छोड़ रहे हैं, मगर जिस तरह अचानक उन्होंने यह कदम उठाया है, उसने स्वाभाविक ही अटकलों और सियासी कयासबाजियों को जन्म दिया है। गौरतलब है, मार्च में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में एंजियोप्लास्टी कराने के बाद ठीक होकर धनखड़ पूरी तरह से सक्रिय हो चुके थे। देश के कई हिस्सों में उन्होंने सरकारी कार्यक्रमों में हिस्सा भी लिया था। फिर सोमवार को जिस तरह दिन भर उन्होंने सदन की कार्यवाही और दीगर संसदीय कर्तव्यों का निर्वाह किया, उसके बाद इतने बड़े फैसले के

Word Count: 1, Character Length: 3945 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22572

जिसमें शामिल कुछ ताज और गहने टावर ऑफ लंदन में प्रदर्शित हैं। वहीं, उनके निजी संग्रह में भी करीब 50 बेशकीमती निजी मुकुट भी शामिल हैं। गहनों के शाही संग्रह को मोटे तौर पर दो हिस्सों में बांटा गया है। इनमें से वह गहने हैं, जो सम्राट पद पर रहते अपने ट्रस्ट में रखता है। दूसरा, महारानी के निजी गहने, जो उन्हें विरासत में व परिवार से मिले या उन्होंने खुद खरीदे। सैद्धांतिक रूप से एलिजाबेथ द्वितीय अपना निजी संग्रह किसी को दे सकती हैं। लेकिन राजा चार्ल्स तृतीय की पत्नी कैमिला पार्कर बाउल्स अब क्वीन कंसोर्ट होंगी तो इस नाते यह उनके हिस्से आ सकता है। वहीं, शाही परिवार की बहू केट मिडलटन को भी निजी मुकुट मिल सकते हैं। जहां तक कोहिनूर हीरे से सजे ताज की बात है तो यह क्वीन कंसोर्ट को ही मिलने की संभावना है। दस लाख से ज्यादा कीमती वस्तुएं न्यूयॉर्क पोस्ट के मुताबिक, द रॉयल कलेक्शन में ब्रिटिश राजघराने की ढेरों कलाकृतियां व महारानी के बेशकीमती गहने भी हैं। इस संग्रह में दस लाख से भी ज्यादा वस्तुएं हैं। भारत-चीन बॉर्डर पर गश्त के दौरान अब दोनों राष्ट्रों के जवानों के बीच कंधे-कोहनी टकराने की नौबत नहीं आती। 80 शब्दों के जरिए आईटीबीपी, ड्रैगन की फौज को अच्छे से समझा देती है। चीन के सैनिकों को उन्हीं की भाषा मंदारिन में जवाब मिल जाता है। आईटीबीपी ने अपने जवानों से लेकर शीर्ष अफसरों तक, सभी के लिए चीनी भाषा यानी मंदारिन सीखना अनिवार्य कर दिया है। मंदारिन बोलने व लिखने के मामले में चीन की यह भाषा, दुनिया की सबसे ज्यादा मुश्किल भाषा में शामिल है। इसके बावजूद आईटीबीपी ने अथक मेहनत व सार्थक प्रयासों के बलबूते 'मंदारिन' पर अपनी पकड़ बनाने में सफलता हासिल की है। उस वक्त तकरार, टकराव में बदल जाता था पहले एलएसी पर तैनात, दोनों देशों के

Word Count: 4, Character Length: 3951 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22573

किसी दूसरे इशारे से उन्हें 'नहीं' में जवाब दे देते थे। चीन के सैनिक जोर-जोर से चिल्लाने लगते। आईटीबीपी, उन्हें समझाने का प्रयास करती। उस वक्त देखा गया कि चीन की भाषा को ठीक से न समझ पाने के कारण विवाद बढ़ जाता है। सामान्य बोलचाल के '80' शब्दों का कमाल सूत्रों के मुताबिक, दोनों देशों के जवानों के बीच सही तरीके से संवाद हो और किसी बात पर उलझन या भ्रांति न रहे, आईटीबीपी ने इसके लिए अपने जवानों को चीन की भाषा यानी 'मंदारिन' सिखाना शुरू कर दिया। हालांकि बल में यह प्रयास करीब दो दशक से चल रहा था, लेकिन तब सभी के लिए 'मंदारिन' बोलना सीखना अनिवार्य नहीं था। आईटीबीपी में 2018 के बाद मंदारिन भाषा को बल के सभी ट्रेनिंग सेंटरों पर सिखाया जाने लगा। अगर नियमित कोर्स की बात करें तो इस भाषा को सीखने में दो-तीन वर्ष लग जाते हैं। आईटीबीपी ने इसका तोड़ भी निकाल लिया। बॉर्डर पर पेट्रोलिंग के दौरान दोनों देशों के जवानों के बीच जब कहासुनी होती है तो उसमें बहुत सामान्य सा विषय होता है। जैसे, आप हमारी सीमा में घुस आए हो। यहां से बाहर चले जाएं। ये सीमा हमारी है। ये इलाका तुम्हारा नहीं है। नमस्कार, आप ठीक हैं, तेज हवा चल रही है, अपने कमांडर से बात कराओ, बेवजह विवाद मत बढ़ाओ, दोनों देश मित्र हैं, सीमा पर विवाद ठीक नहीं है। संयम से काम लें। धक्कामुक्की की जगह बातचीत का व्यवहार रखें। इस तरह के करीब 80 शब्द पेट्रोलिंग पर गए हर जवान को सिखा दिए गए। इसका सार्थक नतीजा भी देखने को मिला। आईटीबीपी की बेसिक ट्रेनिंग में शामिल हुई मंदारिन आईटीबीपी ने अब चीन की भाषा 'मंदारिन' को अपने बेसिक कोर्स में शामिल कर लिया है। बल के पास लगभग पौने दो सौ मास्टर ट्रेनर हैं। इन्होंने जेएनयू, विदेशी भाषा संस्थान, तेजपुर

Word Count: 12, Character Length: 3809 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22574

सुप्रीम कोर्ट 220 जनहित याचिकाओं पर सोमवार को सुनवाई कर सकता है। इनमें नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) की वैधानिकता के खिलाफ दायर याचिकाएं भी शामिल हैं। करीब दो वर्ष से लंबित इन याचिकाओं पर चीफ जस्टिस यूयू ललित और एस रवींद्र भट की पीठ सुनवाई करेगी। सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट के अनुसार 220 याचिकाएं इस पीठ के सामने सूचीबद्ध की गई हैं। शीर्ष अदालत ने 18 दिसंबर, 2019 को हुई सुनवाई में सीएए पर रोक से इनकार किया था, हालांकि केंद्र को नोटिस जारी कर जनवरी, 2020 के दूसरे सप्ताह तक अपना पक्ष रखने को कहा था। फिर कोविड महामारी में सुनवाई नहीं हो पाई। उल्लेखनीय है कि सीएए के तहत पड़ोसी देशों पाकिस्तान, अफगानिस्तान व बांग्लादेश से 31 दिसंबर, 2014 या उससे पहले भारत आए गैर मुस्लिमों जैसे हिंदू, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन और पारसी को भारत की नागरिकता दी जा सकती है। याचिकाओं में क्या है इंडियन मुस्लिम लीग की याचिका में सीएए को समानता के मूल अधिकार का उल्लंघन बता आपत्ति जताई गई है। यह गैरकानूनी प्रवासियों को नागरिकता देते समय धर्म के आधार पर भेद करता है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सीएए को मूल अधिकारों पर हमला कहा है। याचिका के अनुसार, यह कानून धर्म व भौगोलिक परिस्थितियों के दो वर्ग बनाता है। राजद नेता मनोज झा, तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा भी सीएए की सांविधानिकता को चुनौती दी है। वी द वीमन ऑफ इंडिया की एक अन्य याचिका घरेलू हिंसा पीड़िताओं के मामले में दायर है। कहा है कि कानून बने 15 साल हो गए, पर पीड़िताओं को प्रभावी कानूनी मदद नहीं मिल पाती। श्रीलंका की टीम छठी बार एशिया कप चैंपियन बन गई है। फाइनल में श्रीलंकाई टीम ने पाकिस्तान को 23 रन से हरा दिया। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला लिया। श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते

Word Count: 0, Character Length: 3963 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22578

अपने नाम किया है। भारत ने सबसे ज्यादा सात बार यह खिताब जीता है। श्रीलंका अब उससे बस एक खिताब दूर है। यह अप्रैल 2014 के बाद पहली बार है जब श्रीलंका ने लगातार पांच टी 20 जीते हैं। इससे पहले टीम ने बांग्लादेश में 2014 में खेले गए टी 20 वर्ल्ड कप में लगातार पांच टी 20 मैच जीते थे। इसी के साथ श्रीलंका ने दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में पिछले 31 टी 20 का सबसे कम टोटल डिफेंड किया है। इससे पहले दुबई में पिछले 31 टी 20 मैचों में सबसे कम स्कोर जो डिफेंड किया गया था, वह था 172 रन। 2021 टी 20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड ने स्कॉटलैंड के खिलाफ 172 रन को डिफेंड किया था। अब एशिया कप के फाइनल में श्रीलंका ने पाकिस्तान के खिलाफ 170 रन को डिफेंड किया। भानुका राजपक्षा को उनकी पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। नवाज नौ गेंदों में छह रन बना सके। उन्हें चमिका करुणारत्ने ने आउट किया। इस बीच रिजवान ने टी 20 अंतरराष्ट्रीय करियर का 16वां अर्धशतक लगाया। इसके बाद 17वां ओवर हसरंगा डालने आए और उन्होंने मैच को पूरी तरह श्रीलंका के पक्ष में घूमा दिया। 17वें ओवर की पहली गेंद पर हसरंगा ने रिजवान को गुणातिलाका के हाथों कैच कराया। इसके बाद तीसरी गेंद पर आसिफ अली को क्लीन बोल्ड किया। पांचवीं गेंद पर हसरंगा ने खुशदिल शाह को तीक्ष्णा के हाथों कैच कराया। इसके बाद पाकिस्तान की टीम वापसी नहीं कर सकी। आखिर में श्रीलंकाई गेंदबाजों ने शादाब खान (8), हारिस रऊफ और नसीम शाह को पवेलियन भेज पाकिस्तान की पारी को 147 रन पर समेट दिया। श्रीलंका की ओर से मदुशन ने चार और हसरंगा ने तीन विकेट झटके। वहीं, करुणारत्ने को दो विकेट मिले। तीक्ष्णा ने एक विकेट लिया। जैसे ही अल्कारेज ने मैच अपने नाम किया वो

Word Count: 0, Character Length: 3689 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22579

साथ ही, वह कबीर आदि संतों की वाणी से भी अपनी कविता का प्राण तत्व ले रहे थे। गीतांजलि की एक प्रसिद्ध कविता है, भारत तीर्थ। यह कविता टैगोर के भारत का एक सुंदर रूपक है। इसमें टैगोर अपने चित्त को इस भारत के महामानव के सागर-तट पर धीरे-धीरे जगो का संदेश देते हैं। जैसे सागर में असंख्य नदियां विलीन हो जाती हैं, वैसे ही भारत के महामानव के सागर तट पर कितने लोगों की दुर्वार मानव धाराएं कहां-कहां से आकर विलीन हो गई हैं। टैगोर के लिए भारत की धरती इसलिए पवित्र है कि इसमें असंख्य मानवों को समाहित कर लेने की उदारता है। वह बार-बार भारत को महामानव का सागर तट कहते हैं। वह अपने चित्त के साथ-साथ भारत के चित्त को जगा रहे हैं। वह एक-एक व्यक्ति को पुकारते हैं, ताकि भारत के महामानव सागर तट पर मंगल घट भरा जा सके। जब सब साथ आएंगे, तभी मंगल घट भरेगा। यहां आने के लिए मान और अपमान से ऊपर उठकर आना होगा। हिंदू और मुसलमान, ब्राह्मण और पतित सबको मान-अपमान से विरत होकर आना होगा। भारत तीर्थ का मंगल कलश इसी से भरेगा। उनकी भारतीयता अस्मिता का विसर्जन करना सिखाती है, इसे हम गोरा गोरा उपन्यास के नायक के बदलाव में देख सकते हैं। पूरे उपन्यास में अपनी कट्टर धार्मिक पहचान को लेकर उद्यत रहने वाले गोरा को उपन्यास के अंत में एहसास होता है कि कल्पना में गढ़े हुए भारतवर्ष की साधना का कोई अर्थ नहीं है । वह पाता है कि संपूर्ण भारतवर्ष की अच्छाई-बुराई, सुख-दुख, ज्ञान-अज्ञान पूरी तरह मेरे हृदय के निकट आ पहुंचे हैं। मैं आज सचमुच का सेवा का अधिकारी हुआ हूं। मेरे समक्ष वास्तविक कर्म-क्षेत्र आ गया है, वह मेरे मन के भीतर का क्षेत्र नहीं है, वह इन्हीं, बाहर के 25 करोड़ भारत की पूरी आबादी लोगों का यथार्थ कल्याण-क्षेत्र

Word Count: 12, Character Length: 3802 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22580

वह कह उठता है, मैं आज भारतवर्षीय हूं। मेरे भीतर हिंदू, मुसलमान, ईसाई किसी समाज का कोई विरोध नहीं है। आज इस भारतवर्ष के सभी की जात, मेरी जात है, सभी का अन्न, मेरा अन्न है। रवींद्रनाथ टैगोर केवल एक नाम नहीं, बल्कि उदात्त भारतीयता के संवाहक हैं। चुनौती यह है कि क्या हमारे भीतर आज की जीवन भाषा में टैगोर की उदात्त भारतीयता को उतारने की क्षमता है? मुझसे पूछा गया है कि हम सब जी तो रहे हैं, लेकिन हमें यह नहीं पता कि हम जी क्यों रहे हैं? हममें से अधिकांश व्यक्तियों को ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन का कोई अर्थ नहीं है। क्या आप हमें बता सकते हैं कि हमारे जीने का क्या अर्थ है, क्या उद्देश्य है? इसके लिए हमें पहले यह जानना होगा कि जीवन से हमारा अभिप्राय क्या है? क्या जीवन का कोई अर्थ, कोई उद्देश्य है? क्या जीवन अपने आप में ही अपना अभिप्राय, अपना उद्देश्य नहीं है? हम उससे और अधिक क्यों चाहते हैं? क्योंकि हम अपने जीवन से असंतुष्ट हैं; हमारा जीवन इतना खोखला, इतना नीरस है कि अब हमें कुछ और भी चाहिए; जो हम कर रहे हैं, उसके परे कुछ और। निस्संदेह, जो समृद्ध जीवन जी रहा है, वह चीजों को ठीक वैसा देख रहा है, जैसी वे हैं और जो कुछ उसके पास है, उससे संतुष्ट है। वह भ्रम में, किसी उलझन में नहीं है। वह स्पष्ट है, इसलिए वह नहीं पूछता कि जीवन का उद्देश्य क्या है? उसके लिए जीना ही आरंभ है और अंत भी! हमारी कठिनाई यह है कि चूंकि हमारा जीवन खोखला है, इसलिए हम उसका कोई उद्देश्य ढूंढ़कर उसके पीछे दौड़ते रहना चाहते हैं। जीवन का ऐसा उद्देश्य वास्तविकता से रहित, केवल बौद्धिक व्यायाम हो सकता है; जब जीवन के उद्देश्य का अनुशीलन एक रीते हृदय द्वारा किया जाएगा, तो वह

Word Count: 0, Character Length: 3666 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-24-Test NO.-22581

मानसून सत्र के ठीक पहले दिन उनके अचानक इस्तीफे से सरकार के लिए भी असहज स्थितियां पैदा हुई हैं। बहरहाल, अब जब उन्होंने पद त्याग दिया है, तो संसदीय कार्यवाही के संचालन में भले कोई दिक्कत न आए, मगर विपक्ष के हाथों में सत्ता पक्ष को घेरने का एक बड़ा अवसर जरूर आ गया है। दोनों सदनों की बैठकों को हंगामे के कारण बुधवार तक के लिए स्थगित किए जाने से इस बात की तस्दीक होती है। सांविधानिक प्रावधानों के मुताबिक, नए उप-राष्ट्रपति का चुनाव साठ दिनों के भीतर हो जाना चाहिए। सत्तारूढ़ एनडीए के पास इतना संख्या बल है कि वह आसानी से इस पद पर अपने उम्मीदवार को जीत दिला सके। पर चूंकि लोकसभा और राज्यसभा में भाजपा अपने तईं बहुमत में नहीं है, इसलिए एक-एक वोट उसके लिए महत्वपूर्ण है। किसी मनपसंद व्यक्ति को उप-राष्ट्रपति बनाने के लिए पार्टी को नए सिरे से मगजमारी करनी पड़ेगी। खासकर तब, जब बिहार विधानसभा का चुनाव सिर पर आ गया है, और इस प्रांत में गठबंधन के सहयोगियों के हाथों में भाजपा से राजनीतिक मोल-तोल का एक मौका आ गया है। इन दिनों वहां सीटों के तालमेल की बातचीत भी चल रही है और गठबंधन के साथी दल ज्यादा से ज्यादा सीटें हासिल करना चाहते हैं। धनखड़ का उप-राष्ट्रपति का कार्यकाल जिस तरह खत्म हुआ है, वह सुखद तो नहीं ही है, उनके साथ इस पद के हवाले से संसदीय इतिहास की कुछ कटु स्मृतियां भी जुड़ गई हैं। न सिर्फ राज्यसभा से सबसे अधिक सदस्यों को निलंबित करने का रिकॉर्ड उनके नाम दर्ज हो चुका है, बल्कि अपने बड़बोलेपन से उन्होंने एकाधिक बार सार्वजनिक विवादों को भी जन्म दिया। राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति के पद पर आसीन व्यक्तियों के प्रति देश में एक खास सम्मान का भाव रहा है। उप-राष्ट्रपति के पद पर बैठने वाले व्यक्ति से यह अपेक्षा अंतर्विरोध

Word Count: 7, Character Length: 3922 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22586

कम उम्र के नागरिकों के टीकाकरण को प्राथमिकता देकर भारत न केवल रोकथाम योग्य बीमारियों से लड़ रहा है, बल्कि एक स्वस्थ और आर्थिक रूप से सक्षम आबादी को भी बढ़ावा दे रहा है। ये प्रयास एक ऐसे भविष्य का निर्माण करने के दृढ़ संकल्प को दर्शाते हैं, जहां कोई भी बच्चा जीवन रक्षक टीके से वंचित न रहे, चाहे वह जम्मू-कश्मीर के बर्फीले क्षेत्रों का हो, कच्छ के रेगिस्तान का हो, अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर बसे गांव का हो या अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के नीले पानी से घिरे गांवों का हो। उत्तर प्रदेश में बहराइच जिले के महराजगंज कस्बे में 13 और 14 अक्तूबर को जो कुछ हुआ, उस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जिस तरह की लापरवाही दिखी, उसमें तो दंगा होना ही था। बहराइच या उस जैसे तमाम छोटे बड़े भारतीय कस्बे इस तरह के दंगों का जैसे इंतजार ही करते रहते हैं और छोटी-सी चिंगारी उन्हें हिंसा के किसी नए दौर में झोंकने के लिए पर्याप्त होती है। यदि हम मीडिया से छन-छनकर आने वाली खबरों का बारीकी से विश्लेषण करें, तो हम चकित हो सकते हैं कि इस घटना में भी असंख्य बार दोहराई जाने वाली गलतियों और भ्रम का वही संजाल मौजूद है, जिसके चलते यह या इस जैसे तमाम कस्बे घृणा और सांप्रदायिक हिंसा के पहले भी शिकार होते रहे हैं। घटनाक्रम के मुताबिक, समूचा विवाद प्रतिमा विसर्जन के दौरान डीजे पर भड़काऊ गाना बजाने को लेकर शुरू हुआ, जिस पर मुस्लिम पक्ष ने आपत्ति जताई थी। जिला मुख्यालय से दूरी की वजह से जिले के वरिष्ठतम अधिकारियों का ध्यान भी इस जुलूस पर कम रहा होगा और हिंसा होने पर अतिरिक्त बल भी देर से पहुंचे होंगे। हिंसा की शुरुआत तब हुई, जब प्रतिमा विसर्जन के दौरान 13 अक्तूबर को एक युवक की हत्या कर दी गई। पुलिस के

Word Count: 4, Character Length: 3798 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22587

तो निश्चय ही वह ईश्वर नहीं है। जीवन को जीने में ही यथार्थ को समझा जा सकता है, पलायन करके नहीं। जब आप जीवन का कोई उद्देश्य तलाशते हैं, तब वस्तुत आप पलायन कर रहे होते हैं, जीवन क्या है, इसे नहीं समझ रहे होते। जीवन पारस्परिकता है, संबंध है, संबंधों के बीच हो रहा कर्म है; जब हम संबंध को नहीं समझ पाते अथवा जब संबंध भ्रांत, अस्पष्ट होता है, तब किसी पूर्णतर अर्थ की तलाश करने लगते हैं। हमारे जीवन इतने खोखले क्यों हैं? हम इतने अकेले, इतने कुंठाग्रस्त क्यों हैं? क्योंकि हमने कभी अपने भीतर देखा नहीं है, स्वयं को समझा ही नहीं है। आज, यानी 7 मई को मतदान का तीसरा चरण है। इसके बाद चार चरणों की वोटिंग बाकी है, जिसके लिए चुनाव प्रचार जोरदार तरीके से चल रहा है। सभी दल और नेता एक-दूसरे को घेरने का प्रयास कर रहे हैं। आरोपों-प्रत्यारोपों का खेल अनवरत जारी है। हालांकि, आम लोगों की यही उम्मीद होती है कि चुनाव के दौरान नेतागण मुद्दे की ही बात करें, काम की चर्चा करें और देश के भविष्य की झलक दिखाएं, लेकिन ऐसा लग रहा है कि अब ज्यादातर चुनावों में जनहित के मुद्दे उठते ही नहीं। ले-देकर धर्म और जाति की बातें ही हावी हैं, जो किसी भी लोकतंत्र की बेहतरी के लिहाज से अच्छी तस्वीर नहीं हो सकती है। इस बार के आम चुनाव में जहां भारतीय जनता पार्टी खुले तौर पर कांग्रेस पर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगा रही है और दावा कर रही है कि कांग्रेस ओबीसी का आरक्षण घटाकर मुसलमानों को दे सकती है, वहीं कांग्रेस की ओर से दावा किया जा रहा है कि भाजपा आरक्षण और संविधान, दोनों को खत्म करने की कोशिश में है। उसके मुताबिक, फिर से भाजपा सरकार बनते ही देश का संविधान बदल दिया जाएगा। सिर्फ यही दावे-प्रतिदावे

Word Count: 4, Character Length: 3749 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22588

हालांकि, कभी-कभी विकास के दावे-प्रतिदावे को लेकर भी आवाज उठाई जाती है, लेकिन जितना महत्व जाति-धर्म के मुद्दे को दिया जा रहा है, उतना उनको नहीं मिल रहा। चूंकि चुनाव में उसी दल को जीत मिलती है, जो लोगों की भावनाओं को छू पाता है, इसीलिए इस बार के चुनाव में भी अपने-अपने तरीके से भावनात्मक मुद्दे उठाए जा रहे हैं। मगर ऐसा लगता है कि भावनात्मक मुद्दों के शोर में जरूरी मुद्दे गायब हो गए हैं। यह ठीक नहीं है। बेशक, हर राजनीतिक दल यही चाहता है कि किसी न किसी तरह से वह चुनाव जीत जाए, लेकिन मतदाताओं को जागरूक करना भी उसी की जिम्मेदारी है। वाजिब मुद्दों पर यदि सभी पार्टियां चुनाव लड़ेंगी, तो हमारा लोकतंत्र और भी समृद्ध व परिपक्व होगा। अठारहवीं लोकसभा के चुनाव को यह कहकर खारिज नहीं किया जा सकता कि इसमें जरूरी मुद्दे नहीं उठाए जा रहे हैं। क्या आलोचकों को यह नहीं दिख रहा है कि भारतीय जनता पार्टी विकास के नाम पर वोट मांग रही है? उसने पिछले दस वर्षों में देश में कितना बदलाव किया है, उसका हिसाब-किताब जनता के बीच परोस रही है और उसी के आधार पर अपने उम्मीदवारों के लिए जीत का आशीर्वाद मांग रही है। कांग्रेस की चुनावी-रणनीति भी विकास के इर्द-गिर्द ही है। वह बेरोजगारी, गरीबी, महंगाई, अमीरों की कर्जमाफी जैसे जरूरी मुद्दों के साथ जनता के बीच जा रही है। क्या ये मुद्दे जनहित के नहीं हैं? गरीबी और महंगाई तो सीधे-सीधे आम लोगों से जुड़ा मसला है। मौजूदा सरकार के कार्यकाल में कितना विकास हुआ या महंगाई कितनी बढ़ी, इस बहस में यदि हम न भी जाएं, तब भी यह साफ-साफ दिख रहा है कि एक पार्टी अपने कामों के आधार पर लोगों से वोट मांग रही है, तो दूसरी पार्टी गलत नीतियां अपनाने के कारण उस दल को घेरने के प्रयास

Word Count: 9, Character Length: 3802 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22592

को हुए इस खिताबी मुकाबले को जो भी जीतता वह अपनी पहली ग्रैंड स्लैम ट्रॉफी जीतने के साथ ही नंबर एक ताज भी हासिल करता। और इसमें अल्कारेज ने बाजी मार ली। पीट संप्रास के बाद दूसरे खिलाड़ी होंगे अल्कारेज 19 वर्षीय अल्कारेज ओपन एरा में अमेरिका के महान खिलाड़ी पीट संप्रास के बाद दूसरे सबसे युवा खिलाड़ी बन गए हैं। पीट संप्रास ने 19 वर्ष की उम्र में 1990 में यूएस ओपन का खिताब जीता था। इसके साथ ही अल्कारेज 1973 से शुरू हुई एटीपी रैंकिंग में पहले सबसे कम उम्र के नंबर एक खिलाड़ी बनेंगे। अभी यह रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के ल्यूटन हेविट के नाम दर्ज था। हेविट 20 वर्ष 8 माह 23 दिन की उम्र में 19 नवंबर 2001 को सबसे कम उम्र के नंबर एक टेनिस खिलाड़ी बने थे।श्रीलंका ने पाकिस्तान को एशिया कप के फाइनल में हराकर छठी बार खिताब अपने नाम कर लिया है। वह 2014 के बाद पहली बार एशिया कप जीतने में सफल रहा। श्रीलंकाई टीम को किसी ने भी फाइनल खेलने का दावेदार नहीं माना था, लेकिन उसने सबको हैरान करते हुए फाइनल में जगह बनाई और ट्रॉफी भी जीतने में सफलता पाई। पूरे टूर्नामेंट के दौरान श्रीलंकाई खिलाड़ी अपने सेलिब्रेशन के कारण चर्चा में रहे। श्रीलंकाई खिलाड़ियों ने फाइनल में तीर चलाने के स्टाइल में जश्न मनाकर सबको हैरान कर दिया। महीश तीक्षणा ने सबसे पहले खुशदिल शाह का कैच लेकर तीर चलाया। उसके बाद उन्होंने शादाब खान को आउट करने के बाद भी ऐसा किया। तीक्षणा के इस सेलिब्रेशन की कॉपी चमीका करुणारत्ने ने भी की। तीक्षणा ने ही नहीं बल्कि चमिका करुणारत्ने ने भी अपने सेलिब्रेशन से सबको हैरान किया। वह विकेट लेने के बाद एक हाथ से सैल्यूट मारते दिखे। वहीं, दूसरे हाथ को उन्होंने हवा में लहराया। यह वेस्टइंडीज के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शेल्डन कॉटरेल

Word Count: 0, Character Length: 3880 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22593

दीपावली न केवल खुशी, बल्कि सभी के लिए प्रेरणा का अवसर है। बाजार से समाज तक और उद्यमी से सरकार तक, सभी की निगाह दीपावली पर होती है। दीपावली केवल एक धार्मिक अवसर ही नहीं है, बल्कि अर्थव्यवस्था को बल देने वाला समय भी है। ध्यान दीजिए, इस बार बाजार को कुल 4.25 लाख करोड़ रुपये की खरीदारी का अनुमान है। धनतेरस के दिन देश के छोटे-बड़े शहरों के बाजारों में जो भीड़ देखी गई है, उससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि देश के ज्यादातर उद्यमी खरीद-बिक्री के अपने लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे। सरकार को फायदा है कि लगभग हर खरीद-बिक्री से उसे लाभ होना है। देश में खरीद-बिक्री का विस्तार भी जरूरी है। अभी हम भूले नहीं हैं, कोरोना महामारी के समय देश अर्थव्यवस्था के मामले में पिछड़ गया था, पर करीब चार साल बाद यह पहली दीपावली है, जब महामारी की कोई छाया शेष नहीं है और बाजार के साथ ही सरकार भी बेहतर प्रदर्शन के लिए पूरी तरह से सकारात्मक है। इस दीपावली अगर हम गौर करें, तो हमारे समाज और बाजार की चुनौतियां लगभग समान ही हैं। समाज का एक बड़ा वंचित हिस्सा है, जिसमें खरीदारी की ज्यादा ताकत नहीं है। ऐसे लोग बाजार के लिए भी चुनौती हैं, उन तक पहुंचने की कोशिश जारी रहनी चाहिए। एक संपन्न व्यक्ति की भी अपनी सीमा है, पर जिस अर्थव्यवस्था में अभावग्रस्त लोग होते है, उस अर्थव्यवस्था में ज्यादा गति से आगे बढ़ने की गुंजाइश होती है। वास्तव में, गरीबों को सक्षम बनाना, केवल सरकार ही नहीं, बल्कि बाजार की भी जिम्मेदारी है। आधुनिक दौर में सरकार लोगों को सीधे नकद देकर सक्षम बनाती है, तो बाजार को भी लोगों को सक्षम बनाने के बारे में सोचना चाहिए। उद्यमी जो पूंजी अर्जित कर रहे हैं, उसे कहीं जमा करने या सिर्फ अपना उपभोग बढ़ाने के

Word Count: 4, Character Length: 3820 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22594

के बावजूद अमीर व प्रतिभावान लोग देश छोड़कर क्यों जा रहे हैं? साल 2023 में करीब 5,100 करोड़पति देश छोड़कर गए हैं और साल 2024 में 4,300 करोड़पतियों के जाने का अनुमान है। बेशक, ये लोग भारत के मित्रवत देशों में जा रहे हैं, पर यह हमारी संपन्नता का ही क्षरण है। हमारे देश की धरती सोना-हीरा-मोती पैदा करती है, पर इन रत्नों को सहेजकर रखना हमें आना चाहिए। अर्थात, हमें अपनी कमियों के प्रति ज्यादा ईमानदार होना पड़ेगा। संपन्नता साझा करने की भावना कम हो रही है। ध्यान रहे, कर योग्य आय के रूप में एक करोड़ रुपये से अधिक की घोषणा करने वाले व्यक्तियों की संख्या वांछित तेजी से नहीं बढ़ रही है। वित्त वर्ष 2013 में करोड़पति करदाताओं की संख्या 44,000 थी, जो वित्त वर्ष 2024 में बढ़कर 2.2 लाख हो गई है। ऐसे में, यह दीपावली एक अवसर है, जब हम वास्तव में किसी दीप की तरह अपने देश की रोशनी बनने का संकल्प लें। दीपावली का पर्व अंधेरे से उजाले की तरफ बढ़ने का प्रतीक है। इस पर्व का शास्त्रीय पक्ष मानव चेतना को बहुत प्रभावित करता है। कार्तिक मास की अमावस्या को अंधकार पर प्रकाश के विजय के रूप में मनाए जाने वाले इस पर्व को ठीक से समझिए, तो आप पाएंगे कि मनुष्यता की पूरी यात्रा ही इस सिद्धांत पर चलकर तय की गई है। एक सामान्य से होमोसेफियन ने विश्व के सबसे उन्नत प्राणी होने की उपाधि अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ते रहने के संकल्प से पाई। पाषाण काल की अंधेरी गुफा से निकला मनुष्य हजारों वर्षों में दुनिया के अनगिनत अंधेरों के रहस्य सुलझा चुका है। अंधकार पर प्रकाश के विजय का यह उत्सव मनुष्य की उसी आदिम वृत्ति का एक त्योहार-रूपी जयघोष है, जो बेहद रोमांचित करता है। आज बाहरी परिवेश में उजाला ढूंढ़ने में पारंगत समूचे विश्व के

Word Count: 3, Character Length: 3792 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-25-Test NO.-22595

पद पर अब जो भी आसीन होगा, उसके सामने निकट अतीत की ये दो नजीरें सामने होंगी। आखिरकार, इतिहास सत्ताधीशों का उनकी कथनी और करनी के आधार पर ही मूल्यांकन करता है। आग की खोज से लेकर भाप की ताकत के दोहन और परमाणु-विखंडन की शक्ति को समझने तक, ऊर्जा ने सदियों से मानव सभ्यता की दिशा तय की है। आज हम ऐसे नए युग की दहलीज पर खड़े हैं, जहां अक्षय ऊर्जा का सूरज उदित हो रहा है। पिछले वर्ष जो भी नई बिजली उत्पादन क्षमता बढ़ी, वह पूरी तरह नवीकरणीय स्रोतों से आई। इस अवधि में अक्षय ऊर्जा में निवेश बढ़कर 2,000 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो जीवाश्म ईंधनों में हुए निवेश से 800 अरब डॉलर अधिक था। आज सौर और पवन ऊर्जा पृथ्वी पर सबसे सस्ते ऊर्जा स्रोत बन चुके हैं। ये न केवल रोजगार पैदा कर रहे हैं, बल्कि आर्थिक विकास को भी गति और मानव प्रगति को शक्ति दे रहे हैं। हालांकि, जीवाश्म ईंधनों को अब भी अधिक सब्सिडी दी जा रही है। वे देश, जो अब भी ऊर्जा-जरूरतों के लिए जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर हैं, अपनी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रहे हैं। इससे उनकी प्रतिस्पर्द्धात्मक क्षमता तो घट ही रही है, वे 21वीं सदी के सबसे बड़े आर्थिक अवसर को भी गंवा रहे हैं। अक्षय ऊर्जा संप्रभुता और सुरक्षा भी सुनिश्चित करती है। इसके विपरीत, जीवाश्म ईंधन पर निर्भर रहने वाले देशों पर कीमतों में उतार-चढ़ाव, आपूर्ति में रुकावट और दुनिया भर में राजनीतिक अस्थिरता का भी असर पड़ता है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान यह साफ-साफ देखने में आया। सबसे अहम बात- लगभग हरेक देश के पास इतनी नवीकरणीय ऊर्जा-क्षमता है कि वह ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके। यह स्पष्ट है कि अक्षय ऊर्जा का युग आ चुका है, इसे रोका नहीं जा सकता। लेकिन, इसमें अभी पर्याप्त तेजी नहीं आई

Word Count: 7, Character Length: 3835 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22600

का केंद्रबिंदु रही रामकथा हर कालखंड में क्षण-क्षण प्रेरणा और चिंतन की धुरी रही है। मानवता जब-जब संकट में घिरी है, मनुष्य जब-जब भावनात्मक सहारे की खोज में विकल हुआ है, तब-तब रामकथा की उपयोगिता स्पष्टता से उभरी है। वस्तुत रामकथा विपत्ति काल में मनुष्य के संयमित, उत्कृष्ट और अनिवार्य आचरण की आवश्यक कहानी है। बाबा तुलसीदास तभी भगवान शंकर व माता पार्वती के संवाद में उल्लेख करते हैं- रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी॥ रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी॥ यह उन सब वांछित-अवांछित अनुभवों और श्रमसाध्य प्रयोगों के सफल-असफल हो जाने की कहानी है, जिनसे साक्षात्कार करना, न चाहते हुए भी कभी न कभी हर मनुष्य की नियति है। परम प्रतापी महाराज दशरथ से लेकर, अयोध्या के महलों में अनमनी वनवासिनी रही उर्मिला तक हर एक पात्र नियति-सृजित उन विपत्तियों से जूझ रहा है, जिसे हम जैसे अनुभव-शून्य सामान्य मनुष्य केवल एक भीषण दुख मानकर विचलित हो जाते हैं। वनों में वेद-वाक्यों से वंचित वानर सेना के राजा सुग्रीव से लेकर स्वर्णपुरी लंका के अधिपति और विलक्षण विद्वता संपन्न दशानन तक सभी के हिस्से में अपना-अपना संघर्ष है, अपनी-अपनी गलतियां हैं और अपना-अपना प्रारब्ध उन्हें अपनी योजनानुसार संचालित कर रहा है। विपत्तियों की इस कथा में श्रीराम सहज महानायक हैं। वह सिखाते हैं कि विधि अगर प्रतिकूल वातावरण देकर वंचना का अभिशाप दे भी दे, तो उसे अपनी शालीनता, सहजता और पराक्रम के सुंदर संयोग से वरदान में कैसे बदलना है। वरदान और अभिशाप वस्तुत हर युग में मनुष्यता के लिए ऐसे अनिवार्य तत्व के रूप में सामने आते हैं, जिनसे टकराना मनुष्य की नियति है। हर मनुष्य की चेतना वरदानों और अभिशापों के बीच यात्रा करते हुए आकार पाती है। वरदान की प्रभुता मनुष्य के मन को एक अनहद विस्तार देती है तथा अभिशाप की क्षुद्रता उसे अपने अस्तित्व की सीमाओं का क्रूर बोध कराती

Word Count: 13, Character Length: 4271 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22601

अपने नाम किया है। भारत ने सबसे ज्यादा सात बार यह खिताब जीता है। श्रीलंका अब उससे बस एक खिताब दूर है। यह अप्रैल 2014 के बाद पहली बार है जब श्रीलंका ने लगातार पांच टी 20 जीते हैं। इससे पहले टीम ने बांग्लादेश में 2014 में खेले गए टी 20 वर्ल्ड कप में लगातार पांच टी 20 मैच जीते थे। इसी के साथ श्रीलंका ने दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में पिछले 31 टी 20 का सबसे कम टोटल डिफेंड किया है। इससे पहले दुबई में पिछले 31 टी 20 मैचों में सबसे कम स्कोर जो डिफेंड किया गया था, वह था 172 रन। 2021 टी 20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड ने स्कॉटलैंड के खिलाफ 172 रन को डिफेंड किया था। अब एशिया कप के फाइनल में श्रीलंका ने पाकिस्तान के खिलाफ 170 रन को डिफेंड किया। भानुका राजपक्षा को उनकी पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। नवाज नौ गेंदों में छह रन बना सके। उन्हें चमिका करुणारत्ने ने आउट किया। इस बीच रिजवान ने टी 20 अंतरराष्ट्रीय करियर का 16वां अर्धशतक लगाया। इसके बाद 17वां ओवर हसरंगा डालने आए और उन्होंने मैच को पूरी तरह श्रीलंका के पक्ष में घूमा दिया। 17वें ओवर की पहली गेंद पर हसरंगा ने रिजवान को गुणातिलाका के हाथों कैच कराया। इसके बाद तीसरी गेंद पर आसिफ अली को क्लीन बोल्ड किया। पांचवीं गेंद पर हसरंगा ने खुशदिल शाह को तीक्ष्णा के हाथों कैच कराया। इसके बाद पाकिस्तान की टीम वापसी नहीं कर सकी। आखिर में श्रीलंकाई गेंदबाजों ने शादाब खान (8), हारिस रऊफ और नसीम शाह को पवेलियन भेज पाकिस्तान की पारी को 147 रन पर समेट दिया। श्रीलंका की ओर से मदुशन ने चार और हसरंगा ने तीन विकेट झटके। वहीं, करुणारत्ने को दो विकेट मिले। तीक्ष्णा ने एक विकेट लिया। जैसे ही अल्कारेज ने मैच अपने नाम किया वो

Word Count: 0, Character Length: 3689 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22602

चंद्रयान-3 का लैंडर मॉड्यूल एलएम आज चंद्रमा की सतह पर उतर गया। इसके साथ ही भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला दुनिया का पहला देश भी बन गया। पूरी दुनिया इस ऐतिहासिक पल का टकटकी लगाए इंतजार कर रही थी। लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान से युक्त लैंडर मॉड्यूल ने शाम छह बजकर चार मिनट पर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर सॉफ्ट लैंडिंग की। इस बीच यह भी जानने की उत्सुकता हो रही है कि आखिर भारत ने यह उपलब्धि कैसे हासिल की। आइये जानते हैं उन पांच वजहों को जिनसे हमारा मिशन कामयाब रहा 2019 के चंद्रयान-2 मिशन से सबक लिया चंद्रयान-3 से पहले 22 जुलाई 2019 को चंद्रयान-2 लॉन्च किया गया था। यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर सॉफ्ट लैंडिंग की कोशिश करने वाला किसी भी देश का पहला अंतरिक्ष मिशन था। हालांकि, चंद्रयान-2 मिशन का विक्रम चंद्र लैंडर छह सितंबर 2019 को चंद्रमा पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इसरो के वैज्ञानिकों ने मिशन से भी काफी कुछ सीखा। इसरो के प्रमुख एस. सोमनाथ कहते हैं कि 2019 का मिशन चंद्रयान-2 आंशिक सफल था, लेकिन इससे मिले अनुभव इसरो के चंद्रमा पर लैंडर उतारने के लिए नए प्रयास में काफी उपयोगी साबित हुए। इसके तहत चंद्रयान-3 में कई बदलाव किए गए। चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के लिए नए उपकरण बनाए गए। एल्गोरिदम को बेहतर किया गया। जिन वजहों से चंद्रयान-2 मिशन चंद्रमा की सतह पर नहीं उतर पाया था, उन पर फोकस किया गया। लैंडर में पांच की जगह चार इंजन लगाए गए चंद्रयान-2 के लैंडर में पांच इंजन लगे थे जबकि इस बार भार कम करने के लिए चंद्रयान-3 में चार इंजन लगाए गए। चंद्रयान-3 में लेजर डॉपलर वेलोसिमिट्री के साथ चार इंजन लगाए गए जिसका उद्देश्य था कि वह चंद्रमा पर उतरने के सभी चरणों में अपनी ऊंचाई और अभिविन्यास को नियंत्रित

Word Count: 12, Character Length: 3918 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22606

किलोमीटर क्षेत्र तय किया गया। अल्टरनेट लैंडिंग की सुविधा से लैस किया गया इसरो ने परीक्षण के दौरान यह तय कर लिया था कि अगर लैंडिंग के लिए एक जगह सही नहीं लगी तो दूसरी जगह भी तैयार रहेगी। चंद्रयान-3 को टारगेट स्थल से आगे-पीछे ले जाने की व्यवस्था की गई। एक किलोमीटर के दायरे में उसकी सुरक्षित लैंडिंग हो सके, इसे पहले ही तय किया गया। चंद्रयान-3 के लिए समतल जगह का चयन किया गया है। ऐसा इसलिए कि अगर उस वक्त कोई पदार्थ बीच राह में आया तो भी चंद्रयान का संतुलन नहीं बिगड़ने दिया जाएगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो के मिशन चंद्रयान-3 की बुधवार की शाम छह बजकर चार मिनट पर चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक लैंडिंग हो गई। इसके साथ ही चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर अपने यान को उतारने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया है। इस अंतरिक्ष अभियान पर दुनियाभर की नजरें टिकी हुईं थीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस मिशन को दक्षिण अफ्रीका से लाइव देख रहे थे। प्रधानमंत्री 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए जोहान्सबर्ग में हैं। वे वहीं से लाइव स्ट्रीमिंग के जरिए इस पल को देख रहे थे। इसरो की सफलता पर उन्होंने कहा कि ये ये विकसित भारत का क्षण है। प्रधानमंत्री ने कहा, हर देशवासी की तरह मेरा ध्यान चंद्रयान महाअभियान पर लगा हुआ है। मैं भी अपने देशवासियों के साथ, अपने परिवारजनों के साथ इस उमंग और उल्लास से जुड़ा हुआ हूं। भारत चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचा है, जहां आज तक कोई देश नहीं पहुंचा है। आज से चांद से जुड़े कई मिथक बदल जाएंगे। प्रधानमंत्री ने कहा, मेरे प्यारे परिवारजनो! जब हम अपनी आंखों के सामने ऐसा इतिहास बनते हुए देखते हैं तो गर्व होता है। ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं राष्ट्र जीवन की चेतना बन जाती हैं। यह पल

Word Count: 4, Character Length: 3917 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22607

मुताबिक, घटना के दिन विवाद तब बढ़ा, जब हिन्दू पक्ष डीजे बंद करने के लिए तैयार नहीं हुआ। खबरों के मुताबिक, एक आदेश जारी किया गया था कि प्रतिमाओं के विसर्जन के दौरान डीजे न बजाया जाए। जुलूस की विभिन्न चैनलों और अखबारों में रिपोर्टिंग से पता चलता है कि उसमें शामिल लोगों को पुलिस ने रोकने की असफल कोशिश भी की थी। आरोप है कि एक युवक ने डीजे से पेन ड्राइव निकाल दिया, जिसके बाद भीड़ ने हंगामा शुरू कर दिया। यहीं से विवाद बढ़ता चला गया। पुलिस के जवान तमाशबीन बने रहे। आरोप लगाया जा रहा है कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके से चले गए थे। अगले दिन 14 अक्तूबर को जमकर उपद्रव हुआ और आगजनी की गई। स्थानीय विधायक भी विवादों के घेरे में आ गए। बड़ी मुश्किल से पुलिस मृतक का अंतिम संस्कार करा सकी। हर बार की ही तरह इसमें भी प्रशासनिक लापरवाही, सांप्रदायिक दुष्प्रचार और मीडिया के पूर्वाग्रह दिखते हैं। यह जांचने की जरूरत है कि क्या यह विसर्जन जुलूस पिछले वर्षों से इसी रास्ते से निकलता रहा है और क्या स्थानीय थाने में दर्ज विवरणों के मुताबिक ही इसे निकाला गया? क्या जुलूस के नेतृत्व को पाबंद किया गया था? यह भी देखा जाना जाना चाहिए कि क्या किसी विवाद की आशंका वाली खुफिया जानकारियां पहले से उपलब्ध थीं और जो पुलिस बंदोबस्त किए गए, क्या वे पर्याप्त थे? मेरा अनुभव कहता है कि बड़ी नफरी वाले बल से मुकाबले उसका सक्रिय और दृढ़ नेतृत्व ज्यादा कारगर होता है। यहां नेतृत्व की असफलता बड़ी स्पष्ट दिख रही है। जुलूस के साथ डीजे क्यों चलने दिया गया और फिर उसे मुस्लिम घरों के सामने क्यों रुकने से नहीं रोका गया? वहां यदि सख्ती दिखाई गई होती, तो इतनी बड़ी घटना, जिसमें एक नौजवान को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, न घटती। यह

Word Count: 0, Character Length: 3833 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22608

विशेषणों से युक्त होकर भगवान राम नहीं बनते तथा अनाचारी रावण का नाश भी नहीं हो पाता। विश्व के कल्याण की इतनी बड़ी अवधारणा एक सामान्य से अभिशाप से निकलेगी, यह अंदाजा सामान्य मनुष्यों की बुद्धि भला कैसे लगा सकती है? सामान्य मनोरथ के पूर्ण होने से प्रसन्न एवं जरा सी अवांछित स्थिति से हताश होने वाले हम-आप जैसे सामान्य लोग भला यह कैसे समझ सकते हैं कि नियति की योजनाएं हमारी योजनाओं से कई गुना अधिक मंगलकारी होती हैं। आज सूचनाओं से भरे वैचारिक संकट के इस मशीनी समय में मनुष्यता के प्रति लोगों के मन में अनास्था की एक गहरी परत जम चुकी है। रामकथा उन परतों को हटाते हुए सात्विकता के प्रकाश का पथ सुगम करती है। निर्बल के बल राम जैसी अवधारणाएं उन सभी लोगों को संबल देती हैं, जो सामाजिक मानकों के अनुसार सामर्थ्य की सीढ़ियां नहीं चढ़ पाए। कौशल्या के राम उन पुत्रों को आज्ञाकारिता का मार्ग बताते हैं, जो स्वार्थ के अंधेरे में संबंधों का अनिवार्य धर्म भूल चुके हैं। शबरी के राम उन समस्त लोगों को सामाजिक समरसता का पाठ पढ़ाते हैं, जिनकी चेतना के सूर्य को जातिगत पूर्वाग्रह के क्षुद्र बादलों ने घेर रखा है। चरणों में पड़ी सोने की लंका और लंकापति के प्रति सर्वथा उदासीन जानकी तथा उनके प्राणप्रिय राम उन समस्त दंपतियों के लिए सबसे सुंदर उदाहरण हैं, जिनके दांपत्य की विचलन को दोनों तरफ से निभाया जाने वाला मर्यादा का कठोर व्रत ही थाम सकता है। दीपावली सिर्फ बाहरी प्रकाश के आवरण में स्वयं को आनंदित करने का नाम नहीं, बल्कि आंतरिक प्रकाश की आभा से स्वयं के अंतर्मन को दीप्त करने का एक सुखद अवसर भी है। रामकथा मन की देहरी पर रखा जाने वाला ऐसा पुण्य-दीप है, जो आंतरिक उजाले का सबसे सरलतम और सफलतम मार्ग प्रस्तुत करता है। मेरे राम के अस्तित्व की आभा

Word Count: 2, Character Length: 3960 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-26-Test NO.-22609

भारत में अपने देश का लगभग एक चौताही का आधा आप सब में से 80 प्रतिशत है, इसलिए उन्हें इसमें सबसे आगे रहना होगा। दूसरा, हमें 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप आधुनिक ऊर्जा प्रणालियां विकसित करनी होंगी। जब तक हमारे पास उन्नत ग्रिड और ऊर्जा भंडारण का मजबूत ढांचा नहीं होगा, तब तक नवीकरणीय ऊर्जा पूरी क्षमता से काम नहीं कर सकेगी। अभी नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश किए गए हर एक डॉलर (86.38 रुपये) में से केवल 60 सेंट (लगभग 12 रुपये) ही ग्रिड व स्टोरेज पर खर्च होते हैं। जबकि, यह अनुपात 1:1 होना चाहिए। तीसरा, बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से ही पूरा किया जाना चाहिए। चौथा, ऊर्जा वितरण को न्यायसंगत बनाना होगा। इसका अर्थ है उन समुदायों तक इसे पहुंचाना, जो अब भी जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर हैं। पांचवां, अक्षय ऊर्जा का व्यापार बढ़ाना होगा। आज अक्षय ऊर्जा की आपूर्ति कुछ ही देशों तक सीमित है। जो देश इस नए ऊर्जा युग में प्रवेश करना चाहते हैं, उन्हें अक्षय ऊर्जा उपकरणों पर कर (टैरिफ) कम करने होंगे। छठे और आखिरी कदम के तौर पर विकासशील देशों को जरूरी धन मुहैया करवाना होगा। पिछले साल अफ्रीका को नवीकरणीय ऊर्जा में कुल निवेश का सिर्फ दो प्रतिशत हिस्सा ही मिला, जबकि वहां दुनिया की 60 प्रतिशत उत्कृष्ट सौर ऊर्जा-क्षमता मौजूद है। निवेशकों और क्रेडिट रेटिंग कंपनियों को अपना नजरिया बदलना होगा, ताकि वे अक्षय ऊर्जा की ताकत, जलवायु संकट की असली लागत एवं पुराने जीवाश्म ईंधनों में फंसी पूंजी के जोखिम को ठीक से समझ सकें। एक नया ऊर्जा युग द्वार पर खड़ा है। ऐसा युग, जहां किफायती, स्वच्छ और भरपूर ऊर्जा एक ऐसे विश्व के निर्माण को तैयार खड़ी है, जो आर्थिक अवसरों से समृद्ध होगी, जहां किसी देश को दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा और जहां बिजली सर्वजन के लिए उपहार बन जाएगी।

Word Count: 1, Character Length: 3991 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22614

घर में दिवाली मना रहे हैं, तब यह निस्संदेह सभी भारतवासियों को गर्व की अनुभूति कराने वाला पल है। आप हरेक भारतवासी की 500 साल की पीड़ा, उनके दुख, उनके संघर्षों को समझ सकते हैं कि अपने ही देश में, अपने ही भक्तों के बीच रामलला बेघर थे और टेंट में रहने को विवश थे। 500 साल के संघर्ष, असहनीय दर्द और करोड़ों भक्तों के मौन आंसुओं को संबल तब मिला, जब प्रभु श्रीराम की महती कृपा से नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने। वह क्षण जब प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे राम आ गए है तो यह शब्दों में जीवन के उन सभी संघर्षों का मर्म था, जो हरेक रामभक्त ने इस क्षण के लिए उठाए थे। रामलला ने हम सभी को अपने जीवन चरित्र से स्पर्श किया है, हमें संस्कारित किया है और हमें जीवन की मर्यादा का पालन करना सिखाया है। मर्यादा की ऐसी प्रतिमूर्ति, जिनके पैरों के स्पर्श ने अहिल्या माता को पत्थर से सजीव बना दिया, जिनकी मित्रता ने निषादराज को भी भरत समान आदर दिया, जिनके प्रेम ने माता शबरी को संतों के उच्चासन पर आसीन किया, जिनके प्यार ने केवट का उद्धार किया, जिनके साथ ने आदिवासी और पूरे वानर समुदाय को समाज में प्रतिष्ठित किया, जिनके शौर्य ने रावण जैसे पराक्रमी, दुराचारी का अंत किया और जिनके आदर्श ने मानव जीवन को एक दिशा दी, ऐसे हमारे रामलला का स्वागत अयोध्या नगरी के साथ-साथ पूरा भारतवर्ष कर रहा है। आनंद के इन क्षणों में हम सभी उन बलिदानियों के आभारी रहेंगे, जिन्होंने अपने त्याग और तपस्या से इस महान क्षण को साकार किया। यह धर्म के उद्घोष का क्षण है। मां सीता की कठोर प्रतीक्षा ने राम के जिस रामत्व के दर्शन विश्व को कराए, सभी रामभक्तों ने भी 500 वर्षों से अधिक की उस प्रतिक्षा को जीवन में देखा है। यह उस संकल्प

Word Count: 1, Character Length: 3771 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22615

राम ही सत्य हैं और राम ही उत्तम हैं। आज उस पावन धरती पर विजय का उद्घोष करता भव्य राममंदिर इस बात का प्रमाण है कि आस्था का अस्तित्व संकल्पों की शक्ति पर टिका हुआ है। अयोध्या के कण-कण में तो राम विराजमान हैं ही, हर भारतवासी के मन मंदिर में भी राम विराजमान हैं। यह उत्सव सिर्फ किसी एक जमीन पर अधिकार प्राप्त कर लेने का उत्सव नहीं है, बल्कि यह सनातन के पुनरुत्थान का वह गौरव क्षण है, जो यह बताता है कि इंतजार चाहे कितना भी लंबा हो, परंतु संघर्ष का प्रतिफल ईश्वर सदैव देते हैं। भव्य राममंदिर बन जाना अयोध्या में न सिर्फ रोजगार के नए साधन उत्पन्न कर रहा है, बल्कि हर अयोध्यावासी के भीतर नई ऊर्जा भर रहा है। इस दिवाली पूरी अयोध्या ने जो तैयारी प्रभु श्रीराम के स्वागत को लेकर कर रखी है, उसकी प्रत्येक भावना में प्रभु श्रीराम के चरित्र की वह शिक्षा है, जो उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ की है। विश्व कल्याण की भावना के ऊर्जा स्रोत श्रीराम ही हैं। श्रीराम जन्मभूमि सिर्फ एक धर्मस्थल के रूप में आवश्यक नहीं है, बल्कि एक समाज के रूप में भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना के जागरण का स्मृति-चिह्न है। इस दिवाली जब आप प्रभु श्रीराम को अपने घर बुलाएं, तो यह याद रखें कि उनकी जन्मस्थली की रक्षा के लिए कितनी पुण्यात्माओं ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया है। यह क्षण 500 वर्षों के बाद आया है। असंख्य संघर्षों के बाद श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर स्थापित है। समय के अंत तक यह ऐसे ही खड़े रहकर सनातन का जयघोष बनेगा। भारतीय सनातन परंपरा की जीवंत सोच और संगठनात्मक कौशल का गवाह बनेगा। विष्णु के अवतारों में श्रीकृष्ण पूर्ण कला अवतार थे। भारत के पर्वों में दीपावली सर्व कला पूर्ण पर्व है। जीवन और जगत का प्रत्येक पहलू इस पर्व

Word Count: 2, Character Length: 3913 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22616

नई उड़ान के साक्षी बने हैं। हर घर में उत्सव शुरू हो गया है। ह्रदय से मैं भी अपने देशवासियों के साथ अपने परिवारजनों के साथ इस उमंग और उल्लास से जुड़ा हुआ हूं। मैं टीम चंद्रयान को, इसरो को और देश के सभी वैज्ञानिकों को जी-जान से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। जिन्होंने इस क्षण के लिए वर्षों से इतना परिश्रम किया। हमारे वैज्ञानिकों के परिश्रम से भारत उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका है। आज के बाद से चांद से जुड़े मिथक बदल जाएंगे, कथानक भी बदल जाएंगे और नई पीढ़ी के लिए कहावतें भी बदल जाएंगी। भारत में तो हम सभी लोग धरती को मां कहते हैं और चांद को मामा बुलाते हैं। कभी कहा जाता था कि चंदा मामा बहुत दूर के हैं, अब एक दिन वो भी आएगा, जब बच्चे कहा करेंगे कि चंदा मामा बस एक टूर के हैं। इसरो के अधिकारियों के मुताबिक, चंद्रयान-3 मिशन चंद्रयान-2 का ही अगला चरण है, जो चंद्रमा की सतह पर उतरा है। अब ये आगे परीक्षण करेगा। यह चंद्रयान-2 की तरह ही दिखता है, जिसमें एक लैंडर और एक रोवर शामिल किए गए हैं। चंद्रयान-3 का फोकस चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंड करना था। मिशन की सफलता के लिए नए उपकरण बनाए गए थे। एल्गोरिदम को बेहतर किया गया था। जिन वजहों से चंद्रयान-2 मिशन चंद्रमा की सतह नहीं उतर पाया था, उन पर फोकस किया गया था। मिशन ने 14 जुलाई को दोपहर 2:35 बजे श्रीहरिकोटा केन्द्र से उड़ान भरी और योजना के अनुसार 23 अगस्त को चंद्रमा पर उतरा। इस मिशन के साथ अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया। दिन होने पर रोवर के एक बार फिर से चलने का अनुमान

Word Count: 7, Character Length: 3614 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22620

को हुए इस खिताबी मुकाबले को जो भी जीतता वह अपनी पहली ग्रैंड स्लैम ट्रॉफी जीतने के साथ ही नंबर एक ताज भी हासिल करता। और इसमें अल्कारेज ने बाजी मार ली। पीट संप्रास के बाद दूसरे खिलाड़ी होंगे अल्कारेज 19 वर्षीय अल्कारेज ओपन एरा में अमेरिका के महान खिलाड़ी पीट संप्रास के बाद दूसरे सबसे युवा खिलाड़ी बन गए हैं। पीट संप्रास ने 19 वर्ष की उम्र में 1990 में यूएस ओपन का खिताब जीता था। इसके साथ ही अल्कारेज 1973 से शुरू हुई एटीपी रैंकिंग में पहले सबसे कम उम्र के नंबर एक खिलाड़ी बनेंगे। अभी यह रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के ल्यूटन हेविट के नाम दर्ज था। हेविट 20 वर्ष 8 माह 23 दिन की उम्र में 19 नवंबर 2001 को सबसे कम उम्र के नंबर एक टेनिस खिलाड़ी बने थे।श्रीलंका ने पाकिस्तान को एशिया कप के फाइनल में हराकर छठी बार खिताब अपने नाम कर लिया है। वह 2014 के बाद पहली बार एशिया कप जीतने में सफल रहा। श्रीलंकाई टीम को किसी ने भी फाइनल खेलने का दावेदार नहीं माना था, लेकिन उसने सबको हैरान करते हुए फाइनल में जगह बनाई और ट्रॉफी भी जीतने में सफलता पाई। पूरे टूर्नामेंट के दौरान श्रीलंकाई खिलाड़ी अपने सेलिब्रेशन के कारण चर्चा में रहे। श्रीलंकाई खिलाड़ियों ने फाइनल में तीर चलाने के स्टाइल में जश्न मनाकर सबको हैरान कर दिया। महीश तीक्षणा ने सबसे पहले खुशदिल शाह का कैच लेकर तीर चलाया। उसके बाद उन्होंने शादाब खान को आउट करने के बाद भी ऐसा किया। तीक्षणा के इस सेलिब्रेशन की कॉपी चमीका करुणारत्ने ने भी की। तीक्षणा ने ही नहीं बल्कि चमिका करुणारत्ने ने भी अपने सेलिब्रेशन से सबको हैरान किया। वह विकेट लेने के बाद एक हाथ से सैल्यूट मारते दिखे। वहीं, दूसरे हाथ को उन्होंने हवा में लहराया। यह वेस्टइंडीज के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शेल्डन कॉटरेल

Word Count: 0, Character Length: 3880 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22621

कोरोना के टीके कोविशील्ड को लेकर छिड़ा विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है, तो यह स्वाभाविक ही है। इस टीके की निर्माता कंपनी एस्ट्राजेनेका ने अपने टीकों को वापस लेने की पहल की है। खासकर, टीके वैक्सजेवरिया पर सुरक्षा चिंताओं के बीच कंपनी की पहल को अलग-अलग नजरिये से देखा जा रहा है। यह कंपनी अपने टीकों की शिकायतों से परेशान है और टीके को वापस लेने से जहां उसकी चिंता घटेगी, वहीं दूसरी ओर, लोगों की शिकायतों में भी इजाफा हो सकता है। खास बात यह है कि सुप्रीम कोर्ट जल्द ही कोविशील्ड के दुर्लभ दुष्प्रभावों पर सुनवाई करने वाला है। हालांकि, सुनवाई की तारीख अभी तय नहीं है, पर यह बड़ी बात है कि प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने वैक्सीन के दुष्प्रभावों की जांच के लिए एक विशेषज्ञ पैनल की मांग वाली याचिका को स्वीकार कर लिया है। यह याचिका अधिवक्ता विशाल तिवारी ने दायर की है और इसमें शीर्ष अदालत से प्रभावित नागरिकों के लिए वैक्सीन क्षति भुगतान व्यवस्था बनाने की मांग की गई है। सर्वोच्च न्यायालय ने अगर मंजूर कर लिया, तो केंद्र सरकार को भारत में भी टीका दुष्प्रभाव क्षतिपूर्ति तंत्र बनाना पड़ेगा। महामारी के दौरान टीकाकरण अभियान के चलते गंभीर रूप से अक्षम हुए लोगों की खोज होनी चाहिए और एक विस्तृत सूची बननी चाहिए। हालांकि, यह काम आसान नहीं है। ध्यान देने की बात है, कोरोना पीड़ितों या मृतकों के परिजन को मुआवजा देने का फैसला केंद्र सरकार ने किया था। ऐसे बच्चों के लिए भी विशेष प्रबंध किए गए थे, जो कोरोना के समय अनाथ हो गए थे। अब अगर टीकों के दुष्प्रभावों से पीड़ित लोगों या मृतकों को मुआवजा मिलता है, तो यह एक कल्याणकारी राज्य लिए सकारात्मक फैसला होगा। भारतीयों को सतर्क रहना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि देश या क्षेत्र के हिसाब से एस्ट्राजेनेका पक्षपात करने

Word Count: 1, Character Length: 4017 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22622

अगर यूरोप में मुआवजा दिया जाता है, तो एशिया या भारत में क्यों नहीं ध्यान देने की बात है, भारत में लोगों को कोविशील्ड की करोड़ से अधिक खुराकें दी जा चुकी हैं। भारत में भी एस्ट्राजेनेका की टीका संबंधी स्वीकारोक्ति के बाद चिंता का आलम है। कंपनी ने स्वीकार किया है कि टीके से रक्त का थक्का जमने का खतरा है और इस वजह से ब्रिटेन में कंपनी को मुकदमे का सामना करना पड़ रहा है। वैसे, कंपनी अभी भी अपने दामन को पाक साफ बताने में लगी हुई है और वह यूरोप में लग रहे आरोपों को तभी स्वीकार करेगी, जब कोई विशेषज्ञ गवाही देगा। विशेषज्ञ चिकित्सक की गवाही का यूरोप में बड़ा महत्व होता है, तो भारत में भी कम नहीं होता। जहां भी दुष्प्रभाव के मामले आते हैं, वहां चिकित्सकों को अपनी योग्यता का परिचय देना होगा। टीके की कमियों को छिपाने की कोई जरूरत नहीं है। चिकित्सा व्यवस्था के भविष्य के लिए यह जरूरी है कि सेवा में कमियों को दोहराया न जाए। टीका बेचकर भारी मुनाफा कमाने वाली कंपनी को भी सच्चाई के पक्ष में दिखना होगा। हालांकि, फिलहाल कंपनी इस पूरी शिकायत को घटाकर देख रही है। उसने संकेत यही किया है कि बाजार में उपलब्ध टीकों की अधिकता और मांग में कमी की वजह से टीकों को वापस लिया जा रहा है। खैर, बाजार से टीके वापस लिए जा सकते हैं, पर जिन दुर्लभ मामलों में टीके की खुराक ने शरीर के अंदर जाकर नुकसान पहुंचाया है, उसकी भरपायी कैसे हो सकती है इंतजार कीजिए, हमारी दुनिया उस ओर बढ़ रही है। कुछ राज्य हैं, जहां लगभग आधे क्षेत्रों में हार जीत का अंतर बहुत कम रहेगा और इसी से तय होगा कि एक दल के बहुमत वाली सरकारों की प्रवृत्ति बनी रहती है या उलट जाती है। भारत 18वीं लोकसभा के

Word Count: 0, Character Length: 3712 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

SPL BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-27-Test NO.-22623

एक जीवंत लोकतंत्र की सबसे बड़ी निशानी क्या है? उसमें हाशिये की आवाज भी पूरी संजीदगी से सुनी जाती है। अपनी कुछ कमियों के बावजूद अमेरिकी लोकतंत्र इस कसौटी पर खरा उतरता है, तभी तो भारतीय मूल के ममदानी उसकी आर्थिक राजधानी न्यूयॉर्क के मेयर पद की ओर सरपट दौड़ पड़े हैं और अब एक सोमालियाई मूल के युवा उमर महमूद फतेह ने मिनियापोलिस सिटी के मेयर पद के लिए डेमोक्रेट उम्मीदवार के तौर पर प्राइमरी में फतह हासिल की है। उमर की इस उपलब्धि का महत्व आप तभी समझ पाएंगे, जब उनके पुरखों की धरती सोमालिया के हालात से आप वाकिफ हों। सोमालिया दुनिया के नाकाम देशों की सूची में नंबर एक पर है। दशकों से जारी अराजकता, बेलगाम हिंसा और भूख के कारण जिसे भी मौका मिलता है, वह वहां से भाग निकलता है। उमर के माता-पिता, दोनों को पिछली सदी के साठ के दशक में ही पता चल गया था कि सोमालिया में उनका कोई भविष्य नहीं है। वे पढ़ने-लिखने में जहीन लोग थे, लिहाजा साल 1963 में जब मोंटाना स्टेट यूनिवर्सिटी से सिविल इंजीनियरिंग के लिए वजीफा मिला, तो उनके पिता ने ऊपर वाले का शुक्रिया अदा किया और फौरन मोंटाना पहुंच गए। उमर की मां भी बाद में सोमालिया से अमेरिका आ गईं और उन्होंने भी मास्टर्स की डिग्री हासिल की। जाहिर है, उच्च शिक्षा ने अमेरिका में उमर के माता-पिता के लिए अवसरों के कई दरवाजे खोल दिए थे। उनके लिए वहां टिकना मुश्किल नहीं रह गया था। वहीं पर वाशिंगटन डीसी में अप्रैल 1990 में उमर पैदा हुए। माता-पिता जानते थे कि अमेरिका में बसने के लिए न सिर्फ उन्हें कठोर परिश्रम करना होगा, बल्कि बेटे को भी बेहतर तालीम दिलानी पड़ेगी, ताकि वह इसकी मुख्यधारा में शामिल हो सके और बेहतर जिंदगी जी सके। फॉल्स चर्च हाईस्कूल से स्कूली पढ़ाई पूरी करने

Word Count: 4, Character Length: 3853 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-28-Test NO.-22625

बड़े क्षेत्र शामिल नहीं किए जाएंगे। यह हमारे लिए आर्थिक रूप से भी मुफीद नहीं है और इससे देश में राजनीतिक भूचाल आ सकता है । हां, कपड़ा व फार्मास्यूटिकल्स जैसे मुद्दों पर भारत पीछे हट सकता है, जो आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि किसी भी समझौते में दोनों पक्षों के हितों को तवज्जो मिलती है। यही वजह है कि संभावित समझौते को 'मिनी ट्रेड डील' कहा जा रहा है। बहरहाल, हमें इस तरह के समझौते पर जल्द से जल्द पहुंच जाना चाहिए। अगर अमेरिका के साथ बात नहीं बनती है, तो हमारी चिंताएं बढ़ सकती हैं। भारत नहीं चाहेगा कि हमारे दूसरे सबसे बड़े बाजार चीन पर हमारी निर्भरता और बढ़े। ऐसा इसलिए, क्योंकि चीन के साथ हमारे कूटनीतिक संबंध बहुत अच्छे नहीं रहे हैं। व्यापार में उस पर निर्भरता हमारे हितों के प्रतिकूल साबित हुई है। मगर दिक्कत यह है कि भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को कच्चा माल चीन से ही मिलता है। यहां तक कि 'मेक इन इंडिया' को भी हम तभी आगे बढ़ा सकते हैं, जब संसाधनों की पूर्ति चीन से हो। गलवान घटना के बाद हमने बहुत कोशिश की, लेकिन अपने इस पड़ोसी देश पर से अपनी निर्भरता को कम नहीं कर सके हैं। ऐसे में, अमेरिका के साथ व्यापार समझौता में यदि अड़ंगा लगता है, तो भारत की उलझन बढ़ सकती है। एक तर्क यह भी दिया जाता है कि अमेरिका निर्यात किए जाने वाले उत्पादों को हमें अन्य देशों में भेजना चाहिए। कागज पर तो यह काम काफी सरल दिखता है, लेकिन व्यवहार में इसे अमल में लाना काफी मुश्किल है। अमेरिका इतना बड़ा बाजार है कि उसकी तुरंत भरपायी किसी दूसरे देश से नहीं की जा सकती। ऐसे में, हमारे घरेलू बाजार पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ेगा। अभी वैश्विक अर्थव्यवस्था भी चरमराई हुई है, लिहाजा उथल-पुथल जैसी स्थिति में अमेरिका जैसे भरोसेमंद

Word Count: 1, Character Length: 3877 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-28-Test NO.-22632

2009 में नौवें से लेकर 15वें आम चुनाव तक, जीतने वाली पार्टी बहुमत से दूर रही थी, साल 2004 में मनमोहन सिंह कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार के प्रधानमंत्री बने, तब कांग्रेस के पास बहुमत से 127 सीटें कम थीं, जबकि साल 1991 में जब पीवी नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बने, तब कांग्रेस के पास बहुमत से 24 सीटें कम थीं। किसी एक पार्टी के पास अगर बहुमत न हो, तो जाहिर है, गठबंधन सरकारों की जरूरत पड़ती है। खैर, साल 2014 और 2019 के आम चुनाव में प्रारूप बदल गया, जब भारतीय जनता पार्टी को बहुमत के आंकड़े से क्रमश 10 और 31 सीटें ज्यादा हासिल हुईं। अब लोकसभा चुनाव 2024 में क्या भाजपा या कांग्रेस संसद में बहुमत से ज्यादा सीटें हासिल करने वाली किसी एक पार्टी की परंपरा को बरकरार रखेगी बहुमत के लिए जरूरी सीटों से ज्यादा सीटें पाने का कारनामा यही दो पार्टियां कर सकती हैं, क्योंकि केवल यही दो हैं, जो बहुमत के लिए जरूरी 272 सीटों से अधिक पर चुनाव लड़ रही हैं। भाजपा उम्मीदवारों ने 446 निर्वाचन क्षेत्रों में और कांग्रेस नेताओं ने 327 निर्वाचन क्षेत्रों में पंजीकरण कराया है। सांख्यिकीय रूप से अगर देखें, तो अकेले दम पर कांग्रेस को बहुमत का आंकड़ा पार करने के लिए 82 प्रतिशत सीटें जीतनी होंगी। ऐसे में, फिलहाल कांग्रेस के लिए अकेले दम पर बहुमत से आधी सीटें भी जीतने की संभावना कम लगती है। उम्मीदवारों के मामले में इस समय तीसरी सबसे बड़ी पार्टी सपा है, जो 62 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। बसपा ने अभी तक अपने उम्मीदवारों की पूरी सूची की घोषणा नहीं की है, बहु चरणीय चुनाव में राजनीतिक दलों को यह सुविधा मिलती है। दुनिया भर में अनेक प्रकार की मतदान प्रणालियां हैं। ब्रिटेन की तरह ही भारत फर्स्ट पास्ट द पोस्ट सिस्टम (एफपीटीपी) का इस्तेमाल करता है। यह

Word Count: 0, Character Length: 3841 characters

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-28-Test NO.-22633

सीटों में से ज्यादातर पांच राज्यों, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात में हासिल हुई थीं। इन पांच राज्यों में कुल मिलाकर 200 लोकसभा सीटें पड़ती हैं। गुजरात को छोड़ दीजिए, तो शेष राज्यों में इस बार भाजपा अपेक्षाकृत कम जोर लगा रही है, उसका चुनावी अभियान महाराष्ट्र, कर्नाटक और हरियाणा जैसे अन्य राज्यों में ज्यादा जोर शोर से चला है। दूसरी ओर, साल 2019 के लोकसभा चुनाव में, गैर भाजपा दलों ने कुल 117 निर्वाचन क्षेत्रों में आधे से अधिक वोट हासिल किए थे, जिनमें तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की सीटें शामिल थीं। इन चुनावों के नतीजों की भविष्यवाणी करने का एक तरीका यह है कि भाजपा को उसकी 224 सुरक्षित सीटें दे दी जाएं और गैर भाजपा दल अपनी 117 मजबूत सीटें ले लें। शेष 202 निर्वाचन क्षेत्रों को विश्लेषण में स्विंग सीट के रूप में गिना जाए। वैसे, ऐसे विश्लेषण के दो कारणों से गलत परिणाम हो सकते हैं। एक, जरूरी नहीं कि पिछले चुनाव का इतिहास दोहराया जाए। दूसरा, राज्य स्तर पर सियासी समर्थन या विरोध की स्थिति कुछ राज्यों में बदली हुई दिखती है। मिसाल के लिए, उत्तर प्रदेश में पिछले चुनाव में सपा और बसपा के बीच का गठबंधन टूट गया है और सपा ने इंडिया ब्लॉक में शामिल होकर कांग्रेस के साथ गठबंधन कर लिया है। बिहार में नीतीश कुमार के जनता दल (यूनाइटेड) को एनडीए में 16 सीटें आवंटित की गई हैं और यह कहना अभी मुश्किल है कि इस बार नतीजे क्या आने वाले हैं। महाराष्ट्र में देखें, तो अब वहां पर दो शिवसेना और दो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी हैं। इस बात पर गरमागरम बहस चल रही है कि मतदाता महाराष्ट्र में किसे पसंद करेंगे। पार्टियों के मूल संस्करण लोगों को पसंद आएंगे या नए संस्करणों को ज्यादा वोट मिलेंगे बहरहाल, हर सीट का अपना

Word Count: 0, Character Length: 3962 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-28-Test NO.-22634

यह वनवास के बाद श्रीरामजी अयोध्या लौटे, तो उन्होंने नगर के धनाढ्यों से पृच्छा की थी, क्या राष्ट्र में धान्य की प्रचुरता है? इसे समझाने के लिए उन्होंने एक भोज में धान्य की कोई वस्तु न परोसकर केवल स्वर्ण रत्न परोसे थे और तब हैरान-परेशान लोगों को समझाते हुए श्रीराम ने कहा था, जीवन की प्रथम आवश्यकता धन नहीं, धान्य है। भगवान महावीर ने कल्याण के लिए मन की शुद्धि तथा आत्मा के ध्यान पर बल दिया। उदरपूर्ति को अंतिम ध्येय समझने वाले समाज को नई दिशा प्रदान करते हुए उन्होंने कहा- तुम चौपाये नहीं, चतुर्भुज हो। तुम्हें शरीर नहीं, शरीरी (आत्मा) को; क्षेत्र नहीं, क्षेत्रज्ञ को अधिमान देना है। इसीलिए अनेक साधक दीपावली पर मौन तप व ध्यान साधना करके आत्म-ज्योति जागृत करते हैं। एक दीप सौ दीपकों को जला सकता है। ऐसे ही दान से एक घर की खुशी हर घर की खुशी बनती है। वेद में लिखा है, शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर, अर्थात् कमाते समय तुम्हारे सौ हाथ बन जाएं और देते समय हजार। दान की यह उज्ज्वल परंपरा दीपावली पर बहुत अधिक संपुष्ट की जाती है। हर परिवार किसी का मुंह मीठा करने के पश्चात अपना मुंह मीठा करता है। दीप पर्व पर विषाद-फसाद की ज्वालाओं का निर्वाण हो जाए, बुझ जाएं। जैन धर्म में दीप पर्व को निर्वाण कल्याणक भी कहा जाता है। 2550 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या की रात महावीर प्रभु का निर्वाण हुआ था। हमें अपने निर्वाण के लिए कषायों (मनोविकारों) की आग को बुझाना है। दीप पर्व के पांचों संकेतों को ग्रहण करें। इस लौकिक, अलौकिक कल्याण पर्व को मनाएं! यह हर दीपावली की एक परंपरा सी बन गई है कि एक पक्ष दीया की तरफदारी करता है, तो दूसरा बिजली की लड़ियों की। दीपक बेशक हमें सदियों से रोशन करते आ रहे हैं, मगर जैसे-जैसे वक्त बदला, हम बदलते गए हैं।

Word Count: 5, Character Length: 3903 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

Spl-BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-28-Test NO.-22635

खासकर अश्वेत युवाओं के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अवसर तलाशना उन्हें काफी सुकून देता था। मास्टर्स करने के बाद उमर ने कई सरकारी विभागों में काम किया। एक समुदाय विशेषज्ञ के रूप में जब उन्हें मिनियापोलिस शहर में काम करने का मौका मिला, तो पूर्वी अफ्रीकी समूहों तक प्रशासन की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने काफी काम किया। इस परिश्रम ने स्थानीय लोगों में उनके प्रति विशेष सम्मान का भाव पैदा किया। मिनियापोलिस परिवहन विभाग में परियोजना समन्वयक के पद पर रहते हुए भी उमर ने सरकार और शोधार्थियों के बीच पुल का काम किया। इस दौरान उन्हें विभिन्न समुदायों पर अलग-अलग परियोजनाओं से पड़ने वाले असर के बारे में कई गहरी बातें पता चलीं। तमाम विभागों में काम करते हुए उमर ने देखा कि हाशिये के लोगों को कैसी-कैसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पुलिस श्वेतों-अश्वेतों के बीच किस कदर भेदभाव करती है। अश्वेतों के साथ पुलिस ज्यादती के लिए दोषी अधिकारियों को मिलने वाली सजा की दर काफी कम है। 28 साल के नौजवान के भीतर काफी समय से यह सब खदबदा रहा था। उमर जानते थे कि बतौर मुलाजिम वह सिर्फ कायदे का पालन कर सकते हैं, कायदा बनाने का अख्तियार उनके पास नहीं, वह तो विधायिका के पास है। लिहाजा, उन्होंने विधायिका का हिस्सा बनकर बदलाव लाने का फैसला किया। साल 2018 में वह मिनेसोटा हाउस डिस्ट्रिक्ट 62ए (विधानसभा क्षेत्र) से डेमोक्रेट प्रत्याशी बनने के लिए प्राइमरी के मैदान में उतर गए। उमर तीसरे स्थान पर रहे। मगर उन्हें 20.62 प्रतिशत मत मिले, जबकि विजेता को 28.41 फीसदी वोट मिले। दूसरे प्रत्याशी और उमर के बीच तो महज पांच वोटों का फासला था। यह पराजय भी नई उम्मीद दे गई थी। वह उसी शिद्दत से लोगों की मदद-खिदमत में जुटे रहे। नतीजा 2020 के सीनेट इंतिखाब में दिखा। उमर ने न सिर्फ प्राइमरी

Word Count: 4, Character Length: 4013 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-29-Test NO.-22640

जीता और मेजबान श्रीलंका को बाहर कर दिया। इसके बाद बांग्लादेशी खिलाड़ियों ने नागिन डांस के साथ जीत का जश्न मनाया था। भारत में बड़ी संख्या में फर्जी चीनी कंपनियां बनवाने वाले मास्टरमाइंड डोर्त्से को गंभीर जालसाजी जांच कार्यालय (एसएफआईओ) ने गिरफ्तार कर लिया है। यह मास्टरमाइंड चीन की कंपनियों के लिए डमी डायरेक्टर भी बनवाता था। देश में बड़े स्तर पर वित्तीय अपराध कर रही चीन की कंपनियों पर शुरू हुई सख्त कार्रवाई में इस गिरफ्तारी को अहम माना जा रहा है। केंद्रीय कॉरपोरेट मंत्रालय ने बताया कि डोर्त्से खुद भी जिलियन इंडिया लि. के बोर्ड में एक अन्य चीनी नागरिक के साथ शामिल था। एफएसआईओ को सूचना मिली थी कि डोर्त्से दिल्ली एनसीआर से निकल भागा है और बिहार में किसी दूरदराज इलाके में है। वह सड़क मार्ग से भारत से भागने का प्रयास कर रहा है। इस पर तत्काल विशेष टीम बनाई गई, जिसने शनिवार शाम उसे गिरफ्तार किया। उसे स्थानीय अदालत में पेश कर ट्रांजिट रिमांड लिया गया है। इससे पहले, 8 सितंबर को मंत्रालय ने जिलियन कंसल्टेंट्स इंडिया के कार्यालयों पर छापों में बड़ी संख्या में दस्तावेज जब्त किए थे। यह कंपनी जिलियन हांगकांग लि., बंगलूरू स्थित फाइनिटी प्रा. लि. व हैदराबाद स्थित हुसिस कंसल्टिंग लि. के साथ सहयोग कर रही थी। 33 से ज्यादा कंपनियों का खुलासा देश की वित्तीय सुरक्षा को खतरा एसएफआईओ को जिलियन इंडिया समेत 33 कंपनियों की जांच सौंपी गई है। मंत्रालय का मानना है, इन कंपनियों ने जिस स्तर के वित्तीय अपराध भारत में अंजाम दिए, उनसे देश की वित्तीय सुरक्षा खतरे में पड़ सकती थी। खुद को हिमाचल का नागरिक बताया मंत्रालय के मुताबिक, डोर्त्से पूरे रैकेट का मास्टरमाइंड है। रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज (आरओसी) के रिकॉर्ड में खुद को हिमाचल प्रदेश के मंडी का नागरिक बताया। इसके जरिये चीन से संबंधित कई फर्जी कंपनियां भारत में बनवाई और

Word Count: 0, Character Length: 4180 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-29-Test NO.-22641

पूर्वी लद्दाख में गोगरा हॉटस्प्रिंग्स क्षेत्र में गश्त चौकी के तनाव वाले इलाके से भारत और चीन ने अग्रिम मोर्चे के अपने सैनिकों को पीछे के स्थानों पर भेज दिया है। इसके साथ ही वहां के अस्थाई बुनियादी ढांचे को भी ध्वस्त कर दिया गया है। सैनिकों को पीछे हटाने की पांच दिवसीय प्रक्रिया के तहत यह कदम उठाए जा रहे हैं। सूत्रों की मानें तो दोनों पक्ष योजना के अनुसार पीछे हट गए हैं। पीछे हटने और सत्यापन प्रक्रिया के बारे में स्थानीय कमांडर से पूरी जानकारी का इंतजार किया जा रहा है। हालांकि, डेमचोक और देपसांग क्षेत्रों में गतिरोध को हल करने में अभी तक कोई प्रगति नहीं हुई है। इससे पहले भारत और चीन की सेनाओं ने आठ सितंबर को एलान किया था कि उन्होंने क्षेत्र में गतिरोध वाले स्थानों से सैनिकों को हटाने के लिए रुकी हुई प्रक्रिया को आगे बढ़ाने पर सहमति बना ली है। इसके बाद से ही पीपी 15 से सैनिकों को हटाना शुरू कर दिया है सेना प्रमुख बोले मुझे इसका जायजा लेना होगा इस बीच जब सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे से पीपी 15 में सैनिकों के पीछे हटने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि मुझे जाकर जायजा लेना होगा, लेकिन यह निर्धारित कार्यक्रम और तय आधार के अनुसार हो रहा है। दोनों देशों के बीच जुलाई में उच्च स्तरीय सैन्य वार्ता के 16वें दौर के बाद गोगरा हॉटस्प्रिंग्स क्षेत्र में सैनिकों को पीछे हटाने पर सहमति बनी थी। गौरतलब है कि मई 2020 में जब दोनों देशों की सेनाओं के बीच गतिरोध बढ़ा था तब से भारत चीन के सैनिकों को पैट्रोलिंग पॉइंट 15 के पास एक दूसरे के विपरीत तैनात किया गया है। भारत और चीन ने पैंगोंग त्सो लेक के दोनों किनारों से सैनिकों को हटा भी चुके हैं। शिखर सम्मेलन से पहले शुरू हुई

Word Count: 0, Character Length: 3806 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-29-Test NO.-22642

इंडो अमेरिकन चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईएसीसी) की 19वीं इंडो यूएस इकोनॉमिक समिट में दी। अपने संबोधन में गडकरी ने बताया कि परीक्षण की जा रही टोल वसूलने की नई प्रणाली 'ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रीडर कैमरा' तकनीक पर आधारित है। इसमें शुल्क वसूलने के लिए वाहन को टोल प्लाजा पर रुकने की जरूरत नहीं होती। ऑटोमेटेड टोल प्लाजा पर लगे कैमरे ही नंबर प्लेट देखकर टोल वसूल लेंगे। गडकरी ने कहा कि इससे यातायात बिना रुके या धीमा हुए, चलता रहेगा और जो वाहन हाईवे पर जितना चलेगा, उतना ही शुल्क लगेगा। भारत अमेरिका पर बोले हम स्वाभाविक सहयोगी समिट में भारत अमेरिकी संबंधों पर गडकरी ने कहा कि दोनों स्वाभाविक सहयोगी एक दूसरे की प्रगति में योगदान देते आए हैं। हमेशा आपसी विश्वास, सम्मान और सहयोग भी दर्शाया है। उन्होंने अमेरिकी निवेशकों को भारत के सड़क निर्माण परियोजनाओं, इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरी के उत्पादन और रोप वे, केबल कार आदि सेवाओं के विकास में निवेश का आमंत्रण दिया जल शक्ति मंत्रालय ने अगस्त महीने के लिए 'जल नायक प्रतियोगिता' के विजेताओं के नाम का एलान कर दिया है। छह पुरस्कार विजेताओं में यूपी के बांदा जिले के डीएम अनुराग पटेल सहित तीन लोग शामिल हैं। इन्हें पुरस्कार के रूप में 10 10 हजार रुपये नकद और प्रमाणपत्र दिया जाएगा। जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग ने 'जल नायकः सफलता की अपनी कहानी साझा करें'प्रतियोगिता शुरू की है। मंत्रालय के मुताबिक, यह प्रतियोगिता आबादी के एक बड़े हिस्से को देश में जल संरक्षण की महत्ता समझने के लिए प्रेरित करने की दृष्टि से शुरू की गई है। इसके अंतर्गत प्रतियोगिता के विजेता जल नायकों के अनुभवों को साझा किया जाता है, ताकि लोगों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा हो, उनकी आदतों में बदलाव आए और वे पानी को बचाने के लिए जागरूक हो

Word Count: 0, Character Length: 4090 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link
https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-29-Test NO.-22646

प्राथमिक विद्यालय में पोषक भोजन उपलब्ध कराने, पौधारोपण, पर्यावरण सुरक्षा और तलछट की सफाई के जरिए जल शोधन जैसी विभिन्न विकास गतिविधियों में हिस्सा लिया है। दिव्यांश टंडन दिव्यांश मेरठ के हैं और “पानी पंचायत” नामक अभियान से जुड़े हैं। इसके अंतर्गत वह विभिन्न गांवों, सड़कों, कस्बों, स्कूलों, मुहल्लों में जाकर लोगों को जागरूक करते हैं। टंडन (मेरठ छावनी) सारथी सामाजिक कल्याण सोसयटी के उपाध्यक्ष हैं। स्नेहलता शर्मा स्नेहलता मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले के बदरवास ब्लॉक के पिपरोधा गांव की हैं। वह पिछले एक वर्ष से जल संरक्षण तथा जल प्रबंधन के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। पानी और उसके संरक्षण के लिए आसपास के गांवों में जागरूकता पैदा करने के लिए महिलाओं को जोड़ा और उन्हें नेतृत्व सौंपा। इन्होंने उन फसलों के बारे में भी लोगों में जागरूकता पैदा की, जिन्हें खेतों में कम पानी की जरूरत पड़ती है। विनय विश्वनाथ गावस गोवा गावस के परियोजना निदेशक हैं और केलावाड़े गांव, केरी सत्तारी, गोआ में घरों की छतों पर वर्षाजल संरक्षण तथा बोरवेल के पानी को बहाल करने के बारे में अभियान चलाते हैं। यह परियोजना टीईआरआई के सहयोग से तैयार की गई बताई गई है बबीता राजपूत घुवारा बबीता छतरपुर, मध्यप्रदेश से हैं। ये चार छोटे बांधों और दो जल निकासियों के निर्माण कार्य से जुड़ी रहीं तथा बोरी बांधों के निर्माण में योगदान किया। गरीब और छोटे देशों को मदद के नाम पर कर्ज देकर चीन वर्षों से अपने जाल में फंसा रहा है। उसके मकड़जाल के जंजाल से दुनिया के 97 देश कर्ज तले दब गए हैं। वहीं, भारत के पड़ोसी देश श्रीलंका, पाकिस्तान और मालदीव सबसे बड़े कर्जदारों में हैं। चीन की नीति के कारण ये देश गले तक डूब गए हैं। पाकिस्तान पर चीन का 61 खरब रुपये से अधिक का विदेशी कर्ज यह खुलासा फोर्ब्स की नई रिपोर्ट में हुआ है। इसके

Word Count: 0, Character Length: 4106 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-29-Test NO.-22647

ओबीआर योजना के तहत पहुंच रहा है चीन रिपोर्ट के अनुसार, चीन ज्यादातर देशों में वन बेल्ट एंड रोड (ओबीआर) योजना के तहत पहुंच रहा है। दुनिया के कम आय वाले देशों ने 2022 में चीन को अपने कर्ज का 37 फीसदी कर्ज दिया है, जबकि बाकी दुनिया के लिए सिर्फ 24 फीसदी द्विपक्षीय कर्ज है। द आइलैंड ऑनलाइन की रिपोर्ट के अनुसार, चीन के लिए दुनिया में बंदरगाह, रेल और भूमि के बुनियादी ढांचे के निर्माण के वित्तपोषण के लिए चीनी वैश्विक परियोजना उसके कर्ज का एक महत्वपूर्ण स्रोत रही है। श्रीलंका के हालात द आइलैंड ऑनलाइन की रिपोर्ट के अनुसार, मई, 2022 में श्रीलंका अपने कर्ज के तले डूबने वाला दो दशकों में पहला देश था। चीनी कर्ज 2020 के अंत में कुल मिलाकर पांचवां सबसे अधिक था, जो उसके देश के जीएनआई का 9 प्रतिशत था। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सऊदी अरब की जमीन से भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की स्थायी सदस्यता का प्रबल दावेदार बताया। उन्होंने कहा, सुरक्षा परिषद को अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बदलते वैश्विक हालात के अनुकूल बनना चाहिए। तीन दिनी सऊदी दौरे पर जयशंकर ने कहा कि भारत काफी समय से यूएनएससी में सुधार के प्रयासों में अग्रणी रहा है और इसका स्थायी सदस्य बनने का पूरी तरह हकदार है। जयशंकर के इस बयान को वैश्विक मंच पर खाड़ी देश का मजबूत साथ पाने के संदर्भ में देखा जा रहा है। बतौर विदेश मंत्री पहली सऊदी यात्रा पर विदेश मंत्री बोले, यूएनएससी का विस्तार न केवल भारत बल्कि अन्य गैर प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्रों के भी पक्ष में है। वर्तमान स्वरूप में सुरक्षा परिषद 21वीं सदी की भू राजनीतिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती। लिहाजा, इसमें सुधार की जरूरत पर व्यापक वैश्विक सहमति है। बिन सलमान को सौंपा मोदी का संदेश, द्विपक्षीय रिश्तों पर वार्ता जयशंकर

Word Count: 0, Character Length: 4071 characters

RKC Nawada, online Webbased Typing Test

RKC Typing Test All Exam Link- Paper to Screen Available Link https://rkcnawada.online/best-typing-software-rkc.php

BSF-HCM-Hindi-Test-Dated-2025-07-29-Test NO.-22648

आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने गुजरात में पार्टी के प्रचार के दौरान भाजपा और कांग्रेस पर एक साथ निशाना साधने की कोशिश की है। केजरीवाल ने दावा किया है कि भाजपा ने कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी को पिछले दरवाजे से प्रधानमंत्री बनाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सोनिया को पीएम मोदी का उत्तराधिकारी बनाना चाहती है हाल ही में भाजपा के कुछ नेताओं ने कहा था कि आम आदमी पार्टी गुजरात में सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर को अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार बना सकती है। इसी का जवाब देते हुए केजरीवाल ने यह तंज कसा। गौरतलब है कि भाजपा नर्मदा बचाओ आंदोलन में शामिल रहीं मेधा पाटकर के आप से रिश्तों को चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश करती रही है दिल्ली सीएम ने आगे कहा कि अगर गुजरात में उनकी पार्टी सत्ता में आई, तो वह यह सुनिश्चित करेंगे कि उसके मुख्यमंत्री, मंत्रियों के साथ साथ अन्य दलों के विधायक और सरकारी अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त न हों और ऐसा करते पकड़े जाने पर जेल जाएं केजरीवाल ने अहमदाबाद में दावा किया, गुजरात में मैं जिससे भी मिला, उसने कहा कि हर जगह भ्रष्टाचार है। सरकारी काम कराने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है। निचले स्तर पर भ्रष्टाचार है और ऊपर भी घोटाले हैं। अगर कोई इसके खिलाफ बोलता है, तो उसे धमकी दी जाती है गुजरात में हर जगह भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी है उन्होंने कहा कि आप सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि जनता से वसूला गया एक एक पैसा गुजरात के लोगों की सेवा में लगे। उन्होंने कहा, आज मैं गारंटी देता हूं कि जब आप गुजरात में सरकार बनाएगी तो वह भ्रष्टाचार मुक्त और भयमुक्त सरकार देगी केजरीवाल ने कहा कि सत्ता में आने पर उनकी पार्टी की सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि जनता को सरकारी कार्यालयों में रिश्वत देने

Word Count: 0, Character Length: 4007 characters